बस्ती
इंतज़ार हुसैन

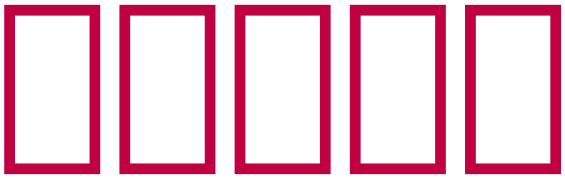

Table of Contents

□□□□□□
□□□□□□□ □□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□
□□□□□□□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□
□□
□□
□□□□
□□□□
□□□□□
□□
□□□□
□□
□□
□□
□□□□□□□
□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□□□□□

इंतज़ार हुसैन (जन्म 1925) एक पत्रकार, कथाकार और उपन्यासकार हैं, जिन्हें उर्दू साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण जीवित कथाकार माना जाता है। ब्रिटिश-प्रशासित भारत के बुलंदशहर के दिबाई में जन्मे, वे 1947 में पाकिस्तान चले गए और वर्तमान में लाहौर में रहते हैं। बस्ती के अलावा, वे दो अन्य उपन्यासों के लेखक हैं: नया घर (नया घर), जो इस्लामी कट्टरपंथी जनरल ज़िया- उल-हक की दस वर्षीय तानाशाही के दौरान पाकिस्तान का चित्रण करता है, और आगे समुद्र है (अगले समुद्र), जो समकालीन कराची की बढ़ती शहरी हिंसा को अल-अंदलूस के खोए हुए इस्लामी साम्राज्य की कल्पना के साथ जोड़ता है। हुसैन की प्रसिद्ध लघु कथाओं के संग्रह अंग्रेजी में लीव्स, द सेवंथ डोर, ए क्रॉनिकल ऑफ द पीकॉक्स और एन अनरिटेन एपिक शीर्षकों से प्रकाशित हुए हैं। फ्रांसेस डब्ल्यू. प्रिचेट 1982 से कोलंबिया विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई साहित्य पढ़ा रही हैं। उनकी पुस्तकों में 'नेट्स ऑफ अवेयरनेस: उर्दू कविता और उसके आलोचक', 'द रोमांस ट्रेडिशन इन उर्दू: एडवेंचर्स फ्रॉम द दास्तान ऑफ अमीर हमजा' और (खालिक अहमद खालिक के साथ) 'उर्दू मीटर: ए प्रैक्टिकल हैंडबुक' शामिल हैं।
आसिफ फर्रुखी एक लेखक और लोक स्वास्थ्य में प्रशिक्षित चिकित्सक हैं। वे पाकिस्तान के अंग्रेजी भाषा के प्रकाशनों में नियमित रूप से योगदान देते हैं और सात लघुकथा संग्रह, दो निबंध संग्रह और इंतज़ार हुसैन पर एक मोनोग्राफ के लेखक हैं। वे 'फायर्स इन एन ऑटम गार्डन: स्टोरीज फ्रॉम पाकिस्तान', 'लुक एट द सिटी फ्रॉम हियर: राइटिंग्स अबाउट कराची' के संपादक और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध पर आधारित कहानियों के संकलन 'फॉल्टलाइन्स' के सह-संपादक हैं। उन्होंने इंतज़ार हुसैन के साथ मिलकर 'शॉर्ट स्टोरीज फ्रॉम पाकिस्तान' नामक संकलन पर भी काम किया है।

□□□□□

INTIZAR HUSAIN

□□□□□ □□ □□□□□□□□

□□□□□□□□□ □□□□□□□□. □□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□

nyrb

□□□□□□□□□□

यह न्यूयॉर्क रिव्यू की पुस्तक है।
न्यूयॉर्क रिव्यू ऑफ बुक्स द्वारा प्रकाशित
435 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, एनवाई 10014
www.nyrb.com
प्रकाशक और अनुवादक जनाब आदिल मंसूरी को इस खंड में प्रकाशित सुलेख को उदारतापूर्वक उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं।
कॉपीराइट © 1979 इंतज़ार हुसैन द्वारा
अनुवाद का कॉपीराइट © 2007 फ्रांसेस डब्ल्यू. प्रिचेट के पास है।
प्रस्तावना का कॉपीराइट © 2013 आसिफ फर्रुखी के पास है।
सर्वाधिकार सुरक्षित।
पहली बार हार्परकॉलिन्स इंडिया द्वारा 1995 में प्रकाशित।
यह संशोधित अनुवाद सर्वप्रथम ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया द्वारा 2007 में प्रकाशित किया गया था।
आवरण चित्र: अली रज़ा, द्वार I, 2008; कलाकार की अनुमति से
कवर डिज़ाइन: केटी होमैन्स
लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने पहले के मुद्रण को निम्न प्रकार से सूचीबद्ध किया है:
Intizar Husain, 1925–
[बस्ती. अंग्रेज़ी]
बस्ती / इंतज़ार हुसैन द्वारा लिखित; फ्रांसिस डब्ल्यू. प्रिचेट द्वारा अनुवादित और आसिफ फर्रुखी द्वारा लिखित परिचय सहित।
पृष्ठ सेमी. — (न्यूयॉर्क रिव्यू बुक्स क्लासिक्स)
इसमें ग्रंथसूची संबंधी संदर्भ शामिल हैं।
ISBN 978-1-59017-582-8 (वास्तुकला पत्र)
आई. प्रिचेट, फ्रांसेस डब्ल्यू., 1947– II. शीर्षक.
पीके2200.आई 57 बी313 2012
891.4'3937—dc23
2012029418
ISBN 978-1-59017-582-8
ईबुक ISBN 978-1-59017-597-2 v1.0

एनवाईआरबी क्लासिक्स श्रृंखला में शामिल पुस्तकों की पूरी सूची के लिए, www.nyrb.com पर जाएं या निम्नलिखित पते पर लिखें: कैटलॉग अनुरोध, एनवाईआरबी, 435 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, एनवाई 10014

□□□□□□□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□ □□□□

□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□

□□

□□

□□□□

□□□□

□□□□□

□□

□□□□

□□

□□

□□

□□□□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□

□□□□□□□□

परिचय
इंतज़ार हुसैन की किताब 'बस्ती' (उर्दू शब्द जिसका इस्तेमाल किसी भी आकार की मानव बस्ती के लिए किया जाता है, चाहे कुछ घर हों या पूरा शहर) की शुरुआत में, हम दुनिया को एक बच्चे की नज़रों से देखते हैं, और यह रंग-बिरंगे पक्षियों, चंचल जानवरों और हरी-भरी हरियाली से भरा एक स्वर्ग है। लेकिन यह स्वर्ग क्षणभंगुर साबित होता है। जल्द ही ज़ाकिर, जो इस किताब का नायक और कथावाचक है, हिंसा, अनिश्चितता, पछतावे और लालसा से भरी दुनिया में धकेल दिया जाता है: आधुनिक पाकिस्तान की दुनिया। जलते हुए घरों और शहरों, राख और धुएं के दृश्य हर जगह दिखाई देते हैं। किताब के अंत के करीब, इस लगातार चल रही आग को बुद्ध के शब्दों में समझाया गया है:
हे भिक्षुओं, कल्पना कीजिए एक घर चारों ओर से जल रहा है। उसके अंदर कुछ बच्चे डर से कांपते हुए इधर-उधर भटक रहे हैं। हे भिक्षुओं, पुरुष और स्त्रियाँ जलते हुए घर में बच्चों के समान हैं।
इसके बाद कुरान की एक पंक्ति आती है जो उपन्यास के अंतिम पृष्ठों में गूंजती रहती है: "मैं समय की कसम खाता हूँ, मनुष्य निश्चित रूप से हानि में है।"
उस क्षति के स्वरूप और आयामों पर विचार करना और उसे समाहित करने के लिए एक नया रूप खोजना, जो ऐतिहासिक अतीत और वर्तमान की घटनाओं, पौराणिक कथाओं और आधुनिकतावादी प्रयोगों, मौखिक और लिखित दोनों तत्वों और दक्षिण एशिया की विभिन्न पवित्र और धर्मनिरपेक्ष परंपराओं को आश्चर्यजनक रूप से संयोजित करता है—यही हुसैन की बस्ती की विजय है।
दक्षिण एशिया के सर्वप्रसिद्ध लेखकों में से एक, हुसैन कई लघुकथा संग्रहों, तीन उपन्यासों और दो संस्मरणों के लेखक हैं, साथ ही चेखव से लेकर स्टीफन क्रेन और थॉर्नटन वाइल्डर तक के लेखकों के अनुवादक भी हैं। 1925 में उत्तर भारतीय शहर अलीगढ़ के पास स्थित दिबाई नामक एक छोटे से कस्बे में जन्मे हुसैन अपनी दादी की परंपरा का पालन करते हुए जीवन को ऐतिहासिक घटनाओं, जैसे युद्ध, महामारियाँ, राष्ट्रों और साम्राज्यों के उत्थान और पतन और उनके प्रमुख व्यक्तित्वों के संदर्भ में देखते हैं। इस हिसाब से, हुसैन उस समय वयस्क हुए जब ब्रिटिश राज का पतन हो रहा था। उनका परिवार उर्दू भाषी कुलीन वर्ग, अशरफिया से संबंधित था, और उनके पिता, जिन्होंने शिया धर्म अपना लिया था, एक विद्वान और धार्मिक व्यक्ति थे जो पश्चिमी और

आधुनिक विचारों के घोर विरोधी थे। हुसैन, उनके इकलौते पुत्र, ने बचपन में एक पारंपरिक मदरसे में शिक्षा प्राप्त की, लेकिन बाद में मेरठ कॉलेज से साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। इस समय तक उन्होंने लेखक बनने का निश्चय कर लिया था।
उन्होंने कवि और आलोचक के रूप में अपने करियर की शुरुआत की, लेकिन बाद में कथा लेखन की ओर रुख किया। उन्होंने अपनी पहली कहानियाँ 1947 में हुए भारत के विभाजन की भयावह त्रासदी के जवाब में लिखीं, जिसमें लाखों लोगों को अपने घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा और लगभग दस लाख लोगों की जान चली गई। इस विभाजन के बाद पाकिस्तान नामक एक नया राज्य अस्तित्व में आया, जो पश्चिमी और पूर्वी भागों में बँटा हुआ था। नवोदित लेखक हुसैन के मार्गदर्शक, प्रख्यात आलोचक मुहम्मद हसन असकारी के एक रेडियो संदेश से प्रेरित होकर, हुसैन ने भारत में अपना पैतृक शहर छोड़ दिया और पश्चिमी पाकिस्तान के लाहौर चले गए, जो उर्दू सांस्कृतिक जीवन का पारंपरिक केंद्र था। वहाँ उन्होंने पत्रकार के रूप में काम किया, जैसा कि वे आज भी करते हैं। उन्होंने शहर के साहित्यिक जीवन में खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया और लघु कथाओं के लेखक के रूप में तेजी से ख्याति अर्जित की (उनका पहला संग्रह 1952 में प्रकाशित हुआ और दूसरा 1955 में)। हुसैन की महान समकालीन कुर्रतुलैन हैदर की कहानियों की तरह, ये कहानियाँ भी विभाजन के बाद जड़ों की खोज पर केंद्रित थीं, साथ ही इनमें शैलीगत नवीनता का भी उल्लेखनीय प्रदर्शन देखने को मिलता है। सआदत हसन मंटो और अन्य लेखकों के हाथों में, उर्दू लघु कहानी पहले ही उच्च स्तर की परिपक्वता और परिष्कार प्राप्त कर चुकी थी; हैदर और हुसैन ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया।
हुसैन की शुरुआती कहानियों को चेखोव शैली का कहा जा सकता है। हालांकि, धीरे-धीरे वे काफ्का जैसे बीसवीं सदी के यूरोपीय लेखकों की रचनाओं की ओर आकर्षित होने लगे, साथ ही उन्होंने दक्षिण एशियाई कथाओं के कई प्राचीन रूपों का भी अध्ययन करना शुरू कर दिया। इनमें संस्कृत पंचतंत्र की आपस में जुड़ी पशु कथाएँ; बुद्ध के जन्म-जन्म चक्र की जातक कथाएँ; और फारसी दास्तानें शामिल थीं, जो वीरता, रोमांस, जादू और छल से भरपूर कहानियों का विशाल संग्रह होती हैं, जिनमें अमीर हमजा जैसे महान नायकों के कारनामों का वर्णन होता है। यूरोपीय और एशियाई दोनों परंपराओं में समान रूप से पारंगत हुसैन ने 'द मेटामॉर्फोसिस' को एक दास्तान के नजरिए से देखा, जिसमें एक

राजकुमार मक्खी में बदल जाता है, और उस दास्तान को काफ्का के नजरिए से देखा। उनकी नई शैली—जिसे आलोचकों ने प्रतीकवाद की ओर एक मोड़ बताया—ने उर्दू कथा साहित्य में एक व्यापक बदलाव में योगदान दिया। पिछली पीढ़ी के वामपंथी प्रगतिशील लेखकों की प्रकृतिवाद शैली, जिसमें गरीबी और उत्पीड़न के घिनौने विवरणों पर ज़ोर दिया जाता था, की जगह वास्तविकता के चित्रण के लिए अधिक कल्पनाशील और चुनौतीपूर्ण दृष्टिकोणों की खोज ने ले ली। कई लेखकों का मानना था कि स्वतंत्रता के साथ आए व्यापक सामाजिक परिवर्तनों को चित्रित करने के लिए दो-आयामी यथार्थवाद से कहीं अधिक की आवश्यकता थी। हुसैन की उल्लेखनीय 1962 की रचना, दिन और दास्तान (दिन और दास्तान), उनके करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह पुस्तक दो अलग-अलग भागों में है, जिनमें से प्रत्येक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है, सिवाय इसके कि दोनों का संबंध 1857 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध हुए विद्रोह से है। (ब्रिटिश इसे परंपरागत रूप से महान विद्रोह कहते रहे हैं क्योंकि इसकी शुरुआत मुस्लिम सैनिकों के विद्रोह से हुई थी, लेकिन इतिहासकार अब इसे आम तौर पर स्वतंत्रता संग्राम के रूप में देखते हैं।) पुस्तक का पहला भाग, "दिन", तुर्गेनेव की शैली में एक लघु उपन्यास है, जिनकी रचनाओं का हुसैन ने अनुवाद किया है: यह एकतरफा प्रेम का अध्ययन होने के साथ-साथ विभाजन से ठीक पहले के वर्षों में उत्तर भारतीय "कुलीन वर्ग" के पतन का सहानुभूतिपूर्ण और पारंपरिक रूप से यथार्थवादी चित्रण है, और जीर्ण-शीर्ण महलों, अंधेरे कमरों, अंधविश्वासों, मान्यताओं और अनुष्ठानों से भरे एक लंबे समय से खोए हुए अतीत का शानदार ढंग से वर्णन है, जो अपूर्ण रूप से साकार और अनकहे प्रेम, विभिन्न यात्राओं और विदाई के इर्द-गिर्द घूमता है। इसके बाद आने वाली दास्तान, जिसका नाम "गरजता पानी" है, बिल्कुल अलग है। यह शायद आधुनिक उर्दू लेखक द्वारा इस काल्पनिक शैली में की गई एकमात्र रचना है, और यह सलमान रुश्दी और जॉन बार्थ जैसे लेखकों की इसी तरह की बाद की रचनाओं के लिए एक मिसाल कायम करती है। यहाँ एक कहानी के भीतर एक कहानी खुलती है, रोमांच और प्रेम की कहानियाँ जो 1857 के बारे में लोक मान्यताओं पर आधारित हैं। "गरजता पानी" और "दिन का समय" दोनों ही उस युद्ध की राजनीतिक और सामाजिक विरासत का सामना करते हैं—जिसने व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान के ऐसे प्रश्न उठाए जो आज भी प्रासंगिक हैं—लेकिन वे ऐसा न केवल भिन्न बल्कि असंगत तरीकों से करते हैं। हुसैन, जिन्होंने खुद को 1857 का अंतिम जीवित

सैनिक बताया है, इस प्रकार यह संकेत देते हैं कि इतिहास अकेले इस मूलभूत संघर्ष, जो बाद के कई संघर्षों का अग्रदूत था, का आकलन नहीं कर सकता। इसकी कल्पना की जानी चाहिए और बार-बार कल्पना की जानी चाहिए।
1971 में पाकिस्तान एक नए संकट और एक नए विभाजन से जूझ रहा था। देश के पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों के बीच राजनीतिक तनाव तब चरम पर पहुंच गया जब अधिक आबादी वाले लेकिन आर्थिक रूप से पिछड़े पूर्वी क्षेत्र की एक राजनीतिक पार्टी ने राष्ट्रीय चुनावों में जीत हासिल की, जिसे पश्चिम में स्थित सैन्य सरकार ने मानने से इनकार कर दिया। पाकिस्तानी सेना की अवैध और क्रूर सैन्य कार्रवाई के कारण पूर्वी पाकिस्तान ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी, जिसके बाद भारत ने हस्तक्षेप किया और पूर्वी और पश्चिमी दोनों मोर्चों पर युद्ध छिड़ गया। पाकिस्तान को अपमानजनक पराजय का सामना करना पड़ा और पूर्व पूर्वी पाकिस्तान वर्तमान बांग्लादेश राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। हुसैन, पश्चिमी पाकिस्तान के कई बुद्धिजीवियों की तरह, पूर्व में सेना के क्रूर अभियानों से पूरी तरह अवगत नहीं थे और शुरू में उन्होंने इन घटनाओं को राष्ट्र-राज्य के संकट के रूप में देखा। 2005 में मैंने उनका साक्षात्कार लिया जिसमें उन्होंने कहा कि "देश की तात्कालिक सामाजिक-राजनीतिक स्थिति" ने उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया।
अचानक मुझे ऐसा लगा मानो 1947 मेरे भीतर फिर से जीवंत हो उठा हो। 1947 से पहले और उसके दौरान का वह पूरा दौर इतनी तीव्रता से मेरे सामने आ गया कि बिना यह सोचे कि मुझे इसके साथ क्या करना चाहिए, बिना इसे उपन्यास का रूप देने की योजना बनाए... मैं बस लिखता ही चला गया। उसके बाद मैंने कलम रख दी; उसके बाद खबरें आने लगीं। पूर्वी पाकिस्तान का पतन हो गया था। जब... कुछ महीने बीत गए, तो मैंने फिर से कलम उठाई और अपने लिखे हुए को देखा... [और] उपन्यास का स्वरूप मेरे मन और कल्पना में आकार लेने लगा।
हुसैन का पहला उपन्यास 'बस्ती' उनकी रचना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की जटिलताएँ और काल्पनिक एवं यथार्थवादी शैलियों का मिश्रण, जिसे उन्होंने 'दिन और दास्तान' में आजमाया था, एक नई एकता में समाहित हो उठता है। हुसैन हमेशा से अतीत में वर्तमान और वर्तमान में अतीत को देखने के लिए प्रवृत्त रहे हैं, लेकिन उनकी रचनाओं में कहीं भी यह प्रवृत्ति 'बस्ती' जितनी नाटकीय रूप से व्यक्त नहीं की गई है। यही इस पुस्तक में व्याप्त तात्कालिकता और आपातकाल की भावना को बल देता है, साथ

ही साथ इसके स्वप्निल अंशों और उन क्षणों को भी उभारता है जब समय ठहर सा जाता है।
उपन्यास की शुरुआत काव्यात्मक ढंग से होती है, जिसमें विभाजन-पूर्व की दुनिया का वर्णन किया गया है, जिसमें बौद्ध, हिंदू और मुस्लिम परंपराएं और दृष्टिकोण शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में हैं और एक दूसरे को रूपांतरित करते हैं। हम एक बच्चे को मासूमियत से जीवन के पहले और आखिरी पहलुओं के बारे में सोचते हुए सुनते हैं, और हिंदू पुजारी और मुस्लिम मुल्ला द्वारा उसके प्रश्नों के उत्तर में सुनाई जाने वाली कहानियों को सुनते हैं: “मौलाना, प्रलय कब आएगी?”
जब मच्छर मर जाएगा, तब गाय भय से मुक्त हो जाएगी।
“मच्छर कब मरेंगे, और गाय कब भय से मुक्त होगी?”
जब सूरज पश्चिम से उगता है।
पश्चिम दिशा से सूर्योदय कब होगा?
जब मुर्गी बांग देती है और मुर्गा चुप रहता है।
मुर्गी कब बांग देगी और मुर्गा कब चुप रहेगा?
जब बोलने वाले चुप हो जाते हैं, तब जूतों के फीते बोलने लगते हैं।
“बोलने की क्षमता रखने वाले कब चुप हो जाएंगे, और जूते के फीते कब बोलने लगेंगे?”
जब शासक क्रूर हो जाते हैं, और जनता धूल चाटने लगती है।
एक "जब" के बाद दूसरा "जब", दूसरे "जब" के बाद तीसरा "जब"। "जब" का एक अजीबोगरीब जाल! वो "जब" जो बीत चुके हैं, वो "जब" जो अभी आने बाकी हैं।
यह जिज्ञासु बच्चा ज़ाकिर (एक आम इस्लामी नाम जिसका अर्थ है "जो याद रखता है" और कभी-कभी "जो वर्णन करता है या सुनाता है") पुस्तक का नायक है, जो काल्पनिक शहर रूपनगर में रहता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "सुंदर स्थान"। लड़का ज़ाकिर अपनी चचेरी बहन सबीरा (जिसका अर्थ है "धैर्यवान" या "सहनशील") से जुड़ जाता है, जिसका स्वरूप रहस्यमय बना रहता है। वे बचपन में साथ खेलते हैं, ज़मीन में एक गड्ढा खोदते हैं जिसे वे अपनी कब्र कहते हैं, हालांकि सबीरा तब चौंक जाती है जब ज़ाकिर शादी का खेल खेलने का सुझाव देता है। कुछ समय के लिए अलग होने के बाद, वे फिर मिलते हैं जब सबीरा एक युवती होती है और ज़ाकिर मेरठ में एक छात्र होता है। सबीरा ज़ाकिर से पूछती है कि क्या वह उसके लिए पुस्तकालय से एक किताब ला सकता है। झिझकते हुए बातचीत के

दौरान ज़ाकिर पूछता है कि क्या उसने उन्नीसवीं सदी का ऐतिहासिक प्रेम उपन्यास 'पैराडाइज़ ऑन अर्थ' (फिरदौस-ए-बरीन, जिसका अनुवाद 'पैराडाइज़ ऑफ़ द असैसिन्स' भी हुआ है) पढ़ा है? यह एक बेहद लोकप्रिय कहानी है जिसमें एक युवक अपनी प्रेमिका के प्रति इतना समर्पित होता है कि उसे खुश करने के लिए वह खूंखार 'असैसिन्स' संप्रदाय में शामिल हो जाता है। इस तरह इन झिझक भरी बातचीत में लालसा, आशंका और साहित्य आपस में जुड़ जाते हैं। हालांकि, विभाजन के साथ ही ये बातचीत समाप्त हो जाती है, क्योंकि सबीरा भारत में ही रह जाती है। बाद में, ज़ाकिर को एक हिंदू मित्र से उसके बारे में खबर मिलती है, और उसके पिता उसे सबीरा को पत्र लिखने के लिए भी कहते हैं, जिस पर वह विचार करता है। फिर भी, वह उससे दूर ही रहती है, एक ऐसी स्मृति जो किताब के पन्नों में बसी रहती है।
उपन्यास अब सत्तर के दशक के आरंभिक वर्षों में पहुँच जाता है, जब पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान के बीच संघर्ष तीव्र हो रहा था (साथ ही साथ ऐसे अंश भी प्रस्तुत किए गए हैं जो नवगठित पाकिस्तान के शुरुआती दिनों में लोगों द्वारा महसूस की गई उत्साहपूर्ण आशा और संभावना की भावना को दर्शाते हैं)। ज़ाकिर अपने माता-पिता के साथ लाहौर में रहता है, जहाँ वह इतिहास पढ़ाता है। उसकी माँ पूर्वी पाकिस्तान में रहने वाले परिवार के सदस्यों को लेकर चिंतित है और ढाका से आने वाली खबरों के बारे में बार-बार पूछती रहती है, जो या तो आती ही नहीं या जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। पुस्तक की अधिकांश घटनाएँ चाय की दुकानों में घटित होती हैं (जो नगुइब महफूज़ द्वारा वर्णित काहिरा के कॉफ़ीहाउस या मक़्हों से मिलती-जुलती हैं), जहाँ ज़ाकिर अपने कुछ मित्रों से मिलता है जो आपस में बहस करते हैं, एक-दूसरे को चिढ़ाते हैं और बाहर हो रही हिंसा को समझने की कोशिश करते हैं। आलोचक मुहम्मद उमर मेमन ने ज़ाकिर के मित्रों को "शारीरिक विशेषताओं और विशिष्ट विवरणों से रहित" बताया है, और यह सच है कि वे एक सामूहिक उपस्थिति हैं, घटनाओं पर टिप्पणी करने वाले एक समूह की तरह, जो स्वयं "एक रहस्यमय धुंधलेपन में डूबे" हैं, जिसे वे समझना कठिन समझते हैं और नियंत्रित करने में असमर्थ हैं। वे केवल बातें ही कर सकते हैं, जो बुद्धिजीवियों की शक्तिहीनता को ही नहीं बल्कि समग्र रूप से जनता की शक्तिहीनता को भी दर्शाती है।

हालात बेकाबू हो जाते हैं, खबरें और भी अनियमित और अविश्वसनीय हो जाती हैं, और किताब के केंद्र में मौजूद अलगाव की भावना और भी गहरी होती जाती है। ज़ाकिर की डायरी (जो स्वभाव से एक निजी मंच है) के अंश युद्ध की ओर बढ़ते कदम का वर्णन करते हैं, जबकि आंतरिक संवाद किताब में बढ़ती भूमिका निभाता है, और एक उन्मादी, शायद भविष्यसूचक, जोश प्रवेश करता है। जैसे-जैसे गोलीबारी और नारेबाजी जारी रहती है, जैसे-जैसे सब कुछ बिखरता जाता है, ज़ाकिर के पिता की मृत्यु हो जाती है। लक्ष्यहीनता में भटकते हुए, ज़ाकिर खुद को कब्रिस्तान में पाता है:
वह कब्र के पास बैठ गया, यह सोचते हुए कि जब उसे होश आएगा तो वह फातिहा पढ़ेगा। उसकी सांस अभी भी फूल रही थी और उसका शरीर कांप रहा था। गोलियों की आवाज सुनाई दे रही थी। नारों की आवाज भी, लेकिन अब वे नाममात्र के नारे थे। अब वे भयंकर, अमानवीय चीखों का सैलाब थे। और यह धुआं क्यों था? ... बहुत कुछ जल चुका था, बहुत कुछ जल रहा था। बहुत सी इमारतें नष्ट हो चुकी थीं, बहुत सी गिरने वाली थीं। वह रेंगता रहा, मलबे के नीचे से निकलने की कोशिश करता रहा। उसे लगा कि वह पूरी तरह से टूट चुका है। क्या मैं खुद हूं या खुद का मलबा? "दुख ने कितनी बड़ी इमारत को नष्ट कर दिया है!" क्या मैं टुकड़ों में बंटा हुआ हूं? मेरे चारों ओर सब कुछ टुकड़ों में बंटा हुआ है। समय भी... मैं भटक रहा हूं, टूटा हुआ - किन युगों में?
वर्तमान और अतीत के बीच व्याकुल मन से भटकते हुए ज़ाकिर आधुनिक पाकिस्तान की उथल-पुथल को शियाओं की पराजय, उत्पीड़न और सहनशीलता के अनुभव के संदर्भ में देखने का प्रयास करता है, लेकिन उसके सामने बस यही छवि उभरती है कि उसके आसपास का शहर कूफ़ा है, वही शहर जिसने इमाम हुसैन के साथ विश्वासघात किया था। (आजकल पाकिस्तान में शियाओं को निशाना बनाकर हत्याएं की जा रही हैं, यह बात इस अंश की विडंबना को और बढ़ा देती है।) वह सुनसान गलियों में भटकता रहता है, एक ऐसी मस्जिद में नमाज़ अदा करता है जहाँ कोई और नमाज़ी नहीं होता, और उसे चेतावनी दी जाती है: "मत बोलो, कहीं पहचान न लिया जाए।" जब कोई व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, तो उसकी ज़िम्मेदारी क्या है? ज़ाकिर और उसके दोस्त कैफ़े में हार से पहले ही हार मानकर बैठे हैं। फिर भी हार पूरी तरह से नहीं होती, और आत्मनिरीक्षण शायद सच्चे आत्म-विश्लेषण और आशा की ओर ले जा सकता है। जैसा कि ज़ाकिर समझाते हैं:

बात ऐसी है, इरफान: हार भी एक तरह का दायित्व है। लेकिन आज इस देश में सब एक-दूसरे पर दोष मढ़ रहे हैं, और समय के साथ ये और भी बढ़ता जाएगा। हर कोई यह साबित करने की कोशिश कर रहा है, और करता रहेगा, कि वह इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं है। मुझे लगा कि किसी को तो इस दायित्व को निभाना ही चाहिए।
हुसैन ने बस्ती पर कई वर्षों तक काम किया और अंततः यह उपन्यास 1979 में प्रकाशित हुआ। पाकिस्तान में व्यापक रूप से पढ़ा और सराहा जाने वाला यह उपन्यास काफी विवादों में भी घिरा रहा। विशेष रूप से, साहित्य की राजनीतिक सक्रियतावादी अवधारणा से जुड़े आलोचक ज़ाकिर की अप्रभावीता से निराश थे, उनका कहना था कि पुस्तक में कोई स्पष्ट राजनीतिक परिप्रेक्ष्य या समाधान नहीं है, जबकि यही तो इसका उद्देश्य था। हुसैन भविष्यवाणियां करने, आदेश देने या नियम-कानून थोपने से बचते हैं। हुसैन की उत्कृष्ट अनुवादक फ्रांसिस डब्ल्यू. प्रिचेट के अनुसार, पुस्तक के अन्य आलोचकों ने शिकायत की कि उपन्यास उनकी संस्कृति की "नकारात्मक छवि" प्रस्तुत करता है, "उदासी का भाव" पैदा करता है। लेकिन प्रिचेट ने समझदारी से कहा है, "निश्चित रूप से कोई भी बुद्धिमान पाठक इस पुस्तक से आधुनिक पाकिस्तान का एक निश्चित, संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करने की अपेक्षा नहीं करेगा।" अंत में, उपन्यास के अपरंपरागत स्वरूप के कारण कुछ रूढ़िवादी आलोचकों ने यह सवाल उठाया कि क्या यह वास्तव में एक उपन्यास है। पाकिस्तान और वास्तव में दुनिया भर के पाठकों के लिए बस्ती की चुनौती यह है कि इसे इतिहास की दासी या किसी विचारधारा (चाहे राजनीतिक हो या सौंदर्यवादी) के सेवक के रूप में न पढ़ा जाए, बल्कि एक उपन्यास के रूप में पढ़ा जाए, जो असाधारण कुशलता से विभिन्न कथा विधाओं को मिलाकर एक ऐसे संकट का वर्णन करता है जो आध्यात्मिक और सार्वभौमिक होने के साथ-साथ राष्ट्रीय भी है। महफूज़ ने यूरोपीय उपन्यास के प्रभाव को अरबी मक़ामा जैसी स्वदेशी परंपराओं के साथ मिलाकर एक ऐसा ढांचा तैयार किया जिसे उन्होंने "अपना खुद का सांचा" कहा, और हुसैन ने भी कुछ ऐसा ही किया है। उपन्यास के प्रति उनका दृष्टिकोण मिलान कुंडेरा के दृष्टिकोण के भी करीब है, जिनके अनुसार उपन्यास "स्वयं को केवल उसी बात की सेवा में समर्पित करता है जो केवल उपन्यास ही कह सकता है।"
बस्ती का अंत एक नाटकीय और अस्पष्ट घोषणा के साथ होता है। दोस्तों के समूह में से एक अफजल सबको चुप रहने को कहता है। फिर वह फुसफुसाता है, "संकेत हमेशा ठीक इसी समय आते हैं... यही संकेत का समय है।" यह संकेत क्या होगा,

क्या वास्तव में यह प्रकट होगा—ये प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं। उपन्यास का अंत खुला है। पाठक एक अनिश्चित स्थिति में रह जाता है, एक ऐसा अनिश्चितता जो इसके कई पन्नों में व्याप्त भय को प्रतिबिंबित करता है, लेकिन साथ ही साथ दूर से ही सही, उस प्रश्न पूछने, उस दुनिया के बारे में जानने की चाहत और प्रतीक्षा के अनुभव को भी याद दिलाता है जिसे इसके शुरुआती चमकदार पन्नों में खूबसूरती से चित्रित किया गया है। एक अर्थ में बस्ती स्वयं ही संकेत है, या कम से कम एक संकेत की संभावना का संकेत है, ठीक वैसे ही जैसे जाकिर को रहस्योद्घाटन की संभावना में विश्वास बनाए रखते हुए दिखाया गया है, एक झिलमिलाती निकटता जो हमारी पकड़ से दूर रहती है, फिर भी हमारी पहुँच के भीतर मंडराती रहती है।
— आसिफ फर्रुखी

□□□□□

एक
जब दुनिया बिल्कुल नई थी, जब आसमान साफ था और धरती अभी तक मैली नहीं हुई थी, जब सदियों से पेड़ सांस ले रहे थे और युगों-युगों से पक्षियों की आवाज़ में बातें कर रहे थे, तब वह चारों ओर देखकर कितना चकित था कि सब कुछ इतना नया होते हुए भी इतना पुराना लग रहा था। नीलकंठ, कठफोड़वा, मोर, कबूतर, गिलहरी, तोते—ऐसा लगता था मानो वे सब उसी की उम्र के हों, फिर भी युगों के रहस्य अपने साथ लिए घूम रहे हों। मोरों की आवाज़ें रूपनगर के जंगल से नहीं, बल्कि वृंदावन से आती हुई प्रतीत होती थीं। जब एक छोटा कठफोड़वा उड़ते हुए एक ऊंचे नीम के पेड़ पर रुका, तो ऐसा लगा मानो वह अभी-अभी शीबा की रानी के महल में एक पत्र पहुंचाकर सुलेमान के महल की ओर लौट रहा हो। जब एक गिलहरी छतों पर दौड़ती हुई अचानक अपनी पूंछ पर बैठ गई और उसे देखकर चहचहाने लगी, तो वह उसे देखता रह गया और आश्चर्य से सोचने लगा कि उसकी पीठ पर बनी काली धारियां रामचंदर जी की उंगलियों के निशान थे। और हाथी तो आश्चर्यों का संसार था। जब वह प्रवेश कक्ष में खड़ा था और उसने दूर से एक हाथी को आते देखा, तो वह हिलते हुए पहाड़ जैसा प्रतीत हुआ। उसकी लंबी सूंड, पंखे की तरह लहराते विशाल कान, तलवार की तरह बाहर निकले हुए दो सफेद दांत—यह सब देखकर वह अचंभित होकर अंदर भागा और सीधे बी अम्मा के पास गया।
“बी अम्मा, क्या हाथी कभी उड़ते थे?”
“क्या, तुम पागल हो गए हो?”
“भगत जी कह रहे थे।”
“वाह, भगत जी के तो दिमाग में पत्थर भरे हैं! सोचो, इतना विशाल और भारी जानवर हवा में कैसे उड़ सकता है?”
“बी अम्मा, हाथी कैसे पैदा होते हैं?”
“और कैसे? उनकी माताओं ने उन्हें जन्म दिया, और वे वहीं थे।”
“नहीं, बी अम्मा, हाथी अंडों से निकलते हैं।”
“क्या! क्या तुमने अपना दिमाग आराम करने के लिए छोड़ दिया है?”

“भगत जी कह रहे थे।”
“उस बेचारे भगत का दिमाग खराब हो गया है। इतना बड़ा जानवर, हाथी—मानो वो अंडे से निकलेगा! निकलने की बात ही छोड़ो—अंडे में समाएगा कैसे?”
लेकिन उन्हें भगत जी के ज्ञान पर पूरा भरोसा था। गले में जनेऊ, माथे पर जातिचिह्न और सिर पर एक लट छोड़कर पूरा मुंडाए भगत जी अपनी छोटी सी दुकान में बैठकर मसाले बेचते और रामायण एवं महाभारत की ज्ञानवर्धक कहानियाँ सुनाते थे। बच्चे पुकारते, “भगत जी, एक पैसे का नमक! भगत जी, दो पैसे की भूरी चीनी!”
“बच्चों, हंगामा मत करो! धैर्य रखो।” बोलते-बोलते उन्होंने नमक तोला, भूरी चीनी पैक की और फिर कहानी वहीं से आगे बढ़ाई जहाँ उन्होंने छोड़ी थी। “बच्चों, जब ब्रह्माजी ने यह देखा, तो उन्होंने शेष से कहा, ‘देखो, शेष, इन दिनों पृथ्वी बहुत अस्थिर है। तुम इसे सहारा दो।’ शेष ने उत्तर दिया, ‘गुरुजी, इसे उठाकर मेरे फन पर रख दीजिए, तब यह स्थिर हो जाएगी।’ ब्रह्माजी ने कहा, ‘शेष, पृथ्वी के भीतर जाओ।’ शेष ने पृथ्वी में एक छेद देखा। वह उसमें प्रवेश कर गया। पृथ्वी के भीतर जाकर उसने अपना फन फैलाया और पृथ्वी को अपने फन पर टिका दिया। जब कछुए ने यह देखा, तो वह चिंतित हो गया, क्योंकि शेष की पूंछ के नीचे केवल पानी था। वह शेष की पूंछ के नीचे गया और उसे सहारा दिया। अतः, बच्चों, पृथ्वी शेषजी के फन पर टिकी है। शेषजी कछुए की पीठ पर टिके हैं। जब कछुआ हिलता है, तो शेषजी कांपते हैं। जब शेषजी कांपते हैं, तो पृथ्वी कांपती है और भूकंप आता है।”
लेकिन अब्बा जान ने भूकंपों का बिल्कुल अलग कारण बताया। हकीम बंदे अली और मुसय्यब हुसैन रोज़ आते और उस बड़े कमरे में बैठते—वह कमरा जिसके बीचोंबीच झालरदार पंखा लटका रहता था, और जिसकी ऊँची छत के चारों ओर छज्जा बना रहता था जहाँ जंगली कबूतरों, फाख्ताओं और चिड़ियों ने अपने घोंसले बना रखे थे। वे अब्बा जान से कितने कठिन प्रश्न पूछते थे! और अब्बा जान बिना किसी संकोच के कुरान की आयतें सुनाते और पैगंबर के वचन बताते और हर प्रश्न का उत्तर देते।
“मौलाना! परमेश्वर ने पृथ्वी की रचना कैसे की?”
थोड़ा चिंतन करने के बाद उत्तर। जाबिर बिन अब्दुल्ला अंसारी ने पूछा, “हे अल्लाह, मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान हों—उन्होंने पृथ्वी को किस पदार्थ से बनाया?” अल्लाह के नबी ने उत्तर दिया, “समुद्र के विस्तार से।”

फिर उन्होंने पूछा, “उन्होंने समुद्र का विस्तार कैसे किया?” उन्होंने उत्तर दिया, “लहरों से।” फिर उन्होंने पूछा, “लहरें कहाँ से आईं?” उन्होंने उत्तर दिया, “पानी से।” फिर उन्होंने पूछा, “पानी कहाँ से आया?” उन्होंने उत्तर दिया, “एक मोती से।” फिर उन्होंने पूछा, “वह मोती कहाँ से आया?” उन्होंने उत्तर दिया, “अंधकार से।” तब जाबिर बिन अब्दुल्ला अंसारी ने कहा, “हे अल्लाह के नबी, आपने सत्य कहा।”
“मौलाना, पृथ्वी किस पर टिकी है?”
एक बार फिर चिंतन का क्षण। फिर उसी सहजता और शालीनता के साथ उत्तर। प्रश्नकर्ता ने पूछा, ‘हे प्रभु, मेरे माता-पिता आप पर बलिदान हों—पृथ्वी को कौन स्थिर रखता है?’ उन्होंने उत्तर दिया, ‘काफ पर्वत।’ फिर उन्होंने पूछा, ‘काफ पर्वत के चारों ओर क्या है?’ उन्होंने उत्तर दिया, ‘सात पृथ्वी।’ फिर उन्होंने पूछा, ‘सात पृथ्वी के चारों ओर क्या है?’ उन्होंने उत्तर दिया, ‘एक सर्प।’ फिर उन्होंने पूछा, ‘सर्प के चारों ओर क्या है?’ उन्होंने उत्तर दिया, ‘एक सर्प।’ फिर उन्होंने पूछा, ‘पृथ्वी के नीचे क्या है?’ उन्होंने उत्तर दिया, ‘चार हजार सींगों वाली एक गाय, जिसके एक सींग से दूसरे सींग की दूरी पाँच सौ वर्ष की यात्रा है। सात पृथ्वी उसके दो सींगों पर टिकी हैं। गाय के नथुनों के पास एक मच्छर बैठा है, और उसके डर से वह हिल नहीं सकती। वह केवल अपने सींग बदल सकती है, और इससे भूकंप आता है।’ फिर उन्होंने पूछा, ‘वह किस पर खड़ी है?’ उन्होंने उत्तर दिया, ‘एक मछली की पीठ पर।’ तब प्रश्नकर्ता आश्वस्त हो गया, और उसने कहा, ‘आपने सही कहा है।’ हे ईश्वर के पैगंबर, सत्य!
अब्बा जान चुप हो गए। फिर उन्होंने कहा, “हकीम साहब! यह सारा संसार एक गाय की नाक के पास बैठे मच्छर पर आकर टिक गया है। अगर मच्छर चला जाए तो संसार कहाँ रह जाएगा? इसलिए हम मच्छर की दया और प्रसन्नता पर जीते हैं, पर हमें इसका एहसास नहीं होता और हम घमंडी हैं।”
हर दिन ये बातें, हर दिन ये कहानियां, मानो भगत जी और अब्बा जान मिलकर उसे ब्रह्मांड का रहस्य समझा रहे हों। जैसे-जैसे वह इन बातों को सुनता गया, उसके मन में संसार की एक छवि उभरने लगी। संसार का जन्म तो हुआ, लेकिन उसके बाद क्या हुआ? माता हव्वा बहुत रोईं। उनके आंसुओं से मेहंदी और आंखों का रंग बना। लेकिन उनके गर्भ से कैन और हाबिल, दो पुत्र, और एक पुत्री, इक़लीमा, जो आंशिक रूप से सूर्य और आंशिक रूप से चंद्रमा के समान थी, का

जन्म हुआ। पिता ने इस पुत्री का विवाह छोटे पुत्र हाबिल से किया। यह देखकर बड़ा पुत्र कैन क्रोधित हो गया और उसने एक पत्थर उठाकर हाबिल पर प्रहार किया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। फिर कैन उठा और हाबिल के शव को अपने कंधे पर उठाकर पृथ्वी का चक्कर लगाने लगा। और जिन स्थानों पर हाबिल का रक्त गिरा, वहां की पृथ्वी क्षारीय हो गई। तब कैन सोचने लगा कि वह अपने भाई के शव का क्या करे, क्योंकि उसके कंधे पर शव का बोझ भारी हो गया था। और ऐसा हुआ कि उसने दो कौवों को लड़ते देखा, और उनमें से एक ने दूसरे को मार डाला। मारने वाले ने अपनी चोंच से ज़मीन में एक गड्ढा खोदा, फिर उसमें मरे हुए कौवे को दफना दिया और जाकर एक पेड़ पर बैठ गया। तब कैन विलाप करने लगा, “हाय मेरी कितनी अभागी है—मैं तो एक कौवे के बराबर भी अपने भाई को दफना नहीं सका!” तब भाई ने कौवे की तरह अपने भाई को दफना दिया। और वह धरती पर बनी पहली कब्र थी, और वह पहला मानव रक्त था जो मनुष्य के हाथों बहाया गया, और वह पहला भाई था जिसे उसके भाई ने मार डाला। उसने पीले पड़ चुके पन्नों वाली किताब को बंद किया और उसे अब्बा जान की किताबों की अलमारी में वहीं रख दिया जहाँ से उसने उसे उठाया था; फिर वह बी अम्मा के पास चला गया।
“हे भगवान! क्या हाबिल कैन का भाई था?”
“जी हां, प्यारे बेटे। हाबिल, कैन का भाई था।”
तो फिर कैन ने हाबिल की हत्या क्यों की?
"उसके खून पर लानत हो—वह तो पानी से भी पतला था!"
यह सुनकर वह आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन अब उसके आश्चर्य में थोड़ा सा भय भी समा गया था। आश्चर्य से उसके अनुभवों में भय की पहली लहर दौड़ गई थी। वह उठा और बड़े कमरे में गया, जहाँ हकीम बंदे अली और मुसय्यब हुसैन हमेशा की तरह बैठे थे, अब्बा जान से प्रश्न पूछ रहे थे और उत्तर सुन रहे थे। लेकिन अब्बा जान ने संसार की शुरुआत से छलांग लगाई थी और संसार के अंत तक पहुँच चुके थे।
“मौलाना, प्रलय कब आएगी?”
जब मच्छर मर जाएगा, तब गाय भय से मुक्त हो जाएगी।
“मच्छर कब मरेंगे, और गाय कब भय से मुक्त होगी?”
जब सूरज पश्चिम से उगता है।
पश्चिम दिशा से सूर्योदय कब होगा?
जब मुर्गी बांग देती है और मुर्गा चुप रहता है।

मुर्गी कब बांग देगी और मुर्गा कब चुप रहेगा?
जब बोलने वाले चुप हो जाते हैं, तब जूतों के फीते बोलने लगते हैं।
“बोलने की क्षमता रखने वाले कब चुप हो जाएंगे, और जूते के फीते कब बोलने लगेंगे?”
जब शासक क्रूर हो जाते हैं, और जनता धूल चाटने लगती है।
एक “कब” के बाद दूसरा “कब”, दूसरे “कब” के बाद तीसरा “कब”। “कब” का एक अजीब सा जाल! वो “कब” जो बीत चुके, वो “कब” जो अभी आने बाकी। भगत जी को कितने “कब” याद आए, अब्बा जान की कल्पना में कितने “कब” प्रकाशित हुए! दुनिया “कब” की एक अंतहीन श्रृंखला लगती थी। कब, कब और कब—

•

लेकिन अब कल्पना का धागा अचानक टूट गया। बाहर से आ रही नारों की आवाज अचानक कमरे में गूंजी और उसकी यादों को चारों ओर बिखेर दिया।
वह उठा और खिड़की से बाहर देखा। सामने के मैदान पर नज़र डालते हुए, जो कुछ दिनों से रैली का मैदान बना हुआ था, उसने अनगिनत लोगों को एक साथ सटा हुआ देखा। रैली पूरे जोश में थी और अचानक लोग नारे लगाने लगे थे। खिड़की बंद करके वह कुर्सी पर बैठ गया और एक किताब के पन्ने पलटने लगा और उसमें से कुछ अंश पढ़ने लगा। आख़िरकार, उसे सुबह के अपने भाषण की तैयारी करनी थी। लेकिन खिड़की बंद होने के बावजूद, नारों की आवाज़ अभी भी सुनाई दे रही थी। उसने अपनी घड़ी देखी: ग्यारह बज रहे थे। रैली अभी शुरू ही हुई है, पता नहीं कब खत्म होगी। क्या पता कल की तरह ही परेशानी हो और रात की नींद उड़ जाए! आजकल रैलियाँ ऐसी ही होती हैं। वे नारों से शुरू होती हैं और गोलियों से खत्म होती हैं। लेकिन यह अजीब था; वह खुद पर आश्चर्य करने लगा। बाहर जितना शोर बढ़ता है, उतना ही मैं अपने भीतर सिमटता जाता हूँ। कितनी ही यादें मेरे सामने आ जाती हैं। पुरानी और बीते ज़माने की कहानियाँ, खोए हुए और बिखरे हुए विचार। एक के बाद एक यादें आपस में उलझती हुई, मानो किसी जंगल में घूम रही हों। मेरी यादें ही मेरा जंगल हैं। तो जंगल कहाँ से शुरू होता है? नहीं, मैं कहाँ से शुरू होता हूँ? और फिर वह जंगल में था। मानो वह जंगल के किनारे तक पहुँचना चाहता हो; मानो वह अपनी शुरुआत की तलाश कर रहा हो। जैसे- जैसे वह अंधेरे में आगे बढ़ता गया और उसे एक उजाला दिखाई दिया, वह रुका, लेकिन फिर आगे बढ़ गया, क्योंकि वह उस पल तक पहुँचना चाहता था जब उसकी चेतना ने पहली बार अपनी आँखें खोली थीं। लेकिन वह उस पल को पकड़ नहीं सका।

जब उसने अपनी उंगली किसी याद पर रखी, तो दूसरी यादों का घना समूह उसके साथ बहता चला आया। फिर वह रूपनगर में हुई पहली घटना को याद करने के लिए आगे बढ़ा।

•

लेकिन उस कस्बे में हर गतिविधि सदियों से चलती हुई प्रतीत होती थी। रातों- दिनों का काफिला वहाँ इतनी धीमी गति से चलता था मानो वह रुका हुआ हो। जो भी कहीं आकर ठहरता, वहीं स्थिर हो जाता। जब पहली बार बिजली के खंभे आए और सड़कों के किनारे जगह-जगह लगाए गए, तो वह एक क्रांतिकारी घटना प्रतीत हुई! पूरे रूपनगर में एक रोमांच दौड़ गया। लोग अपनी राह रोककर वहाँ पड़े ऊँचे लोहे के खंभों को आश्चर्य से देखने लगे।
“तो क्या रूपनगर में बिजली आने वाली है?”
“बिल्कुल सही।”
"क्या मैं अपनी जान की कसम खाऊं?"
मैं तुम्हारी जिंदगी की कसम खाता हूँ।
दिन बीतते गए, जिज्ञासा कम होती गई। खंभों पर धूल की परतें जमती गईं। धीरे- धीरे वे उतने ही धूल भरे हो गए जितने पत्थरों के ढेर, जो कभी समृद्ध समय में सड़कों की मरम्मत के लिए लाए गए थे—लेकिन फिर भुला दिए गए थे और रूपनगर के धूल से भरे परिदृश्य का हिस्सा बन गए थे। अब खंभे भी धूल से भरे परिदृश्य का हिस्सा बन गए थे। ऐसा लगता था मानो वे हमेशा से वहीं पड़े रहे हों, और हमेशा वहीं पड़े रहेंगे। बिजली का मामला तो अतीत की बात हो चुका था। हर दिन शाम होते ही, दीपक जलाने वाला अपने कंधे पर सीढ़ी और हाथ में तेल का डिब्बा लिए आता और लकड़ी के खंभों पर लगे या ऊंची दीवारों से लटके विभिन्न लालटेनों को जलाता फिरता। “अरे, वासंती! शाम हो गई है, दीपक जलाओ!” अपने सांवले रंग, ताज़े युवा चेहरे, अस्त-व्यस्त साड़ी, माथे पर बिंदी, नंगे पैर थप-थप करते हुए वह दरवाजे पर आती। उसने दीवार में बने आले में रखे दीपक में बाती डाली, उसे जलाया, मुड़ी और तुरंत घर के अंदर चली गई, उसकी तरफ देखे बिना, जबकि वह अपने दरवाजे पर खड़ा उसे घूर रहा था। छोटे बाज़ार में, भगत जी ने गंदे दीये के स्टैंड पर रखे दीपक में सरसों के तेल की एक बूंद डाली, उसे जलाया और सोचा कि उनकी दुकान रोशन हो गई है। भगत जी की दुकान के पास नाले में, मटरू ने एक मशाल जलाई और उसे अपनी थाली के पास ज़मीन में गाड़ दिया, और कुछ ही सेकंड बाद चिल्लाया, "अदरक के चिप्स!" लेकिन सबसे

तेज़ रोशनी लाला हरदयाल सुनार की दुकान में थी, जहाँ छत से एक दीपक लटका हुआ था, जिसकी रोशनी दुकान से आगे तक पहुँच रही थी और गली में एक चमक बिखेर रही थी। कस्बे में, यही रोशनी का एकमात्र स्रोत था। और यह भी कब तक? एक-एक करके दुकानें बंद होती गईं। दरवाजों के पास बने आलों में टिमटिमाते दीपक मंद पड़ते गए और अंत में बुझ गए। फिर केवल कुछ गलियों के कोनों पर लकड़ी के खंभों पर लगे लालटेन ही टिमटिमा रहे थे। बाकी सब जगह अंधेरा ही अंधेरा था। फिर भी, उस अंधेरे में भी, खुली आँखों ने बहुत कुछ देखा।
“बी अम्मा! पिछले गुरुवार को शाम ढलते ही ये घटना घटी। जब मैं गाँव के गिरजाघर के पास से गुज़री, तो मुझे लगा जैसे कोई औरत रो रही हो। मैंने इधर-उधर देखा, कोई नहीं था। गिरजाघर के दरवाज़े के पास एक काली बिल्ली बैठी थी। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा! मैंने बिल्ली को भगा दिया। जब मैं आगे बढ़ी, तो अरे, मैंने क्या देखा! नीम के पेड़ के पास उस बुढ़िया के घर की दीवार पर वही बिल्ली बैठी थी! मैंने उसे फिर भगा दिया। दीवार से वो कूदकर अंदर चली गई। जब मैं आगे बढ़ी और ऊँचे कुएँ वाली गली से बाहर निकली—अरे, बी अम्मा, यकीन मानिए, वही बिल्ली फिर से थी! वो लाला हरदयाल की छत पर बैठी थी, औरतों की तरह रो रही थी। मैं तो एकदम डर गई थी!”
“भगवान हम पर दया करें,” बी अम्मा ने आशंका से कहा और वह चुप हो गईं।
लेकिन कोई रहम नहीं दिखाया गया। दो-तीन दिन बाद शरीफ़ान एक और खबर लेकर आई: “अरे, बी अम्मा! पूरे मोहल्ले में इतने सारे चूहे मर रहे हैं!”
“सचमुच?”
"हां, जब मैं कूड़े के ढेर के पास से गुजरा, तो मैंने उन्हें ढेरों में मृत पड़े देखा।"
पहले चूहे मरने लगे, फिर लोग मरने लगे। बाहर से "राम नाम सत्य है" का जाप सुनाई दे रहा था।
"ओह शरीफान, बस देखो और जानो कि कौन मर गया है।"
“ Amma, Pyare Lal’s son Jagdish has died.”“ अम्मा, प्यारे लाल का बेटा जगदीश मर गया है।”
“हा हा! वह तो एक मजबूत और स्वस्थ युवक था, उसकी मौत कैसे हुई?”
“बी अम्मा, उनके शरीर पर फोड़े निकल आए और कुछ ही घंटों में उनकी मृत्यु हो गई, बस यूं ही।”
“फुंसी? तुम नीच हो, क्या कह रहे हो?”

“ओह हाँ, बी अम्मा! मैं सच कह रहा हूँ। महामारी—”
बस करो, चुप रहो! लोगों से भरे घर में तुम्हें उस विनाशकारी बीमारी का नाम नहीं लेना चाहिए।
जगदीश के शरीर पर, फिर पंडित दयाराम के शरीर पर, फिर मिश्रा जी के शरीर पर फोड़े निकलने लगे। फिर वे दूसरे लोगों के शरीर पर भी निकलने लगे। जनाज़े एक घर से निकले, फिर दूसरे घर से, फिर एक के बाद एक घर से। बी अम्मा और शरीफ़ान ने मिलकर उनकी गिनती की, दस तक। फिर वे गिनती भूल गईं। एक ही दिन में इतने सारे घरों से जनाज़े निकले! जैसे-जैसे शाम ढलती गई, सड़कें और गलियाँ सुनसान होती गईं। कदमों की आहट नहीं, हँसते-बोलते लोगों की आवाज़ नहीं। बाकी सब की तो बात ही छोड़िए, आज तो चिरंजी और उनका हारमोनियम भी खामोश हो गया था—चिरंजी जो सर्दी-गर्मी, बरसात के मौसम में हर रात छत पर हारमोनियम लेकर बैठते और गाते थे।
“लैला, लैला, मैंने जंगल में पुकारा,
लैला मेरे दिल में बसती है।
जब सुबह हुई, तो कस्बे का माहौल पूरी तरह बदल गया था। कहीं-कहीं एक-आध दुकान खुली थी, बाकी सब बंद थीं। कुछ घरों में ताला लग चुका था, कुछ में अब लग रहा था। एक घर के सामने बैलगाड़ी खड़ी थी, दूसरे के सामने घोड़ागाड़ी। लोग जा रहे थे, कस्बा खाली हो रहा था। कस्बा दोनों तरफ से खाली हो रहा था: कुछ लोग कस्बे को छोड़कर जा रहे थे, कुछ लोग दुनिया को छोड़कर।
“बी अम्मा, और भी हिंदू मर रहे हैं।”
"बीबी, जब हैजा आता है तो मुसलमान मरते हैं, जब महामारी आती है तो हिंदू मरते हैं।"
लेकिन फिर महामारी ने हिंदू और मुसलमान के बीच भेद करना बंद कर दिया। कलमा की धुन पर और भी अधिक जनाजे निकलने लगे।
“बहू! जाकिर को घर के अंदर ही रखो, वो लगातार बाहर जा रहा है।”
“अम्मा, लड़का मेरी बात नहीं मानता।”
"ठीक है, अगर वह और कहीं देखने गया तो मैं उसकी टांगें तोड़ दूंगा!"
लेकिन किसी भी धमकी का उस पर कोई असर नहीं हुआ। "राम नाम सत्य" की आवाज़ आई और वह दौड़कर सामने के दरवाजे की ओर भागा। जनाज़े के जुलूस के पीछे शोक संतप्त महिलाएं चिता के लिए लकड़ी ले जा रही थीं और ज़ोर-ज़ोर से विलाप कर

रही थीं। उनके जाने के बाद, गली कितनी सुनसान लग रही थी। शरीफ़ान दौड़ा और उसे पकड़कर अंदर ले आया।
एक बैलगाड़ी खड़खड़ाती हुई आई और दरवाजे के सामने आकर रुक गई।
"ओह शरीफान, जरा देखो तो सही, इस विपत्तिपूर्ण समय में कौन-कौन से मेहमान आए हैं।"
शरीफ़ान गई और लौट आई। “बी अम्मा, दानपुर से एक बैलगाड़ी भेजी गई है और संदेश भेजा गया है कि वह सबको बाहर ले आए।”
बी अम्मा सीधे उस बड़े कमरे में गईं, जहाँ अब्बा जान दिन-प्रतिदिन सबसे अलग, अपनी प्रार्थना की चटाई पर बैठे रहते थे।
“नासिर अली, मेरे बेटे! तुम्हारे चाचा ने बैलगाड़ी भेजी है।”
अब्बा जान ने विचार किया। फिर उन्होंने कहा, “बी अम्मा, गौरवशाली और महान पैगंबर ने कहा है, ‘जो लोग मृत्यु से भागते हैं, वे मृत्यु के सिवा किसी और चीज की ओर नहीं भागते।’”
बैलगाड़ी खाली आई थी; खाली ही वापस चली गई। और अब्बा जान ने एक चीनी मिट्टी के प्याले में केसर घोला, उसमें एक शुद्ध कलम डुबोई, और मोटे कागज पर स्पष्ट अक्षरों में लिखा:
मेरे पास पाँच ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनके द्वारा विनाशकारी रोगों की शक्ति को समाप्त किया जा सकता है: वे हैं मुहम्मद, फातिमा, हसन, हुसैन और अली, अली, अली।
वह सामने के दरवाजे पर गया और उस पर यह कागज चिपकाया, फिर वापस आया और अपनी प्रार्थना की चटाई पर बैठ गया।
जब डॉक्टर जोशी अपने क्लिनिक से निकलकर किसी के घर जाते थे, तो यह एक खास घटना होती थी। लेकिन अब डॉक्टर साहब, गले में स्टेथोस्कोप लटकाए, मोहल्ले में हर समय दिखाई देते थे, कभी इस गली में, कभी उस गली में। डॉक्टर साहब रूपनगर के मसीहा थे। लोग कहते थे कि दिल्ली के बड़े-बड़े अस्पतालों में भी कोई डॉक्टर उनकी बराबरी नहीं कर सकता। लेकिन अब मसीहा की शक्ति क्षीण हो रही थी, मृत्यु की शक्ति बढ़ती जा रही थी। डॉक्टर साहब की पत्नी के शरीर पर भी फोड़े निकल आए और उन्होंने डॉक्टर की आंखों के सामने ही अंतिम सांस ली। "डॉक्टर की पत्नी भी मर चुकी है।"
"हाँ उसके पास है।"

"अरे, सच बताओ!"
“जी हां, बी अम्मा! डॉक्टर जोशी ने ऐसा ही कहा है।”
“ईश्वर का शुक्र है।” और बी अम्मा की आँखों में फिर से आँसू भर आए। जब उन्होंने प्रणाम करते हुए अपना सिर उठाया, तो उनका झुर्रीदार चेहरा अभी भी आँसुओं से भीगा हुआ था।

•

जैसे ही माल से लदी बैलगाड़ियाँ चली गईं, वैसे ही वे फिर से लदी और भरी हुई वापस आ गईं। थोड़ी-थोड़ी देर में एक नई घोड़ागाड़ी चरमराती हुई आती और एक और बंद घर खुल जाता। बंद घर खुलते ही, पुराने फटे-पुराने कपड़े और कंबल घरों से बाहर निकाले जाते, सड़क पर ढेर लगाकर जला दिए जाते।
अब शाम हो चुकी थी। वासंती के घर के आंगन से दूर से बड़े-छोटे बर्तनों की खड़खड़ाहट साफ सुनाई दे रही थी। मंदिर की घंटियों की आवाज के साथ ही एक जानी-पहचानी आवाज आई: “वसान्टी! शाम हो गई है, दीपक जलाओ।” वासंती नंगे पैर दरवाजे तक आई, ठीक उसी तरह, एक नए दीपक में नई बाती डाली और उसे जला दिया। वह अंदर जाने ही वाली थी कि वह सड़क पार करके उसके पास आया और बोला: “वसान्टी!”
वासंती ने मुड़कर उसे देखा और मुस्कुराई।
तो तुम वापस आ गए?
"ज़रूर।"
वह पास आया। उसने धीरे से उसकी नंगी बाहों को छुआ और कोमल, मधुर स्वर में कहा, "चलो, खेलते हैं।"
वासंती हिचकिचाई। फिर अचानक वह भड़क उठी: "चले जाओ, तुम मुस्लिम बदमाश!" और घर के अंदर भाग गई।
वासंती से डांट खाने के बाद, वह आनंद से मदहोश होकर अपने घर लौट आया, और काफी देर तक उसे अपनी उंगलियों तक एक मधुर मिठास का अनुभव होता रहा। वीरान पड़े घरों में फिर से आबादी छा गई, और छोटे बाज़ार में वही चहल-पहल थी। फिर भी, कहीं-कहीं खाली जगहें दिखाई दे रही थीं, और कहीं-कहीं चेहरे गायब थे। पंडित हरदयाल अपने घर की छत पर नज़र नहीं आ रहे थे, न ही मिश्रा जी अपनी दुकान के कुशन पर। और जगदीश कहाँ था, जो हर शाम चिरंजी की छत पर जाकर हारमोनियम बजाता था? कई हफ़्तों तक पंडित हरदयाल के बेटे सोहन का मुंडा सिर शोक का सूचक बना रहा। लेकिन धीरे-धीरे सोहन के सिर पर बाल फिर से उग आए,

और छोटे बाज़ार की खाली जगहें भरने लगीं। आखिरकार, वहाँ उतने ही लोग थे मानो कोई गायब ही न हो, और उतनी ही रौनक थी मानो कुछ हुआ ही न हो। चिरंजी की छत पर फिर से भीड़ जमा होने लगी। हारमोनियम आधी रात तक बजता रहा, और दूर-दूर तक गाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
"पूरी रात लैला लेटी रहती है।"
एक छिपे हुए दर्द को स्वीकार करना।
क्या दुख भी एक प्रियतम है?
हर कोई इसमें मग्न है!
“चिरांजी, कमीने, तुम तो वाकई भाग्यशाली हो!”
"क्यों?"
“खंभा तुम्हारे चबूतरे के ठीक बगल में लगा दिया गया है। अब, कमीने, तुम्हें बिजली की रोशनी में हारमोनियम बजाना पड़ेगा!”
सदियों से धूल से ढके पड़े खंभे अचानक खड़े हो गए। चलते-चलते लोग रुक गए, अपनी निगाहें उन ऊंचे खंभों पर उठाईं और आश्चर्य से उस नए प्रकाश की कल्पना करने लगे जो जल्द ही आने वाला था।
वे कहते हैं कि बिजली की बत्तियाँ बहुत तेज होती हैं।
"ऐसा लगता था मानो रात दिन में बदल गई हो।"
“वाह यार, ये अंग्रेज तो कमाल के हैं!”
लेकिन खंभे लगाने के बाद मजदूर फिर से नजरों से ओझल हो गए। दिन बीतते गए, महीने बीतते गए, फिर समय बस बीतता चला गया। धूल से ढके खंभे फिर से परिदृश्य का हिस्सा बन गए। वे ऐसे नहीं लगते थे मानो उन्हें लगाया गया हो, बल्कि मानो जमीन से उग आए हों। उड़ते हुए कभी-कभी कोई कबूतर या कठफोड़वा एक पल के लिए किसी खंभे पर बैठ जाता—लेकिन शायद उसकी लोहे जैसी सतह से घृणा करके पक्षी जल्दी ही उड़ जाता। अगर कोई चील आकर किसी खंभे पर बैठ जाती, तो वह काफी देर तक वहीं रहती। लेकिन चीलों को छतों की चौखटों पर बैठना ज्यादा पसंद था। जो भी चील आकर गांव के गिरजाघर की ऊंची चौखट पर बैठती, वह सदियों तक वहीं टिकी रहती। ऐसा लगता था मानो दुनिया खत्म हो जाएगी, लेकिन पक्षी फिर भी वहीं बैठा रहेगा। यह चौखट समय के साथ-साथ चीलों की बीट से भी पुरानी हो गई थी। लेकिन बड़े महल की कंगूरेदार दीवारें पुरानी होने से पहले ही तोड़ दी गईं। यह सब बंदरों की करतूत थी। जैसे चीलें हर चबूतरे पर नहीं

बैठतीं, वैसे ही बंदरों को भी हर छत पसंद नहीं आती। कस्बे के कुछ चबूतरे चीलों के लिए उपयुक्त थे, तो कुछ छतें बंदरों को भा गईं।
बंदरों का जीवन जीने का तरीका अजीब था। जब वे आते, तो लगातार आते रहते। जब वे जाते, तो इतनी खामोशी से जाते कि कर्बला के पास इमली के पेड़ों पर भी उनका कोई निशान नहीं बचता था—छतों की तो बात ही छोड़िए। छतें खाली थीं, दीवारें वीरान। केवल सबसे ऊपरी मंजिलों की टूटी हुई मुंडेरें ही इस बात की याद दिलाती थीं कि कभी ये छतें बंदरों के बसे हुए इलाके में थीं। और उस शाम क्या हुआ था? एक गली से गुजरते हुए, उसे लगा जैसे कोई उसके सिर के ऊपर से एक दीवार से दूसरी दीवार पर कूद गया हो। जब उसने ऊपर देखा, तो उसे बंदरों का एक झुंड एक दीवार से दूसरी दीवार पर जाता हुआ दिखाई दिया। "अरे, बंदर!" वह चिल्लाया, और उसका दिल धीरे-धीरे धड़कने लगा। और अगली सुबह जब वह उठा, तो घर के अंदर और बाहर दोनों जगह शोरगुल था। आंगन में जो कुछ भी बचा था, वह या तो टुकड़ों में टूट गया था या पूरी तरह गायब हो गया था। एक बंदर अम्मी का दुपट्टा उठाकर ले गया था और छत की रेलिंग पर बैठा था, दुपट्टे को अपने दांतों में पकड़े हुए उसे फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर रहा था।
पता नहीं था कि बंदर किस कस्बे या किस जंगल से आए थे। एक झुंड, दूसरा झुंड, एक के बाद एक झुंड। एक छत से दूसरी, दूसरी से तीसरी। तेज़ी से आंगन में कूदते, चीज़ें उठाते, एक मिनट यहाँ और अगले मिनट गायब। तेल बेचने वाला नानुआ, सबसे चंदा इकट्ठा करके अनाज और कच्ची भूरी चीनी का एक टुकड़ा खरीद लाया। वह साप्ताहिक बाज़ार गया; वहाँ के छोटे जलाशय में, जो बरसात के मौसम को छोड़कर साल भर सूखा रहता था, उसने अनाज फैलाया, उसके बीच में कच्ची भूरी चीनी का टुकड़ा रखा और पास में कुछ छोटी-छोटी छड़ें रख दीं। बंदर उछलते- कूदते आए और अनाज चट कर गए, अपने गाल भर लिए। वे चीनी के टुकड़े पर टूट पड़े। एक टुकड़ा, सौ बंदर। हंगामा शुरू हो गया। छड़ें तैयार थीं; जैसे ही उन्होंने उन्हें देखा, बंदरों ने छड़ें उठा लीं। जब भी कोई बंदर चीनी का टुकड़ा उठाता, एक छड़ी उसके सिर पर पड़ती।
बंदरों ने कई दिनों, कई हफ्तों तक हंगामा मचाया। रात में घात लगाकर हमले, लूटपाट और तोड़फोड़, अंत में आपस में गृहयुद्ध; और उसके बाद—वे गायब हो गए। छतें फिर से शांत हो गईं, छज्जे फिर से खाली हो गए। लेकिन जब बिजली आई, तो बंदर शहर में आ गए, उन्हें छतों और छज्जों पर देखा जा सकता था। बिजली के खंभे, मौसम की कठोरता को सहते हुए, दृश्य का हिस्सा बन गए थे; अब अचानक वे

फिर से आकर्षण का केंद्र बन गए। मजदूर अपने कंधों पर लंबी सीढ़ियाँ लिए दिखाई दिए। खंभों के शीर्ष पर लोहे की छड़ें लगाई गईं, और उन छड़ों पर सफेद सिरेमिक इंसुलेटर लगाए गए। पहले खंभे से दूसरे तक, दूसरे से तीसरे तक, तार बिछाए गए, और धीरे-धीरे गली-गली में तार सभी खंभों को जोड़ते गए।
वातावरण में एक नयापन महसूस किया जा सकता था, और पक्षियों को बैठने के लिए नए स्थान मिल गए थे। रूपनगर के पक्षी अब दीवारों और पेड़ों की शाखाओं तक ही सीमित नहीं थे। जब कौवे दीवारों पर बैठकर कांव-कांव करते-करते थक जाते, तो वे उड़कर तारों पर झूलने लगते। नीलकंठ, शमा पक्षी और स्विफ्ट पक्षी उड़ान के दौरान तार पर बैठकर आराम करने लगते।
पक्षियों की नकल करते हुए, एक बंदर छोटे बाज़ार की एक दीवार से कूदा और तारों पर झूलने लगा। अगले ही पल, वह धड़ाम से नीचे गिरा और ज़मीन पर लेट गया। एक तरफ से भगत जी और दूसरी तरफ से लाला मिठन लाल अपनी दुकानें छोड़कर दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे। वे अचरज और भय से मरते हुए बंदर को देखते रहे। वे चिल्लाए, “अरे, कोई पानी लाओ!” चंडी कुएँ की ओर दौड़ी, बाल्टी भरी, पानी लाई और पूरी बाल्टी भर पानी बंदर पर डाल दिया, लेकिन बंदर की आँखें बंद हो चुकी थीं और उसका शरीर बेजान हो गया था।
चारों दिशाओं से बंदर उमड़ पड़े और पास की मुंडेरें उनसे भर गईं: वे सड़क के बीचोंबीच पड़े अपने साथी के बेजान शरीर को घूर रहे थे और शोर मचा रहे थे। तभी गलियों और मोहल्लों से लोग दौड़ते हुए आए और मरे हुए बंदर को हैरानी से देखने लगे।
वह किस तार पर झूल रहा था?
“वो वाला।” चंडी ने सबसे ऊंचे तार की ओर इशारा किया।
“तो क्या बिजली आ गई है?”
"हां, वो आ गया है। जैसे ही कोई तार को छुएगा, उसका काम तमाम हो जाएगा।" अगले दिन एक बंदर फिर तारों पर कूदा और धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा और बेसुध हो गया। तब भगत जी और लाला मिठन लाल फिर उछलकर देखने गए, और चंडी फिर बाल्टी भर पानी लेकर दौड़ी, लेकिन बंदर उनकी आँखों के सामने ही ठंडा पड़ गया था।
बंदरों में फिर से हलचल मच गई। वे दूर की छतों से उछलते-कूदते हुए आए। उन्होंने सड़क के बीचोंबीच पड़े मृत बंदर को घूरकर देखा और जितना हो सके उतना शोर मचाया।

थके-हारे बंदर धीरे-धीरे चुप हो गए। उनमें से कई वापस जाने लगे थे, तभी एक बलवान, हट्टा-कट्टा बंदर दूर से दौड़ता हुआ पंडित हरदयाल की ऊँची छत पर आया। उसका चेहरा गुस्से से लाल था और उसके शरीर के बाल तीर की तरह खड़े हो गए थे। वह खंभे पर कूद पड़ा और उसे इतनी ज़ोर से हिलाया कि वह उखड़े हुए पेड़ की तरह डगमगाने लगा। फिर वह ऊपर चढ़ गया और पूरी ताकत से तारों पर झपटा। जैसे ही वह उन पर उतरा, वह गिर पड़ा। एक पल के लिए वह हवा में लटका रहा, फिर अधमरा होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। भगत जी, लाला मिठन लाल और चंडी, तीनों ने फिर से अपना कर्तव्य निभाया। जब उस पर पानी गिरा तो बंदर ने अपनी आँखें खोलीं, अपने हमदर्दों को बेबसी से देखा और आखिरी बार अपनी आँखें बंद कर लीं।
एक छत से दूसरी छत पर कूदते हुए बंदर आए। ऐसा लग रहा था कि वे सब गली में उतर आएंगे, लेकिन वे केवल छज्जों पर ही मंडराते रहे, चीखते-चिल्लाते रहे। फिर अचानक वे चुप हो गए, मानो किसी भय ने उन्हें जकड़ लिया हो। फिर दीवारें खाली होने लगीं।
शाम ढल रही थी। मोटा-ताज़ा बंदर अभी भी गली में पड़ा था। पास की दीवारों पर एक भी बंदर नहीं था। रूपनगर, जिसने अपने तीन बंदरों की बलि दी थी, बिजली के युग में प्रवेश कर चुका था, और बंदर इस कदर गायब हो गए थे कि हफ्तों तक किसी भी दीवार, छत या पेड़ पर एक भी बंदर नज़र नहीं आता था। दरअसल, काले मंदिर के पास स्थित बड़ा पीपल का पेड़ भी, जहाँ हर दिन, हर मौसम में बंदर एक शाखा से दूसरी शाखा पर उछलते-कूदते नज़र आते थे, एकदम शांत था।

•

रूपनगर का जंगली, निर्जन जंगल काले मंदिर से शुरू होता था। दीवारों और गुंबद पर इतनी फफूंदी जम गई थी और समय के साथ इतनी काली हो गई थी कि पूरा मंदिर बिल्कुल काला दिखता था। अंदर और बाहर सब कुछ खाली था, मानो सदियों से न तो शंख बजाया गया हो और न ही कोई पुजारी यहाँ आया हो। पीपल का पेड़ मंदिर जितना ऊँचा था और बंदर हमेशा उसकी शाखाओं पर झूलते रहते थे। सिवाय उन दिनों के जब कोई लंबा, काले मुँह वाला, रस्सी जैसी पूंछ वाला लंगूर दिखाई देता था, और उसे देखते ही सारे बंदर गायब हो जाते थे। काले मंदिर के आगे कर्बला था, जो दसवें दिन को छोड़कर पूरे साल वीरान पड़ा रहता था, मानो वही असली कर्बला हो। उससे थोड़ी दूरी पर एक टीला था, जिस पर इमारत के नाम पर सिर्फ एक छोटा सा बुर्ज खड़ा था, जिसे किला कहा जाता था। उसके आगे रावण का

जंगल पूरी तरह से वीरान था, जिसमें बंजर भूमि के विशाल विस्तार थे और उसके बीचोंबीच एक विशाल बरगद का पेड़ खड़ा था। गर्मी की दोपहरों में वह बुंडू और हबीब के साथ घूमने निकलता था, और वे शहर छोड़कर इस रास्ते पर आ गए। जब वे काले मंदिर से आगे बढ़े, तो उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी नए महाद्वीप में प्रवेश कर गया हो—किसी विशाल जंगल में, जहाँ किसी भी क्षण उसका सामना किसी भी प्रकार के प्राणी से हो सकता है। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। ब्लैक टेंपल के बंदरों की चहचहाहट से गूंज रहे पीपल के पेड़ के पास से गुजरते हुए, वह रुका: "यार—" वह इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सका।
“यह क्या है?” हबीब ने लापरवाही से पूछा।
“एक आदमी,” उसने भयभीत स्वर में कहा।
“एक आदमी! कहाँ?” हबीब और बुंडू दोनों चौंक गए।
“वो वाला।” उसने किले की ओर इशारा किया, जहाँ एक अकेला आदमी चलता हुआ दिखाई दे रहा था।
उस निर्जन जंगल में, एक आदमी! क्यों? कैसे? क्या वह सचमुच एक आदमी है, या— लेकिन एक आदमी से भी उनका डर असीम था। वे तुरंत भागने लगे।
बुंदू भी उसी घर में रहता था, क्योंकि वह आंटी शरीफ़ान का बेटा था। ज़ाकिर हबीब का दोस्त था। वह उन दोनों के साथ खूब घूमता-फिरता था और आवारागर्दी करता था! लेकिन सबीरा के आने के बाद, उसकी घूमने-फिरने की आदतें धीरे-धीरे बदल गईं।
सबीरा। इससे पहले, उन्होंने उसका नाम केवल तब सुना था जब ग्वालियर से खला जान के पत्र आते थे और उनमें लिखा होता था, “ताहिरा और सबीरा ठीक हैं। हम सभी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजते हैं।” खला जान ग्वालियर में रहती थीं, क्योंकि उनके पति, जो बी अम्मा के भतीजे थे, वहाँ काम करते थे। लेकिन एक दिन एक टेलीग्राम आया: उनके पति का देहांत हो गया था। अम्मी रोटी बनाते- बनाते अचानक बर्तन उलटकर खड़ी हो गईं। बी अम्मा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। फिर कुछ ही दिनों बाद, सामान और यात्रियों से लदी, चारों ओर चादरों से ढकी एक घोड़ागाड़ी आई और द्वार के सामने रुक गई। अब्बा जान एक लंबी, चौड़ी शॉल लेकर बाहर आए। उन्होंने ज़ाकिर को शॉल का एक कोना पकड़ने के लिए दिया और दूसरा कोना खुद पकड़ लिया। इस तरह उन्होंने एक तरफ सुरक्षा कवच बना लिया और दूसरी तरफ से कोई आ नहीं रहा था। फिर घोड़ागाड़ी का पर्दा उठा। खला जान नीचे उतरे। खला जान के साथ दो लड़कियां थीं, एक ताहिरा और दूसरी सबीरा,

जिन्हें खला जान सब्बो कहकर पुकारते थे। वह लगभग उनकी ही उम्र की लग रही थी।
पहले तो सबीरा उससे दूरी बनाए रखी। एक तरह की झिझक के साथ वह भी उससे दूर रहा, लेकिन तिरछी निगाहों से उसे देखता रहा। फिर, हिचकिचाते हुए, वह उसके पास गया। "चलो, सबीरा, खेलते हैं।"

•

“ज़ाकिर, मेरे बेटे,” अब्बा जान ने अंदर आते हुए कहा, “ऐसा लगता है कि आज रात भी ये लोग हमें सोने नहीं देंगे।”
“ओह?” वह जंगल से लड़खड़ाते हुए वापस आया।
“बेटे, क्या ये लोग रैली कर रहे हैं या सिर्फ हंगामा कर रहे हैं?”
“अब्बा जान, राजनीतिक आंदोलन ऐसे ही होते हैं। लोग उत्साहित हो जाते हैं, और फिर वे बेकाबू हो जाते हैं।”
“तुमने क्या कहा—आंदोलन? क्या यह कोई आंदोलन है? बेटा, क्या मैंने आंदोलन नहीं देखे? क्या कोई आंदोलन खिलाफत आंदोलन से बड़ा रहा है? और मौलाना मुहम्मद अली—हे भगवान, हे भगवान! जब वे बोलते थे, तो ऐसा लगता था जैसे चिंगारियां बरस रही हों। लेकिन उनका एक भी शब्द सभ्य भाषा के स्तर से नीचे नहीं गिरा। खैर, वे मौलाना मुहम्मद अली थे; लेकिन मैंने कभी किसी स्वयंसेवक को भी सभ्य भाषा के स्तर से नीचे कुछ कहते नहीं देखा। उन्होंने कहा, ‘अंग्रेजों का नाश हो,’ और एक शब्द भी नहीं।” अब्बा जान चुप हो गए। फिर, मानो यादों में खोए हुए, वे बुदबुदाने लगे, “उस आदरणीय व्यक्ति ने एक गलती की: दरगाहों और मकबरों के मामले में उन्होंने इब्न सऊद का समर्थन किया। अल्लाह तआला उन्हें इस गुनाह के लिए माफ करे और उनकी कब्र को नूर से भर दे। बाद में उन्हें खुद इस समर्थन पर बहुत पछतावा हुआ।”
वह मन ही मन मुस्कुराया: अब्बा जान तो बड़े अच्छे हैं! आज भी वे खिलाफत आंदोलन के सपने देख रहे हैं।
"और आप क्या कर रहे हैं?"
मैंने सोचा था कि मैं सुबह के लिए अपना व्याख्यान तैयार कर लूंगा, लेकिन—" “इस शोर में भला कोई काम हो ही कैसे सकता है!” अब्बा जान ने बीच में टोकते हुए कहा।
"हां, काफी शोर-शराबा है, लेकिन शायद आज रात रैली जल्दी खत्म हो जाएगी। कल यह बाहरी नेताओं की वजह से लंबी खिंच गई थी।"

“बेटे, मुझे तो नहीं लगता कि यह सब जल्दी खत्म हो जाएगा।” वह थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “मेरे ज़माने में भी रैलियाँ होती थीं। अगर शोर होता था, तो रैली से पहले होता था। फिर एक वक्ता मंच पर आता था, और लोग तुरंत सम्मानपूर्वक बैठ जाते थे। कितना सभ्य ज़माना था वो!”
फिर मुस्कुराए वे: अब्बा जान अभी भी खिलाफत आंदोलन के दौर से बाहर नहीं निकल पाए हैं। लेकिन जब वे यह सोच रहे थे, तो ऐसा लगा मानो वे भी अब्बा जान का अनुसरण करते हुए बीते हुए समय में चले गए हों। कितना सुसंस्कृत समय था! अगर कोई ज़ोर से बोलता, तो अब्बा जान तुरंत उसे डांटते: “बेटी, मैं बहरा नहीं हूँ।” और जब कभी ताहिरा कठोर स्वर में बोलती, तो बी अम्मा उसे टोकती: “बेटी, क्या तुम्हारा गला फटा हुआ बांस है?” और जब ताहिरा और उसकी सहेलियाँ बरसात के मौसम की उमंग में ऊँचे झूलों पर झूलती और ज़ोर-ज़ोर से हँसतीं, तो बी अम्मा तुरंत उन्हें रोकती: “बेटी, यह कैसी आवाज़ है, क्या बर्तन टूट रहे हैं?” बरसात का मौसम, झूला, गीत, नीम के पेड़ के पके बीज— “ठीक है, मैं जा रहा हूँ। मुझे नींद नहीं आएगी।” ये कहते हुए अब्बा जान वापस जाने लगे। “और अब आप भी थोड़ा आराम कर लीजिए।”
ज़ाकिर ने अपनी बात एक कान से सुनी और दूसरे कान से निकाल दी। एक दूर से आती आवाज़ उसे अपनी ओर खींच रही थी।

•

“पके हुए नीम के बीज, बारिश कब आएगी?”
मेरे प्यारे भाई की उम्र लंबी हो, वो मेरे लिए पालकी भेजेंगे!
ताहिरा अपनी सहेली के साथ झूलों का कितना आनंद ले रही थी, और सबीरा उन्हें कितनी हवस भरी निगाहों से देख रही थी! तभी रसोई से खला जान की आवाज़ आई, "ताहिरा!"
"हाँ माँ।"
“बेटी, कब तक झूलती रहोगी? आओ और कुछ तल लो। कुछ पकौड़े बना लो।”
ताहिरा के जाने के बाद, वह सब्बो के पास गया और बोला, "सब्बो, चलो झूला झूलते हैं।"
जब वह झूले पर सबीरा के पास सटकर बैठा, तो उसे अपने भीतर कोमलता का भाव उमड़ता हुआ महसूस हुआ। वह झूलते रहना चाहता था, पर सबीरा का मिजाज कभी स्थिर नहीं रहता था। "मैं तुम्हारे साथ नहीं झूलूँगी।" वह अचानक झूले से नीचे कूद गई।

“क्यों?” वह अवाक रह गया।
मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करूंगा, बस इतना ही।
वह आश्चर्यचकित और दुखी होकर वहीं खड़ा रह गया। फिर, बहुत धीरे-धीरे, वह उसके पास पहुँचा।
“Sabbo.”
मैं तुमसे बात नहीं कर रहा/रही हूँ।
जब सबीरा को मनाना नामुमकिन लगा, तो वह उदास होकर चला गया। वह भटकते-भटकते सीढ़ियों की ओर बढ़ गया। सीढ़ियाँ चढ़कर वह खुली छत पर पहुँच गया। छत कच्ची मिट्टी की बनी थी; बरसात का मौसम बहुत पहले ही खत्म हो चुका था, इसलिए मिट्टी सख्त हो गई थी। उसने अपनी जेब से वह टूटा हुआ चाकू निकाला, जिसे वह हमेशा पेंसिलें तेज करने के लिए साथ रखता था। वह उसके सिरे से सख्त मिट्टी को ऐसे काटने लगा जैसे मिठाई काट रहा हो। थोड़ी देर में सबीरा भी वहाँ आ गई। वह बड़े ध्यान से उसे मिठाई काटते हुए देखती रही। लेकिन अब वह अपने काम में मग्न था। उसने सबीरा पर ध्यान नहीं दिया। मिठाई काटने का काम पूरा होने पर उसने अपने लिए एक नया काम खोज निकाला। जहाँ मिट्टी सबसे सूखी थी, वहाँ वह खोदने लगा। जब उसने एक छोटा सा गड्ढा खोद लिया, तो उसने अपना एक पैर उसमें डाला और सारी ढीली मिट्टी को ऊपर से कसकर दबा दिया। फिर उसने धीरे से अपना पैर बाहर निकाला। एक तरह की मिट्टी की गुफा बन गई। सबीरा बड़े ध्यान से देख रही थी। फिर उसने कहा, "यह क्या है?"
“एक कब्र।” उसने सबीरा की ओर देखे बिना लापरवाही से जवाब दिया।
“यह एक कब्र है?” सबीरा ने आश्चर्य से पूछा।
"हाँ।"
उसने कब्र को हैरानी से देखा। फिर उसने एक तरह की गर्मजोशी भरी आवाज़ में कहा, "ज़ाकिर, मेरे लिए भी एक कब्र बना दो।"
उन्होंने संक्षिप्त उत्तर दिया, "इसे खुद बना लो।"
सबीरा ने उससे उम्मीद छोड़ दी और अपनी कब्र खोदने लगी। उसने काफी मिट्टी खोदी। उसने अपना नंगा पैर खोदी हुई जगह पर रखा। फिर उसने ढीली मिट्टी को उसके ऊपर दबा दिया। फिर उसने धीरे-धीरे अपना पैर बाहर निकाला। जैसे ही उसका पैर निकला, मिट्टी की छत गिर गई। अपनी इस नाकामी पर वह ज़ोर से हंस पड़ा। लेकिन सबीरा ने हिम्मत नहीं हारी। उसने दूसरी बार कोशिश की, और फिर भी नाकाम रही। उसने तीसरी बार कोशिश की, और इस बार उसने अपना पैर इतनी

सावधानी से बाहर निकाला कि मिट्टी का एक कण भी नहीं गिरा। सबीरा अपनी सफलता पर इतराई और उसकी कब्र पर एक नज़र डाली, फिर अपनी कब्र पर। "मेरी कब्र बेहतर है।"
“हाँ, बिल्कुल ठीक है।” उसने सबीरा की तरफ मुँह बनाया।
"अपना पैर अंदर रखकर देखो।"
इस प्रस्ताव पर वह थोड़ा हिचकिचाया। उसने कुछ देर सोचा। फिर, बहुत धीरे से, उसने अपना पैर आगे बढ़ाया और उसे सबीरा की कब्र में रख दिया। तब उसे अपने दिल में यकीन हो गया कि सब्बो सही था। और कुछ देर तक उसने अपना पैर उस नरम, गर्म कब्र में ही रखा।
उसके बाद, उसकी झुंझलाहट दूर हो गई। सबीरा के साथ उसके संबंध फिर से सौहार्दपूर्ण हो गए। जब सबीरा की कब्र मरम्मत करते समय ढह गई, तो उसने अपने हाथों से उसके सफेद पैर को साफ किया। फिर उसने अपनी जेब से एक शंख निकाला। “सब्बो, क्या तुम एक शंख लेना चाहोगे?”
“हाँ, मैं ज़रूर लूंगी।” उसने लालच भरी निगाहों से उस शंख को देखा।
उससे शंख लेते हुए, सबीरा ने बदले में एक भेंट दी: "चलो, झूला झूलते हैं।" जब वे छत से नीचे उतर रहे थे, तो उन्होंने ताहिरा और उसकी सहेली को गाते हुए सुना:
“माँ, फल नरम हैं, माँ, मैं इन्हें नहीं खाऊँगा, माँ।”
माँ, पानी बहुत ज़्यादा है, माँ, मैं नहीं नहाऊँगा, माँ।
मां, पीले-हरे रंग की पोशाक तैयार है।
मां, मैं इसे नहीं पहनूंगी, मां।
मां, मेरे पति पालकी लेकर आए हैं, मां, मैं नहीं जाऊंगी, मां।
वे वापस मुड़े और फिर से छत पर जाकर बैठ गए। अब क्या करें? उन्होंने एक नई योजना प्रस्तावित की: "सब्बो!"
"हाँ?"
चलो, दूल्हा-दुल्हन का खेल खेलते हैं।
“दूल्हा और दुल्हन?” वह अचंभित रह गई।
"हां, जैसे कि मैं दूल्हा हूं और तुम दुल्हन हो।"
“कोई न कोई देख लेगा।” वह घबराई हुई थी।

[illegible]

•

[illegible]

“[illegible]”
[illegible]
[illegible]
[illegible]

“Bi Amma, this is the Janamashtami rain!” Auntie Sharifan elaborated: “Krishan-ji’s diapers are being washed.”

“[illegible]”

“[illegible]”
[illegible]
[illegible]
[illegible]—”
[illegible]

“[illegible]”
[illegible]

कुछ चमक रहा था, मानो अभी-अभी धुला हो। आकाश, पेड़, बिजली के खंभे, दीवारें, छतें।
“ज़ाकिर! चलो, बारिश में भीगने वाले कीड़े पकड़ने चलते हैं।”
जब बुंडू ने यह प्रस्ताव रखा, तो वे तुरंत घर से निकल पड़े और काले मंदिर के पार कर्बला में बारिश के कीड़ों की तलाश में चल दिए। उस समय धरती और आकाश कितने कोमल और चमकीले थे, और घास में जगह-जगह मखमली टुकड़ों जैसे अनगिनत बारिश के कीड़े रेंग रहे थे। उन्हें छूना कितना सुखद था! उन दिनों उनका मन कोमल चीजों को छूने का बहुत करता था, लेकिन छूते ही बारिश के कीड़े अपने पैर अंदर खींच लेते और ऐसे स्थिर हो जाते जैसे मर गए हों। कोमल चीजें छूने से इतना क्यों कतराती हैं? उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ।
“सब्बो! इसे देखो।”
“अरे बाप रे, इतने सारे बारिश के कीड़े!” वह आश्चर्य और खुशी से भर उठी। और फिर उसने उससे बड़े प्यार से व्यवहार किया। पल भर में वह उसके कितने करीब आ जाती थी; पल भर में वह उससे कितनी दूर चली जाती थी।
“सब्बो! आओ और खेलो।”
मैं नहीं खेलूंगा।
मेरे पास कौड़ी के खोल हैं।
मुझे क्या फर्क पड़ता है?
"इसे देखो, यह एक घूमता हुआ खिलौना है।"
“हम्म।” उसने अपना सिर दूसरी तरफ घुमा लिया।
वह काफी देर तक अकेले ही झूला घुमाता रहा। फिर उसने अपना यो-यो निकाला और उससे खेलने लगा। उसे यो-यो घुमाने में कितना मज़ा आ रहा था!
“वे कहते हैं कि यह लैला की प्रथा थी…”
यो-यो घुमाते-घुमाते वह अचानक रुक गया: “मजनून आ गया है।” और यो-यो को भूलकर वह तीर की तरह दरवाजे की ओर भागा। जब वह दरवाजे पर पहुँचा तो उसने देखा कि सबीरा भी वहीं खड़ी है। “ज़ाकिर! मजनून है!”
“और कौन? बेशक, यह मजनून ही है!”
उसका कॉलर फटा हुआ था, बाल उलझे हुए थे, एक हाथ में भिक्षापात्र और दूसरे हाथ में ईंट थी, पैरों में जंजीरें थीं जो चलते समय खनक रही थीं—मजनून। वह रुका और स्थिर खड़ा हो गया:
वे कहते हैं कि यह लैला की प्रथा थी

जो भी भिखारी आए, उसे दान देना।
एक दिन मजनून भी भिक्षापात्र लेकर चला गया।
और उसने पुकार कर कहा, ‘भगवान के नाम पर, मुझे कुछ तो दो।’
लैला आई और उसने उन सबको कुछ न कुछ दिया।
उसने मजनून के हाथों से उसका भिक्षापात्र ले लिया।
जैसे ही उसने गाना समाप्त किया, उसने ईंट उठाई और अपने माथे पर इतनी जोर से मारा कि वह खून से लथपथ हो गया, और वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा और बेसुध पड़ा रहा।
“ज़ाकिर, क्या मजनून मर गया?” वह बुरी तरह कांप रही थी।
नहीं, वह मरा नहीं है।
“नहीं, वह मर चुका है।” वह फूट-फूटकर रोने लगी।
"अरे बेवकूफ लड़की, वो तो बस नाटक कर रहा है।"
“नहीं, मजनून मर गया है।” वह रोती रही।
मजनून अचानक खड़ा हो गया। वह हैरान रह गई। उसने अपना भिक्षापात्र उठाया, जिसमें आस-पास खड़े लोगों ने कुछ छोटे सिक्के डाले थे, और वह वहाँ से चला गया।
"सब्बो! क्या तुमने कभी 'लैला-मजनूं' देखी है?"
नहीं, यह कैसा है?
"मास्टर रूपी ने मजनूं की भूमिका निभाई है और इलाही जान ने लैला की भूमिका निभाई है।"
फिर क्या होता है?
“फिर मास्टर रूपी को इलाही जान से प्यार हो जाता है।”
एक-दूसरे को देखते ही वे अचानक शर्मिंदा हो गए। सबीरा ने तुरंत भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "चले जाओ, बेशर्म प्राणी, वरना मैं अभी बी अम्मा को बता दूंगी!"
“मैंने क्या गलत कह दिया?” वह चिंतित था।
लेकिन वो ये बात बी अम्मा को कैसे बता सकती थी? वो बस नाराज़ हो गई और उससे दूरी बनाए रखने लगी। उसे भी असहज महसूस हुआ। वो उसकी आँखों में देखने से हिचकिचा रहा था।
“काऊ बस, कौ बस।” अचानक उसके कान खड़े हो गए; दूर-दूर से आने वाली हर आवाज़ उस पर अजीब असर डालती थी। चाहे वो उन्हें समझ पाए या न समझ पाए, वो उनकी ओर

खिंचा चला जाता था। “काऊ बस”— उसे कभी समझ नहीं आया था कि ये किस तरह के शब्द हैं। उसे बस इतना पता था कि जब वासंती के पिता, लाला चुन्नी मल, छत पर खड़े होकर ये आवाज़ लगाते थे, तो चारों ओर से कौवे आकर उनके सिर के चारों ओर मंडराते थे। वो तीर की तरह छत की ओर भागा। उसके पीछे सबीरा थी।
वासंती की छत पर पत्तों की दो बड़ी थालियाँ बिछाई गई थीं। उनमें दूध में पका हुआ चावल था। कौवे चावल चट कर रहे थे। कभी-कभी कोई चील नीचे आती और थाली पर झपट पड़ती। लाला चुन्नी मल वहाँ खड़े होकर "कौ बस, कौ बस" की आवाज़ लगा रहे थे। और कौवों और चीलों का एक झुंड उनके सिर के चारों ओर इकट्ठा हो गया था।
“क्या तुम्हें पता है ये क्या है?” सबीरा की हैरानी देखकर उसने उसे समझाने का फैसला किया। “रामचंदर जी की पत्तों की थालियाँ साफ की जा रही हैं।” “रामचंदर जी की पत्तों की थालियाँ?” वह और भी अधिक आश्चर्यचकित हो गई। “बेशक, और क्या? जब रामचंदर जी अपना भोजन समाप्त कर लेते थे, तब कौवों का राजा आकर बचा हुआ भोजन खाता था और पत्तों की थालियों को साफ कर देता था।” "अरे, झूठ बोलो!"
मैं ईश्वर के नाम की कसम खाता हूँ!
“क्या मैं बी अम्मा से पूछूँ?” और वह तुरंत गई और ज़ाकिर की शिकायत बी अम्मा से कर दी।
“बेटा!” बी अम्मा ने उसे घूरते हुए कहा। “तुम हमारे घर में क्यों पैदा हुए? तुम्हें किसी हिंदू के घर में पैदा होना चाहिए था! तुम्हारे पिता तो हमेशा भगवान और पैगंबर के नाम लेते रहते हैं—क्या उन्हें यह एहसास ही नहीं है कि उनके बेटे को हिंदू कथाएँ पसंद आ गई हैं!”
लेकिन बी अम्मा में अब पहले जैसी ऊर्जा नहीं रही थी। वह पहले की तरह ही सबकी निगरानी करती थीं, सबको डांटती थीं, लेकिन उनकी आवाज़ में अब पहले जैसी जीवंतता नहीं थी। वह किशमिश की तरह मुरझा गई थीं; ऐसा लग रहा था जैसे वह अंदर से धीरे-धीरे ढह रही हों। "बस बहुत हो गया; इससे पहले कि मैं अपाहिज हो जाऊं, मैं प्रार्थना करती हूं कि भगवान मुझे अपने पास बुला लें।"
“अरे, बी अम्मा, आप क्या कह रही हैं! आप अपने पोते की शादी का दिन देखने के लिए जीवित रहेंगी।”

“ऐ आंटी शरीफ़ान! मैं इतनी सूख गई हूँ और दुबली हो गई हूँ कि मेरा पेट मेरी पीठ से चिपक गया है। आपको क्या लगता है—क्या मैं कयामत के दिन भगवान के लिए उनके थैले ढोने के लिए ज़िंदा रहूँगी?”
बी अम्मा ने निस्संदेह लंबा जीवन जिया था। वह अक्सर बताती थीं कि उनके बचपन में रात में छोटे बाज़ार में केवल एक ही मशाल जलती थी। बाकी हर जगह, गलियों में, अंधेरा छाया रहता था। उनकी आँखों के सामने ही वह मशाल गायब हो गई और गलियों में लालटेनें दिखाई देने लगीं; और अब उनकी जगह खंभे खड़े हो गए थे, और गलियों में जगह-जगह बिजली की रोशनी दिखाई देने लगी थी।
मस्जिद में भी बिजली का काम शुरू हो चुका था, लेकिन अब्बा जान ने इसमें अड़चन डाल दी। “यह ‘नवाचार’ है।” और हाथ में लाठी लिए, वह मस्जिद के द्वार पर पहरा देने लगे। बिजली मिस्त्री आए, उन्हें डांट पड़ी और वे चले गए। हकीम बंदे अली और मुसय्यब हुसैन ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उनका एक ही जवाब था: “यह ‘नवाचार’ है।”
अपनी ड्यूटी के तीसरे दिन, बी अम्मा बीमार पड़ गईं; उनकी सांसें तेज और उथली हो गईं। अब्बा जान ने ड्यूटी छोड़कर जल्दी से घर की ओर प्रस्थान किया; लेकिन बी अम्मा ने उनके आने का इंतजार नहीं किया।
अगले दिन जब अब्बा जान सुबह की नमाज़ के लिए मस्जिद गए, तो उन्होंने देखा कि बिजली पहले ही लग चुकी थी। यह देखकर वे तुरंत वापस आ गए और अपने जीवन में पहली बार घर पर ही सुबह की नमाज़ अदा की। उसके बाद से वे कभी मस्जिद में नहीं गए और घर के अलावा कहीं और नमाज़ नहीं पढ़ी। हालांकि कई दिनों तक वे सुबह-शाम बी अम्मा की कब्र पर जाते रहे और वहां कुरान की आयतें पढ़ते रहे।
अब्बा जान ने रूपनगर में फैल रही “नई परंपराओं” को रोकने के लिए कितनी कोशिशें कीं! मुहर्रम के दौरान, जब बड़े-बड़े ढोल बजने लगे, तो उन्होंने उन्हें ज़ब्त कर लिया और उनके ऊपरी हिस्से तोड़ दिए। “शरीयत के मुताबिक ढोल बजाना मना है। मैं किसी भी मजलिस या जुलूस में इन्हें बजाने की इजाज़त नहीं दूंगा!”
लेकिन लखनऊ में तो हर जुलूस में ढोल बजाए जाते हैं!
उन्हें खेलने दो। लखनऊ के लोगों में शरीयत बदलने की कोई शक्ति नहीं है! उस वर्ष वास्तव में किसी भी मजलिस या जुलूस में ढोल नहीं बजाए गए थे, लेकिन अगले वर्ष तक अब्बा जान की शक्ति भंग हो चुकी थी। खिरकीवाला इमामबाड़ा से

निकलने वाले जुलूस को छोड़कर हर जुलूस में ढोल बजाए जाते थे, क्योंकि वह अब्बा जान का पारिवारिक इमामबाड़ा था और उस पर उनका अधिकार था। और इसलिए भी कि हज़रत हुर के सम्मान में निकलने वाला वह जुलूस रूपनगर के मुहर्रम जुलूसों में सबसे शांत माना जाता था। न छोटे ढोल, न बड़े ढोल, न शोकगीतों का गायन—क्योंकि अब्बा जान ने शोकगीत गायन को भी धार्मिक कानून के विरुद्ध घोषित कर दिया था। अब्बा जान ने शोकगीत गायन के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाया था, लेकिन परिणाम वही निकले जो उनके अन्य कड़े रुखों के मामले में निकले थे।
रूपनगर पर अब्बा जान की पकड़ ढीली पड़ रही थी। बी अम्मा को अल्लाह ने अपने पास बुला लिया था और शहर में बिजली आ चुकी थी। अब्बा जान मस्जिद में बिजली लगने से नहीं रोक सके, ठीक वैसे ही जैसे वे मुहर्रम के जुलूसों में ढोल बजने से नहीं रोक सके। बिजली के खिलाफ उनका दृढ़ रुख उस दौर की "नई चीज़ों" के खिलाफ उनके दृढ़ रुख का आखिरी उदाहरण था। इसके बाद वे अपने कमरे में चले गए। उन्होंने घर में नमाज़ पढ़ी, मुहर्रम के दस दिन घर में ही बिताए। फिर एक दिन नमाज़ की चटाई पर बैठे-बैठे उन्होंने इस्तखारा* के ज़रिए दुआ की और उन्हें यात्रा के लिए शुभ संकेत मिले। संकेत मिल रहे थे; यात्रा की तैयारियां शुरू हो गईं।
“अम्मी जान, क्या हम जा रहे हैं?” बी अम्मा के देहांत के बाद से, वह अब हर बात अम्मी से ही पूछता था।
“जी बेटा,” अम्मी ने उदास स्वर में कहा। वह चुप हो गईं, फिर मन ही मन बुदबुदाने लगीं, “अब यहाँ हमारे लिए क्या बचा है? ज़मीनें तो हमारे हाथों से निकल चुकी हैं। हमारे पास एक टूटा-फूटा पुराना घर तो है, लेकिन क्या भूख लगने पर हम उसमें खाना खा पाएंगे?”
“अम्मी! क्या हम व्यासपुर जा रहे हैं?”
“जी बेटा, हम व्यासपुर जा रहे हैं। तुम्हारे चाचा और बाकी सब लोग व्यासपुर में ही हैं। बी अम्मा ने टस से मस नहीं हुईं, वरना हम अब तक निकल चुके होते।”
“अम्मी, क्या व्यासपुर बहुत दूर है?”
“हां, यह काफी दूर है। यहां से हम लॉरी में बैठकर बुलंदशहर जाएंगे। वहां से हम ट्रेन पकड़ेंगे।”

बाहर एक घोड़ागाड़ी खड़ी थी। उसकी कल्पना में एक लॉरी और एक ट्रेन दिखाई दी, वे अनजान वाहन जिनमें वह अपने जीवन में पहली बार सफर करने वाला था। वह उतना ही खुश था जितनी अम्मी दुखी थीं। यात्रा करने और नए शहर देखने की इच्छा अचानक उसके मन में जाग उठी थी। कुछ देर बाद सबीरा प्रकट हुईं और दूर खड़ी होकर पलंगों को बांधते और संदूकों को ताला लगाते हुए देखने लगीं। वह देखती रहीं, फिर अचानक खाला जान के लिबास में अपना सिर छिपाकर रोने लगीं। खाला जान ने उनके सिर पर हाथ फेरा और कहा, "रोने की क्या बात है? वे जल्द ही वापस आ जाएँगे।" यह कहते ही उनकी आँखों में भी आँसू आ गए। अम्मी ने एक संदूक का ताला लगाते हुए कहा, "सबीरा!" वह थोड़ी देर रुकीं, फिर बोलीं, "प्यारे, जब मैं वहाँ पहुँचूँगी तो तुम्हें जल्द ही बुलवा लूँगी। मैं तुम्हें बुलवाकर अपने साथ रखूँगी।" अब्बा जान ने एक पलंग बांधते हुए रोती हुई सबीरा पर एक नजर डाली और फिर अपने काम में मग्न हो गए।
वह खड़ा देखता रहा। उसकी सारी खुशी गायब हो गई थी। हिम्मत जुटाकर वह धीरे- धीरे उसके पास गया। "सब्बो।"
सबीरा ने अपना भीगा हुआ चेहरा (इतना रोने से कि उसका पूरा चेहरा आंसुओं से भीग गया था) उसकी तरफ मोड़ा और उसे एक नज़र देखा, फिर तुरंत अपना चेहरा खालह जान के लिबास में छिपा लिया और पहले से भी ज़्यादा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

•

“ज़ाकिर, मेरे बेटे! क्या हो रहा है?” अब्बा जान फिर से उसके कमरे में आए। “कुछ नहीं।” उसने ऐसे कहा जैसे वह चोरी करते हुए पकड़ा गया हो। और तुरंत ही उसने एक किताब खोली और उसे अपने सामने रख लिया, मानो यह जताने के लिए कि वह सचमुच पढ़ाई कर रहा है।
“कुछ हुआ है। बहुत शोर हो रहा है, और मुझे लगता है कि मैंने गोली चलने की आवाज सुनी। एक तरह की आवाज आई थी।”
ज़ाकिर उठा और खिड़की खोलकर रैली स्थल की ओर देखा। कुछ लोग खड़े होकर नारे लगा रहे थे। कुछ युवक, जो स्वयंसेवक लग रहे थे, खड़े हुए लोगों में से कुछ को बिठाने की कोशिश कर रहे थे और कुछ को भीड़ से बाहर धकेल रहे थे। भीड़ में दो समूह बनने लगे थे। तभी एक ज़ोरदार धमाका हुआ। उसने झुंझलाहट से खिड़की बंद कर दी; पीछे मुड़कर उसने अब्बा जान को बताया, "गोलीबारी नहीं हुई, ये लोग पटाखे फोड़ रहे हैं।"

“अरे, वे क्या मना रहे हैं?”
"सिर्फ रैली में भ्रम पैदा करने के लिए।"
"अरे, सबको क्या हो गया है?"
“अब्बा जान, चिंता मत करो। आजकल रैलियों में ऐसा ही होता है। अब सो जाओ।” “बेटा, तुम जानते हो कि एक बार मेरी नींद उड़ जाए तो फिर वापस नहीं आती।” वह चुप हो गया, फिर बुदबुदाया, “सबको क्या हो गया है?” बुदबुदाते हुए वह कमरे से बाहर चला गया।
ज़ाकिर उठा और उसने खिड़की को थोड़ा सा खोलकर बाहर देखा। खड़े हुए लोग बैठ गए थे, लेकिन अभी भी बहुत शोर था। उसने खिड़की बंद कर दी, बत्ती बुझा दी और जाकर पलंग पर लेट गया।
“सबको क्या हो गया है?” अब्बा जान का सवाल उनके मन में गूंज रहा था। दरअसल, लोगों को क्या हो गया है, वे गंभीरता से सोच रहे थे। घरों में, दफ्तरों में, रेस्तरां में, सड़कों और बाजारों में—हर जगह एक ही स्थिति थी। चर्चा पहले वैचारिक होती, फिर व्यक्तिगत, फिर अपमानजनक, फिर गाली-गलौज वाली, और फिर मारपीट तक पहुंच जाती। राहगीर अचंभित खड़े रहते, डर से झगड़ने वालों को घूरते, फिर एक-दूसरे से पूछते, “क्या हो रहा है? आगे क्या होगा?” सबकी आँखों में एक ही डर था, मानो सच में कुछ होने वाला हो। फिर वे अपने-अपने रास्ते चले जाते, और भूल जाते कि कुछ हुआ भी था। मानो कुछ हुआ ही न हो, मानो कुछ होगा ही न। इतनी चिंता, और इतनी उदासीनता! अचानक कोई अफवाह फैल जाती, जैसे तूफान लोगों को अपनी चपेट में ले लेता है। लोगों के चेहरों पर डर और दहशत की लहरें उठतीं। फिर वही चिंता भरा सवाल, “आगे क्या होगा?” फिर अपने- अपने रास्ते चले जाते, और भूल जाते। मानो कुछ हुआ ही न हो, मानो कुछ होगा ही न। लेकिन क्या वाकई कुछ होने वाला है? क्या होने वाला है? जब उसे आगे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, तो वह पीछे की ओर चल पड़ा। यादों के घने जंगल से होकर वही लंबी यात्रा फिर से शुरू हो गई। जब मैं रूपनगर में था—मेरे जीवन का वह दूरस्थ, पौराणिक युग। और जब मैं व्यासपुर आया—व्यासपुर—

•

"क्या वह जलता हुआ शव है?"
“हाँ, यह एक श्मशान भूमि है। और सुनो, वह मृत शरीर जीवित है!”
"जाओ, तुम मूर्ख लड़की, तुम झूठी हो!"

“मैं राम की कसम खाता हूँ! यह जीवित है। यह उठ खड़ा हुआ। हे राम! हे माँ, मैं तो लगभग मर ही गया था!”
"ठीक है, और फिर?"
फिर वह लेट गया, और मैं उठा और भाग गया!
“झूठा।”
फुल्लो की किसी भी बात पर उसे यकीन नहीं हो रहा था। वो अब बच्चा नहीं रहा था! बी अम्मा के देहांत और रूपनगर छोड़ने के बाद, मानो वो अचानक बड़ा हो गया हो, मानो उसका बचपन रूपनगर में ही छूट गया हो। रूपनगर में कितनी ही चीज़ें छूट गई थीं! वो कच्ची सड़कें जो न जाने कहाँ जाती थीं, मानो पेड़ों में खो जाती थीं। डगमगाती, खड़खड़ाती घोड़ागाड़ियाँ, सुस्त, धीमी गति से चलती बैलगाड़ियाँ, जिनमें से कुछ को मजबूत बैल खींचते थे जिनके जुए में घंटियाँ बंधी होती थीं, जिनकी मधुर ध्वनि धूल भरी सड़क को भर देती थी। काला मंदिर, काले मंदिर परिसर में खड़ा बंदरों से भरा विशाल पीपल का पेड़, कर्बला की सुनसान और उदास दीवार, पहाड़ी पर बना किला, रावण वन, रावण वन के बीचोंबीच खड़ा रहस्यमय बरगद का पेड़—एक पूरा पौराणिक युग रूपनगर में ही रह गया था। यहां, हालांकि श्मशान भूमि पास ही थी और श्मशान भूमि में घने पीपल के पेड़ खड़े थे, फिर भी उसे किसी भी पेड़ के आसपास कोई रहस्यमय वातावरण महसूस नहीं हुआ, भले ही फुल्लो ने वहां बहुत कुछ देखा था।
मैं आपको बताता हूँ, एक चुड़ैल ने मुझे पकड़ लिया था!
"अरे, बकवास मत करो।"
“राम की कसम! ठीक दोपहर का समय था। वह पेड़ जो आप वहाँ देख रहे हैं—उसके नीचे एक प्याला था, प्याले में चूने, लाल सिंदूर और थोड़ी सी चीनी से बनी एक मूर्ति थी। और बरगद के नीचे, दाँत बाहर निकाले एक बिरबानी ने मुझ पर ठीक उसी तरह झपट्टा मारा जैसे कोई पतंग झपट्टा मारती है!”
“बकवास मत करो, जाओ और अपना काम करो।”
व्यासपुर में उसे कुछ बिल्कुल अलग ही नज़ारा देखने को मिल रहा था। चिकनी सड़कों पर रबर के टायरों वाली घोड़ागाड़ियाँ दौड़ रही थीं, कभी-कभार कोई बग्गी या मोटरगाड़ी भी दिख जाती थी। और उन सड़कों के पार, बाज़ारों और मोहल्लों के आगे, वह काली, चिकनी, तेल से चमकती हुई दिखने वाली कोल-टार की सड़क थी, जिस पर दिनभर लॉरियाँ चलती रहती थीं। ये वाहन अजीब सी आवाज़ें निकाल रहे थे। रूपनगर की हवा में गूंजने वाली वो आवाज़ें कहाँ गईं? अब

उसके कान नई आवाज़ों से परिचित हो रहे थे। बग्गियों और घोड़ागाड़ियों की घंटियाँ, लॉरियों के हॉर्न, मोटरगाड़ियों के हॉर्न, और सबसे अजीब, ट्रेन की सीटी, जो उसे रूपनगर से बहुत दूर ले आई थी और अब उसे व्यासपुर से भी आगे ले जा रही थी। अनजान, अनदेखे शहरों की ओर। जब उसने दूर से ट्रेन की सीटी सुनी, तो वह दौड़कर घर की छत पर चढ़ गया; वहाँ से श्मशान घाट के दूसरी ओर ट्रेन की पटरियाँ साफ़ दिखाई दे रही थीं। ट्रेन दूर से सीटी बजाती और धुआँ उगलती हुई आ रही थी। पहले तो यह पेड़ों की छाँव में धीरे-धीरे चल रही थी, जिससे हवा में सिर्फ़ इसका धुआँ ही दिखाई दे रहा था। फिर अचानक पेड़ों की ओट से कोयले जैसा काला इंजन तेज़ी से गुज़रता हुआ दिखाई दिया, जो आसमान में अपने से भी ज़्यादा काले धुएँ के बादल उगल रहा था, और उसके पीछे यात्रियों से भरी अनगिनत बोगियाँ थीं। ये बोगियाँ कितनी तेज़ी से गुज़र गईं—पलक झपकते ही आँखों से ओझल हो गईं। वह चकित रह गया। फिर जब उसे अब्बा जान की बताई बात याद आई कि यह ट्रेन मुरादाबाद से आ रही है और व्यासपुर से दिल्ली जा रही है, तो वह और भी ज़्यादा चकित हो गया।
यहां आने के बाद से वह खान बहादुर चाचा के घर में रह रहा था, जो शहर से कुछ दूर खेतों और बगीचों के बीच बसा हुआ था। अगर आप उसकी छत पर खड़े होते, तो ठीक सामने श्मशान घाट होता, श्मशान घाट के पार रेल की पटरियां और उसके आगे क्षितिज पर पेड़ों की कतारें दिखाई देतीं। फिर जब वह बाजार गया, तो हर दुकान को देखकर अचंभित रह गया। रूपनगर के छोटे बाजार की तुलना में खिड़की बाजार कितना बड़ा था! एक दुकान में तो सिर्फ साइकिलें ही साइकिलें थीं। उसने पहले कभी इतनी सारी साइकिलें कैसे देखी होंगी! साइकिल, जूते और कपड़े की दुकानों के आगे वह विशाल बाजार था, जहां जगह-जगह गेहूं और कपास के ऊंचे- ऊंचे ढेर लगे थे और उनके पास जंगली कबूतरों का झुंड मंडरा रहा था। कुछ दुकानें ऐसी भी थीं जिनमें कोई सामान नहीं था, बस फर्श पर एक साफ सफेद चादर बिछी थी, उस पर एक लंबा तकिया रखा था और तकिए से टेक लगाकर एक व्यापारी बैठा था, जिसके सामने एक टेलीफोन था। अचानक शोर मचता और हर व्यापारी, हर सौदागर जल्दी से फोन की डंडी घुमाता और फिर जोर-जोर से फोन पर बात करने लगता। वह चकित रह गया। धीरे-धीरे उसे पता चला कि यह हंगामा किसी वस्तु की कीमत में बदलाव होने पर होता है।

•

बाज़ार में इतना शोर था, और घर के चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। सन्नाटा तभी टूटा जब ट्रेन आई। ट्रेन के गुज़र जाने के बाद फिर सन्नाटा छा गया, और दूर तक फैली रेल की पटरियाँ दिखाई देने लगीं—जिन पर छत पर खड़े होकर वह लंबे समय तक आश्चर्य से देखता रहा। उसका आश्चर्य भी बहुत दूर तक आ गया था, और बहुत बदल गया था।
खान बहादुर चाचा ने यह घर इस सोच के साथ बनवाया था कि वे अपनी पेंशन से यहीं रहकर जीवन व्यतीत करेंगे। रायसीना में जीवन बिताने के बाद, वे व्यासपुर शहर की गलियों में रहना बर्दाश्त नहीं कर सके। लेकिन पेंशन मिलने का समय आने से पहले ही वे इस दुनिया से चले गए। यह घटना जाकिर के व्यासपुर आने से बहुत पहले घटी थी। जाकिर ने खान बहादुर चाचा को कभी नहीं देखा था, लेकिन व्यासपुर आने के बाद उन्होंने पूरे परिवार पर उनकी महानता की छाया देखी।
“तब मेरे भाई स्वर्गीय खान बहादुर ने एक तरकीब सोची: वह बागी बन गए और बागियों के साथ घुलमिल गए। वह इतने कुशल बागी बन गए कि उन्हें उनकी समिति का अध्यक्ष बना दिया गया। लेकिन बागियों के भी गुप्त एजेंट थे। एक एजेंट ने उनकी भनक पकड़ ली। पूरी समिति के सामने उसने भेद खोल दिया: ‘यह आदमी अंग्रेजों के लिए मुखबिर है!’ तभी बागियों ने पिस्तौलें निकालीं और मेरे भाई पर तान दीं।” चाचा जान बोलते-बोलते रुक गए। अच्छे भाई, नजीब भाई, साहब मियां, सभी ध्यान से सुन रहे थे।
"तब क्या हुआ?"
“ओह, मेरे स्वर्गीय भाई तो कभी भी मुश्किल हालात में अपना आपा खोने वाले नहीं थे! उन्होंने ऐसा भाषण दिया कि विद्रोहियों की पिस्तौलें उसी विद्रोही की ओर मुड़ गईं जिसने उन्हें अंग्रेज़ों का एजेंट घोषित किया था।” चाचा जान थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “ये विद्रोही इतने खतरनाक थे कि अगर मेरे स्वर्गीय भाई खान बहादुर ने उन्हें न पकड़ा होता, तो वे अंग्रेजों को उसी हालत में ले आते जिस हालत में वे 1957 में थे! वे आतंकवादी थे। उन्होंने पूरे भारत में अशांति फैला दी थी।”
परिवार में जब किसी की शादी होती थी और परिवार के सभी सदस्य एक साथ इकट्ठा होते थे, तो चाचा जान खान बहादुर अंकल के बारे में इस तरह की कहानियां सुनाना शुरू कर देते थे, और बेटे और भतीजे उनके चारों ओर इकट्ठा होकर ऐसे सुनते थे मानो वे किसी पौराणिक नायक की कहानियां सुन रहे हों।

मेरे भाई स्वर्गीय खान बहादुर का एक पैर चांदी का था।
“चांदी का पैर?” नजीब भाई ने आश्चर्य से पूछा।
जी हाँ! घटना इस प्रकार हुई: जब वह डाकू सुल्ताना का पीछा कर रहा था, तो वह चलती ट्रेन से कूद गया। उसकी टांग की हड्डी टूट गई। फिर रायसीना में वायसराय के सर्जन ने उसका इलाज किया और उसकी पूरी टांग निकालकर उसकी जगह चांदी की टांग लगा दी।
वे सभी आश्चर्य से भरे हुए थे। तभी नजीब भाई ने पूछा, "तो क्या यह चाचा ही थे जिन्होंने डाकू सुल्ताना को पकड़ा था?"
“और कौन? युवा साहब, या यहाँ तक कि युवा साहब के आदरणीय पिता भी, उसे पकड़ नहीं सकते थे। केवल मेरे भाई खान बहादुर में ही उसे पकड़ने का साहस था! और रेशमी रूमालों के उस समूह को किसने पकड़ा?”
“सिल्क हैंडकरचीफ बैंड? वे कौन थे?”
“रेशमी रुमाल वाला गिरोह कौन था?” चाचा जान हँसे और बोले, “मेरे बेटों, तुम्हें क्या पता? रेशमी रुमाल वाले गिरोह ने अंग्रेज़ शासन को उखाड़ फेंकने की पूरी योजना बना रखी थी। ठीक समय पर मेरे भाई स्वर्गीय खान बहादुर ने उनकी योजना का पता लगा लिया और उनके द्वारा लिखी गई योजना वाला रुमाल छीन लिया।” वे थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “मेरे भाई स्वर्गीय खान बहादुर ने अंग्रेजों के लिए बहुत कुछ किया था। इसीलिए जब उनकी मृत्यु हुई, तो वायसराय ने कहा, ‘खान बहादुर की मृत्यु ने मेरी कमर तोड़ दी है।’”
“भाई, अपने इस भतीजे से पूछो कि क्या वह भी चाचा की तरह कुछ बनना चाहता है, या फिर वह आलसी जीवन व्यतीत करेगा।”
“ज़ाकिर, मेरे बेटे! सुनो तुम्हारी माँ क्या पूछ रही है—उन्हें जवाब दो। एक बात मैं तुम्हें यकीन से कह सकता हूँ: मेरे भाई खान बहादुर आसानी से खान बहादुर नहीं बने। उन्होंने कितनी मेहनत की! क्या आज कोई उनकी तरह लगन से पढ़ाई कर सकता है? मैं तुम्हें एक बार की घटना बताता हूँ, उनकी लालटेन का तेल खत्म हो गया। जब उन्होंने तेल की बोतल में देखा, तो वह भी खाली थी। जानते हो उन्होंने क्या किया? उन्होंने जुगनू पकड़े और उन्हें बी अम्मा के दुपट्टे के सिरे पर बाँध दिया, और उनकी रोशनी में सुबह की नमाज़ के समय तक पढ़ाई की। क्या आज कोई इस पर विश्वास करेगा? लेकिन फिर, उन्हें अपनी मेहनत का फल मिला। जब मैट्रिक परीक्षा के नतीजे घोषित हुए, तो वे पूरे संयुक्त प्रांत में प्रथम आए।”

•

वह भी मन लगाकर पढ़ाई कर रहा था। मैट्रिक की परीक्षा नजदीक थी। रात-दिन वह लालटेन जलाकर पढ़ता रहता था और दिन-रात स्कूल परिसर में लगे आम के पेड़ के नीचे बैठ कर पढ़ाई करता था। परीक्षा की तैयारी के लिए स्कूल बंद था। कक्षाएँ बंद थीं, बरामदे खाली थे और खेल के मैदान शांत थे। पढ़ाई के लिए कितना अच्छा माहौल था! स्कूल के इकलौते आम के पेड़ की छाँव में वह और सुरेंद्र दोनों एकाग्रता से पढ़ाई करते थे। जब वे थक जाते, तो सामने की कोल-टार वाली सड़क को देखते रहते: कभी कोई ट्रक गुजरता, और फिर सड़क खाली हो जाती।
सुरेंद्र ने उससे पूछा, "क्या तुम्हें पता है कि यह लॉरी कहाँ जा रही है?" "ये कहां जा रहा है?"
“मेरठ।”
“मेरठ? यह लॉरी मेरठ जा रही है? क्या आपने मेरठ देखा है? मेरठ कैसा है?” एक ही सांस में उन्होंने इतने सारे सवाल पूछ लिए।
उन्होंने मेरठ को सबसे पहले सुरेंद्र की नज़रों से देखा था। अब वे इसे अपनी नज़रों से देख रहे थे। कॉलेज में कक्षाएं समाप्त होने के बाद, वे और सुरेंद्र दोनों कंपनी गार्डन की ओर चल पड़ते थे। कैंटोनमेंट, अंग्रेजों की दुनिया, घने पेड़ों की दो कतारों के बीच लंबी, शांत, चिकनी दिखने वाली सड़कें, दूर तक फैली हुई थीं, जब तक कि वे दूरी में विलीन नहीं हो जातीं। कभी-कभी सफेद कैनवस के जूते, सफेद कमीज़ और शॉर्ट्स पहने एक गोरा अंग्रेज, टेनिस रैकेट लिए हुए, उनके पास से तेज़ी से गुज़रता और कंपनी गार्डन के गेट से अंदर चला जाता। कभी-कभी सुनहरे बालों वाली, गोरे चेहरे वाली एक मेमसाहिब उनके पास से गुज़रतीं, और वे दोनों उनकी नंगी सफेद पिंडलियों को तब तक देखते रहते जब तक कि वे नज़रों से ओझल नहीं हो जातीं। फिर एक सांवली नौकरानी आती, जिसके साथ दूधिया रंग का एक बच्चा गाड़ी में बैठा होता, जिसे वह धीरे-धीरे धकेलती हुई ले जाती।
“यहीं से”—सुरेंद्र चलते-चलते रुक गए—“1957 का आंदोलन शुरू हुआ।” “यहाँ से?” उसने उस जगह को हैरानी से देखा और सोचने लगा कि इसमें क्या खास बात है। जैसे-जैसे वह उसे देखता और उसके बारे में सोचता रहा, उस जगह की भव्यता धीरे-धीरे उसे महसूस होने लगी।

“सुरेंद्र!” चलते-चलते उसने अचानक पूछा, “हिटलर लंदन कैसे पहुँचेगा? बीच में तो एक महासागर है।”
"मेरे दोस्त, हिटलर के पास एक ऐसा पाउडर है जिसे आप समुद्र पर छिड़कते हैं, और फिर वह नीचे बैठ जाता है और पत्थर जैसा बन जाता है।"
फिर कॉलेज में भीड़ उमड़ पड़ी, अफरा-तफरी मच गई। अगर सुरेंद्र वहां न होता तो लड़कों की भीड़ में खो जाता। लेकिन तभी सुरेंद्र समेत लड़कों की पूरी भीड़ गायब हो गई। बरामदे से गुजरते हुए एक लड़के ने नारा लगाया: “भारत छोड़ो!” कक्षाओं में जा रहे लड़के, कक्षाओं से आ रहे लड़के रुक गए। फिर पल भर में नारों का तूफान उठ खड़ा हुआ: “भारत छोड़ो!” “क्रांति जिंदाबाद!” “महात्मा गांधी की जय!” फिर कक्षाओं की खिड़कियां टूटने लगीं। तभी किसी ने चिल्लाकर कहा, “वे आ रहे हैं!” अफरा-तफरी मच गई, बरामदा खाली हो गया, सन्नाटा छा गया, उस सन्नाटे में दूर से घोड़ों के दौड़ने की आवाज सुनाई दी। घुड़सवार पुलिस कॉलेज आ रही थी।
बरामदे, कमरे, लॉन हफ्तों, महीनों तक खामोश रहे। जगह-जगह लाठियां लिए पहरेदार, कभी ऊंघते, कभी चौकन्ने खड़े रहते। मुट्ठी भर मुस्लिम लड़के, एक कक्षा में पांच-छह और दूसरी में दो-तीन। लेकिन प्रोफेसर मुखर्जी आज भी उतनी ही जोर से और उतने ही उत्साह से अपने व्याख्यान देते रहे, मानो कुछ हुआ ही न हो।

•

जैसे-जैसे परीक्षाएँ नज़दीक आती गईं, लड़के वापस आ गए, लेकिन रौनक और चहल-पहल वैसी ही बनी रही। फिर छुट्टियाँ आ गईं। फिर से व्यासपुर। मौसम कितना बदल गया! धीरे-धीरे इतना बदलाव आया कि गर्म पश्चिमी हवाएँ चलने लगीं। दोपहर तक घरों के दरवाज़े बंद हो जाते थे, बरामदों को ढकने वाली बुनी हुई घास की जाली बार-बार पानी से भीग जाती थी। लेकिन छोटी गलियों में सूरज की रोशनी नहीं पहुँचती थी। उन गलियों में इतने घर थे कि उन्हें बुनी हुई घास की जाली की ज़रूरत ही नहीं थी। दरवाज़ों पर औरतें सूत कातती और बातें करती नज़र आती थीं।
"देखा?" सुरेंद्र ने पत्थरवाली लेन से बड़ी हड़बड़ी में निकलते हुए पूछा। नहीं यार, मैंने किसी को नहीं देखा।
“वह बालकनी पर खड़ी थी, क्या तुमने नहीं देखा?”
नहीं, वहां कौन खड़ा था?

“रिमझिम, और कौन?”
“Rimjhim?”
“हाँ, मैं उसे रिमझिम ही बुलाता हूँ। उसे देख लो, कमीने, तुम मर जाओगे!” उन्होंने गली में एक मोड़ लिया, फिर दूसरा मोड़ लिया, फिर तीसरा मोड़ लिया, लेकिन वह कहीं दिखाई नहीं दी। "वह गायब हो गई है।"
सुरेंद्र ने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। एक बंदर जैसे दिखने वाले आदमी को देखकर वह अचानक मुस्कुराया। "सुनो यार, हम उसके साथ चलेंगे।"
दोपहर की चिलचिलाती धूप में, बंदर-आदमी अपने रेतघड़ी के आकार के ढोल को एक गली से दूसरी, दूसरी से तीसरी गली तक बजाता हुआ गया। अंत में, पथरवाली गली में उसने अपना करतब दिखाना शुरू किया। जब मादा बंदर ने ठीक से व्यवहार नहीं किया, तो नर बंदर ने उसे डंडे से तब तक पीटा जब तक कि वह क्रोधित होकर अपनी माँ के घर नहीं चली गई।
सुरेंद्र की निगाहें बालकनी पर टिकी हुई थीं। उसे यकीन था कि वह बंदरों का करतब देखने जरूर आई होगी।
"अरे, कमीने, देखो!"
"कहाँ?"
वह बालकनी पर खड़ी है।
उसने देखा। सांवला रंग, बेहद पतला, बेहद कोमल शरीर।
“अरे वाह, ये तो एक नन्हा मुस्लिम बच्चा है!” वह झट से कमरे में वापस चली गई और गायब हो गई।
वह फिर कभी नहीं दिखी। तो क्या हुआ। सुरेंद्र ने उसे लड़की को देखने का तरीका सिखाया था।

•

फिर वह रूपनगर चला गया। उसे उस छुट्टी में खाला जान से मिलने रूपनगर जाना ही था। इतने सालों बाद उसने फिर रूपनगर देखा। धूल से ढकी गड्ढों वाली सड़क, दोनों ओर जगह-जगह पड़े पत्थरों के ढेर, उछलती हुई घोड़ागाड़ियाँ, और कच्ची पटरियों पर रेंगती बैलगाड़ियाँ, सब कुछ पहले जैसा ही था। उसने संतोष भरी हैरानी से यह सब देखा। लेकिन सब कुछ पहले जैसा नहीं था। उसके सभी दोस्त लंबे हो गए थे। उनका रंग गहरा हो गया था, उनकी आवाज़ भारी हो गई थी। हबीब ने मैट्रिक परीक्षा पास कर ली थी और अलीगढ़ चला गया था, और अब छुट्टी में वापस आया था, बिल्कुल फैशनेबल लग रहा था। उसकी पतलून नए डिज़ाइन की थी। जहाँ

पहले उसका सिर मुंडा हुआ होता था और आम की गुठली से रगड़ा जाता था, अब उसके लंबे अंग्रेज़ स्टाइल के बाल थे। आंटी शरीफ़ान ने भी बुंदू को अलीगढ़ ताला बनाने का काम सीखने के लिए भेज दिया था।
और सबीरा! सबीरा कितनी लंबी हो गई थी, और उसका सीना कितना फूल गया था कि वह हमेशा उसे अपने दुपट्टे से ढके रखती थी। फिर भी, दो उभरे हुए हिस्से साफ दिखाई देते थे। अब तो वह उसकी आँखों में भी नहीं देखती थी, मानो वह कोई अजनबी हो।
वह गलियों और बाज़ारों में भटकता रहा। वह एक प्यासे आदमी की तरह था जिसकी प्यास इतने लंबे समय बाद इन परिचित दृश्यों को देखकर बुझ रही थी। वह चीजों को कितनी बेसब्री से देख रहा था, बेचैनी और लालसा से—जैसे वह सब कुछ अपनी आँखों से अंदर खींच लेना चाहता हो। चीजें कभी पहले जैसी थीं, कभी बदल गई थीं। बिजली के खंभे कितने बढ़ गए थे। छोटे बाज़ार को छोड़कर, उनके तार अब हर जगह फैले हुए थे। बंदर तारों से बचते हुए एक छत से दूसरी छत पर कूद रहे थे। रूपनगर के बंदर बिजली के युग में जीना सीख चुके थे।
काले मंदिर से कर्बला तक, कर्बला से किले तक, किले से रावण वन तक, सब कुछ पहले जैसा ही था। वह वहाँ लंबे समय तक घूमता रहा, उसने उस दृश्य में खुद को सराबोर कर लिया, लेकिन वह पूरी तरह संतुष्ट नहीं था। वह रहस्यमयता जो पहले हर जगह व्याप्त थी, मानो गायब हो गई थी। अपने पुराने भय को याद करते हुए, उसने दूर से काले मंदिर, उसके विशाल पीपल के पेड़ और सबसे ऊपरी शाखा पर बैठे हट्टे-कट्टे बंदर को देखा, लेकिन उसकी आँखों में कोई विस्मय नहीं जागा, न विस्मय और न भय। सब कुछ पहले जैसा ही था, लेकिन शायद वह बदल गया था, या शायद इन सबके साथ उसका पुराना रिश्ता बदल गया था—काले मंदिर के साथ उसका रिश्ता, विशाल पीपल के पेड़ के साथ, पीपल के बंदरों के साथ, कर्बला के शांत क्षेत्र के साथ, रावण वन के साथ, उसके बीच में खड़े बरगद के पेड़ के साथ, शायद सबीरा के साथ भी।
असंतुष्ट, बेचैन, थका हुआ, वह घर लौट आया। गर्मी बहुत तेज़ थी। उसने एक तौलिया उठाया; दोपहर की धूप में तपते आँगन को पार करते हुए वह स्नानागार की ओर चल पड़ा। स्नानागार पहले जैसा ही था, और न तो अंदर से बंद हो सकता था और न ही बाहर से। लोग अंतर्ज्ञान से जान जाते थे कि अंदर कोई है या नहीं। लेकिन अब शायद उसका अंतर्ज्ञान काम नहीं कर रहा था, क्योंकि उसने

स्नानागार के दरवाजे के पैनल खोले—और फिर, पूरी तरह खुलने से पहले ही, उन्हें बंद कर दिया। मानो उसकी आँखों में बिजली सी कौंध गई हो।
वह उस पल में खोया रहा, मानो बिजली सी दौड़ गई हो। यह सोचकर वह दंग रह गया कि उसकी चचेरी बहन ताहिरा अब एक जवान औरत बन चुकी है। उस दिन तो वह उसकी आँखों में आँखें भी नहीं मिला पाया। अगले दिन, उसकी नज़रों से बचते हुए, उसने उसे सिर से पैर तक निहारा। उसका गोरा, गोल-मटोल शरीर उसकी कल्पना में उभर आया। हर छोटी-छोटी बात उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। शर्म से उसके गाल लाल हो गए। मन ही मन उसने खुद को कितना कोसा! लेकिन ताहिरा को इसका ज़रा भी एहसास नहीं था। वह उससे खुलकर बातें करती रही और कॉलेज के बारे में हर छोटी-बड़ी बात पूछती रही।
“ज़ाकिर, क्या आपके कॉलेज की लाइब्रेरी में राशिद उल-खैरी की ‘इवनिंग ऑफ लाइफ’ उपलब्ध है?”
"हाँ ऐसा होता है।"
“हे भगवान! ज़ाकिर, अगली बार जब तुम आओ तो तुम्हें 'इवनिंग ऑफ लाइफ' ज़रूर लाना!”
जब सबीरा ने देखा कि बातें उपन्यासों की ओर मुड़ गई हैं, तो वह भी हिचकिचाते हुए पास आई और ताहिरा के बगल में बैठ गई। वह कितनी उत्सुकता से उपन्यासों की बातें सुन रही थी! रसोई से खाला जान की आवाज़ आई, “ओह ताहिरा, खाने पर नज़र रखो, जलने मत देना। मैं आटा गूंथ रही हूँ।”
जब ताहिरा चली गई, तो सबीरा चुपचाप और असहज महसूस करती रही, लेकिन वह उठकर जा भी नहीं सकी। वह भी असहज और शर्मिंदा होकर बैठी रही।
धीरे-धीरे उसने हिम्मत जुटाई और पूछा, "सबीराह, क्या तुमने 'पैराडाइज ऑन अर्थ' पढ़ी है?"
"नहीं, क्या यह एक अच्छा उपन्यास है?"
उसने तुरंत उसे धरती पर स्वर्ग की कहानी सुनाना शुरू कर दिया। उसने उसे पूरी कहानी बता दी।
“ज़ाकिर, क्या तुम मेरे लिए धरती पर जन्नत लाओगे?”
"हां, मैं आते समय इसे ले आऊंगा।"
आप अगली बार कब आएंगे?
क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान।

धीरे-धीरे उसने उसे शरार के कई अन्य उपन्यासों की कहानियाँ भी सुनानी शुरू कर दीं। उनमें वे बातें भी शामिल थीं जिन्हें बताने में वह झिझकता था और जिन्हें सुनने में सबीरा शर्माती थी, क्योंकि अब सबीरा उसके करीब आ चुकी थी। अब वह रोज़मर्रा के घरेलू कामों से ऊब चुकी थी। जब खला जान और ताहिरा घर का काम करतीं, तो वह बैठकर उसकी बातें सुनती और उससे बातें करती। कभी ज़ोर से, कभी बहुत धीमी आवाज़ में। कभी-कभी इतनी धीमी कि शब्द फुसफुसाहट जैसे लगते और सबीरा का चेहरा लाल हो जाता। और जब उसने उसकी बालियों की तारीफ़ करने के बहाने उसके कान के निचले हिस्से को छुआ, तो अचानक उसकी साँसें गर्म हो गईं और तेज़ चलने लगीं। वह कान का निचला हिस्सा इतना कोमल और गर्म था कि उसकी उंगलियों में एक कोमल गर्म लहर दौड़ गई और पूरे शरीर में फैल गई।

•

छुट्टियाँ बहुत जल्दी खत्म हो गईं। रूपनगर ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया था, लेकिन आखिरकार उसे कॉलेज वापस जाना ही था, और उससे पहले उसे कम से कम व्यासपुर में अम्मी जान से मिलने जाना था।
“वाह, तो तुम वापस आ गए? तुमने कहा था कि तुम वहाँ एक हफ़्ता बिताओगे, और अब तुम वहाँ इतने लंबे समय तक रुक गए हो!”
सुरेंद्र की टिप्पणी के जवाब में उसने पहले तो कुछ टालमटोल वाला जवाब दिया, लेकिन वह इस रहस्य को कब तक छिपा सकता था?
“फिर तुमने क्या किया?”
मैंने क्या किया? मैं क्या कर सकता था? कुछ नहीं।
“झूठा।”
"यही सच है, इसके अलावा और कुछ नहीं हुआ।"
“तुम सचमुच एक मूर्ख हो!” सुरेंद्र ने उसे फटकारा और फिर चुप हो गया।
फिर उसने मानो खुद से कहा: "यार, उसके हाथ कितने कोमल थे।"
सुरेंद्र की घृणा गायब हो गई। "सचमुच?"
“हाँ।” वह चुप हो गया, सोच में डूब गया, फिर बहुत धीरे से बोला, “और उसके होंठ भी।”
“होंठ?” सुरेंद्र की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं।
फिर उसने अपने सारे राज़ खोलना शुरू कर दिया। जो बातें वह वहाँ नहीं बता पाया था, वो उसने कॉलेज में वापस आकर, आराम से बैठकर बताईं। जब उसने सब कुछ

बता दिया, तो उसने फिर से सब कुछ बताया, और फिर एक बार और बताया। हर बार, उसने ऐसे बताया जैसे वो पहली बार बता रहा हो।
"ठीक है, अब आप कब जा रहे हैं?"
क्रिसमस की छुट्टियों में।
"अभी इसमें काफी समय लगेगा।"
“हां यार! अभी इसमें काफी समय है।”
"उसे एक पत्र लिखो या कुछ और करो।"
“एक पत्र, हाँ, मुझे एक पत्र लिखना चाहिए।” और कई दिनों और हफ्तों तक पत्र लिखने का जुनून उन पर हावी रहा। हर दिन वे कलम और कागज लेकर बैठते, कुछ लिखते और फिर उसे फाड़ देते।
यार, मुझे क्या लिखना चाहिए?
आपको क्या लिखना चाहिए।
लेकिन यार! अगर कोई और उस पत्र को पढ़ ले तो क्या होगा?
“तो फिर?” सुरेंद्र सोचने लगा। “उसने तुमसे उपन्यास मांगे थे, है ना? ठीक है, लिख दो कि तुम्हें उपन्यासों के नाम याद नहीं हैं।”
"बिल्कुल सही चीज।"
फिर आखिरकार क्रिसमस की छुट्टियां आ गईं, और उन्होंने रशीद उल-खैरी और शरार के उपन्यासों को खोजने के लिए पुस्तकालय की अलमारियों में हाथ-पैर मारे और उन्हें अपने कार्ड पर दर्ज करवा लिया।
यार, तुम रूपनगर नहीं जा रहे हो?
“मैं क्यों न जाऊं? मैं जा रहा हूं। कल, कॉलेज बंद होते ही मैं निकल जाऊंगा।”
सुरेंद्र थोड़ी देर रुका, फिर बोला, "यार, मत जाओ।"
"क्यों?"
यार, यह बहुत लंबी यात्रा है, और ट्रेनों में कुछ गड़बड़ी की खबरें आ रही हैं।
वह सोचने लगा। "यार, यहाँ भी मुसीबत है।"
"हां, यहां भी कुछ परेशानी है। किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है।"
"तब?"
सुरेंद्र ने सोचा और फिर कहा, "हम दोनों साथ में व्यासपुर चलेंगे।"

व्यासपुर की यात्रा बेहद लंबी हो गई थी। जो भी यात्री इधर-उधर घूमता, अब वह शक की नजरों का पात्र बन जाता था। व्यासपुर का प्लेटफार्म एकदम शांत था। और जब वे बाहर निकले, तो वे दंग रह गए: "यार, यहाँ तो कोई घोड़ागाड़ी ही नहीं है!"
“तो फिर हम पैदल ही जाएंगे। आखिर बाकी सब लोग भी तो पैदल ही जा रहे हैं।” कुछ देर तक ट्रेन से उतरे यात्री आगे-पीछे चलते नज़र आए। फिर अचानक उन्हें एहसास हुआ कि सड़क सुनसान है। दूर-दूर तक सड़क पर सन्नाटा पसरा हुआ था। जगत टॉकीज़ सिनेमाघर, जो सड़क का सबसे शोरगुल वाला स्थान था, बंद था और एकदम शांत था। उसके सामने लगा वह बड़ा सा बिलबोर्ड, जिस पर सदियों से कानन बाला की मुस्कुराती हुई तस्वीर बनी थी, सड़क के बीचोंबीच गिर पड़ा था। कानन का चेहरा दो टुकड़ों में फट गया था और ईंटें सड़क पर बिखरी पड़ी थीं।
“यार, हमसे गलती हो गई,” सुरेंद्र ने धीरे से कहा। “हमें यहाँ नहीं आना चाहिए था।”
फिर वे चुपचाप आगे बढ़ते रहे। शाम गहरी होती जा रही थी, और दूर-दूर तक कोई नहीं था। बस ईंटें ही ईंटें। वह बिखरी हुई ईंटों को भय और आश्चर्य से देखता रहा—सोचो व्यासपुर में इतनी सारी ईंटें होंगी!
चलते-चलते वे मेरठ गेट पर पहुँचे। सामने सड़क पर खिड़की बाजार था, जो बंद और अंधेरा था। यही सड़क हिंदू बस्तियों की ओर खुलती थी। पास ही एक गली थी जो मुस्लिम बस्तियों की ओर जाती थी। इस मोड़ पर दोनों हिचकिचाए, एक-दूसरे को चुपचाप देखा और अपने-अपने रास्तों पर चल पड़े।

•

“ज़ाकिर, मेरे बेटे! क्या तुमने सुना? बाहर गोलीबारी हो रही है।”
“अम्मी जान?” झाड़ियों से बड़ी मुश्किल से लौटकर उसने अम्मी जान की ओर देखा। वह बेहोश होने वाली लग रही थी; उसकी आवाज़ घबराहट से भरी हुई थी।
वह उठा और खिड़की के पास गया। उसने एक शटर खोला और बाहर देखा। रैली स्थल पर अफरा-तफरी मची हुई थी। तंबू का ऊपरी हिस्सा ज़मीन पर गिर गया था; कुछ दीवारों का ऊपरी हिस्सा अभी भी खड़ा था, जबकि कुछ टेढ़ी-मेढ़ी हो गई थीं। तंबू के एक कोने से धुआँ उठ रहा था। भीड़ में अफरा-तफरी मची हुई थी: कुछ लोग भाग रहे थे, कुछ आपस में लड़ रहे थे। उसने खिड़की बंद की और वापस आ गया। उसने बुदबुदाते हुए कहा, "बकवास!"

“अरे हाय, मैं नींद से उछल पड़ा। ऐसा लग रहा था जैसे कयामत आ गई हो! तभी गोली चलने की आवाज़ आई। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। अभी भी धड़क रहा है। मैंने तुम्हारे पिता को पुकारा: ‘अच्छा,’ मैंने कहा, ‘क्या तुम सो रहे हो या जाग रहे हो?’ उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, ‘क्या ये बदमाश किसी को सोने भी नहीं देते?’ मैंने कहा, ‘मुझे गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी।’ वे बुदबुदाने लगे, ‘अब से ऐसा ही होता रहेगा।’ मैंने कहा, ‘जो भी हो, बस बुदबुदाते रहना! क्या मैं ज़ाकिर को बता दूँ?’”
“किसी ने गोली चलाई होगी। वैसे तो कुछ खास नहीं है। आजकल रैलियों में इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं।”
“अरे मेरे बेटे! अगर इस तरह गोलियां चलने लगीं तो क्या होगा?”
कुछ नहीं होगा। आप वापस सो जाइए और चिंता मत कीजिए।
"आपको विश्वास नहीं होगा, मैं अंदर से पूरी तरह से हिल गया हूँ।"
“अम्मी, कुछ नहीं है, कृपया सो जाइए।”
अम्मी को किसी तरह विदा करके, उसने एक बार फिर खिड़की खोली और बाहर देखा। भीड़ तितर-बितर हो चुकी थी, ढह चुके शामियाने वाला रैली स्थल खाली पड़ा था, और सभी बत्तियाँ पहले की तरह जल रही थीं। जहाँ शामियाने के एक कोने से धुआँ उठ रहा था, अब वह केवल एक पतली सी लकीर के रूप में दिखाई दे रहा था।
रोशनी में, वह लंबे समय तक खंडहर हो चुके, उजाड़, वीरान रैली स्थल को देखता रहा। वह एक लंबी यात्रा के बाद लौटा था, और अब अपने समय की हवा में सांस ले रहा था।

दो
पूरी रात उसके भीतर वर्षा होती रही। यादों के घने बादल हर दिशा से आते प्रतीत हो रहे थे। अब आकाश धुला हुआ और कोमल था। कहीं-कहीं बादल उसमें संतुष्टि से तैर रहे थे, मानो कोई चमकीला चेहरा हो, कोई कोमल मुस्कान। वह कितना आत्ममग्न था! उसके लिए बाहरी दुनिया का कोई अर्थ नहीं रह गया था। नाश्ते की मेज पर बैठे हुए उसने समाचारों की सुर्खियों पर बेपरवाही से नज़र डाली और अखबार को अब्बा जान की ओर सरका दिया।
अब्बा जान नाश्ता कर चुके थे और उर्दू अखबार पढ़ने में मग्न थे। जब ज़ाकिर मेज पर बैठा, तो अब्बा जान ने हैरानी से उसकी ओर देखा। “ज़ाकिर, क्या तुम्हें आज कॉलेज नहीं जाना है?”
“हां, मैं करता हूँ। लेकिन मैं देर से उठा।”
“तो जल्दी से नाश्ता करो और जाओ।” ये कहकर अब्बा जान फिर से अपने अखबार की ओर मुड़ गए।
आज वह निश्चित रूप से देर से उठा था, लेकिन फिर भी उसे कोई जल्दी नहीं थी। उसने आराम से नहाया और कपड़े पहने, अब वह आराम से नाश्ता कर रहा था।
अम्मी आईं और चायदानी को छूकर बोलीं, "क्या यह ठंडी नहीं हो गई?"
"नहीं, अभी इतनी ठंड नहीं है, ठीक है," उसने कहा और यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी हथेली और उंगलियों को मिलाकर बर्तन को परखा।
“बेटा, अब से नाश्ता जल्दी कर लेना! आखिर मैं अकेली हूँ। मुझे घर के सारे काम अकेले ही करने पड़ते हैं।” फिर उसने तुरंत अब्बा जान से पूछा, “अच्छा, ढाका के बारे में उन्होंने क्या लिखा है?”
कोई खास खबर नहीं है।
अब्बा जान से मुंह फेरकर, वह पास पड़े अंग्रेजी अखबार ज़ाकिर की ओर सरकी: “बेटा, अंग्रेजी अखबार में देखो! उसमें कुछ तो होगा ही?”
उन्होंने एक बार फिर अखबार पर नजर डाली और उदासीनता से कहा, "कोई खास खबर नहीं है।"
अरे बाप रे, फिर हमें आपकी खलाह जान के बारे में खबर कैसे मिलेगी? वहाँ से तो कोई खबर आ ही नहीं रही है!

“उस पर भरोसा रखो।” अब्बा जान ने आकाश की ओर उंगली से इशारा किया।
“जी हां, मैंने उन पर भरोसा किया था!” अम्मी ने घोर क्रोध से कहा। “उन पर भरोसा करने की वजह से ही मेरी यह हालत हुई!”
अब्बा जान ने अम्मी की ओर गंभीरता से देखा और फिर उन्हें फटकारा: "ज़ाकिर की माँ, लापरवाही से बोला गया एक वाक्य जीवन भर की धार्मिकता को मिटाने के लिए काफी है।"
पश्चाताप से भरी अम्मी ने अपना सिर झुका लिया। वह चुप हो गईं। फिर उन्होंने एक और विषय उठाया: "अच्छा, क्या तुम्हें याद है कि मैंने तब बतूल से क्या कहा था?"
"उस समय आपने क्या कहा था?"
"जब हम चले गए।"
“ज़ाकिर की माँ, आपको कब की बात याद आ रही है? मुझे याद नहीं कि आपने उस समय किससे क्या कहा था!”
“खैर, शायद आपको याद न हो—लेकिन मुझे उस समय बोले गए हर एक शब्द याद हैं! यहाँ पहुँचते ही मैंने उसे लिखा, ‘तुम यहाँ आ जाओ, ईश्वर ही पालनहार है।’ वह यहाँ आने के लिए तैयार थी, लेकिन ताहिरा का पति इतना सनकी था कि वह पूरब चला गया। बेचारी को भी अपनी बेटी के लिए वहाँ जाना पड़ा।”
“ज़ाकिर की माँ! हज़रत अली (उन पर शांति हो) हमेशा कहा करते थे, ‘जब इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं, तो मैं अपने रब को पहचान लेता हूँ।’ हमारी इच्छाएँ उनकी मर्ज़ी पर निर्भर करती हैं; जो वह चाहते हैं, वही होता है।”
अम्मी एक बार फिर चुप हो गईं और उन्होंने अपना सिर नीचे कर लिया, मानो वे ईश्वर की इच्छा के आगे नतमस्तक हो रही हों।
अब्बा जान ने उनकी ओर मुड़कर कहा, "शायद आज आपको कॉलेज जाने की ज़रूरत नहीं है?"
“मैं बस जा रहा हूँ।” उसने जल्दी से चाय का आखिरी घूंट पिया और उठ खड़ा हुआ।
घर से निकलते ही वह गली के कोने पर नाज़िरा की दुकान के पास रुक गया। आते- जाते वह हमेशा उस दुकान पर रुकता और सिगरेट खरीदता था।
“ज़ाकिर, साहब! आज बहुत मुसीबत है,” नाज़िरा ने अचानक कहा और उन्हें सिगरेट का पैकेट दे दिया।
“और क्या कल कोई परेशानी नहीं थी?”

लेकिन आज बहुत परेशानी है।
आज सचमुच बहुत गड़बड़ थी। जब वह कॉलेज पहुँचा तो उसने देखा कि जगह-जगह मिट्टी के बड़े-बड़े गमले चकनाचूर हो गए थे, कक्षाएँ खाली थीं, और दरवाजों के शीशे चकनाचूर हो गए थे। टूटे हुए शीशे कक्षाओं के अंदर और बाहर बरामदों में बिखरे पड़े थे। लड़के गायब हो गए थे। वे सब कहाँ चले गए? ऐसा लग रहा था कि नारे लगाते, उत्पात मचाते हुए वे सब कॉलेज छोड़कर कहीं और भाग गए हैं। वह अपने दफ्तर में गया, बैठ गया और उसे याद आया कि आज उसे कौन सा व्याख्यान देना था। लेकिन आज वह व्याख्यान कैसे दे सकता था? व्यर्थ ही, बिना किसी उद्देश्य के, उसने दराज खोली और कुछ कागज़ों को इधर-उधर किया; उसने मेज पर रखी किताबें खोलीं और उन पर एक नज़र डाली, फिर उन्हें बंद करके एक तरफ रख दिया। वह तय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे। वह यादों में डूबा हुआ, आत्ममग्न, बाहरी दुनिया से कटा हुआ घर से निकला था। लेकिन यहाँ पहुँचने में उसे जितना समय लगा, बाहरी दुनिया धीरे-धीरे अर्थपूर्ण लगने लगी थी। अब उनके लिए फुर्सत और एकांत का लाभ उठाकर आराम से बैठकर सिगरेट पीना और यादों की दुनिया में खो जाना मुमकिन नहीं रहा। कॉलेज को अस्त-व्यस्त देखकर उन्हें एक तरह का घुटन महसूस हुई। अब क्या करें? ठीक है, मैं शिराज चलता हूँ। शायद वहाँ ग्रुप मिल जाए। चाहे कुछ भी हो जाए, इरफान को इस समय वहाँ होना चाहिए। वह उठ खड़े हुए।
कुछ ही देर में वह शिराज में था और इरफान से अपने दिल की बातें साझा कर रहा था। इरफान यह सुनकर दंग रह गया!
लेकिन आखिर वह थी कौन?
"वह बस वैसी ही थी, और यही काफी है।"
“और अब तक आपने उसका ज़िक्र तक नहीं किया?”
“मैं उसे भूल ही गया था। भला मैं उसका ज़िक्र कैसे कर सकता था?”
“तुम उसे भूल गए थे?” इरफान ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।
“हां यार, मैं उसे भूल ही गया था। और काफी समय बीत चुका है।”
तो अब आपको उसकी याद क्यों आई?
“यह वो मौसम है जब मेरी सारी यादें लौट रही हैं। पता नहीं कब से भूली हुई हर तरह की बातें मुझे याद आ रही हैं।”
“अब, जब हर जगह इतनी उथल-पुथल है?”

“हाँ, अब जब हर जगह इतनी उथल-पुथल मची है।” वह थोड़ी देर रुके, फिर बोले। “क्या आप जानते हैं कि मेरी माँ आजकल क्या करती हैं? हर सुबह जब अखबार आता है, तो वह पूछती हैं कि ढाका से क्या खबर है। आप जानते ही हैं ना कि हमारे कुछ रिश्तेदार ढाका में बस गए थे? मेरी खाला जान। तो मेरी माँ हमेशा चिंतित रहती हैं, और हर सुबह जब अखबार आता है, तो वह पूछती हैं कि ढाका से क्या खबर है। और जब उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिलता, तो उन्हें याद आता है कि जब हम यहाँ आए थे, तो उन्होंने खाला जान को एक पत्र लिखा था और उन्हें यहाँ आने की सलाह दी थी: ‘दूर-दराज मत जाओ, यहीं आ जाओ।’ और फिर उन्हें प्रवास के समय की भूली-बिसरी कहानियाँ याद आ जाती हैं।”
“तो वह ढाका में है?” इरफान ने अनुमान लगाया।
नहीं, वह कभी पाकिस्तान आई ही नहीं।
“वह पाकिस्तान नहीं आई? अच्छा, समझ गया।” वह सोचने लगा। “और तब से तुम भारत नहीं आए?”
"कभी नहीं।"
"तो वाकई काफी समय बीत चुका है।"
“मैं भी यही सोच रहा हूँ।” उनकी आवाज़ धीमी होकर फुसफुसाहट में बदल गई। “काफी समय बीत चुका है।”
“जुलूस आ रहा है!” यह खबर लेकर डरे हुए लोगों का एक समूह अंदर आया। “जुलूस?” मेजों पर बैठे कई लोगों ने कान खड़े कर लिए।
"हां, यह बहुत बड़ा जुलूस है। यह अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को तोड़ता हुआ आगे बढ़ रहा है।"
"ओह!"
शिराज होटल में बैठे सभी लोग घबरा गए। उनमें से कुछ उठे और जल्दी से बाहर चले गए। अब्दुल एक तीर की तरह रसोई से बाहर निकला, पलक झपकते ही दरवाजा बंद कर दिया और खिड़कियों पर पर्दे डाल दिए।
“आज तो सामान्य से ज्यादा परेशानी लग रही है,” इरफान ने बुदबुदाते हुए कहा।
"खैर, कल की अफवाह झूठी निकली।"
लेकिन कल लोगों ने इसे पूर्ण सत्य मान लिया।
"हां, कल तो यह बिल्कुल सच लग रहा था।"

“खबरें और अफवाहें दोनों ही एक दिन के लिए ही फैलती हैं। अगले दिन, इससे क्या फर्क पड़ता है कि वह खबर नहीं बल्कि अफवाह थी, या फिर अफवाह नहीं बल्कि खबर थी?”
सलामत और अजमल रसोई के रास्ते अंदर आए। सलामत ने चारों ओर गुस्से भरी नजर डाली, अपनी उंगली से कमरे में इशारा करते हुए जोर से कहा, "मैं पूछता हूँ कि दरवाजा बंद क्यों है, पर्दे क्यों लगे हैं और अंधेरा क्यों है!"
इरफान ने सलामत को घूरते हुए ठंडे स्वर में कहा, "क्योंकि बाहर बहुत शोर है।"
सलामत ने गुस्से से उसकी और इरफान दोनों की तरफ देखा: “हाँ, और इसलिए क्योंकि तुम जनता की आवाज़ सुनना नहीं चाहते! लेकिन, हे साम्राज्यवादी शैतान, इस आवाज़ को अब दबाया नहीं जा सकता। यह पर्दों को चीरते हुए बाहर आएगी, और तुम्हारे कान के पर्दे भी फाड़ देगी!” फिर उसने पुकारा, “अब्दुल!” अब्दुल झटपट रसोई से बाहर आया। "जी सर?"
“अब्दुल! दरवाजा खोलो और पर्दा हटाओ।”
“और बाहर से कुछ रोशनी और हवा अंदर आने दो। रोशनी, हवा और जनता की आवाज़!” अजमल ने उत्साहवर्धक लहजे में कहा।
“दरवाजा मत खोलो। जुलूस बहुत शोर मचा रहा है,” दूर की एक मेज से आवाज आई। सलामत ने उग्र स्वर में कहा, "जनता पूंजीपतियों और साम्राज्यवादी चाटुकारों के खिलाफ आक्रोशित है!"
फिर सलामत और अजमल दोनों उसकी और इरफान की मेज पर बैठ गए।
कुछ देर से अकेले बैठकर चाय पी रहे एक सफेद बालों वाले व्यक्ति ने अपनी जगह से उठकर पास आकर कहा, "आप पढ़े-लिखे नौजवान हैं। कृपया मुझे बताइए, यह सब क्या हो रहा है?"
सलामत ने उसे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और कहा, "जो हो रहा है वही होना चाहिए।"
सफेद बालों वाले उस व्यक्ति ने सलामत के चेहरे को घूरकर देखा। फिर उसने आह भरी, "अल्लाह हम पर रहम करे," और वापस जाकर अपनी जगह पर बैठ गया।
सलामत ने कहा, "यार, मुझे लगता है कि यह सफेद बालों वाला आदमी मेरे सफेद बालों वाले पिता से भी ज्यादा अज्ञानी है।"
अजमल ने कहा, "मेरे पिता तुम्हारे सफेद बालों वाले पिता और इस सफेद बालों वाले आदमी दोनों से कहीं ज्यादा अज्ञानी हैं।"

“लेकिन मेरे पिता मेरे पिता नहीं हैं।” सलामत ने दांत पीसते हुए कहा, “मैं नाजायज औलाद हूँ।”
अजमल ने घोषणा की, "मैं अपने पिता को अपना पिता मानने से इनकार करता हूं।" “यार, हमारे नीच बाप-बाप ने हमें बर्बाद कर दिया।” सलामत की आवाज़ अचानक नम हो गई।
अजमल ने इरफान की तरफ देखा, फिर उसकी तरफ देखकर बोला, "तुम दोनों कुछ बोलो।"
फिर सलामत को दोबारा गुस्सा आ गया: “वे सोचते हैं कि चुप रहकर वे अपने घिनौने बाप-दादाओं और उनके नाजायज बेटों को मौत की आग से बचा लेंगे।” उसने मेज पर मुक्का मारा। “लेकिन ऐसा नहीं हो सकता!”
“सलाम साहब, आप यहाँ बैठे हैं,” रसोई से अंदर आते हुए एक परिचित ने कहा, “और वहाँ गोल मार्केट में शराब की दुकान लूटी जा रही है।”
अजमल चौंक गया। "सचमुच?"
"जी हां, मैं अभी वहीं से आया हूं। नालियों में शराब बह रही है और कुत्ते नशे में धुत होकर इधर-उधर पड़े हैं।"
“तो हमने फिर से अपना मौका गंवा दिया,” अजमल ने अफसोस जताते हुए कहा। उसने सलामत को कोहनी मारी। “चलो यार, चलो कम से कम जाकर देख तो लेते हैं।” “कहाँ जाना है? क्या देखना है?” सलामत ने चिढ़कर कहा। “हमें लूटी हुई शराब की दुकानों में जाकर नशे में धुत मरे हुए कुत्तों को देखने की ज़रूरत नहीं है! ऐसी कौन सी गली है जहाँ नशे में धुत मरे हुए कुत्ते न दिखें?” फिर उसने आसपास की मेजों को ऐसी गुस्से भरी नज़र से देखा कि चिंगारियाँ निकल आईं, और चिल्लाया, “कुत्तों! अब तुम्हें जागना होगा! हिसाब का दिन आ गया है: तुम्हें अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। तुम, मैं, हर कोई।”
“मेरे सिवा,” अफजल ने आराम से कहा। अंदर आते ही उसने सलामत की दहाड़ सुनी थी; वह चुपचाप मेज के पास खड़ा हो गया था। अब उसने एक कुर्सी खिसकाकर सलामत के सामने बैठ गया और उसकी आँखों में देखते हुए बोला, “चूहे! अपनी पूंछ पर क्यों खड़े हो? मुझे तुमसे हिसाब लेना होगा! मैं बस एक बांसुरी का इंतज़ार कर रहा हूँ।”
"एक बांसुरी के लिए, और शहर को जला देने के लिए!" सलामत ने क्रोधित होकर कहा।

“शहर इस समय जल रहा है।” अफजल ने अपनी आँखें बंद कीं, फिर खोलीं और मानो किसी दूसरी दुनिया से बोल रहा हो। “चूहों! उस दिन तुम्हें पछतावा होगा जब मैं यहाँ बाँसुरी लेकर आऊँगा! मैं आऊँगा और तुम्हें आदेश दूँगा कि बाँसुरी की आवाज़ सुनो। मैं तुम्हें आदेश दूँगा कि मेरे पीछे आओ। तुम अपने बिलों से बाहर निकलकर मेरे पीछे आओगे, जब तक मैं सागर तक न पहुँच जाऊँ, और मैं सागर को आदेश दूँगा, ‘सागर! इन चूहों को ले लो!’ और एक ही झटके में सागर तुम सभी चूहों को अपने मुँह में निगल जाएगा।”
"बकवास," सलामत ने व्यंग्य किया।
“यार, यहाँ समय बर्बाद करने का क्या फायदा? चलो, गोल मार्केट चलते हैं।” अजमल ने सलामत का हाथ पकड़ा और वे बाहर निकल गए।
“सलामत एक घिनौना इंसान है,” अफजल बुदबुदाया, “और अजमल भी, और वो चमचा ज़ावर भी, जो अब अधिकारी बनने के बाद और भी घिनौना हो गया है। पूरा कबीला ही घिनौने लोगों से भरा है।” अफजल रुका और ज़ाकिर और इरफान की ओर देखा, जो चुपचाप बैठे थे। “यार, तुम दोनों अच्छे लोग हो, खूबसूरत लोग हो। दुनिया में खूबसूरती कितनी दुर्लभ हो गई है! मैं खुद, और फिर तुम दोनों। सिर्फ तीन खूबसूरत लोग।”
“उन तीनों में से मेरा नाम हटा दो,” इरफान ने अरुचि से कहा।
“तुम्हें इसका पछतावा होगा!” अफजल ने इरफान को गुस्से भरी नजरों से देखा। इरफान ने तीखे लहजे में कहा, "मुझे पता है कि इस सूची में अभी काफी विस्तार होना बाकी है।"
अफजल ने उसे घूरकर देखा। अब्दुल इधर-उधर घूमकर अलग-अलग मेजों का जायजा लेते हुए आया। उसने अफजल को देखा और आदरपूर्वक कहा, “अफजल साहब, आप आ गए? क्या मैं चाय ले आऊं?”
"नहीं।"
"पानी?"
"नहीं।"
जब अब्दुल जाने लगा, तो अफ़ज़ल ने उससे कहा, “अब्दुल, तुम अच्छे इंसान हो।” उसने अपनी जेब से डायरी निकाली, उसे खोला और कुछ लिखा, फिर बोला, “आज की तारीख को मैंने अच्छे लोगों की सूची से इरफ़ान का नाम काट दिया और उसकी जगह तुम्हारा नाम लिख दिया।” फिर उसने इरफ़ान से कहा, “आज से तुम बदसूरत इंसान हो। और याद रखना, दुनिया में खूबसूरत लोग भी हमेशा मौजूद रहते हैं।”

अब्दुल चुपचाप खिसक गया। थोड़ी देर में वह ठंडा पानी का गिलास लेकर लौटा: “लीजिए, अफजल साहब! थोड़ा पानी पीजिए।”
अफजल ने अब्दुल की ओर कृतज्ञता भरी नजरों से देखा। “अब्दुल! तुम तो बहुत अच्छे इंसान हो।” उसने पानी पिया और फिर पूछा, “वे दोनों घिनौने आदमी कहाँ गए?”
“गोल मार्केट में शराब की दुकान लूट ली गई है। वे वहां गए थे, और आपको भी वहां जाना होगा,” इरफान ने उसी उग्र स्वर में कहा।
अफजल ने इरफान को गुस्से भरी निगाहों से देखा, फिर उठा और बाहर चला गया। “यार, अफजल एक स्वतंत्र स्वभाव का व्यक्ति है। तुम उससे क्यों उलझते हो?” जाकिर ने कहा।
“एक आज़ाद ख्याल?” इरफ़ान ने बुदबुदाते हुए कहा। “यहाँ कौन आज़ाद ख्याल है?”
"मेरा मतलब है, वह एक मनमौजी किस्म का व्यक्ति है। वह किसी भी तरह से राजनीति का चहेता नहीं है।"
यार, बात ऐसी है: मुझे नकली क्रांतिकारी बिल्कुल पसंद नहीं हैं, और मुझे नकली पैगंबर भी पसंद नहीं हैं।
तो फिर असली कौन है?
“ये सब नकली हैं, मुझ समेत।” इरफान थोड़ी देर रुका, फिर पूछा, “क्या आपको पता है कि कॉमरेड सलामत के बैंक खाते में कितना पैसा है?”
“सलामत का बैंक बैलेंस? यार, वो तो बिल्कुल कंगाल है। वो ऐसा कौन सा काम करता है जिससे उसके पास बैंक बैलेंस हो?”
“ज़ाकिर, तुम्हें इसका एहसास नहीं है। वह बहुत कुछ करता है,” इरफ़ान ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा और फिर चुप हो गया।
यार, मुझे इनमें से कुछ भी समझ नहीं आ रहा है।
“इसमें समझने वाली क्या बात है? अब कुछ भी छिपा नहीं है। लोगों के माथे पर लिखा है कि वे कौन हैं और क्या कर रहे हैं।” फिर उन्होंने अलग लहजे में कहा, “अच्छा यार, चलो इस विषय को यहीं खत्म करते हैं।”
“हाँ यार, इससे हमें क्या लेना-देना?”
“हाँ, इससे तुम्हें क्या लेना-देना? आजकल तुम कहीं और ही हो।” इरफ़ान, जिसका चेहरा अभी भी काफी तनावग्रस्त था, थोड़ा शांत हुआ और मुस्कुराया। “ज़ाकिर, क्या तुम्हें वहाँ से कोई चिट्ठी मिली है?”

“पत्र? नहीं।”
मेरा मतलब है, यहां आने के बाद आपने जरूर लिखा होगा। और आपको जवाब भी मिला होगा?
“नहीं,” उसने शर्मिंदा होकर कहा। “मैंने नहीं लिखा है। और उसकी तरफ से कोई पत्र नहीं आया है।”
"आपका मतलब है कि उस समय से लेकर अब तक कोई पत्राचार नहीं हुआ, संदेशों का कोई आदान-प्रदान नहीं हुआ?"
"नहीं।"
“और अब तुम्हें उसकी याद आ रही है? वाह, तुम तो कमाल हो!”
सचमुच, यह कितना अजीब है, उसने सोचा। यहाँ आने के बाद से मैंने उसे पत्र नहीं लिखा, न ही उसने मुझे लिखा। यादों का घना बादल फिर से उसे घेरने लगा। एक धुंधली रोशनी वाली सड़क, फिर घोर अंधेरा, फिर एक रोशन इलाका, एक चमकती हुई याद।

•

सबीरा की लंबाई कितनी बढ़ गई थी और उसका सीना कितना फूल गया था, अब वह उसे हमेशा दुपट्टे से ढके रखती थी, लेकिन उसके उभरे हुए स्तन अब भी साफ दिखाई देते थे। उनकी बातचीत कभी तेज़ होती थी, कभी धीमी—कभी-कभी इतनी धीमी कि उसकी आवाज़ फुसफुसाहट जैसी हो जाती थी और शर्म से सबीरा के गाल लाल हो जाते थे। कॉलेज लौटने के बाद, सुरेंद्र की सलाह पर उसने उसे एक लंबा पत्र लिखा। “ज़ाकिर! क्या तुमने पत्र भेज दिया?”
“यार, मैंने इसे मेल कर दिया था, लेकिन—” वह बीच वाक्य में ही रुक गया। "क्या पर?"
यार, अगर उसे समझ आ गया तो क्या होगा?
“आखिर तुमने वो पत्र क्यों लिखा? तुमने तो इसलिए लिखा था ताकि वो समझ सके।”
“यार, अगर वो समझ गई तो—?” वह बीच में ही रुक गया।
"तब फिर क्या होगा?"
वह सोचेगी कि—

•

किसी के दरवाजे पर दस्तक देने की आवाज़: "दरवाजा खोलो!" स्मृति के प्रकाशमान क्षेत्र से अचानक लौटकर, उसने धुंधली रोशनी वाले वातावरण में

चारों ओर देखा। कोई दरवाजे पर दस्तक दे रहा था, और मेजों पर बैठे लोग बेचैनी से दरवाजे की ओर देख रहे थे।
"इसे मत खोलो, जुलूस पास ही है।"
यह कहना मुश्किल है कि यह कौन है!
"ये जुलूस के लोग हैं, दरवाजा मत खोलो।"
“दरवाजा खोलो, वरना उन्हें परवाह नहीं होगी, वे बदला लेंगे, वे पूरे घर को जला देंगे!” अब्दुल रसोई से बाहर आया और दरवाजे की ओर बढ़ा। पर्दा थोड़ा सा हटाकर उसने खिड़की से बाहर देखा और उसे तसल्ली हुई। दरवाजे का एक पल्ला थोड़ा सा खोलकर उसने जल्दी से नए आए लोगों को अंदर बुलाया और तुरंत दरवाजा बंद कर दिया।
“दोस्तों, तुमने दरवाजे पर इतनी जोर से दस्तक दी कि हम डर गए!” एक परिचित ने अंदर आए नियमित ग्राहकों से कहा।
लेकिन डरे हुए लोग किसी को कैसे डरा सकते हैं?
बाहर का मौसम कैसा है?
"बुरा हाल है। बहुत तबाही हुई है।"
उसका हृदय और मन स्मृतियों से भरा हुआ था, वह आधा सुन पा रहा था और आधा नहीं सुन पा रहा था। वह स्मृतियों के उस क्षेत्र से ऐसे लौटा था जैसे कोई सो रहा व्यक्ति अचानक नींद से जाग जाता है, उसकी आँखों में अभी भी नींद भरी होती है। नींद का आवेग फिर हवा के झोंके की तरह आता है, और वह फिर से बेखबर और दुनिया से बेखबर हो जाता है। स्मृतियों की छवियाँ उसके चारों ओर तैर रही थीं।

•

फिर सबीरा उसकी कल्पनाओं में खोई रहती थी, जब वह कुछ दिनों के लिए व्यासपुर आई थी। उन दिनों हम दोनों एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए थे। जब इंजन सीटी बजाता, तो वह भी खुली छत पर खिंची चली जाती, जहाँ मैं छुट्टियों में मेरठ से घर आने पर शाम से रात तक बैठकर दूर तक फैले खेतों को देखता, खेतों के पार रेल की पटरियाँ, और पटरियों के पार पेड़ों की कतारें। हम दोनों छत की मुंडेर पर सिर टिकाकर खड़े रहते, सिर एक-दूसरे से छूते। हम सीटी बजाते, धुआँ उगलते इंजन और उसके पीछे चलती, रोशन बोगियों को देखते। दिन में ये बोगियाँ अलग-अलग दिखती थीं, लेकिन रात के अंधेरे में वे मानो एक साथ बंधी हुई और चलती हुई दीपों की कतार जैसी लगती थीं। दीपों की कतार खींची जाती

हुई, दौड़ती हुई आती। जब वह गुजरती, तो सबीरा खुशी और आश्चर्य से कहती, “कितनी लंबी ट्रेन थी, एक के बाद एक बोगियाँ। कौन सी ट्रेन थी?”
"दिल्ली की ट्रेन।"
वह अचंभित रह गई। "यह ट्रेन दिल्ली जाती है!"
"हाँ बिल्कुल।"
वह थोड़ी देर चुप रही। “ज़ाकिर, तुमने दिल्ली देखी होगी? दिल्ली कैसी है?” मैं वहां सिर्फ एक बार गया हूं, लेकिन अपनी परीक्षाओं के बाद, मैं वहां रहने के लिए जाऊंगा।
“सच में! कैसे?” वह अचंभित रह गई।
मैं वहां जाकर काम करूंगा।
"वास्तव में?"
रात ढल रही थी। चाँद अभी निकला नहीं था। लेकिन आसमान में कुछ तारे टिमटिमा रहे थे, मानो दूर कहीं दीपक जल रहे हों। मैंने सबीरा के हैरान चेहरे को टकटकी लगाकर देखा।
“Sabirah!”
“हं?”
“सबीराह, अगर मुझे दिल्ली में नौकरी मिल जाए तो—तो—” मेरी ज़बान लड़खड़ाने लगी। “तो—हम दोनों वहाँ साथ रह सकते हैं।”
“क्या?” उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा, मानो उसे कुछ समझ ही न आया हो। मैं चुपचाप उसे देखता रहा; और फिर जैसे अचानक उसे कुछ समझ आ गया हो, वह एकदम से खिसक गई।
अगले दिन हम दोनों ने एक-दूसरे से नज़रें बचाईं, लेकिन रात होते ही इंजन की सीटी और पहियों की खड़खड़ाहट उसे फिर छत पर ले आई। मुझसे दूरी बनाए रखते हुए, वह अपनी ठुड्डी मुंडेर पर टिकाकर खड़ी रही। लेकिन ट्रेन पेड़ों की ओट में कहीं रुक गई और इंजन सीटी बजाता रहा। हम एक-दूसरे के और करीब आ गए, सचमुच बहुत करीब। इतने करीब कि मैं उसके शरीर की गर्माहट और कोमलता महसूस कर सकता था।
उसके बाद, हम एक-दूसरे का सहारा लेकर और भी आत्मविश्वास से दिल्ली की ट्रेनों को आते-जाते देखते रहे। ठंडी, काली फफूंदी से भरी रेलिंग पर ठुड्डी टिकाकर, हम ट्रेनों को कभी धीरे, कभी तेज़ गति से चलते हुए देखते

रहे। अब हमें इस ट्रेन के बारे में कोई सवाल नहीं था, मानो दिल्ली तक इसमें यात्रा करने की हमारी योजना पर सहमति बन चुकी हो।
फिर खला जान की तरफ से एक के बाद एक चिट्ठियाँ आने लगीं, जिनमें सबीरा को घर भेजने के लिए कहा गया था। अम्मी ने कहा, “अरे हाय, बतूल ने तो मुझे पागल ही कर दिया है! ये तो बुरे दिन हैं, मैं उसे कैसे भेज सकती हूँ?”
“अम्मी! क्या मैं उसे ले जाऊं?”
अब्बा जान ने मेरी ओर गौर से देखा और कहा, "हालात बहुत खराब हैं।"

•

"मैंने सुना है, महोदय, कि गोलीबारी हुई है।"
“क्या?” वह चौंककर बोलने वाले की ओर देखने लगा। बोलने वाला अब्दुल था, जो खाली चाय के कप इकट्ठा कर रहा था। उसका चेहरा चिंतित लग रहा था। “मुझे नहीं पता, महोदय, लेकिन अभी-अभी रीगल होटल से एक आदमी आया था, वह ऐसा कह रहा था।” वह अपने जंगल से वापस आ गया था और अब्दुल के चेहरे को घूर रहा था।
“ये बुरे दिन हैं, महोदय।” अब्दुल ने बोलते हुए खाली चाय के प्यालों से भरी ट्रे उठाई और उसे अपने साथ ले गया।
मुझे लगता है हमें बाहर जाना चाहिए।
“बाहर?” उसने हैरानी से इरफान की तरफ देखा।
“हाँ। आख़िर हम कब तक यहाँ अंदर बंद होकर बैठे रह सकते हैं? और वैसे भी, मेरे काम पर जाने का समय लगभग हो गया है।”
“तो फिर मेरे अकेले यहाँ रुकने का क्या मतलब है? मैं घर चला जाऊँगा।”
खैर, चलो बाहर चलते हैं, और फिर देखेंगे।
बाहर का नजारा पूरी तरह बदल चुका था। उसने हैरानी से सड़क को देखा। सुबह कॉलेज जाते समय वह इसी सड़क से गुजरा था। तब यह हमेशा की तरह साफ-सुथरी थी। कारें, स्कूटर, साइकिलें, स्कूटर-टैक्सी अपनी-अपनी मंजिलों की ओर तेजी से बढ़ रही थीं। लोगों से भरी बसें भी तेज रफ्तार में थीं। तेज रफ्तार स्कूटर-टैक्सी एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगी थीं। लेकिन अब पूरी सड़क बिखरी हुई ईंटों से भरी थी। बिखरी हुई ईंटों के बीच-बीच बसों और कारों की खिड़कियों के टूटे हुए कांच के टुकड़े चमक रहे थे। एक अधजली डबल-डेकर बस सड़क के बीचोंबीच असहाय पड़ी थी, लेकिन उससे यातायात नहीं रुक रहा था। आखिर यातायात रोकने के लिए था क्या? एक-दो कारें ईंटों से बचते हुए धीरे- धीरे डबल-डेकर के पास से गुजरीं और उसे पार करते ही अचानक रफ्तार पकड़ ली।

फिर काफी देर बाद एक बस की आवाज सुनाई दी, जो शोर मचाते हुए ईंटों पर से गुजरी और बेपरवाह होकर आगे निकल गई।
जब वह पेट्रोल पंप के पास से गुजरा, तो उसने देखा कि वहाँ भीड़ जमा हो गई थी। भीड़ आश्चर्य से एक लंबी कार को देख रही थी जो पलटी हुई पड़ी थी, उसके चारों पहिये आसमान की ओर और छत जमीन पर लगी हुई थी।
आश्चर्यचकित भीड़ के बीच से गुजरते हुए वह आगे बढ़ गया। नेशनल ऑडिटोरियम के सामने एक उग्र भीड़ जमा हो गई थी। ऑडिटोरियम में प्रवेश करते हुए एक सम्मानित सज्जन हिचकिचाए और बोले, "क्षमा कीजिए महोदय, क्या भाषण समाप्त हो गया है?"
"बेहतर होगा कि आप यह पूछें कि क्या यह शुरू हो चुका है!"
“तो क्या भाषण नहीं हुआ?”
“नहीं,” एक युवक ने गुस्से से कहा। “साम्राज्यवादी दलाल, कमीने! उनके भाषण देने का समय समाप्त हो गया है!”
तेजी से आती हुई एक मोटरसाइकिल रुकी और बोली: "ऊपर क्या हो रहा है?"
वे कुर्सियाँ फेंक रहे हैं।
मोटरसाइकिल सवार ने पिस्तौल निकाली, हवा में गोली चलाई, मोटरसाइकिल को दोबारा चालू किया और गायब हो गया।
अरे! उसकी कार वहीं खड़ी होगी ना?
“अच्छा विचार है। दलाल ने गरीबों को लूटकर इसे खरीदा है, चलो इसे जला देते हैं!”
अम्मी ने धड़कते दिल और भयभीत आँखों से उसका स्वागत किया, उसके दुर्भाग्य को अपने ऊपर लेने का इशारा किया,* अपना हाथ उठाया और आँसू भरी आँखों से कहा, "हे भगवान, आपका धन्यवाद।"
“क्या हुआ?” उसने अम्मी की ओर आश्चर्य से देखा।
“हे भगवान! मैं बहुत डर गई थी। आस-पड़ोस के लोग कह रहे थे कि गोलीबारी हो रही है। मेरी धड़कन रुक गई थी। मैं घबरा गई थी, बार-बार दरवाजे के पास जा रही थी। मैं प्रार्थना करती रही, ‘हे भगवान, मेरा बेटा बाहर गया है, उसे सुरक्षित वापस ले आओ।’”
“क्या ज़ाकिर आ गया है?” अब्बा जान की आवाज़ बाहरी कमरे से आई।
“जाओ, मेरे बेटे, अपने पिता को अपना चेहरा दिखाओ और फिर वापस आ जाओ। वह भी चिंतित थे।”

जब वह कमरे में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि ख्वाजा साहब अब्बा जान के साथ बैठे हुए थे।
“बेटे! मेरी सलामत कहाँ है?” ख्वाजा साहब ने अचानक यह सवाल पूछा।
मैंने दोपहर में सलामत को देखा, फिर वह अजमल के साथ कहीं चला गया।
"वह दुष्ट जुलूस के साथ ही चला गया होगा।"
“जुलूस के साथ?—मुझे नहीं पता।”
“उस बदमाश ने मुझे बहुत परेशान किया है,” ख्वाजा साहब ने गुस्से से बुदबुदाते हुए कहा। “मैंने सुना है कि गोलीबारी हुई थी?” “बर्खास्तगी?—नहीं।”
"अगर अभी तक गोलीबारी नहीं हुई है, तो जल्द ही होगी।"
“क्या कर्फ्यू लगा दिया गया है?” अब्बा जान ने गंभीर स्वर में पूछा।
"अभी तक नहीं।"
“ऐसा होने में कितना समय लगेगा? सर्वशक्तिमान ईश्वर इस देश पर दया करे।” अब्बा जान ने आह भरी।
“मौलाना! अमृतसर में कर्फ्यू लगा दिया गया था! जो भी एक बार खिड़की से सिर बाहर निकालता, उसे वापस अंदर खींचने का मौका ही नहीं मिलता था। जैसे ही किसी का सिर दिखाई देता, वे गोली चला देते थे।”
“भाई, यह सब कब हुआ था?”
“मौलाना, यह जलियांवाला बाग कांड के समय की बात है। तब कितनी भीषण आग लगी थी! तीन रातों तक किसी के घर में दीपक नहीं जलाया गया, आग से इतनी रोशनी थी।”
“Oh?” Zakir looked with surprise at Khvajah Sahib.
“जी बेटा! क्या मैं बुढ़ापे में झूठ बोलूँ? यह अमृतसर का सबसे बड़ा पेट्रोल पंप था, जहाँ साहबों की गाड़ियों में पेट्रोल भरा जाता था। यह तीन दिन और तीन रात तक जलता रहा। लपटें आसमान तक पहुँच गईं। फिर जो हुआ, वह यह कि बैंक लूटा गया, फिर लूटपाट कपड़ा बाजार तक फैल गई। फिर कर्फ्यू लगा दिया गया। यह कर्फ्यू मानो ईश्वर का प्रकोप था! जब कोई खिड़की से ज़रा सा भी सिर बाहर निकालता, तो राइफल की आवाज़ आती और वह पत्थर की तरह गिर पड़ता।” “यूरोपियों ने बहुत सारी क्रूरताएँ कीं,” अब्बा जान ने बुदबुदाते हुए कहा।

“मौलाना जी, हम पर सबने अत्याचार किए हैं, विदेशियों ने भी और हमारे अपने लोगों ने भी। क्या आजकल इतनी क्रूरता नहीं हो रही है?” वे थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “लेकिन सच में, अंग्रेजों का बहुत सम्मान किया जाता था। उनका कितना अधिकार था! फरमान जारी किया गया था कि जिसने भी कोई संपत्ति लूटी हो, उसे शाम तक अपने घर के बाहर रख दे। उसके बाद घरों की तलाशी ली जाती थी। मैं आपको बताता हूँ, मौलाना जी, आपको विश्वास नहीं होगा, लेकिन जिन लोगों ने कपड़े का एक टुकड़ा भी नहीं लूटा था, उन्होंने भी अपनी संपत्ति सड़क पर रख दी। लोगों ने अपनी बेटियों का दहेज भी घरों के बाहर ढेर कर दिया। शाम तक अमृतसर की सड़कें रेशम और जकूज़ी के ढेरों से भर जाती थीं।”
अब्बा जान चुपचाप हुक्का पीते हुए सुनते रहे। फिर उन्होंने गला साफ किया और बोले, “अल्लाह उन्हें सलामत रखे, मेरे आदरणीय पिता हमेशा बताते थे कि 1957 में इतना कड़ा कर्फ्यू लगा था कि कभी-कभी तो मृतकों के शवों को भी तीन दिन तक घर में ही रखना पड़ता था। कफ़न के लिए एक साधारण कपड़ा भी नहीं मिलता था, और दफ़नाने के लिए कब्र भी नहीं मिलती थी। वे शव को मोटे बोरे में लपेटते थे और रात के अंधेरे में, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई सैनिक देख न रहा हो, शव को वहीं गली में दफ़ना देते थे।” वे चुप हो गए, फिर उदास होकर बोले, “मुसलमानों ने कितने कठिन समय देखे हैं!”
लेकिन, मौलाना, अब मुसलमानों पर कैसा समय आने वाला है?
अब्बा जान ने आकाश की ओर अपनी तर्जनी उंगली उठाई: "केवल वही जानता है।" “मौलाना! मैं आपको एक बात बता दूं: हमें अपने बेटों के हाथों बुरे दिन झेलने ही हैं। मैंने सलामत को समझाने की कोशिश की: ‘बेटे, तुम्हारा दिमाग खराब हो रहा है। नारे लगाकर अपना गला क्यों खराब कर रहे हो?’ और उसने मुझे क्या जवाब दिया, बस यही कहा, ‘हम व्यवस्था बदलेंगे!’”
अब्बा जान ने गंभीरता से कहा, “ख्वाजा साहब! इस दुनिया में एक लाख चौबीस हजार पैगंबर रह चुके हैं, और क्या दुनिया में कोई बदलाव आया है?”
"जी नहीं महोदय, इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है।"
“जब पैगंबर भी दुनिया को नहीं बदल पाए, तो तुम्हारा और मेरा बेटा इसे कैसे बदलेंगे?”
“मौलाना, तुम बिल्कुल सही हो। दुनिया नहीं बदल सकती।”
“ख्वाजा साहब, मैं इस उम्र तक पहुँच गया हूँ—कैसे दिन आए और चले गए! हर बार मैंने एक ही नतीजा देखा है। कुछ उग्र स्वभाव के लोगों का खून हमेशा के लिए

ठंडा हो गया है। बाकी लोगों ने अपने स्वार्थों का ध्यान रखा और अपने-अपने सौदे किए।”
“सर, आप बिलकुल सही कह रहे हैं। कृपया, मौलाना जी, यह बात उस कमीने सलामत को बता दीजिए।”
“उसका खून अभी भी खौल रहा है, वह अभी इसे समझ नहीं पाएगा। इसे लंबे समय तक जीने के बाद ही समझा जा सकता है। और ख्वाजा साहब! मैं अब किसी भी परिस्थिति में हस्तक्षेप नहीं करूंगा।”
“आप बिलकुल सही कह रहे हैं। पाकिस्तान में खुलकर बोलने का कोई फायदा नहीं है।”
“ख्वाजा साहब, कहीं भी बोलने का कोई फायदा नहीं है।”
जी हाँ, बिलकुल सही। जो भी आवाज़ उठाता है, उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है। कम से कम हमने पाकिस्तान में तो ऐसा होते देखा है।
अब्बा जान ने चुपचाप हुक्का को अपनी ओर सरकाया, मुखपत्र को अपने मुंह में लिया और चिंतन में लीन हो गए।
ख्वाजा साहब चुपचाप बैठे रहे। फिर अचानक उन्होंने जाकिर से पूछा, “दोपहर में वह तुम्हारे साथ थे?”
"जी श्रीमान।"
“तो फिर वह जुलूस के साथ नहीं गया?”
"मुझें नहीं पता।"
“वह हरामजादा,” ख्वाजा साहब गुस्से से बुदबुदाए। फिर उन्होंने कहा, “सच तो यह है कि उसकी मां बहुत परेशान है। मैंने उससे कहा, ‘अपनी किस्मत पर शुक्र मनाओ—तुम्हारे बेटे हैं। अपने बेटे के बारे में सब्र रखो,’ लेकिन वह सब्र नहीं रख सकी।” वे थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “वह सब्र कैसे रख सकती थी? एक बेटा ढाका गया और वहीं फंस गया, दूसरा बेटा यहां अपना जीवन बर्बाद कर रहा है।”
"क्या आपको करामत से कोई पत्र मिला है?"
"चिंता की बात यही है कि हमें उनकी तरफ से कोई पत्र नहीं मिला है।"
“उस पर भरोसा रखो।” अब्बा जान ने अपनी उंगली से आकाश की ओर इशारा किया। “खैर, हम उन पर पूरा भरोसा रखते हैं। मौलाना साहब! मेरा वो करामत कितना प्यारा, कितना आज्ञाकारी और सम्माननीय है। देखिए, भगवान ने क्या ही

इंतज़ाम किया है: आवारा और बदमाश यहाँ हमारे दिलों को चूर-चूर कर रहा है, जबकि नेक और सलीकेदार बेचारा वहाँ फँस गया है।” ये कहते हुए वो खड़े हो गए। Abba Jan, smoking his huqqah, watched Khvajah Sahib. “Are you going?” “हां, मैं घर जाकर देख लेता हूँ। हो सकता है वह निकम्मा वापस आ गया हो।” “हां, तो जाओ।”
“मौलाना साहब, उस बेचारे के लिए दुआ कीजिएगा। उसकी माँ को उसकी बहुत चिंता रहती है।”
अब्बा जान ने एक बार फिर आकाश की ओर उंगली उठाई: "वही रक्षक हैं।"
ख्वाजा साहब विदा लेकर चले गए और अब्बा जान ने अपना हुक्का उठाया और अंदर चले गए। ज़ाकिर बहुत थका हुआ था। लेटते ही उसे नींद आने लगी। उसने आँखें बंद कर लीं, पर नींद बस उसके आसपास मंडराती रही, आई नहीं। उसे पता नहीं कितनी देर तक वह आँखें बंद करके, आधी नींद में और आधे जागते हुए लेटा रहा। अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।
“‘इस भारी दरवाजे को खोलो, मुझे अंदर आने दो!’” अफजल की आवाज बाहर से आई।
वह उठा और दरवाजा खोला। अफजल अंदर आया, और उसके पीछे सलामत और अजमल भी। “ज़ाकिर!” अफ़ज़ल ने पहले उसकी तरफ देखा, फिर सलामत और अजमल की ओर इशारा करते हुए कहा: “मैंने इन लोगों को माफ़ कर दिया है, तुम भी इन्हें माफ़ कर दो।”
अफ़ज़ल को क्या जवाब दें, यह वह तय नहीं कर पा रहा था। अफ़ज़ल ने अकड़कर कहा, “मैं तुमसे कह रहा हूँ, इन्हें माफ़ कर दो! मैंने इन्हें अपनी सुरक्षा में ले लिया है।” फिर उसने नरमी से कहा, “ज़ाकिर, ये दोनों अच्छे लोग हैं।” बोलते-बोलते वह एक कुर्सी पर बैठ गया और अजमल से बोला, “दोस्त! जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसे बाहर निकालो।”
अजमल कुर्सी पर बैठ गया और अपना बैग मेज पर रख दिया। बैग खोलकर उसने एक बोतल निकाली और मेज पर रख दी। जाकिर ने डर और हैरानी से बोतल को देखा। "यार, यहाँ नहीं!"
“क्या?” अफजल ने ध्यान से उसकी ओर देखा।
उसने घबराते हुए कहा, "यार, तुम्हें पता है कि मेरे पिताजी इन मामलों में बहुत सख्त हैं।"
सलामत ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से हंसते हुए कहा, "तुम्हारा बाप!"

“यार, वो सफेद दाढ़ी वाला आदमी, वो तुम्हारा बाप है ना?” अफजल ने पूछा। “छोड़ो उसकी, वो तो मेरे बच्चे जैसा है। मैं उसे समझा देता हूँ, तुम जाओ और गिलास ले आओ।”
“पिताओं को कुछ भी समझाया नहीं जा सकता।” सलामत ने स्पष्ट नियम स्थापित किया।
“क्या आप दूसरों के पिताओं की तुलना अपने पिता से करते हैं?” अफजल ने कहा।
“वह मेरे पिता नहीं हैं!” सलामत चिल्लाई।
“तो फिर वो किसके बाप हैं?” अफजल ने मासूमियत से पूछा।
“मुझे नहीं पता, लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि वह मेरा बाप नहीं है।
मैं एक नाजायज औलाद हूँ,” उसने गुस्से से दांत पीसते हुए कहा।
क्या इसका कोई सबूत है?
इसका सबूत यह है कि मैं यह कहता हूँ!
“इससे कोई सबूत नहीं मिलता, दोस्त! यह घोषणा करने से पहले तुम्हें अपनी माँ से पूछ लेना चाहिए था।”
मैंने उससे पूछा था।
"तब?"
“उस अज्ञानी स्त्री ने गवाही देने से इनकार कर दिया,” उसने शोकग्रस्त स्वर में कहा। फिर उसने उदास होकर कहा, “हमारे पिता क्रूर हैं और हमारी माताएँ अज्ञानी हैं।” बोलते-बोलते ही वह रोने लगा।
जब अजमल ने सलामत को रोते हुए देखा, तो उसकी आंखों से भी आंसू बहने लगे। “भाई, तुम क्यों रो रहे हो?”
“यार! मेरी माँ तो सलामत की माँ से भी ज़्यादा अज्ञानी है। जब मैंने उससे पूछा, तो पहले उसने मुझे थप्पड़ मारा, फिर अपने बाल नोचने लगी और चीखने लगी।”
अफजल ने अजमल को घूरा, फिर रोते हुए सलामत को देखा, और गुस्से से उसकी आँखें लाल हो गईं। "तुम दोनों घिनौने लोग हो!"
अजमल ने सलामत की ओर देखा। सलामत ने कहा, "अफजल सच कह रहा है, हम घिनौने लोग हैं।"
“मैं तुम्हें अपनी सुरक्षा में लेने से इनकार करता हूँ। घिनौने लोग! यहाँ से चले जाओ। यह एक नेक इंसान का घर है।”

सलामत उठ खड़ा हुआ। अजमल ने बोतल को बैग में रखा और सलामत के पीछे-पीछे घर से बाहर निकल गया।
“ज़ाकिर! तुम अच्छे इंसान हो, मुझे माफ कर दो।”
यार, ये किस तरह की बातें हो रही हैं?
नहीं, मुझे माफ कर दीजिए।
“किसलिए?” उसने चिंता भरी नजरों से अफजल की ओर देखा।
“मैंने दो दुष्ट आत्माओं को एक नेक इंसान पर अधिकार देने की कोशिश की। मैंने पाप किया है। हे भले इंसान! मुझे क्षमा कर दो, मैं पापी हूँ।” बोलते- बोलते उसकी आवाज़ भर्रा गई और आँखों में आँसू आ गए। “हम पापी हैं और हम पीड़ा भोग रहे हैं।”

तीन
आज उन्हें मॉल रोड शांत लगा, और वे उदास थे। कल वहाँ का मंजर कितना भयानक था! टूटी खिड़कियों वाली गाड़ियाँ और दिनभर सड़क के बीचोंबीच पड़ी एक अधजली डबल-डेकर बस, यहाँ हुई तबाही की गवाही दे रही थीं। ईंटें फेंकने और नारे लगाने वाले जुलूस, घबराए हुए पैदल यात्री, तेजी से गिरते शटरों वाली बंद होती दुकानें, बस इक्का-दुक्का डरपोक बसें या स्कूटर-टैक्सी ही बिखरी ईंटों और कांच के बीच से रास्ता बनाते हुए दिखाई दे रही थीं। अब वहाँ शांति थी, और सड़क एक छोर से दूसरे छोर तक साफ थी। न बिखरी ईंटें, न कांच के टुकड़े। यातायात सुचारू रूप से चल रहा था। गाड़ियाँ आराम से चल रही थीं, एक के बाद एक, एक के बाद एक। किसी की भी खिड़की टूटी हुई नहीं लग रही थी। वे हैरान थे: कल तो ऐसा लग रहा था जैसे शहर की सभी गाड़ियों की खिड़कियाँ टूट गई हों, लेकिन अब शहर की सभी गाड़ियाँ ठीक-ठाक हालत में थीं। और वो दो मंजिला बस जो कल शाम तक सड़क के बीचोंबीच अधजली पड़ी थी—वो कहाँ चली गई? जी हाँ, पेट्रोल पंप के पास पलटी हुई कार अभी भी वहीं पड़ी थी। लेकिन अब राहगीरों की आँखों में कोई चिंता या हैरानी नहीं थी, मानो वो कार किसी पुराने ज़माने में पलटी हो और अब समय बीतने के साथ-साथ उसका आश्चर्य करने का भाव भी खत्म हो गया हो।
मेट्रो वाइन्स की दुकान के पास से गुज़रते हुए, उसने अंदर और बाहर टूटे हुए शीशों को ध्यान से देखा। टूटे हुए शीशे कल यहाँ हुई सारी घटनाओं की गवाही दे रहे थे। आज कुछ नहीं हुआ था, लेकिन फिर भी मॉल रोड पर कुछ तो हुआ था। कल का शोरगुल जितना अजीब लग रहा था, आज की खामोशी उससे भी ज़्यादा अजीब थी। यह भी अजीब लग रहा था कि कॉलेज के बरामदों में कल जो गमले उलट गए थे, वे आज करीने से सजे हुए थे। कॉलेज में व्यवस्था और अनुशासन लौट आया था। कक्षाएँ ठीक से चल रही थीं। बाहर, मैदान में, छात्रों के समूह घूम रहे थे। रातों- रात छात्र कितने शांत हो गए थे। कल तक उनकी क्या हालत थी! ज़रा सी बात पर उनके चेहरे लाल हो जाते, गर्दन की नसें तन जातीं, वे गालियाँ देने में कोई कसर नहीं छोड़ते। गालियाँ, नारे। और नारे इतने ज़बरदस्त थे कि एक ही पल में

इतना बड़ा जुलूस निकल आता कि कॉलेज परिसर उसके लिए छोटा पड़ जाता और वह बाहर तक फैल जाता। और अब? अब इतनी शांति थी कि किसी ने अपनी आवाज तक नहीं उठाई। लोग बातें कर रहे थे, लेकिन फुसफुसाते हुए।
“यार! मेरा भाई रात की उड़ान से आया।”
"वास्तव में?"
"क्या वह कार्रवाई शुरू होने के बाद चला गया?"
“यह सब ठीक उसी क्षण शुरू हुआ। उन्होंने बताया कि इंटरकॉन्टिनेंटल होटल से हवाई अड्डे तक पहुँचना मुश्किल था। सड़कों पर सिर्फ टैंक ही टैंक थे। उन्होंने बताया कि जब वे विमान की ओर जा रहे थे, तो एक ज़ोरदार आवाज़ आई जैसे किसी तोप से गोले दागे गए हों, और फिर लगातार गोलियों की आवाज़ें आती रहीं, मानो युद्ध शुरू हो गया हो। और जब विमान ने उड़ान भरी और उन्होंने बाहर देखा, तो दूर-दूर तक सिर्फ धुएँ के बादल ही बादल थे।”
"वास्तव में?"
लेकिन क्या होगा?
चाहे कुछ भी हो जाए, उन लानत बंगालियों की हवा निकल चुकी है!
“कमीने!” किसी ने मन ही मन बुदबुदाया। “अब तो इन्हें सबक मिल ही जाएगा!” खुशी, घृणा, नफरत, गुस्सा—हर भावना फुसफुसाहट में व्यक्त हो रही थी। उसे घुटन महसूस होने लगी। वह इस दम घोंटने वाले माहौल से भागना चाहता था। “मुल्ला सिर्फ मस्जिद तक ही जाता है।” वह बेशक शिराज गया, लेकिन वहाँ भी माहौल घुटन भरा था। न शोर, न अफरा-तफरी, न ठहाकों की आवाज, न ही ऊंची आवाजें। सिर्फ लोगों के चेहरों के भावों से पता चल रहा था कि किसी गंभीर विषय पर चर्चा हो रही है।
“यार, कल यहाँ बहुत उथल-पुथल थी—और आज भी—”
“हाँ! और आज ही,” इरफान ने मन ही मन बुदबुदाया और चाय पीने लगा।
“यार, कल तो मुझे बहुत डर लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि आज—” उसे खुद नहीं पता था कि वह क्या कहना चाहता है।
“तो यही सबसे अच्छा हुआ,” इरफान ने व्यंग्यपूर्वक कहा।
"एक लिहाज से, यह सबसे अच्छा ही हुआ।"
"हम हर बार यही कहते हैं, लेकिन बाद में हमें पता चलता है कि यह सबसे अच्छा नहीं था।"
यार, मुझे इनमें से कुछ भी समझ नहीं आ रहा है।

मुझे भी इनमें से कुछ समझ नहीं आ रहा है, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि कुछ हुआ है।
"क्या हुआ है?
“यह स्पष्ट नहीं है। लेकिन स्पष्टता से क्या फायदा? जो मैं अस्पष्ट रूप से महसूस करता हूँ, वही सब कुछ है।”
इरफ़ान को अजीब सी बेचैनी क्यों हो रही थी? उसके मन में किस बात का डर पनप रहा था? ज़ाकिर को कुछ समझ नहीं आया। फिर उसने बात का विषय बदल दिया। “यार, सलामत और अजमल आज कहाँ हैं?”
“आज वे अपने बिलों में हैं। वे बिलों से तभी बाहर आते हैं जब बाहर आने के लिए मौसम अनुकूल होता है। आज मौसम बदल गया है।”
दरवाजा खुलते देख इरफान ने कहा, "देखो, वह सनकी आ गया है।"
“कौन सा सनकी?”
“यार, वो सफेद बालों वाला आदमी,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, जैसे ही सफेद बालों वाला आदमी अंदर आया और सीधे उनकी ओर बढ़ा।
“क्या मैं बैठ सकता हूँ? मुझे बस कुछ मिनट लगेंगे।”
“बिल्कुल, बिल्कुल।” बोलते हुए उन्होंने इरफान की ओर देखा, जिसके चेहरे के भाव से पता चल रहा था कि उसे यह दखलअंदाजी पसंद नहीं आई।
"आपकी राय में, यह सबसे अच्छा था या नहीं?"
“आपकी क्या राय है? यह तो सबके भले के लिए ही हुआ!” इरफान ने कड़वाहट से कहा।
मुझे नहीं पता कि यह सबसे अच्छा था या नहीं, मुझे बस इतना पता है कि अगर पाकिस्तान को इस तरह बचाया जा सकता है तो—"
“किधर, इधर?” इरफान गुस्से से बोला।
सफेद बालों वाले उस व्यक्ति ने इरफान को देखा और फिर शांत भाव से कहा, "तुम मेरे बालों को देख रहे हो?"
मैं आपके बालों को देख रहा हूँ, ये तो बिल्कुल सफेद हैं। क्या आप अपने बालों को आकर्षण का केंद्र बनाना चाहते हैं?
"नहीं।"
"तब?"
मैं आपको बताना चाहता हूं कि मेरे बाल सफेद कैसे हो गए।
"अगर आप हमें बता देंगे तो इससे क्या फर्क पड़ेगा?"

“बहुत बड़ा अंतर।” वह रुके, फिर बोले, “जब मैं घर से निकला था, मेरे बाल बिल्कुल काले थे। और मेरी उम्र भी बहुत कम थी, मैं सिर्फ बीस या इक्कीस साल का था। जब मैं पाकिस्तान पहुँचा, नहाया और आईने में देखा, तो मेरे बाल पूरी तरह सफेद हो चुके थे। पाकिस्तान में मेरा पहला दिन यही था। मैं अपने घर से काले बालों और परिवार के साथ निकला था, जब मैं पाकिस्तान पहुँचा तो मेरे बाल सफेद थे और मैं अकेला था।” वह चुप हो गए और चले गए, अपने शब्दों का असर देखे बिना, मानो उन्होंने जो कहना था कह दिया हो। अब वह शांति से अपने कोने में बैठ गए और अब्दुल को चाय का ऑर्डर दिया।

•

उसने खिड़की से बाहर झाँका, जहाँ इतनी रातों के बाद अब रैली स्थल खाली और शांत था। खैर, शायद यही अच्छा था। एक दिन जुलूस, दूसरे दिन जुलूस। संतुष्टि की एक आह भरकर वह तकिये पर पीछे झुक गया। आज रात वह चैन से सो पाएगा। उसने एक करवट ली, फिर दूसरी, फिर तीसरी। आज रात नींद उससे कोसों दूर थी। करवटें बदलने की इच्छा को काबू में रखते हुए, वह काफी देर तक चुपचाप आँखें बंद करके लेटा रहा, मानो किसी भी पल उसे नींद आ जाए। लेकिन उसका मन बातें करता रहा, अलग-अलग समय और स्थानों की कहानियाँ सुनाता रहा, कुछ नई और कुछ सदियों पुरानी। आज मैंने किसी तरह मुगल काल खत्म कर लिया। इतिहास पढ़ाना उबाऊ है। और इतिहास पढ़ना? लड़के बेतुके सवाल पूछते हैं। और मन? एक लड़का खड़ा हुआ: "सर?"
“हां, क्या बात है?”
“महाराज! क्या मुगलों में सभी भाई सौतेले भाई होते थे?”
बैठ जाओ। इस पूरे इतिहास में, क्या यही एक सवाल है जो तुम्हें पूछने को मिला?
मैंने उसे डांटा और बिठा दिया। एक निरर्थक प्रश्न। सगे भाइयों और सौतेले भाइयों में भेद करना व्यर्थ है। कैन और हाबिल सौतेले भाई नहीं थे। इतिहास में, और इतिहास से पहले भी। मिथक, कहानियां, दंतकथाएं, भाइयों की कहानियां। वे भाई जो अपने पिता के जीवित रहते हुए भाई थे—वे भाई जो अपने पिता की मृत्यु के बाद भाई बन गए—अब सोने का समय हो गया है। आखिर सुबह मुझे कॉलेज जाना है। फिर वही घिनौना इतिहास। लड़कों को इतिहास पढ़ाना कितना उबाऊ है। और इतिहास पढ़ना? दूसरों का इतिहास आराम से पढ़ा जा सकता है, जैसे कोई उपन्यास आराम से पढ़ा जा सकता है। लेकिन मेरा अपना इतिहास? मैं अपने ही

इतिहास से भाग रहा हूँ, और वर्तमान में साँस ले रहा हूँ। पलायनवादी। लेकिन निर्दयी वर्तमान हमें फिर से हमारे इतिहास की ओर धकेल देता है। मन बोलता रहता है। क्या तुम मेरे बालों को देख रहे हो? मैं देख रहा हूँ, ये सब सफेद हैं। इरफान ने उस बेचारे आदमी के सीधे सवाल का जवाब इतने कड़वे लहजे में दिया। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मेरे बाल सफेद कैसे हुए—जब मैं पाकिस्तान पहुँचा तो मेरे बाल सफेद थे और मैं अकेला था। पाकिस्तान में उसका पहला दिन। सफेद बालों वाला आदमी ज़ाकिर की आँखों के सामने तैर रहा था। और मेरा भी पहला दिन। पाकिस्तान में मेरा पहला दिन—

चार
उसने हाथ धोए, आईने में देखा और महसूस किया कि उसके बाल, जो घर से निकलते समय पूरी तरह काले थे, अब पूरी तरह सफेद हो गए थे। इस धरती पर उसका पहला दिन था। और मेरा पहला दिन? बीते दिनों की यादें उसकी कल्पना में उमड़ पड़ीं। लेकिन मैं इस धरती पर अपना पहला दिन ढूंढ रहा हूँ। धक्का-मुक्की करते हुए, वह दिनों की भीड़ में से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा। मेरा पहला दिन कहाँ है? जैसे-जैसे वह भीड़ में से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था, एक धुंधली सी याद के रूप में एक दिन उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

•

अनारकली बाज़ार आधा बंद, आधा खुला। इक्का-दुक्का दुकानें खुली थीं, बाकी सब बंद और ताले लगे हुए थे। बाज़ार में भीड़ थी, पर कोई खरीददारी नहीं कर रहा था। वह बाहर निकला और एक बड़ी सड़क पर आ पहुँचा। मॉल रोड, तांगागाड़ियाँ, साइकिलें, कभी-कभार कोई कार, और कुछ बसें आती-जाती दिख रही थीं। एक लंबा, गठीला और चौड़ा शरीर वाला आदमी, सिर पर कलगी वाली पगड़ी और चौड़ी पतलून पहने, बड़े-बड़े कदम बढ़ाते हुए उसके पास से गुजरा। उसने उसे हैरानी से देखा। फिर उसने उसी कद-काठी और शरीर के कई आदमियों को, एक जैसे कपड़े पहने, पास में चलते देखा। ये आकृतियाँ उसके लिए नई थीं। उसके आसपास सब कुछ नया था। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, उसे लगा मानो वह किसी नई धरती पर चल रहा हो। उसे यह नई धरती बहुत अच्छी लग रही थी। एक गली से दूसरी गली, दूसरी से तीसरी गली, चलते-चलते उसे समय का पता ही नहीं चला, पर उसे जरा भी थकान महसूस नहीं हुई। उसे खुलेआम घूमने का मौका मिले हुए बहुत समय हो गया था, बिना इस डर के कि किसी भी क्षण कोई राहगीर उसकी पसलियों में चाकू घोंप देगा।
“मेरे प्यारे बेटे! तुम दिन भर कहाँ थे?”
“हाकिम जी, मैं पाकिस्तान की तरफ देख रहा था।”

अब जब देखने के लिए और कुछ बचा ही नहीं है, तो हमें पाकिस्तान पर ही ध्यान देना होगा! इतनी जल्दी क्या है? कम से कम आप दोपहर में आकर अपना लंच तो कर सकते थे।
फिर हकीम जी अब्बा जान से बातचीत में मग्न हो गए। ज़ाकिर ने अपना खाना खाया और जाकर उस कमरे में लेट गए जहाँ उन्हें सोना था। उन्होंने कमरे का जायज़ा लिया। कितना साफ़-सुथरा, खुला और रोशनी से भरा कमरा था! चारों कोनों में एक-एक बत्ती लगी थी। उनके मन में यह सवाल उठा कि यहाँ पहले कौन रहता होगा। इस विचार ने उन्हें अपने कमरे की याद दिला दी - एक छोटा सा कमरा जिसकी दीवारें फीकी पड़ गई थीं, एक पलंग, किताबों से भरी एक मेज और किताबों के बीच एक दीपक जिसकी हल्की रोशनी में वे देर रात तक पढ़ाई करते थे। मेरा कमरा आज रात खाली होगा। जब वे उस बड़े, रोशनी से भरे कमरे में लेटे थे, तो उन्हें अपने पुराने खस्ताहाल कमरे की याद सता रही थी। उनकी आँखों में जो नींद आई थी, वह गायब हो गई। वे काफी देर तक करवटें बदलते रहे। अब्बा जान के खांसने की आवाज़ सुनकर वे करवटें बदलते-बदलते रुक गए। अरे, अब्बा जान हकीम साहब की संगति से ऊब गए हैं और सोने आ गए हैं - लेकिन वे कब आए? उन्हें अब्बा जान के आने का ज़रा भी आगाह नहीं था। खैर, वे काफी देर तक बिना हिले-डुले लेटे रहे, मानो सो रहे हों, लेकिन नींद नहीं आई। उनके कमरे की छवि उनके दिमाग में बसी हुई थी। फिर उन्होंने अपना चेहरा चादर से ढक लिया और रोने लगे।
“ज़ाकिर, क्या तुम जाग रहे हो?”
“हां।” उसने अपनी आवाज में अपनी मनोदशा को छिपाने की कोशिश की।
फिर वह काफी देर तक बिना हिले-डुले लेटा रहा, मानो सो रहा हो। उसे पता नहीं था कि वह कितनी देर तक ऐसे ही लेटा रहा। आखिर में उसने करवट बदली। थोड़ी देर बाद उसने फिर से करवट बदली। फिर वह उठा, पानी पिया और दोबारा लेट गया। “ज़ाकिर!”
“अब्बा जान?” उसने सोचा था कि अब्बा जान सो रहे हैं, लेकिन वे जाग रहे थे। “क्या बात है, नींद नहीं आ रही? तुम तो पूरी रात जागते रहे। सो जाओ।”
मुझे नींद नहीं आ रही है।
“हाँ, यह एक नई जगह है, और पहली रात,” अब्बा जान ने हिचकिचाते हुए कहा। वे चुप हो गए, फिर बोले, “मेरे साथ पहले भी ऐसा हो चुका है, कि मैं किसी नई जगह गया और पहली रात मुझे बिल्कुल नींद नहीं आई।”

पोंछे और यहाँ के भविष्य के बारे में सोचने लगे कि वे कैसे गुज़ारा करेंगे।
जब लोग आपस में मिलते थे, तो कितनी अलग-अलग तरह से उनकी मुलाकात होती थी! कभी-कभी, बाजार में घूमते हुए, दो लोग एक-दूसरे से टकरा जाते थे।
हे भगवान, आप यहाँ कैसे आए?
“भाई, मैं अब वहां अच्छी जिंदगी नहीं जी सकता था, इसलिए मैंने खुद से कहा, ‘चलो, यहां से निकल चलते हैं।’ तो मैंने अपना बिस्तर बांधा और स्पेशल ट्रेन में से एक में सीट ले ली।”
कभी-कभी दरवाजे पर अचानक दस्तक होती थी। जब दरवाजा खुलता, तो कभी-कभी बाहर यात्रियों और सामान से भरी एक घोड़ागाड़ी खड़ी होती; और कभी-कभी एक अकेला आदमी, बिना दाढ़ी बनाए, धूल से सना हुआ, फटे और दागदार कपड़ों में, बिना किसी सामान के। पहली नज़र में उसका चेहरा पहचानना मुश्किल था। जब पहचान हुई, तो आश्चर्य हुआ: "अरे, आप हैं!" फिर उसे गले लगा लिया गया और उससे एक के बाद एक सवाल पूछे गए। "आप कैसे आए? क्या रास्ते में सब ठीक था? बाकी लोग कहाँ हैं? क्या आप अकेले आए थे? आपका सामान कहाँ है?"
“सड़क पर सब ठीक कैसे हो सकता है? ट्रेन पर हमला हुआ था।”
“भगवान हम सबकी रक्षा करें! फिर क्या?”
“ईश्वर ने हमारी रक्षा की, हम अपनी जान और सम्मान बचाकर भाग निकले; अन्यथा हमारे पास बचने का कोई मौका नहीं होता।”
ईश्वर का धन्यवाद! बाकी सब लोग कहाँ हैं?
"वॉल्टन कैंप में।"
"जब यह घर यहाँ है, तो आप शिविर में क्यों रह रहे हैं?"
मैंने सोचा कि पहले मुझे यह पता लगा लेना चाहिए कि घर में जगह है या नहीं। लोगों के दिलों में जगह होनी चाहिए!
घरों में भी जगह की कोई कमी नहीं थी। शामनगर में इतने सारे खाली घर थे। इतने सारे घर खुले पड़े थे! दरवाजे और खिड़कियाँ सब खुली थीं, और खुली खिड़कियों से पूरा घर, फर्नीचर और बर्तनों से भरा हुआ, दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मालिक अचानक उठे हों, पैरों से धूल झाड़ी हो और बाहर चले गए हों। कुछ घरों पर बड़े-बड़े भारी ताले लगे थे, और निचली मंजिल की सभी खिड़कियाँ सावधानी से बंद थीं। ऐसा लग रहा था जैसे मालिक अपने घरों में ताला लगाकर वापस आने की सोचकर किसी लंबी यात्रा पर चले गए हों। कुछ

घरों में ऊपरी मंजिल की एक-आध खिड़की लापरवाही से खुली रह गई थी, और अब जब तेज हवा चलती थी तो खिड़की धड़ाम से खुलती और बंद होती थी। कुछ घर आधे- अधूरे थे, कुछ लगभग पूरे हो चुके थे। घरों के मालिक दूर-दराज के शहरों में रहने के लिए जगह ढूंढ रहे होंगे; वहीं दूर-दराज के शहरों से आए लोग इन घरों में रहने की जगह पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। घरों में बहुत जगह थी। लोगों के दिलों में तो और भी ज्यादा जगह थी। जिस दो मंजिला मकान में हाकिम बंदे अली रह रहे थे, उसमें उन्होंने कई परिवारों को पनाह दी थी। नानुआ के आने के बाद दोनों मंजिलें पहले से ही भरी हुई थीं।
“हाकिम जी, मैं यहीं बाहर वाले बरामदे में रुकूंगा, महोदय।”
“जी हां, मैं बिल्कुल तैयार हूं। जब यह यहीं पर है तो क्यों नहीं?”
नानुआ और उसके परिवार ने बाहरी बरामदे में अपना डेरा डाला।
वे अच्छे दिन थे, अच्छे और सच्चे। मुझे उन दिनों को याद रखना चाहिए, या यूँ कहूँ कि उन्हें लिख लेना चाहिए, कहीं मैं उन्हें फिर से न भूल जाऊँ। और उसके बाद के दिन? उन्हें भी, ताकि मैं जान सकूँ कि कैसे अच्छाई और सच्चाई धीरे-धीरे उन दिनों से मिटती चली गई, कैसे दिन दुर्भाग्य से भर गए और रातें अपशकुनों से। कैसे हमारी आँखों के सामने शमनगर के घर विशाल से संकरे होते चले गए, और लोगों के दिलों में जगह कम होती चली गई। कारवां का सिलसिला टूट गया था। अब इक्का-दुक्का लोग आते थे, और कभी-कभार एक-दो परिवार, और शमनगर में भटकते रहते थे। उन्हें सिर रखने की जगह नहीं मिलती थी। शमनगर के सभी घर भरे हुए थे, खुले हुए, बंद हुए, और अधूरे बने हुए भी। वह बंद मकान, जिसकी ऊपरी मंजिल की खिड़की दोपहर और रात की हवा चलने पर भयानक आवाज के साथ खुलती और बंद होती थी, अब बच्चों और युवाओं से भरा हुआ था, और उसकी ऊपरी मंजिल की खिड़की पर बांस का पर्दा लगा हुआ था। कुछ ऊपरी मंजिल की खिड़कियों पर बांस के पर्दे थे, कुछ पर रंगीन पर्दे, और कुछ पर जूट की मोटी बोरी की जाली। ऊँची छत की चौखटें, जो कुछ समय पहले तक वीरान थीं, अब सूखने के लिए फैलाए गए कई रंगों के गीले कपड़ों से सजी हुई थीं। अंडे के छिलके जैसे रंग के उस मकान के खुले दरवाजों से अंदर के सजे-धजे कमरे दिखाई दे रहे थे, और अब उसके बाईं ओर के बरामदे में भैंसें बंधी हुई थीं। ड्राइंग रूम में सारा फर्नीचर एक तरफ ढेर लगा हुआ था, और दूसरी तरफ भूसा और गोबर के उपलों का ढेर लगा हुआ था, जिनका इस्तेमाल ईंधन के रूप में किया जाता था। अब शामनगर में घोर गरीबी का नामोनिशान नहीं था। प्रवास के समय जीवन की परिस्थितियाँ लगातार संकुचित

होती जा रही थीं, यहाँ तक कि केवल शरीर ढकने और पेट भरने तक सीमित रह गई थीं। लेकिन अब वे परिस्थितियाँ फिर से व्यापक हो गईं और निरंतर फैलती रहीं। जिन घरों में कई परिवार रहते थे, अब वे बाकी परिवारों को पीछे छोड़ते हुए केवल एक परिवार का घर रह गए थे। लेकिन साथ ही, वे घर अपर्याप्त लगने लगे और उनमें रहने वालों की ज़रूरतें बढ़ गईं। जो घर अभी भी विभिन्न परिवारों से भरे हुए थे, उनमें भी हर परिवार जीवन की ज़रूरतों के प्रति अपनी समझ को व्यापक बनाते हुए फैलने की कोशिश कर रहा था। कुछ निवासी धीरे- धीरे अपनी सीमाओं से बाहर फैल गए और दूसरों के क्षेत्र में विस्तार करने लगे। दूसरों ने इसका विरोध किया। फिर झगड़े हुए, फिर एक-दूसरे पर हाथापाई होने लगी। पहले तो लड़ाके घर के अंदर लड़े, फिर धीरे-धीरे उनकी लड़ाई बाहर तक पहुँच गई। पड़ोसी पहले तो तमाशा देखते रहे। फिर उन्होंने हस्तक्षेप किया। कोई चतुर व्यक्ति सौदेबाजी करके पूरा घर अपने नाम करवा लेता था। फिर बाकी निवासी अपना सारा सामान समेटकर रहने के लिए नई जगह की तलाश में निकल जाते थे। जो भी व्यक्ति घर से बाहर निकलने में आनाकानी करता था, उसे अदालती मामलों और मुकदमों में घसीट लिया जाता था।
“हाकिम जी! क्या नानुआ चली गई हैं?” मैंने आश्चर्य से देखा कि बरामदे में एक परित्यक्त चूल्हे के अलावा कुछ भी नहीं बचा था, और मैं हाकिम बंदे अली से पूछने गया, जहाँ बगल के कमरे में उनका औषधालय था।
“पुलिस के आने और उसके बर्तन सड़क पर फेंकने के बाद उसके पास जाने के अलावा और क्या चारा था?” वह चुप हो गया, फिर बोला, “मैं भी घर ढूंढ रहा हूँ।” "आप!"
“हां, मैं भी यही सोचता हूं। पुलिस के हाथों अपमानित होने के बजाय स्वेच्छा से जाना बेहतर है।”
लेकिन आप सबसे पहले इस घर में आए थे, आप ही थे जिन्होंने हम सबको आश्रय दिया था!
“बेटे, ‘सोए हुए बछड़े का मादा बछड़ा नर बन जाता है।’* मुंशी मुसय्यब हुसैन ने सौदेबाजी करके अपने नाम पर आदेश हासिल कर लिया।” वह रुके, फिर बोले, “उसके पास बिल्कुल भी दया नहीं है। वह किसी को भी यहाँ रुकने नहीं देता।” मैं अंदर गया और बोला, “अब्बा जान! नानुआ चली गई हैं।”
अब्बा जान ने कोई जवाब नहीं दिया।
और हाकिम-जी भी घर की तलाश में हैं।

अब्बा जान ने ऐसा दिखाया मानो उन्होंने कुछ सुना ही न हो, लेकिन अम्मी ने कहा, "आप घर ढूंढने कब जाएँगे?"
"क्या हमें भी जाना पड़ेगा?"
"क्या आपको लगता है कि आपके पास हमें बचाने के लिए कोई विशेष आकर्षण शक्ति है?"
“अम्मी! वहां मुंशी ऐसे नहीं थे।”
अम्मी ने आह भरी। “जब से ये लोग यहाँ आए हैं, लोगों में सारी भावनाएँ खत्म हो गई हैं। तुम्हें याद नहीं होगा, लेकिन जब तुम्हारे दादाजी जीवित थे, तब ये मुंशी मुसय्यब हुसैन हमारे दरवाजे पर विनम्रता से बैठते थे। ईश्वर की महिमा देखो, अब ये हमें नीची नज़रों से देखते हैं!”
अब्बा जान ने कुछ नाराज़गी से उसकी ओर देखा और कहा, "मेरे दिवंगत पिता अपने समय में सभी के साथ उदारता से पेश आते थे, लेकिन उन्होंने कभी किसी को इसकी याद नहीं दिलाई।"
“मैं भी कभी लोगों को इसकी याद नहीं दिलाता, लेकिन जब आप अंदर से परेशान होते हैं, तो चुप रहना मुश्किल होता है! वहाँ, वह कुछ भी नहीं था। और जब से हम यहाँ आए हैं, तब से यह चर्चा चल रही है कि ‘गंजे आदमी के नाखून आ गए हैं’!”*
अब्बा जान ने फटकार लगाते हुए कहा, “ज़ाकिर की माँ, सर्वशक्तिमान ईश्वर अहंकारी लोगों से प्रेम नहीं करता।”
“हाँ, लेकिन तुम कभी घमंडी नहीं थे। और भगवान ने तुम्हें कितना प्यार किया है! आज तुम्हारे पास सिर रखने की भी जगह नहीं है!” अम्मी ने कड़वाहट से कहा और चुप हो गईं।
मैं चुपचाप उठा और बाहर निकल गया। उस घर को छोड़ने का ख्याल मुझे ज़्यादा परेशान नहीं कर रहा था। सच तो यह था कि मैं उस घर से कभी ज़्यादा लगाव नहीं रख पाया था, और जिस कमरे में मैं अपना बिस्तर लगाता था, उससे तो मुझे ज़रा भी लगाव नहीं था। मैं खुद को लगातार उस कमरे को याद करते हुए पाता था जिसे मैं पीछे छोड़ आया था। इतनी छोटी-छोटी, मामूली बातें अचानक इतनी अहमियत देने लगी थीं! जब मैं बैठा होता, या चलते-चलते, कोई मामूली सी बात, कोई छोटी सी चीज़ मेरे दिमाग में आ जाती। कोई दृश्य मेरी याद में उभर आता, फिर उससे जुड़ा कोई दूसरा दृश्य, फिर कोई तीसरा दृश्य जिसका बाकी दोनों से कोई संबंध नहीं होता। यादें लहरों की तरह उमड़ती रहीं, और मैं उनमें तैरता

रहा। और वह लहर जो हर दूसरी लहर में समाई हुई थी, और लहरों की पूरी श्रृंखला को रोशन कर रही थी—सबीराह—उन आखिरी दिनों में मैं सबीराह के बहुत करीब आ गया था। और जब मैं उसे रूपनगर लाने गया। उसके साथ मेरी पहली और आखिरी यात्रा। हम भोर से पहले व्यासपुर से निकले, लेकिन जब लॉरी बुलंदशहर पहुँची तो दोपहर हो चुकी थी। और जब हमारी घोड़ागाड़ी बाज़ार से गुज़रते हुए दूसरे बस स्टैंड की ओर जा रही थी, जहाँ से रूपनगर के लिए ट्रक निकलते थे, तो चीनी बेचने वालों की गली धुएँ और ततैयों से इतनी भरी हुई थी कि मुझे घुटन महसूस होने लगी। इस शहर के मोहल्ले अपने माहौल के लिए जाने जाते हैं। यहाँ का माहौल व्यासपुर से बिल्कुल अलग था। धुआँ, ततैये, चिड़ियाएँ, धूल— जहाँ भी साप्ताहिक बाज़ार लगते थे, वहाँ कितनी चिड़ियाएँ होती थीं! और जिन गलियों में बड़े-बड़े चूल्हों पर चीनी के बड़े-बड़े बर्तन उबल रहे थे, वे धुएँ और ततैयों से इतनी भरी हुई थीं कि उनमें चलना मुश्किल था। बाज़ार से आगे जाने पर धूल से ढकी कच्ची सड़कें हैं, कहीं समतल तो कहीं गड्ढों से भरी हुई। रूपनगर के लिए ट्रक दोपहर बाद किसी समय निकला। जैसे ही हमने पुल से गंगा नदी पार की, अंधेरा छा गया। किसी तरह, किसी समय, उसका हाथ मेरे हाथ में आ गया। उसके बाद से मुझे सड़क की धूल और गड्ढों की कोई चिंता नहीं रही, न ही इस बात की कि लॉरी रूपनगर कब पहुंचेगी, और न ही इस बात की कि वह पहुंचेगी भी या नहीं।

•

चलते-चलते मैंने पूछा, “अफजल, तुम? तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”
दोस्तों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना।
मैंने पीछे मुड़कर चारों ओर देखा। वहाँ कोई नहीं था। केवल पेड़ थे, जिनके सूखे पीले पत्ते गिर रहे थे।
"क्या है दोस्त?"
“ये सभी पेड़ मेरे दोस्त हैं। आज ये मुश्किल में हैं, ऐसा लग रहा है जैसे इन्हें पूरी तरह से काट दिया जाएगा।” मैं अफजल के साथ घास पर बैठ गया और फिर आसपास का जायजा लिया।
“यार, मौसम पूरी तरह बदल गया है। जब हम आए थे, तब बारिश खत्म हो रही थी। सर्दी शुरू होने वाली थी, और हे भगवान, कितनी ठंडी सर्दी है!”
“हां, पाकिस्तान ने एक मौसम गुजरते देखा है। अब दूसरा मौसम उस पर छा रहा है। और यह मौसम कहीं अधिक क्रूर है, पेड़ों को बेरहमी से काटा जा रहा है।”

मैंने अनायास ही पूछा, "अफजल, क्या यहाँ कोई नीम का पेड़ नहीं है?"
“क्यों नहीं? चलो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।”
वह मुझे पार्क में घुमाने ले गया। फिर वह मुझे एक पेड़ के नीचे ले गया और रोककर बोला: "यह रहा तुम्हारा नीम का पौधा।"
मैंने इसे गौर से देखा। "यार, यह तो फ़ारसी बकाइन है।"
वह थोड़ा शर्मिंदा था। "खैर, कोई बात नहीं, फ़ारसी बकाइन में कोई खराबी नहीं है। वह भी मेरा दोस्त है। यहाँ एक नीम का पौधा है, मुझे उसे ढूंढना पड़ेगा।"
“लेकिन हमें कभी नीम के पेड़ ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ी! दोपहर में जब रेगिस्तानी हवा चलती थी, और जुलाई की बारिश के दिनों में, उनकी हरियाली हमेशा उनकी उपस्थिति का बोध कराती थी।”
अफजल चुप रहा। वह एक घने बरगद के पेड़ के पास गया और वहाँ डेरा डालने की अपनी मंशा ज़ाहिर की। “बैठो और थोड़ा आराम करो। यह पाकिस्तान की सबसे ठंडी जगह है।”
“क्या सच में?” मैं हंस पड़ा।
“जी हां,” अफजल ने गंभीरता से कहा, “दरअसल बरगद मेरा सबसे करीबी दोस्त है। नीम तो एक नपुंसक वृक्ष है, उसकी डालियाँ सिर्फ झूले टांगने के काम आती हैं। या फिर उन बूढ़ी औरतों के लिए जो उसकी छांव में बैठकर करतब दिखाती हैं। लेकिन निर्वाण का आनंद तो सिर्फ बरगद की छांव में ही मिलता है।”
उस समय बरगद के पेड़ के विरुद्ध कुछ भी कहना घोर कृतघ्नता होती। उसकी घनी छाया ठंडी और ठंडी थी। उसके नीचे फैली घास हरी-भरी और मुलायम थी। मैंने अपने जूते उतारकर एक तरफ रख दिए, कॉलर के बटन खोले, पीठ के बल लेट गई और आँखें बंद कर लीं। मैं अपने खोए हुए पेड़ों को याद कर रही थी। खोए हुए पेड़, खोए हुए पक्षी, खोए हुए चेहरे। नीम के पेड़, सबीराह की मोटी शाखा से लटका झूला, आगे-पीछे लंबे-लंबे झूलते हुए, "पके हुए नीम के बीज, बसंत कब आएगा?"—बारिश की बूंदों से भीगे गालों पर गिरे हुए गीले बाल। "मेरे भाई की जय हो, वह मेरे लिए पालकी भेजेगा!" दूर के एक पेड़ से कोयल की आवाज़ आई। अंततः मुझे नीम का पेड़ मिल गया; और मैंने कोयल की आवाज़ भी सुन ली थी। ओह, जब मैंने इस धरती पर पहली बार कोयल की आवाज़ सुनी! मैंने सोचा, “मेरी सहेली की आवाज़ कहाँ से आ रही है?”* यह तब हुआ जब हम शामनगर छोड़कर एक किराए के मकान में रहने लगे थे। उस इलाके में कोई भी मकान खाली नहीं था, इसलिए आस-

पड़ोस में कोई नया प्रवासी नहीं था। वह एक खुला इलाका था। पास में काफी पेड़ दिखाई दे रहे थे, और कोयल की आवाज़ सुनकर मुझे लगा कि उनमें आम और जामुन के पेड़ ज़रूर होंगे।
जब अम्मी ने कोयल की आवाज़ सुनी, तो वे अत्यंत भावुक हो गईं: “ऐ है! कोयल बुला रही है।” फिर वे एकदम चुप हो गईं, कोयल की आवाज़ सुनने के लिए उनके कान चौकन्ने हो गए। और फिर मैंने देखा कि उनकी आँखें नम थीं।
मेरे लिए कोयल की आवाज़ पुनर्वास विभाग से मिली एक तरह की अनुमति बन गई, क्योंकि उसे सुनने के बाद मुझे धीरे-धीरे इस शहर में सहज महसूस होने लगा। लेकिन अम्मी पर उस आवाज़ का अलग ही असर हुआ। इसने सोई हुई यादों को जगा दिया। और इन सबके अलावा, आंटी शरीफ़ान अचानक हमारे बीच आ गईं।
“ऐ आंटी शरीफ़ान! आप कब आईं?” और अम्मी उठीं और अनायास ही उन्हें गले लगा लिया।
“दुल्हन बी, मैं एक महीने पहले आई थी। मैं आपसे मिलने के लिए बहुत बेताब थी! मैं शमनगर स्थित घर पहुँचने तक आपका पता पूछती रही। मुंशी मुसय्यब हुसैन ने बताया कि आप वहाँ से चली गई हैं।” बोलते-बोलते उन्होंने घर को एक नज़र में देखा: “दुल्हन बी, मैं अभी-अभी मुंशी मुसय्यब हुसैन के घर से आई हूँ। वह तो सचमुच एक आलीशान महल है! जबकि आपको हथेली से भी छोटा सा यह घर दिया गया है!”
“क्या आपको लगता है कि यह हमें आवंटित किया गया था? हमें तो किराए के मकान में रहना पड़ रहा है!”
“किराए के मकान में? दुल्हन बी! अक्ल ठिकाने लाओ! बेघर निकम्मों को महल-महल आवंटित कर दिए गए हैं, महल-महल रखने वालों को किराए के मकानों में रहना पड़ता है!” फिर बदले हुए स्वर में उन्होंने कहा, “दुल्हन बी, बुरा मत मानना, लेकिन तुम्हारा पाकिस्तान उलटा-पुल्टा हो गया है। सबने अपना मानवीय भाव खो दिया है, यकीन करना मुश्किल है।” फिर अचानक उन्होंने मेरी ओर ध्यान दिया: “दुल्हन बी, ये ज़ाकिर हैं? अरे, मैंने तो इन्हें पहचाना ही नहीं!” वह उठीं और मेरी मुसीबतों का बोझ अपने ऊपर लेने का इशारा किया। “बेटा, मुझे पहचान नहीं पा रहे? मैं तुम्हारे डायपर धोती थी! और जब तुम्हें टाइफाइड हुआ था, तो बी अम्मा और मैं रात-रात भर तुम्हारे बिस्तर के पास बैठी रहीं। दुल्हन बी, याद है?”
“हां, मुझे याद है। उनका बच जाना एक चमत्कार ही था।”

“मेरी माँ ने कभी प्रार्थना करना नहीं छोड़ा। वह दिन-रात प्रार्थना की चटाई पर बैठी रहती थीं। तो बेटा, तुम क्या कर रहे हो?”
“शरीफ़ान आंटी, आपके ज़ाकिर कॉलेज में प्रोफ़ेसर हैं।”
“ईश्वर की कृपा से! भगवान आपको आशीर्वाद दें।” फिर उसने हिचकिचाते हुए कहा, “दुल्हन बी, जब मैंने मुसय्यब हुसैन के बेटे को देखा, तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। वहाँ तो वह गली-गली में आवारागर्दी करता था। यहाँ तो वह निकम्मा आदमी खूब पैसा कमा रहा है!”
"यहाँ जो भी कमा सकता है, वह जमकर पैसा कमाता है।"
“बेटा!” आंटी शरीफ़ान ने फिर मुझसे कहा। “पाकिस्तान में लोगों के पास हर तरह की बड़ी-बड़ी नौकरियाँ हैं। तुम इन निकम्मे लड़कों को पढ़ाने में अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हो?”
अम्मी ने आंटी शरीफ़ान को इस मामले को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। उन्होंने बात का रुख़ पूरी तरह बदल दिया। "आंटी शरीफ़ान, हमें बताइए कि वहाँ क्या चल रहा है।"
“वहाँ क्या हाल है?” आंटी शरीफ़ान ने आह भरी। “तुम जानना चाहती हो कि वहाँ क्या हाल है। अब वहाँ कौन है? बड़ा महल शरणार्थियों से भरा पड़ा है। खान साहब का घर बंद है। छोटा महल तो पूरी तरह खंडहर हो चुका है। पिछली गर्मियों में जब धूल भरी आंधी आई थी, तो उसकी एक दीवार गिर गई थी। तब से अंदर और बाहर का सारा हाल एक जैसा है। बेचारा तुराब अली, जिसका घर इतना भरा-पूरा और चहल-पहल वाला था, उसमें अकेला रह गया है। उसका पूरा परिवार यहाँ आ गया है, और वह वहाँ बिलकुल अकेला है।”
"अब तक तो वह काफी बूढ़ा हो चुका होगा?"
“सूखी हुई लकड़ी की तरह। वह खाली घर में चारपाई पर लेटा हुआ खांस रहा है।” शरीफ़ान ने आह भरी। “एक ज़माना था जब परिवार बढ़ते थे और बड़े-बड़े घर भी छोटे लगने लगते थे। अब वो समय आ गया है जब सारे परिवार बिखर गए हैं। अब तो छोटे घर भी बड़े लगते हैं। ज़रा अपने उस घर के बारे में सोचो! लेकिन अब कौन बचा है? बतूल बी और उनकी छोटी बेटी, दो लोग और इतना बड़ा घर।”
“तो क्या ताहिरा चली गई?”
“हां, उसका पति पिछले महीने ढाका से आया और उसे अपने साथ ले गया। अब वह लगातार पत्र भेज रही है, जिसमें वह कह रही है, ‘तुम भी आ जाओ’।”
क्या सबीरा के लिए कुछ व्यवस्था की जा रही है?

“कई जगहों से प्रस्ताव आए हैं, और मैंने बतूल बी से कहा, ‘देखो, जो भी लड़का मिले, उससे उसकी शादी करवा दो और बात खत्म। वैसे भी, इतने लड़के तो हैं नहीं कि तुम्हें रिश्ते के अच्छे या बुरे होने की चिंता करनी पड़े! सारे लड़के तो पाकिस्तान चले गए हैं।’”
"तब?"
“दुल्हन बी, सलाह देना मेरा कर्तव्य था, और मैंने सलाह दी। इसके अलावा, लोग अपने हिसाब से ही फैसला करते हैं कि उनके लिए क्या अच्छा है।” फिर उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, “मैंने सुना है कि सबीरा ने मना कर दिया है।” “सबीराह ने मना कर दिया?” अम्मी ने हैरानी से कहा। “वह उस तरह की लड़की नहीं थी।”
“उसने कहा कि उसे नौकरी मिल जाएगी। यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया—कि मौलवी परिवार की बेटी दफ्तरों में काम करने जाए!”
“ओह।” अम्मी सोच में डूबी हुई लग रही थीं।
सबीरा के बारे में हो रही बातों में से कुछ मैंने सुनीं, कुछ नहीं सुनीं। जैसे ही आंटी शरीफ़ान ने इस विषय पर बोलना शुरू किया, उनकी ऊंची आवाज़ धीरे-धीरे कम होती गई, यहाँ तक कि फुसफुसाहट जैसी हो गई। और तभी इरफ़ान आ गया और उसने दरवाज़ा खटखटाया।
“क्या बात है, क्या तुम आज शिराज नहीं जा रहे हो?”
“क्यों नहीं? बिल्कुल जा रहा हूँ। चलो चलते हैं।” और मैं तुरंत इरफान के साथ शिराज के लिए निकल पड़ा।
शायद मेरे साथ भी, पीछे छूटी हुई चीजें मुझसे दूर होती जा रही थीं। लेकिन मेरे आस-पास की चीजें मुझे और भी ज्यादा अपनी ओर खींच रही थीं। चहल-पहल भरे रेस्तरां, हरे-भरे पेड़ और खूबसूरत लड़कियों वाला यह शहर मेरा हिस्सा बनता जा रहा था, और इसके अलावा इसका रूप मेरी आंखों के सामने बदल रहा था। ढह चुके, जले हुए मकानों से भरी वो गलियां, जो वहां घटी भयानक घटनाओं की गवाही दे रही थीं, अब नए मकानों और नए निवासियों की खुशबू से महक रही थीं, और सड़कें एक नई चहल-पहल से भरी हुई थीं। वीरान दुकानों में बैठे दुकानदार अब पहले की तरह बेघर नहीं लग रहे थे। अब वे ऐसे लग रहे थे मानो हमेशा से वहीं बैठे हों। बाजार के पुराने और नए हिस्से और तत्व आपस में घुलमिल चुके थे। दुकानें, दुकानदार, दुकानों में रखा सामान, आने-जाने वाले ग्राहक, टहलते राहगीर, सब मिलकर एक संपूर्ण इकाई बन गए थे।

मैंने इस शहर में एक घुमक्कड़ के रूप में शुरुआत की थी और शिराज को अपना ठिकाना बना लिया था। दोस्त अलग-अलग रास्तों से और अलग-अलग बहाने बनाकर आते और इस ठिकाने पर इकट्ठा होते। एक दोस्त का पूरा परिवार एक वीरान घर के एक कमरे या एक बरामदे में रहने को मजबूर था। जब भीड़भाड़ वाले माहौल से उसका मन परेशान हो जाता, तो वह शहर के विशाल इलाकों में घूमने निकल पड़ता। अपनी इस यात्रा में किसी शुभ क्षण ने उसे शिराज तक पहुँचा दिया और तब से वह यहीं बस गया। एक और दोस्त को एक बड़ा घर मिला था; उसकी विशालता से डरकर उसने उसे छोड़ दिया और शहर में घूमने लगा। इसी भटकन के दौरान उसे शिराज की खोज हुई। एक और दोस्त विभाजन से बहुत पहले से ही अपने पैतृक घर में आराम और सुरक्षा से रह रहा था। लेकिन बेघर और बेघर होने के इस नए माहौल में उसका मन अपने पैतृक घर से विमुख हो गया और उसने बेघर होना चुना, वह आया और शिराज में डेरा डाल लिया।
उन दिनों जब पूरी आबादी बेघर लग रही थी, हमें पता था कि हमारा एक घर है— जैसे हम कई जन्मों से शिराज में बैठे हों, राख से सने वफादार पुजारियों की तरह, और आने वाले कई जन्मों तक वहीं बैठे रहेंगे। जैसे-जैसे दावे स्वीकृत होते गए, बेघरों को घर और बेरोजगारों को काम मिलता गया, हम शिराज निवासी बेचैन दिखने लगे, मानो हम ही शहर में अकेले बेघर हों। इन्हीं दिनों, जब हम इन सब से गुज़र रहे थे, अफजल बेचैन आत्मा और शराब का आदी हो गया, और शराब का नशा इरफान की आवाज़ में उतर आया। उन दिनों सलामत और अजमल ने अभी तक शराब और क्रांति का स्वाद नहीं चखा था। वे अभी भी केवल "बुद्धिजीवी" थे, और शिराज में बैठकर केवल साहित्य और कला पर बहस करते थे; लेकिन इन बौद्धिक चर्चाओं में सबसे अधिक नाम कमाने वाला ज़ाव्वर था।
ज़व्वर हम सब में सबसे छोटा था, लेकिन उसने हम सबके बीच एक विद्वान के रूप में अपनी पहचान बनाई और उसकी बुद्धिमत्ता और परिपक्व बुद्धि ने उसके मासूम चेहरे की कमी को पूरी तरह से पूरा कर दिया। इतनी कम उम्र में, हर तरह की किताबें पढ़ने के बाद, उसने कहा कि ज्ञान किताबों से नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों से मिलता है। इस प्रकार, ज्ञान की खोज में, वह कुछ दिनों तक अफ़ज़ल के साथ बैठा रहा और शराब का स्वाद चखा। फिर, जब उसे भी पर्याप्त नहीं लगा, तो उसने गांजा, हशीश और अफ़ीम का सेवन किया। स्नान करना, कपड़े बदलना और दाढ़ी बनाना वह समय की बर्बादी समझता था और जहाँ तक संभव हो, वह ऐसी फिजूलखर्चियों से बचता था। उसके जूते पुराने थे और उन पर पॉलिश नहीं

थी और वे धूल-मिट्टी से ढके हुए थे, इसलिए वे प्राचीन लगते थे। उसने खुद ही उनके अंदरूनी तलवे निकालकर फेंक दिए और कीलें बाहर निकली रहने दीं। वह मीलों पैदल चलता था और शिराज लौटता था तो उसकी एड़ियाँ खून से लथपथ होती थीं।
यार, अपने जूते ठीक करवाने के लिए किसी मोची को क्यों नहीं बुला लेते? "नहीं।"
"क्यों?"
"पुरुष बनने के लिए, व्यक्ति को पीड़ा का अनुभव होना चाहिए; और महान कला का जन्म केवल कष्टों से ही होता है।"
इस प्रकार, कष्ट सहने के नए-नए अनुभवों की तलाश में, उन्होंने सिविल सेवा परीक्षा दी और उसे उत्तीर्ण कर लिया।
“ज़व्वर! तो अब तुम सिविल सेवा में अधिकारी बनने जा रहे हो।”
“मैं, एक सिविल सेवा अधिकारी! मैं ऐसी भयावहता से बचने के लिए ईश्वर की शरण लेता हूँ!”
"आखिरकार, आपने अपनी स्वतंत्र इच्छा की परीक्षा दी और उसमें सफल रहे।" "पुरुष को भी उस अनुभव से गुजरना चाहिए।"
“यातना का एक नया अनुभव!” इरफान ने व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहा।
अब रात काफी ढल चुकी थी, और हम चुपचाप मॉल रोड पर चल रहे थे, अपनी स्थिति में डूबे हुए थे।
यार, क्या तुम्हें पता है कि अभी कितना समय हुआ है?
ये शब्द ज़ाव्वर को अप्रिय लगे। "अगर हमें पता भी चल जाए, तो इससे क्या फर्क पड़ेगा?"
मैंने कहा, "मेरा मतलब है, एक समय ऐसा भी आता है जब इंसान को भी सोना चाहिए।"
"बशर्ते उसके पास सोने की जगह हो," इरफान ने कहा।
ये शब्द भी ज़ावर को पसंद नहीं आए। “इरफ़ान, तुम मजबूरी में जागते हो। मेरे लिए जागना मजबूरी नहीं, बल्कि मेरी मर्ज़ी है।”
"जागते रहना और सिविल सेवा परीक्षा देना," इरफान ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा।

ज़व्वर का चेहरा लाल हो गया। मैं तुरंत सलामत की ओर मुड़ा। "सलामत, तुम्हारा घर तो बहुत बड़ा और सुंदर है। फिर तुम हमारे साथ गलियों में क्यों घूमती हो?"
“वह घर मेरा नहीं है, वह किसी सिख का है।”
लेकिन सिख तो चले गए हैं।
“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे पिता ने उनकी जगह ले ली है।”
अजमल को अचानक याद आया कि अफजल का घर पास ही है। "यार, अगर तुम्हें सच में सोने के लिए जगह चाहिए, तो अफजल का घर बिल्कुल पास ही है।"
चलो, उसे जगाते हैं।
हम थोड़ी दूर गए, फिर मुड़कर एक गली में घुस गए और एक दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुला, अफजल बाहर आया और हमें गौर से देखने लगा। “चूहे! इस समय क्यों आए हो?”
मैंने कहा, "सोने के लिए।"
लेकिन मेरे पास कोई अतिरिक्त पालना नहीं है।
"हम पालना के आविष्कार से पहले के युग से हैं।"
लेकिन मेरे पास अतिरिक्त बिस्तर भी नहीं है।
"क्या आपके यहाँ फर्श बिल्कुल खाली है?"
"हां, मेरे पास वह है, हालांकि वह भी थोड़ा घिसा-पिटा है।"
हम कमरे में दाखिल हुए। एक जर्जर पलंग, गंदी और फटी हुई चादरें, और एक कोने में एक मोटी किताब पड़ी हुई थी। एक कोने में फर्श पर एक चटाई बिछी थी, जिस पर किताबें बिखरी पड़ी थीं।
मैंने बिस्तर से भारी किताब उठाई। "यह क्या है?"
"यह नाज़िर की संपूर्ण रचनाएँ हैं, और यह मेरा तकिया है।"
"सोते समय आपको तकिए की जरूरत तो पड़ती ही है," ज़ाव्वर ने कहा।
"बात कुछ ऐसी है: चाहे मैं जाग रहा हूँ या सो रहा हूँ, मैं अपना सिर ऊंचा रखना चाहता हूँ।"
चटाई पर लेटकर मैंने पूरे कमरे पर एक नज़र डाली। "यार, कमरा बुरा नहीं है।" मैं अफजल का घर पहली बार देख रहा था।
“यह एक कमरा तो अभी भी ठीक है, लेकिन बाकी सारा घर बर्बाद हो चुका है, और सच कहें तो पूरा मोहल्ला ही। जब मैं यहाँ आया था तब गलियाँ साफ-सुथरी थीं और घर एकदम साफ थे। अब गलियाँ गंदी हैं और घर मैले।”

सलामत ने कहा, "मेरी राय में, एक मुसलमान बहुत अधिक स्वच्छता बर्दाश्त नहीं कर सकता।"
“यह घर काफी बड़ा था,” अफजल ने हमें बताया, “और पूरी तरह से सुसज्जित था। चूहों ने सारा फर्नीचर कुतर दिया। मेरे हिस्से के रूप में उन्होंने भगवान कृष्ण की यह प्रतिमा छोड़ दी।”
“अफजल, उन्होंने तुम पर एहसान किया,” ज़ावर ने कहा।
“सचमुच?” अफजल ने मासूमियत भरी हैरानी से ज़ावर की ओर देखा।
"आखिरकार, आप फर्नीचर का क्या करते? उन्होंने आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज छोड़ दी है।"
“तुम बिलकुल सही कह रहे हो। मैंने भी यही सोचा था। यार, वे अच्छे लोग हैं। उन्होंने मेरे लिए अच्छी चीज़ छोड़ी है। इसी वजह से यह कमरा साफ है, जबकि बाकी सारा घर गंदा है।”
मैं चटाई पर लेटा हुआ किताबों के पन्ने पलट रहा था। "अफजल, तुम सो रहे थे; तुम बड़े उबाऊ हो।"
"नहीं।"
“तो फिर तुम क्या कर रहे थे?”
मैं तस्वीर से बात कर रहा था।
"लेकिन हम तो सोने आए हैं," अजमल ने कहा।
"सोना मत।"
"क्यों नहीं?"
"अगर तुम सो जाओगे, तो जागने पर देखोगे कि तुम चूहे बन चुके हो।"
“तुम बिलकुल सही कह रहे हो।” चारपाई पर बैठा ज़ावर उठ खड़ा हुआ। “चलो यार।” हम अफजल को साथ लेकर बाहर निकले। लंबी सड़क पर चलते हुए मैंने पूछा, "यार, हम कहाँ जा रहे हैं?"
“यह एक बहुत ही अर्थहीन प्रश्न है,” ज़ाव्वर ने कहा। “यह मत पूछो कि कहाँ और क्यों। असली बात तो यह है कि हम जा रहे हैं।”
"चलो, हम इंपीरियल जा रहे हैं!"
हमारी रात्रि यात्रा का अंतिम पड़ाव इम्पीरियल होटल था। शहर में अभी तक एयर कंडीशनिंग का प्रचलन नहीं था, इसलिए इम्पीरियल होटल ने अपने विशाल आंगन और खुले नृत्य-मंच का भरपूर लाभ उठाया। रोमांटिक जोड़े तारों से भरी गर्मी की रात में एक-दूसरे को गले लगाकर शालीनता और गरिमा के साथ नृत्य

करना पसंद करते थे। यह शालीनता तब खतरे में पड़ गई जब रात ढलने लगी और अचानक सारी बत्तियाँ बुझ गईं और मिस डॉली के आने की घोषणा हुई। तब चारों ओर अंधेरा छा गया, केवल मिस डॉली पर एक स्पॉटलाइट पड़ रही थी। लेकिन मिस डॉली स्वयं, केवल नाममात्र की पोशाक पहने हुए, अंधेरे में बिजली की चमक जैसी लग रही थीं। इस प्रकाश के घेरे में कभी-कभी मिस डॉली के साथ एक और प्राणी दिखाई देता था: एक भूरी बिल्ली। लेकिन एक वेटर हमेशा पीछे से तेज़ी से आता और या तो उस भूरी बिल्ली को उठा लेता या उसे भगा देता।
यह भूरी बिल्ली मैनेजर की लाडली थी; वह अक्सर उसकी कुर्सी के नीचे दुबकी रहती थी। उसे मैनेजर की मेज से जो भी मिलता, वह उसी से संतुष्ट रहती थी; उसे कभी भी दूसरी मेजों की ओर जाते नहीं देखा गया। लेकिन जब कैबरे का समय होता, तो वह जम्हाई लेती, उठती और डांस फ्लोर की ओर चली जाती, कभी-कभी तो मिस डॉली के बिल्कुल पास। एक वेटर उसे प्यार से मनाकर वापस लाता, और वह बिना किसी नखरे के वापस आकर मैनेजर की कुर्सी के पास बैठ जाती, या उसके नीचे दुबक जाती। डॉली और टॉनी इंपीरियल के दो मुख्य किरदार थे।
शिराज में बिताई वो शाम मेरी यादों में बसी हुई है, बाकी सभी शामों से अलग। शिराज पूरी तरह से भरा होने के बावजूद एकदम शांत था, और कमरे के बीचोंबीच एक बोर्ड लगा था, "कृपया राजनीतिक चर्चा न करें।" पिछली रात भी शिराज में काफी शोर था, क्योंकि हर मेज पर और हर समूह में सिर्फ एक ही विषय पर चर्चा हो रही थी: आने वाले चुनाव। चर्चा करने वाले लोग सिकंदर मिर्जा के पतन की ज़ोर-शोर से भविष्यवाणी कर रहे थे। लेकिन आज सारी चर्चा थम सी गई थी। कमरे में बैठे लोग सिर्फ चाय पी रहे थे। वे आपस में कुछ शब्द फुसफुसाते हुए बोल रहे थे।
"यार, चाय ठंडी हो गई थी," ज़ाव्वर ने आखिरी घूंट पीते हुए घृणा से कहा। “हाँ यार, अच्छा नहीं था, चलो और मंगवाते हैं।” ये कहते हुए सलामत ने पुकारा, “अब्दुल!”
ताज़ी चाय आई और वो गरम थी, लेकिन फिर भी उन्हें पसंद नहीं आई। उस समय इरफ़ान ने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहा, "यार, शिराज की चाय को क्या हो गया है?"
धीरे-धीरे सभी दोस्तों को यह महसूस होने लगा कि शिराज की चाय में कुछ गड़बड़ हो गई है। फिर वे इस भावना से आगे बढ़कर यह सोचने लगे कि शिराज वाइन में ही कुछ गड़बड़ हो गई है।

“यार, शिराज अब वीरान हो गया है।”
“हाँ यार, पहले कितना शोर होता था!”
“सब लोग कहाँ चले गए?”
"हर कोई हमारी तरह आलसी नहीं है।"
"धन्यवाद," ज़ाव्वर ने घूरते हुए कहा। "मतलब?"
ज़ाव्वर ने कहा, "मेरा मतलब यह है कि हम शिराज में बहुत समय बर्बाद करते हैं।"
“हम इसे और कहाँ बर्बाद करें?” अफजल ने तुरंत कहा।
क्या हमें इसे बर्बाद करना होगा?
अफजल ने गुस्से से ज़ावर की ओर देखा। “चूहे! समय को सावधानीपूर्वक संरक्षित नहीं किया जा सकता। समय तो हर हाल में बर्बाद होता है।”
दरअसल, अब हम शिराज में बेघर होने जैसा महसूस करने लगे थे। हमने वहाँ टिके रहने की बहुत कोशिश की। अपने सारे मतभेद भुलाकर, हम कभी साहित्य, विशेषकर आधुनिक साहित्य, और कभी अमूर्त कला के बारे में बातें करते, लेकिन किसी न किसी तरह कोई न कोई विषय से भटक जाता और वर्जित विषय पर पहुँच जाता। बातचीत साहित्य से हटकर स्थिति पर आ जाती। लेकिन तभी कोई चौंककर बगल वाली मेज की ओर देखता और चुप हो जाता। बगल वाली मेज पर बैठा आदमी कहीं और देख रहा था, लेकिन हमारी बातें सुन रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उसका कान हमारे बीचों- बीच हो। हमारी कल्पनाओं में कान बड़े होते चले गए, वे आकर हमारे होठों से चिपक गए; हम चुप हो गए।
आखिरकार हमें शिराज से उबारना पड़ा, और इस तरह उबारा गया कि हमारा समूह बिखर गया। शिराज से आए हुए सिर्फ इरफान और मैं ही बचे थे, जो इम्पीरियल होटल में बैठे थे। लेकिन अब इम्पीरियल भी पहले जैसा जीवंत नहीं लग रहा था। न कोई गोरे चेहरे, न कोई युवा जोड़े नाचते हुए, न प्यालों और प्लेटों की खनक, न ही वेटर फुर्ती से इधर-उधर भागते हुए। कई मेजें खाली पड़ी थीं। एक-दो मेजें भरी हुई थीं। खुले आसमान के नीचे बने डांस फ्लोर पर कुछ अधेड़ उम्र के एंग्लो-पाकिस्तानी जोड़े थके-हारे नाच रहे थे। बैंड भी बेजान धुन बजा रहा था। भूरी बिल्ली मैनेजर की कुर्सी के पास आंखें बंद करके बैठी थी। कभी-कभार ही वह उठकर डांस फ्लोर पर जाती, धीरे से "म्याऊं" कहती और वापस लौट आती। आखिर उसे डांस फ्लोर पर क्यों रहना चाहिए था? मिस डॉली का कैबरे

शो अब नहीं होता था। किसी उत्साही प्रशंसक ने उसे अपने साथ ले लिया था।
उसके जाने के साथ ही इम्पीरियल की रौनक भी चली गई।
आज के बाद मैं यहाँ नहीं आऊँगा।
"क्यों?"
मुझे अखबार में नौकरी मिल गई है, और मेरी नाइट ड्यूटी है।
मैंने इरफान की तरफ हैरानी से देखा। "तुम काम पर जा रहे हो?"
“मुझे करना ही पड़ेगा।” उसने आह भरी।
“ठीक है, तो तुम कल यहाँ नहीं आओगे।” मैं सोचने लगा। “मैं भी यहाँ अकेले क्यों आऊँगा?”

•

तसनीम! वो मुझे छोड़कर चली गई। वो इतिहास में एम.ए. करने की तैयारी कर रही थी। पहले तो वो मेरे पास सिफारिशी पत्र लेकर आई और अपनी तैयारी में मेरी मदद मांगी। वो नियमित रूप से आती, नोटबुक खोलकर बैठती, बड़ी लगन से नोट्स लिखती और चली जाती। वो किसी भी तरह से कोई अनौपचारिक बातचीत शुरू नहीं करती थी। वैसे भी, मुझे उससे बात करने की कोई इच्छा नहीं थी। वो बहुत ही सादी और नीरस लड़की लगती थी। मैं उससे बात क्यों करता? लेकिन उस दिन वो मुझे बहुत अच्छी लगी। सुबह का समय था। घर से निकलने से पहले मैंने नहाया और कपड़े बदले थे, और वो भी एकदम साफ-सुथरी लग रही थी। उस भरी हुई बस में, महिलाओं की सीटों के बीच खड़े होने की जगह बनाते हुए, मैंने देखा कि वो मेरे सामने खड़ी थी। इतनी करीब कि उसकी सफेद गर्दन और गुलाबी कान मेरी सांसों की पहुँच में थे। मेरी सांसें थोड़ी तेज हो गईं।
जब वह बस से उतरी, तो मैं भी उतर गया। भीड़ में से रास्ता बनाते हुए दरवाजे तक पहुँचने में मुझे थोड़ा समय लगा। इस थोड़े से समय में ही वह गायब हो गई। खैर, कोई बात नहीं। मुझे लगा था कि वह उस शाम पढ़ने आएगी, लेकिन उस शाम वह नहीं आई। चलो, कल शाम तो ज़रूर आऊँगा, मैंने खुद को तसल्ली दी। लेकिन वह उस शाम भी नहीं आई। उसके न आने से मेरी उत्सुकता और बढ़ गई।
अगले दिन मैंने उसे फोन किया और एक शिक्षिका होने के नाते उससे पूछा कि वह क्यों नहीं आई। उसने कुछ अर्थहीन सा जवाब दिया और हिचकिचाते हुए कहा, "मैं आज आ जाऊंगी।"
वह दिन पहाड़ के बोझ की तरह भारी लगा, जैसे मैं शाम का इंतज़ार कर रहा था। आखिरकार शाम आ गई, और वह भी आ गई। आते ही वह चुपचाप बैठ गई। जिस एकाग्रता से

वह सवाल पूछती और नोट्स लिखती थी, वह अब दिखाई नहीं दे रही थी। आज मेरा मन भी पढ़ाने में नहीं लग रहा था। मैंने जल्दी से पाठ समाप्त कर दिया। फिर वह चुप हो गई, और मैं भी चुप हो गया।
“तसनीम!” मैंने आखिरकार अपना मुंह खोला।
इसके जवाब में उसने अपनी निगाहें मेरी ओर उठाईं, लेकिन मुझे नहीं पता था कि मैं उससे क्या कहना चाहता था। मैं खो गया था, जैसे मैं मिट गया था, मानो मेरा कोई अस्तित्व ही न हो।
आखिरकार वह उठी। मैं भी उठा, उलझन और घबराहट में। मैंने उसे दरवाजे तक पहुंचाया। कमरे से निकलते समय मैंने धीरे से कहा, "तसनीम!"
वह थोड़ी देर रुकी, लेकिन मैं अवाक रह गया। फिर बिजली की गति से वह कमरे से चली गई। मैं वहीं खड़ा रह गया।
वह दोबारा नहीं आई।

•

तसनीम जा चुकी थी। मेरी शाम का काम खत्म हो गया था। अंदर से खाली, बाहर से उदासीन, मैं शहर में भटक रहा था। बिना किसी कारण के मेरे कदम शिराज की ओर मुड़ गए। अब्दुल चौंक गया। “ज़ाकिर साहब! आप कहाँ थे?”
“यहीं पर। बाकी लोग कहाँ हैं?”
“कोई आ ही नहीं रहा है। क्या मैं चाय ले आऊं?”
"जी हां, ले आओ।"
मैं एक कोने में अकेला बैठा चाय पी रहा हूँ। मेरे चारों ओर सभी चेहरे नए और अजनबी हैं। ओह, तो वो सफ़ेद बालों वाला आदमी अब भी आता रहता है। वो तो पक्के सिद्धांतों वाला आदमी है। लेकिन मेरे दोस्त कहाँ हैं? ये कितना अजीब है। शिराज में हम कभी मुख्य समूह थे। अब हम ऐसे गायब हो गए हैं जैसे हम कभी यहाँ थे ही नहीं।
अफजल अचानक अंदर आता है। “यार, सब लोग कहाँ हैं? मैं तुम्हें ढूंढते- ढूंढते थक गया। मुझे एक भी चूहा नहीं मिला। मैंने सुना था कि तुम और इरफान इंपीरियल होटल में बैठे हो।”
"हम करने के आदी थें।"
खैर, मैं वहाँ इस उम्मीद से गया था कि तुम वहाँ मिलोगे। यार, वो जगह तो बहुत ही बदहाल है। कैबरे शो चल रहा था, बत्तियाँ बुझी हुई थीं। खैर, मैं बैठ गया। मैंने मन ही मन सोचा कि बत्तियाँ जलते ही मैं उन चूहों को ढूँढ़ूँगा।

जब मैंने ज़मीन पर देखा, तो मिस डॉली वहाँ नहीं थी। एक घिनौनी औरत नाच रही थी। जो लोग उसकी तारीफ़ कर रहे थे, उनकी बातें भी उतनी ही घिनौनी लग रही थीं। जब बत्तियाँ जलीं और मैंने चारों ओर देखा, तो सब गंवार और देहाती लोग थे। मैंने तुम दोनों को गालियाँ दीं और वहाँ से चला गया।
अफजल सच कह रहा था। यह इंपीरियल होटल का नया तरीका था। मैं भी एक शाम वहाँ गया था। जब मैंने वहाँ का हाल देखा, तो मैं वापस लौट आया।
“यार, भले लोग कहाँ चले गए?” यह कहते हुए अफजल चारों ओर देख रहा था। वह बुदबुदाया, “ये लोग कौन हैं? सब लोग कहाँ चले गए?”
"ज़व्वर ने सिविल सेवा में भर्ती होकर शहर छोड़ दिया है।"
“वह जाकर झील में कूद सकता है। मुझे बाकी लोगों के बारे में बताओ।”
“सलामत शायद अमेरिका चला जाए, वह छात्रवृत्ति पाने की कोशिश में इधर-उधर भाग रहा है। आप उसे अक्सर अमेरिकी अमेरिकी रक्षा मंत्रालय में पाएंगे। अजमल तो अपने 'बेसिक डेमोक्रेसी' के काम में पूरी तरह से डूब गया है।”
और इरफान?
उन्हें एक अखबार में नौकरी मिल गई है।
“चूहा!” अफजल बड़बड़ाया, “तुम क्या कर रहे हो?”
"प्यार।"
“प्यार?” अफजल ने मुझे सिर से पैर तक ध्यानपूर्वक देखा। “खैर, तुम एक अच्छे आदमी हो।”
"शिराज में बैठकर साहित्य, कला और राजनीति पर विचार-विमर्श करना ही सब कुछ नहीं है।"
अफजल ने मेरी बातें गंभीरता से सुनीं। “तुम सही कह रहे हो। प्रेम उससे कहीं बड़ा काम है। लेकिन, दोस्त, प्रेम करने के लिए पुरुष का गुणी होना आवश्यक है।”
यार, तुम भी वाकई बहुत गुणी हो।
"हां, मैं गुणी हूं, लेकिन मैं यहां बहुत व्यस्त हूं।"
"कब्ज़ा होना?"
“भाई! क्या तुम्हें पता नहीं कि मेरा कितना समय पक्षियों और पेड़ों की संगति में बीतता है? मेरे पास प्रेम के लिए समय नहीं है। तुम प्रेम करो, मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगा।”

“यार, अब प्रार्थना करने से क्या फायदा? वह यहाँ थी, लेकिन अब चली गई।” मैंने एक लंबी आह भरी।
अफजल ने मुझे बहुत सहानुभूति से देखा और सलाह दी, "दोस्त! दरवाजा खुला रखो और जागते रहो।"
जो दरवाज़ा इतने लंबे समय से बंद था, जाते समय उसने उसे खोल दिया। अब मैं उसे बंद नहीं कर सका। दरवाज़ा खुला ही रह गया, और मैं इंतज़ार करता रहा। वह नहीं आई, कोई और आ गया। एक संगीत सम्मेलन में मेरी मुलाकात अनीसा से हुई। उसे देखकर मैं हैरान रह गया: "अरे, तुम! लंदन से कब वापस आई?"
दरअसल, मुझे इस बात पर हैरानी नहीं हुई कि वह अचानक लंदन से लौट आई थी। मुझे इस बात पर हैरानी हुई कि वह एक नई शान के साथ लौटी थी। जब मैंने उसे इंपीरियल होटल में देखा था, तब मैं उस पर बिल्कुल भी मोहित नहीं हुआ था। उसने मुझमें थोड़ी दिलचस्पी भी दिखाई थी, लेकिन मैंने उसे ज़रा भी मौका नहीं दिया। मैं कैसे दे सकता था? मेरे अंदर तो दरवाज़ा बंद था। और तो और, उस समय वह देखने में भी उतनी आकर्षक नहीं थी। उसका शरीर बिल्कुल सपाट लग रहा था। लेकिन अब उसका शरीर सुडौल था, और उसके स्तन उभरे हुए थे। उसकी गोल-मटोल बाहें खुली थीं, उसकी कमर और कूल्हे आकर्षक ढंग से हिल रहे थे, उसके भरे हुए स्तन हिलते समय मानो कांप रहे थे। आश्चर्य और खुशी से मैंने उसे सिर से पैर तक देखा। "अनिसाह! लंदन ने तुम्हें पूरी तरह बदल दिया है!"
उसने मेरी बातों को तारीफ के तौर पर लिया। वह हँसी, फिर बोली, "काफी रात हो चुकी है—यह सम्मेलन कब खत्म होगा?"
क्या हमें इसके खत्म होने का इंतजार करना होगा?
“नहीं, हम ऐसा नहीं करते।”
हम तुरंत बाहर निकल गए। जब मैंने कार का दरवाजा खोला, तो उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा। "अरे वाह, तुमने कार ले ली! इसका मतलब है कि सिर्फ मैं ही नहीं बदली, तुम भी बदल गए हो।"
"यह सेकंड हैंड है।"
“सेकंड हैंड वाली गाड़ियाँ ज़्यादा सुचारू रूप से चलती हैं।” यह कहते हुए वह ज़ोर से हँस पड़ी।
"क्या हमें कहीं जाकर चाय नहीं पीनी चाहिए?"
“बेशक। आखिर हमने सम्मेलन क्यों छोड़ा? आजकल इंपीरियल होटल कैसा है? लंदन में मुझे सिर्फ एक ही चीज की कमी खल रही थी—इंपीरियल होटल की।”

“इंपीरियल में भी बदलाव आया है। लेकिन यह बदलाव अलग तरह का है। जब आप इसे अब देखेंगे, तो आप निराश हो जाएंगे।”
"तो मुझे निश्चित रूप से जाकर इसे देखना चाहिए।"
मैंने कार को इम्पीरियल की ओर मोड़ दिया।
अब इम्पीरियल की हालत और भी बदतर हो गई थी। न कोई कैबरे, न कोई बैंड बज रहा था। मेजें लगभग खाली थीं। कहीं-कहीं एक-दो ग्राहक चुपचाप चाय पी रहे थे। भूरी बिल्ली मैनेजर की कुर्सी के पास आंखें बंद करके लेटी थी। फिर वह सुस्ती से उठी। उसने जम्हाई ली और शरीर सीधा किया। फिर थकी हुई सी चाल से वह कई खाली मेजों के नीचे से गुज़री, जब तक कि वह शमी कबाब खा रहे एक ग्राहक के पास नहीं रुकी और धीमी सी "म्याऊं" की आवाज़ निकाली। लेकिन जब उसने उसकी बेरुखी देखी तो वह आगे बढ़ गई। वह गंदे, धूल भरे डांस फ्लोर पर पहुंची, उसके बीचोंबीच बैठ गई और आंखें बंद कर लीं।
अनिसा ने यह सारा दृश्य बड़े दुख से देखा। उसने कहा, “इंपीरियल की हालत बहुत खराब हो गई है। ये सब कैसे हुआ? जब मैं यहाँ से गई थी, तब इंपीरियल अपने चरम पर था। तब किसने सोचा होगा कि इसका ऐसा हाल होगा?”
“ऊंचाई के शिखरों की यही तो समस्या है। उन पर मौजूद लोग कभी कल्पना भी नहीं कर सकते कि उन्हें इतनी ऊंचाई से नीचे लाया जा सकता है! और एक बार जब गिरावट शुरू हो जाती है, तो उसे बीच में रोका नहीं जा सकता। गिरावट एक पल के लिए भी नहीं रुकती, जब तक कि वह अपनी चरम सीमा तक न पहुंच जाए।”
“आप राष्ट्रों के पतन की बात करने लगे हैं। मैं साम्राज्यवादी युग की बात कर रहा था।”
"जब भी और जहां भी गिरावट शुरू होती है, यह बिल्कुल उसी तरह से काम करती है।"
अनिसा ने मुझे अर्थपूर्ण नज़र से देखा। “इस बीच तो तुम सचमुच एक बुद्धिमान व्यक्ति बन गए हो। चलो, अब यहाँ नहीं रुकते।”
जैसे ही हमें थोड़ी फुसफुसाहट सुनाई दी, मैंने एक सुझाव दिया: "लॉरेन अब खुला होगा। हम वहां अच्छी चाय पी सकते हैं।"
मुझे कोई आपत्ति नहीं है।
जब हम लोरेन में बैठे थे, तो उसने शरारती अंदाज़ में कहा, "तो क्या लंदन में आने के बाद से मैं बदल गई हूँ?"

मैंने उसे फिर से सिर से पैर तक देखा और मुझे बहुत खुशी हुई। "तुम बिलकुल बदल गई हो।"
लेकिन मैं देख रहा हूं कि तुम यहीं रुके रहे और बदल गए।
"कैसे?"
“अब तो तुम किसी लड़की से बात कर सकते हो, और देर रात किसी होटल में उसके साथ चाय पी सकते हो।” वह थोड़ी देर रुकी, फिर बोली, “मेरे जाने के बाद, क्या तुमने प्यार के मामले में कुछ प्रयोग नहीं किए?”
मैंने अभी तक ऐसा नहीं किया है, लेकिन मैं ऐसा करना चाहता हूं।
झूठ मत बोलो। तुम्हारा व्यवहार दर्शाता है कि तुमने कोशिश की है। अगर सफल नहीं हुए, तो कोई बात नहीं। यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। पहली कोशिश अक्सर नाकाम रहती है। एक और बार कोशिश करो, सफलता तुम्हारे प्रयासों का फल होगी। "क्या मैं इसके लिए अधिक उम्र का नहीं हूँ?"
“बकवास। वहाँ, प्रेम के मामलों में असली दौर चालीस के बाद शुरू होता है। और जिस आदमी के कनपटी पर सफेद बाल होते हैं, उसके चारों ओर लड़कियाँ मक्खियों की तरह मंडराती रहती हैं।”
अनायास ही मैंने अपनी कनपटी के बालों पर उंगली फेर ली। "यह फैशन यहाँ कब आएगा?"
“यह आ चुका है। मैदान में उतरो। जल्द ही किसी लड़की के साथ संबंध शुरू करो। बताओ, किसके साथ शुरुआत करोगे?”
मैं आपसे ही शुरुआत क्यों न करूं?
“मेरे साथ!” उसने कुछ हैरानी से मेरी तरफ देखा और फिर बेपरवाही से हंस पड़ी। “तुम्हारे पास तो वाकई बहुत हिम्मत है!”
फिर भी, इसमें नुकसान क्या है?
“कोई बात नहीं,” उसने शांत भाव से कहा। “लेकिन मैं थोड़ी नखरीली हूँ। तुम मेरा मुकाबला नहीं कर पाओगे।” उसने सोचा, फिर बोली, “सुनो! अगर तुम्हारी शादी रज़िया से तय हो जाए, तो कैसा रहेगा?”
मुझे उसकी परवाह नहीं है।
तो फिर आप किसकी परवाह करते हैं?
"आप।"
“मैं समझ गई!” वह मुस्कुराई। “आप सचमुच मर्दाना साहस से भरे हुए हैं! यह बहुत अच्छी बात है।”

लोरेन से उसके घर जाते समय, मैंने मर्दाना साहस का एक और प्रदर्शन किया। गाड़ी चलाते हुए, मैंने एक हाथ स्टीयरिंग व्हील से हटाकर उसकी नंगी बांह पर रख दिया। उसने न तो मेरे इस मर्दाना साहस की प्रशंसा की, न ही मेरे उत्साह को कम करने के लिए कुछ किया। मेरा हाथ उसकी बांह पर सरकता हुआ उसके कंधे तक पहुँच गया। कंधे से होते हुए, वह उसके स्तन की ओर बढ़ने लगा; तभी उसने मुझे निर्देश दिया, "और आगे मत बढ़ो।"
"क्यों?"
“हर बात का कारण जानना संभव नहीं है। मैंने आपको बता दिया है, और इतना ही काफी है।”
“पर मैं चाहता हूँ।” बोलते-बोलते मैंने गाड़ी को सड़क से थोड़ा किनारे रोका और ब्रेक लगाकर रोक दिया। रात काफी ढल चुकी थी और सड़क एक छोर से दूसरे छोर तक सुनसान थी। मैं अनीसा के पास सरक गया, इतना करीब कि मैं अपने शरीर से उसकी कमर की गर्माहट और कोमलता महसूस कर सकता था। मैंने धीरे से अपना हाथ उसके बालों पर फेरा, मेरी उंगलियाँ उसके घुंघराले बालों के साथ-साथ उसके मुलायम कंधों तक, कंधों से उसकी चिकनी बाहों तक फिसल गईं। फिर मैंने धीरे से और नरमी से अपना हाथ उसके उभरे हुए स्तन पर रख दिया। उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और गंभीरता से मेरी ओर देखा। “मैंने तुमसे क्या कहा था?”
मेरा हाथ वहीं रुका रहा, उस गर्माहट और कोमलता के बीच। वह मुझे देखती रही। उसने एक आदेश दिया था और उसके पालन की प्रतीक्षा कर रही थी। मैंने धीरे से अपना हाथ हटा लिया। लेकिन हम एक-दूसरे को देखते रहे। मैं उसके और करीब सरक गया। मेरे होंठ उसके नम होंठों की ओर बढ़े।
उसने निर्णायक स्वर में कहा, "नहीं।"
"क्यों?"
मैं थोड़ी नखरीली लड़की हूँ। तुम तो सीधे-सादे इंसान हो।
मैं अब साधारण नहीं रहा।
“ओह?” उसने शरारती अंदाज़ में मेरी तरफ देखा।
"नहीं।"
वह अचानक हंस पड़ी, ठीक वैसे ही जैसे लोग किसी बच्चे की मासूम बातों पर हंसते हैं। "ठीक है, चलो चलते हैं, बहुत देर हो गई है। मुझे सोना है।"

अपने घर पर, कार से उतरते ही उसने कहा, "चलो, मैं तुम्हारे लिए कॉफी बनाती हूँ।"
"इतनी रात को अपने परिवार को परेशान करना बिल्कुल भी शिष्टाचार के विरुद्ध है।"
“नहीं, मेरा कमरा अलग है। मैं अपने कमरे में ही कॉफी बना सकता हूँ।” "लेकिन इतनी रात को आपको इतनी परेशानी क्यों उठानी चाहिए? मैं आपको बोर नहीं करना चाहता।"
वह मुस्कुराई और बोली, "ठीक है, शुभ रात्रि!"
मैंने कहा, "शुभ रात्रि," और कार स्टार्ट कर दी।
कुछ दूर जाने के बाद मैं झिझक गया। उसने मुझे क्यों रोका था? मैंने बीच सड़क पर अचानक ब्रेक लगाया और सोचने लगा। फिर मैंने झट से गाड़ी स्टार्ट की, पीछे मुड़ा और पूरी रफ्तार से उसके घर की ओर चल पड़ा।
मैंने अपनी कार ड्राइववे में खड़ी की। मैं रुका और उस कमरे का जायज़ा लिया जिसे अनीसा ने अपना बताया था, और जो वाकई अलग था। उसने मुझे यह भी बताया था कि वह देर रात तक पढ़ती रहती है। लेकिन उसका कमरा अंधेरे में डूबा हुआ था। किसी भी खिड़की या शीशे से रोशनी की एक किरण भी नहीं दिख रही थी। मैं बहुत निराश होकर कार घुमाकर वापस चला गया।

•

ओह! चलते-चलते मैं अचानक रुक गया। इंपीरियल होटल पूरी तरह खंडहर में तब्दील हो चुका था। पूरी इमारत ढह गई थी। डांस फ्लोर मिट्टी में बुरी तरह दब गया था।
मैं वहीं खड़ा देखता रहा। मुझे आगे जाना था, पर मेरे पैर हिल नहीं रहे थे। इसलिए मैं वापस मुड़ गया। जैसे ही मैं मुड़ा, मेरी नज़र उस भूरी बिल्ली पर पड़ी। शाम का समय था और वह धूल से ढके डांस फ्लोर के पास एक परछाई की तरह घूम रही थी। कितनी गंदी और दुबली-पतली दिख रही थी वह!
“चूहे! क्या तुम फिर से वापस आ गए?” अफजल ने समूह को फिर से एक साथ देखा और आश्चर्यचकित रह गया।
"हम कहीं नहीं गए थे," सलामत और अजमल ने एक साथ कहा।
“सलाम!” अफजल ने सलामत से कहा, “अमेरिका के लिए जो छात्रवृत्ति तुम्हें मिलने वाली थी, उसका क्या हुआ? मुझे लगा था कि तुम अब तक वहाँ पहुँच चुके होगे।”

“अमेरिका!” सलामत ने तिरस्कारपूर्वक कहा। “तुम जानते हो कि मैं अमेरिका विरोधी हूँ! उन्होंने मुझे छात्रवृत्ति की पेशकश की थी, लेकिन मैंने उसे ठुकरा दिया।”
सलामत को देखते हुए इरफान बिना कुछ कहे मुस्कुरा दिया।
“चूहा! तुम क्यों हंस रहे हो?”
“कुछ नहीं। मैं एक शब्द भी नहीं बोलूंगा।” इरफान ने अपनी मुस्कान पर काबू पाया और गंभीर चेहरा बना लिया। सलामत ने गुस्से से उसकी ओर देखा, लेकिन चुप रहा।
और तुम, अजमल?
“मैं?” अजमल ने अत्यंत गंभीरता से घोषणा की, “मैं अयूब की तानाशाही को स्वीकार नहीं कर सका। मैंने इस्तीफा दे दिया।”
“या फिर उन्हें बाहर निकाल दिया गया?” अफजल ने फिर इरफान की ओर अर्थपूर्ण ढंग से देखा।
“मैं इस बारे में कुछ नहीं कहूंगा,” इरफान ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। इरफ़ान भी शिराज में फिर से नज़र आने लगा था। अखबार के काम में दिन-रात जी- तोड़ मेहनत करने के बाद, आखिरकार उसने काम खत्म करके दफ्तर से निकलने का रास्ता ढूंढ लिया था।
मेरे सारे दोस्त एक-एक करके वापस आ गए, लेकिन बीते हुए दिन कभी वापस नहीं आए।

पाँच
शहर अब एक नए नारे के जादू में डूबा हुआ था। पुराने नारों की पकड़ भले ही ढीली पड़ गई थी, लेकिन उन्हें बढ़ावा देने वाले पोस्टर अभी भी लगे हुए थे; ठीक उसी तरह जैसे दीवारों पर हर तरह के अपमान और आरोप लिखे हुए थे। धूप हो या बारिश, उनका कोई असर नहीं हुआ था। फिर भी, उनका मिजाज, उनकी भाषा बासी पड़ चुकी थी। दीवारों को देखते हुए वह हैरान था कि नारे इतनी जल्दी बासी कैसे हो जाते हैं। एक नया नारा बवंडर की तरह आया और तेजी से दीवारों, कारों और ब्लैकबोर्ड पर फैल गया। "भारत को कुचल दो," "भारत को कुचल दो," हर घर में एक ही विषय, हर सभा में एक ही मुद्दा—युद्ध, युद्ध, युद्ध। एक ही सवाल उसका पीछा करता रहा, घर के अंदर और बाहर, हर जगह: क्या युद्ध होगा?
“मौलाना साहब! मेरे करामात का पत्र आया है। आजकल उनकी पोस्टिंग ढाका में है।”
“वह क्या लिखता है? वह ठीक है, है ना?”
"वह ठीक है, लेकिन उसके पत्र से ऐसा लगता है कि वह कुछ चिंतित है।"
आजकल कौन नहीं है?
“जी हाँ, यह सच है, हालात दिन-ब-दिन बदतर होते जा रहे हैं।” फिर ख्वाजा साहब ने उनसे कहा, “क्या ऐसा नहीं है, मेरे बेटे जाकिर?”
"जी जनाब, हालात बिल्कुल भी अच्छे नहीं हैं।"
"खबर क्या है?"
“खबर? कोई खास खबर नहीं है।”
“मौलाना साहब!” ख्वाजा साहब ने अब्बा जान को संबोधित करते हुए कहा, “हमारे बेटों को क्या हो गया है? ये इधर-उधर तो घूमते रहते हैं, पर अगर उनसे कोई खबर पूछो तो वो कहते हैं कि कोई खबर नहीं है! जब मैं सलामत से पूछता हूँ, तो वो हमेशा एक ही खबर सुनाता है: कि क्रांति आ रही है। मैंने उससे कहा, ‘बेटा,

क्रांति नहीं आ रही, युद्ध आ रहा है।’ उसने जवाब दिया, ‘हाँ, और उसके साथ क्रांति भी आ रही है।’ मैंने कहा, ‘अहंकारी, क्या तुझे पूर्वी पाकिस्तान में क्या हो रहा है, वो नहीं दिख रहा?’ और उसने मुझे क्या जवाब दिया? ‘पूर्वी पाकिस्तान आज़ाद हो रहा है।’ मैंने कहा, ‘मेरे घर से निकल जा, हरामखोर बेटे!’”
“अल्लाह हम पर रहम करे,” अब्बा जान ने संक्षेप में कहा और हुक्का का मुखपत्र अपने मुंह में लगा लिया।
“जी हां, अल्लाह रहम करे, हालात बहुत खराब हैं। आज सुबह ही, जब मैं नमाज पढ़कर लौट रहा था, तो मैंने वाघा सीमा चौकी की ओर सेना की गाड़ियां जाती देखीं। बहुत सारी गाड़ियां थीं।” वह थोड़ी देर रुके, फिर ज़ाकिर से बोले, “बेटा, तुम्हें क्या लगता है, क्या युद्ध होगा?”
“आप क्या सोचते हैं?” उसने वही सवाल उससे वापस पूछ लिया।
जब यह सवाल उनके सामने आया, तो ख्वाजा साहब ने इसे अब्बा जान की ओर भेज दिया। "मौलाना साहब, कृपया अपने बेटे के सवाल का जवाब दीजिए।"
अब्बा जान चुपचाप हुक्का पीते रहे। लेकिन ख्वाजा साहब उन्हें देखते रहे। आखिरकार उन्होंने हुक्का मुंह से निकाला, हुक्का ख्वाजा साहब की ओर सरकाया और जाकिर से कहा, “पुत्र, तुम ही हो जो राजनीतिक मामलों को समझते हो। मैं सिर्फ एक बात जानता हूँ: मैं तुमसे कहता हूँ कि जब मालिक क्रूर होते हैं और पुत्र विद्रोही होते हैं, तो अल्लाह की बनाई हुई हर चीज पर कोई भी विपत्ति आ सकती है।”
“जब मालिक क्रूर होते हैं—” वह हिचकिचाया, “जब मालिक क्रूर होते हैं, और लोग धूल चाटते हैं।” अब्बा जान के लंबे समय से भूले हुए शब्द उसके मन में गूंज रहे थे।
“आप बिलकुल सही हैं।” ख्वाजा साहब का सिर झुका हुआ था।
अपने दोनों बड़ों को चुप देखकर उसने इस अवसर का लाभ उठाया और चुपके से निकल गया।
नाज़िरा की दुकान पर भी यही चर्चा का विषय था। सिगरेट का एक पैकेट देते हुए नाज़िरा ने पूछा, “ज़ाकिर साहब, महोदय! आपको क्या लगता है, क्या युद्ध होगा?”
"आप क्या सोचते हैं?"
"मुझे नहीं पता, महोदय, लेकिन लोग ऐसा कह रहे हैं।"

पास ही एक स्टूल पर बैठे करीम बख्श ने आत्मविश्वास से घोषणा की, "महाराज, युद्ध होना तय है।"
“करीम बख्श! आपको कैसे पता?”
मैं सुबह की प्रार्थना करता हूँ, क्या आप भी करते हैं?
"नहीं।"
“इसे अर्पित करो, तब तुम्हें पता चलेगा। शाम के समय आकाश में कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखता, इतना शोर होता है। उस समय आकाश मौन रहता है। भोर में उठकर देखो, उस समय आकाश बोलता है। हाल ही में एक धूमकेतु दिखाई दिया है।”
“यार, मैंने यह सुना तो था, लेकिन मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ।”
"भोर होते ही उठकर आकाश को देखो, तुम्हें यकीन हो जाएगा। पूंछ बिल्कुल झाड़ू जैसी है।"
हे भगवान, कहीं झाड़ू हमारा सफाया न कर दे!
शिराज में कदम रखते ही उसने इरफान से अभिवादन किया, जो पहले से ही वहाँ बैठा था, तभी सलामत अपनी पलटन के साथ अंदर आ गया। अब सलामत के साथ अजमल ही नहीं, बल्कि पूरा दल था। और अब, अपने नेतृत्व की स्थिति को देखते हुए, वह और भी अभिमानी लहजे में बोलने लगा।
“प्रतिक्रियावादी!” सलामत ने पहले उसकी ओर, फिर इरफान की ओर ध्यान से देखा। “तुम्हारा क्या विचार है? क्या युद्ध होगा या नहीं?”
“काश, युद्ध मेरी राय पर निर्भर होता!” इरफान की आवाज में व्यंग्य था। सलामत का चेहरा तुरंत तनावग्रस्त हो गया। “इरफान! तुम्हारे परिष्कृत हास्य और सूक्ष्म व्यंग्य का समय अब समाप्त हो चुका है। आज तुम्हें सीधा जवाब देना होगा: या तो तुम युद्ध चाहते हो, या नहीं चाहते। तुम्हें एक निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।”
“प्रतिबद्धता!” इरफान ने एक जहरीली मुस्कान दी। “सलाम, आप गलत जगह आ गए हैं। मेरी प्रतिबद्धता न तो युद्ध को रोक सकती है, न ही शुरू कर सकती है।” “समय के सवालों से बचने का वही घिसा-पिटा, पुराना और उबाऊ तरीका।” सलामत ने इरफान को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और फिर उसकी ओर ध्यान दिया। “और तुम, ज़ाकिर? तुम्हारा क्या कहना है?”
“मैं? मैं क्या कहूँ?”
“आप युद्ध के पक्ष में हैं या युद्ध के विरोध में?”

वह सोचने लगा। “मुझे नहीं पता यार।” वह थोड़ी देर रुका, फिर बोला, “मुझे सच में नहीं पता कि आज मैं किस बात का समर्थन करता हूँ और किस बात का विरोध करता हूँ।”
अजमल ने उसे घूरकर देखा। "यह व्यक्ति हमें भ्रमित करना चाहता है।" प्लाटून में किसी और ने कहा, "जब उनके सामने की स्थिति ठोस हो जाती है और प्रतिबद्धता की मांग करती है, तो प्रतिक्रियावादी घबरा जाते हैं।"
सलामत ने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाईं और गुस्से से चारों ओर देखा। वह एक नियमित भाषण की तैयारी कर रहा था। “अव्यवस्था फैलाना साम्राज्यवादियों की पुरानी चाल है। आज सभी साम्राज्यवादी एजेंट यही कर रहे हैं।” फिर उसने दांत पीसे और मेज पर मुट्ठी पटकी। “साम्राज्यवादी शैतान, तुम्हारी चालें अब काम नहीं करेंगी! तुम भारत के साथ संघ बनाकर खुद को बचाना चाहते हो, तुम गरीबों की आवाज दबाना चाहते हो। ये चालें काम नहीं करेंगी। भारत के साथ कोई संघ नहीं बनेगा। युद्ध होगा!” सलामत ने इतनी जोर से कहा कि शिराज में बैठे सभी लोग सुन सके। उन्होंने सुना और सलामत और इरफान को ऐसे देखा जैसे वे पाकिस्तान के खिलाफ किसी बड़ी साजिश रचते हुए पकड़े गए हों। सलामत ने कमरे में संतुष्टि भरी नजर डाली और फिर बोलना शुरू किया। “युद्ध होगा, और यह घिसा-पिटा तंत्र जो तुम्हें सहारा देता है, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। तुम्हारे वे पुराने, सड़े हुए नैतिक मूल्य, जो समाज में बदबू फैलाते हैं, उनमें से एक भी नहीं बचेगा। मेरे मूर्ख पिता ने मुझसे पूछा कि फिर क्या बचेगा? मैंने कहा, ‘बूढ़े मूर्ख! मैं बचूंगा—मैं, क्रांति!’”
कुछ देर बाद अफजल अंदर आया और चुपचाप सलामत को घूरता हुआ बैठा रहा। भाषण समाप्त होने पर उसने बोलना शुरू किया: "माउस, तुम्हारी राय इतनी जहरीली बदबू फैलाती है कि अब से मुझे शिराज आने के लिए गैस मास्क पहनना पड़ेगा।" सलामत ने अफजल को गुस्से भरी नजरों से देखा। उसने एक बार फिर मेज पर मुक्का मारा और चिल्लाया, “प्रतिक्रियावादियों! साम्राज्यवादियों के चमचों! पूंजीपतियों के चाटुकारों! तुम्हारा हिसाब-किताब का दिन आ गया है।”
“भाई, अपनी आवाज़ धीमी करो। वह आदमी तो गौरैया जितना छोटा है, फिर भी इतनी तेज़ आवाज़ निकालता है!”
अफजल के संबोधन के तरीके ने सलामत को बुरी तरह झकझोर दिया, क्योंकि यह उनके नेतृत्व पर एक करारा प्रहार था। क्रोध से भरी आँखों से अफजल को घूरते हुए

सलामत अचानक उठ खड़े हुए। "अरे शैतान, जनता के खिलाफ तुम्हारी साजिश कामयाब नहीं होगी!"
“यह सफल नहीं होगा, यह सफल नहीं होगा!” पूरी पलटन ने एक साथ नारा लगाना शुरू कर दिया; और नारा लगाते हुए वे शिराज से निकल गए।
पलटन के जाते ही चारों ओर सन्नाटा छा गया; तीनों कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। फिर अफजल बड़बड़ाया, “यार, ये क्रांतिकारी हमें बर्बाद कर देंगे। और वो चूहा कितना बक-बक करता है!”
इरफान ने कहा, "यह उनके जैसे लोगों के बोलने का समय है।"
“जब जूतों के फीते बोलने लगें, तो बोलने वाले चुप हो जाएँ।” वह चौंक गया। कितने पुराने शब्द उसके मन में आ गए! आजकल उसके साथ ऐसा ही हो रहा था। अब्बा जान की कोई भूली हुई बात, बी अम्मा की कोई टिप्पणी, अचानक उसके मन में आ जाती और पल भर में गायब हो जाती—जैसे कोई साँप घास से अपना सिर उठाता है और फिर एक पल में गायब हो जाता है।
“यार! ऐसे समय में ऐसी बातें हो जाती हैं,” अफ़ज़ल ने कहा। “गले तो मज़बूत हो जाते हैं, लेकिन दिमाग़ कमज़ोर हो जाता है। उस घिनौने आदमी की आवाज़ सुनकर ऐसा लगता है जैसे किसी स्कूटर पर ट्रक का बड़ा सा हॉर्न लगा दिया गया हो। उसका सिर देखकर लगता है जैसे ‘शाह दुलाह के चूहे’ हों। मैंने कई बार सोचा है कि उसका सिर छूकर देखूँ, पर घिन आती है, जैसे किसी चिपचिपी और घिनौनी चीज़ को छू रहा हो। मैं अपना हाथ पीछे खींच लेता हूँ।” वह रुका, फिर बुदबुदाया, “चूहे, तुम कुछ नहीं बोल रहे।” फिर उसने डरते हुए, सोच-विचार करते हुए कहा, “यार, कभी-कभी चलते समय ऐसा लगता है जैसे मैं ही अकेला चल रहा हूँ, बाकी सब चारों हाथों-पैरों के बल रेंग रहे हैं। और एक आवाज़ आती है, जैसे कोई कुछ कुतर रहा हो।” वह चुप हो गया। वह चुपचाप बैठा रहा, गहरी सोच में डूबा हुआ। फिर उसने कहा, “यार! कुछ करो।”
"अफजल, तुमने जरूरत से ज्यादा पी ली है।"
“साथी! मेरी बात ध्यान से सुनो,” अफजल ने इरफान की आँखों में आँखें डालकर कहा। फिर वह उसके और करीब आया और धीमी, विश्वासयोग्य आवाज़ में बोला, “पाकिस्तान एक धरोहर है। तुम दोनों मेरे हथियार बनो। मैं इस धरोहर की रक्षा करूँगा। वरना, ये चूहे इस पाकिस्तान को कुतर कर चूर-चूर कर देंगे।” सफेद बालों वाला वह व्यक्ति अपनी मेज से उठा, पास आया और बोला, "अफजल साहब, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। पाकिस्तान एक धरोहर है।"

अफजल ने सफेद बालों वाले व्यक्ति को टकटकी लगाकर देखा। “सफेद बालों वाले व्यक्ति! तुरंत चले जाओ। मैं अभी इन दो गुणी व्यक्तियों को शिक्षा दे रहा हूँ।”
“ठीक है, ठीक है।” सफेद बालों वाला आदमी अपनी मेज पर वापस चला गया और अखबार पढ़ने में मग्न हो गया।
अफजल खड़ा हो गया।
“क्या? तुम जा रहे हो?”
“हाँ यार! मेरा नशा उतर गया। अब मुझे और पीना पड़ेगा।” वह रुका, फिर बुदबुदाया, “लगता है चूहे सब शराब के घड़े में कूद गए हैं, और अब अपनी पूंछों पर खड़े हैं।” वह चुप हो गया, कुछ सोचा, और बाहर चला गया।
सफेद बालों वाले उस आदमी ने अखबार से अपना सिर उठाया, देखा कि अफजल जा चुका है, और पास आकर बोला, "अच्छा, तुम्हें क्या लगता है, क्या युद्ध होगा?" “तुम्हारा क्या विचार है?” इरफान ने चिड़चिड़ाते हुए कहा।
“मैं क्या सोचूँ?” वह सोचने लगा। “महोदय, हालात बहुत खराब हैं।”
"वे कभी अच्छे कब थे?"
“यह भी सही है। यहाँ हालात कभी अच्छे थे भी कब थे?”
वह चुप हो गया, फिर बुदबुदाया, "हम बदनसीब लोग हैं।" वह वापस अपनी मेज पर गया और बैठ गया। फिर उसने अब्दुल को बुलाया, बिल चुकाया और बाहर चला गया। “वह कहता है कि विदेश जाने के दौरान उसके बाल सफेद हो गए,” इरफान हंसते हुए बोला।
उन्होंने गंभीरता से इरफान की ओर देखा। “एक बात तो पक्की है। जब से हमने उसे देखा है, वह बिल्कुल ऐसा ही दिखता है।”
“और वो यहाँ कितनी नियमित रूप से आता है।” इरफान थोड़ा हँसा; वो उस आदमी के बारे में गंभीरता से सोचने को तैयार नहीं था।
“वह शुरू से ही यहाँ आते रहे हैं, बिल्कुल उसी अंदाज़ में। और उन दिनों उनके बाल बिल्कुल सफ़ेद थे। हम हमेशा कहते थे कि उनके सिर पर बर्फ़ गिरी थी।” ज़ाकिर रुका और जैसे किसी सोच में डूबा हो, चुप हो गया। फिर उसने कहा, “यार, उन दिनों के कुछ लोग तो बिल्कुल गायब ही हो गए हैं।” जैसे-जैसे वह बोलता गया, वह खुद भी गायब हो गया। अचानक उसकी यादों में खोए-खोए चेहरे उभर आए! कुछ इतने धुंधले कि आँखों के सामने आए और फिर गायब हो गए। कुछ इतने साफ़ और चमकदार कि उसकी आँखों में ऐसे बस गए जैसे अब कभी उसका पीछा नहीं

छोड़ेंगे। मुल्ला बिनोटिया, मुट्ठी से भी छोटा, छोटी दाढ़ी और गठीले शरीर वाला एक छोटा आदमी। “जी साहब, तांबे के एक छोटे से टुकड़े ने मेरी जान बचाई।”
“मुल्ला, ये सब कैसे हुआ?”
“जब मैं वहां से निकला, तो मैंने अपनी सारी संपत्ति वहीं छोड़ दी। मैंने बस तांबे का एक छोटा सा टुकड़ा अपनी कमरबंद में रखा था। जब सिखों ने हमला किया, तो मैंने मन ही मन कहा, ‘आज तुम्हारी कुशलता की परीक्षा है, और बिनोट की इज्जत तुम्हारे हाथों में है।’ मैंने तांबे का टुकड़ा अपनी कमरबंद से निकाला, उसे एक रुमाल के कोने में बांधा—और जब मैंने उसे एक बार घुमाया, तो मैंने उनकी कलाई तोड़ दी। तो, महोदय, मैंने उन्हें वही दिया जिसके वे हकदार थे।”
और करनालिया, दुबला-पतला, हद से ज़्यादा बातूनी, सीने से पान की थाली टिकाए हुए। “अरे यार, मैं भी उसी जगह से आता हूँ जहाँ से तुम्हारा लियाकत अली खान आता है। मुझमें बस उसकी परिपक्वता की कमी है। करनाल के लोगों का यही स्वभाव है। अगर वे पूरी तरह जोश में आ जाएँ, तो प्रधानमंत्री बन जाते हैं; अगर उनमें ज़रा भी जोश कम हो, तो जूते बनाते हैं या पान बेचते हैं।”
और नूरू, जो रोटी बेचता था और खुद को अंबाला का सच्चा आदमी बताता था, बोला, “सैय्यद साहब, इनमें से एक भी अंबाली नहीं है! सारे नाजायज औलाद सधोरा के हैं, और वो सिर्फ नाम के शेख हैं। उन्होंने नाम में ‘अंबाली’ सिर्फ रुतबे के लिए जोड़ा है। मैं अकेला अंबाला का हूँ! इसीलिए वो मेरी आँखों में आँखें नहीं मिला सकते। खैर, साहब, पाकिस्तान में ऐसा ही होता है। करसी का वो लंबा-पतला दुबला-पतला आदमी खुद को नक्लॉ का नवाब बताता है!” उन्होंने अपने शहर तो छोड़ दिए थे, लेकिन अपने शहरों को अपने कंधों पर एक धरोहर की तरह ढोते हुए ले गए थे। ऐसा ही होता है। शहर छूट भी जाते हैं तो वो पीछे नहीं छूटते। वो और भी मजबूती से पकड़ लेते हैं। जब ज़मीन पैरों तले से खिसक जाती है, तब जाकर वो आपको जकड़ती है। धरती की पकड़ बेशक बहुत मजबूत है, लेकिन माचिस की तीली जैसा दिखने वाला मौलवी? वो कहाँ से आया था? वो कभी किसी से बात नहीं करता था, एक शब्द भी नहीं बोलता था; वह अपने आप में और अपने चारों ओर कपड़े पर बिखरी हुई खाली, आधी खुली माचिस की डिब्बियों में खोया हुआ था। "मौलवी माचिस की डिब्बी, ये क्या हैं?" "महोदय, ये शहर हैं।"

"मौलवी माचिस की डिब्बी, इनमें तो माचिस भी नहीं है, ये सब खाली हैं।" "महोदय, शहर अब खाली हैं।"
वह बुदबुदाया, “लोग हर जगह से आए हैं। जैसे पतंगों की डोर कट जाती है और वे उड़ती हुई कहीं किसी छत पर आकर गिरती हैं।” वह चुप हो गया और इरफान को घूरने लगा। “इरफान!”
"हाँ।"
हम यहां काफी समय से हैं।
इरफ़ान ने उसे गौर से देखा। "तो?"
“तो कुछ नहीं।” कुछ देर रुककर उसने कहा, “तुमने सफेद बालों वाले आदमी की बात को हंसकर टाल दिया। लेकिन मैं अंदर से हिल गया था। मुझे बीते सारे पल याद आ गए। यार!” वह रुका, फिर बोला, “अब तुम्हारे और मेरे बाल भी सफेद हो गए हैं।” उसकी निगाहें इरफान की कनपटी के सफेद बालों पर टिकी थीं।
लेकिन हमारे बाल पलायन के दौरान नहीं, बल्कि पाकिस्तान की धूप में सफेद हो गए।
“पाकिस्तान का सूरज!” उन्हें फिर से यादों में डूबने का एहसास हुआ। “यार, इस शहर में धूप में कितना चले हैं! गर्मियों की दोपहरों में, मॉल रोड के गर्म फुटपाथ और हमारे कदमों के अलावा कुछ नहीं होता था। हमारा आखिरी पड़ाव हमेशा पुल के उस पार लगा पीपल का पेड़ होता था; कितना घना था वो पेड़, और उसकी छांव से कितनी ठंडी हवा चलती थी। अब वो पेड़ भी नहीं रहा। उन कमीनों ने उसे काट डाला।”
इरफ़ान ने उसकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन वे बातें उस पर असर करने लगीं, मानो वह भी बीते दिनों में खो जाना चाहता हो।
“इरफान, वो दिन हमारे लिए वाकई कठिन थे, लेकिन मुझे लगता है कि वे अच्छे थे।”
"हां, वे अच्छे दिन थे।"
“वो दिन भी, और वो लोग भी।”
“और अब?” इरफान ने उसे घूरकर देखा।
“हां, और अभी।” उसकी आवाज बेजान सी लग रही थी, मानो वह अभी-अभी चूर-चूर हो गया हो।

काफी देर तक वे चुपचाप बैठे रहे, अपने-अपने विचारों में खोए हुए। फिर उसने इरफान की ओर देखा। वह देखता ही रहा, मानो कुछ कहना चाहता हो, लेकिन झिझक रहा हो।
“इरफान।”
इरफान ने उसकी तरफ देखा, लेकिन वह चुप रहा।
"यह क्या है?"
“यार!” वह रुका, फिर कुछ हिचकिचाहट के साथ बोला, “यार, क्या पाकिस्तान का बनना अच्छा था?”
इरफ़ान ने उसे तीखी नज़रों से देखा। "क्या तुम भी सलामत से प्रभावित हुए हो?"
"सलामत के हाथों नहीं, तुम्हारे हाथों।"
"कैसे?"
"एक बार संदेह शुरू हो जाए तो उसका कोई अंत नहीं होता।"
इरफ़ान ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने ज़ाकिर को कुछ नाराज़गी से देखा और अपने होंठ कस लिए। ज़ाकिर चुपचाप बैठा रहा।
अंत में इरफान ने कहा, “मैं एक बात जानता हूँ, गलत लोगों के हाथों में सही भी गलत हो जाता है।” और वह तुरंत उठ खड़ा हुआ।
"क्या आप जा रहें है?"
“आखिरकार, मैं ड्यूटी पर हूँ।” वह तुरंत चला गया।
उस समय शिराज में बहुत शांति थी। ज़्यादातर मेज़ें खाली थीं। यहाँ तक कि जिन मेज़ों पर लोग बैठे थे, वहाँ से भी ज़्यादा शोर नहीं आ रहा था। इसलिए उसने सोचा कि वह थोड़ी देर शांति से बैठ सकता है। उसे भविष्य में कोई खतरा नज़र नहीं आ रहा था; सलामत का संकट आ चुका था और बीत भी गया था।
काउंटर पर बैठे मैनेजर ने देखा कि वह अकेला है। वह उठा और उसके पास गया। “ज़ाकिर साहब! आपको क्या लगता है, क्या युद्ध होगा?” उन्होंने ऐसे पूछा मानो यह कोई रहस्य हो जिसे केवल वही जानते हों।
वह जवाब देने में असमर्थ था। "मुझे नहीं पता कि क्या होगा।"
“आप बिल्कुल सही कह रहे हैं! किसी को भी ठीक से नहीं पता कि क्या होने वाला है। मैं जिससे भी पूछता हूँ, सबका यही जवाब होता है कि किसी को नहीं पता कि क्या होगा। लेकिन सैनिकों की आवाजाही बहुत हो रही है।”

उसने बेरुखी से, एक-एक शब्द में जवाब दिया; फिर ऊबकर वह उठा और चला गया। जाते समय उसने राहत की एक छोटी सी साँस ली।

•

वही दीवारें, वही बड़े-बड़े पोस्टर। उसकी नज़र फिर अनजाने में पोस्टरों पर भटक गई। अब शाम की परछाइयाँ लंबी हो रही थीं, और पोस्टरों पर लिखे शब्द अब उतने स्पष्ट नहीं थे। फिर भी, जैसे ही उसकी नज़र दीवारों पर लगे पोस्टरों पर पड़ी, उसने उन्हें पढ़ने की कोशिश की। ये तो पोस्टर हैं; दीवार पर क्या लिखा है? अक्सर ऐसा होता है कि दीवारों पर कुछ लिखा होता है, जबकि असल में कुछ और ही लिखा होता है। लेकिन दीवारें तो पोस्टरों से भरी पड़ी हैं। लोग पोस्टरों और नारों के जादू में बहते हुए चलते रहते हैं, दीवार पर लिखे संदेश से बेखबर। मानो वे बेखबर हों। क्या वे चलते हैं? कौन? एक आदमी को अपने पास से गुज़रते देख वह झिझका। कई लोग उसके आगे और पीछे से गुज़रे। वह उनके चेहरे साफ़ नहीं देख पा रहा था, क्योंकि शाम का समय था और स्ट्रीटलाइट काफ़ी दूर थी। क्या यह रोशनी की कमी के कारण है, या इसलिए कि शाम के समय चेहरे अक्सर अजीब लगते हैं, या क्या उनके चेहरे सचमुच ऐसे ही हैं? फिर कोई उसके पास से गुज़रा। लेकिन इस बार या तो उसकी आँखों ने धोखा दिया, या वह आदमी बहुत तेज़ी से चल रहा था, क्योंकि वह उस आदमी का चेहरा बिल्कुल नहीं देख पाया। फिर उसने किसी आदमी के गुजरने का इंतज़ार किया, ताकि वह उसका चेहरा ध्यान से देख सके, लेकिन कोई नहीं गुजरा। आज तो इतने कम लोग हैं! वह हैरान था। शाम को मॉल रोड पर आमतौर पर भीड़ रहती है। आज क्या हुआ है? और जब वह यह सोच रहा था, अचानक दो चमकती आँखों ने उसका ध्यान खींचा—एक बिल्ली। फुटपाथ के पास पेड़ों के बीच बैठी बिल्ली उसे घूर रही थी। वह उसके पास से गुजरा, लेकिन वह वहीं बैठी रही, मानो जम गई हो। एक शांत और गतिहीन बिल्ली। उसकी आँखें, चिंगारियों की तरह, उसे घूर रही थीं। एक आदमी गुजरा। वह उस आदमी का चेहरा नहीं देख पाया। उसने उस आदमी को चलते हुए देखा। यह आदमी कैसे चल रहा है? जैसे ही उसने यह सोचा, वह आदमी दूसरी गली में मुड़ गया और आँखों से ओझल हो गया। लेकिन आखिर वह आदमी कैसे चल रहा था? जब वह मेरे पास से गुजरा, तो मुझे उसके कदमों की आवाज नहीं सुनाई दी। आजकल लोग कैसे चल रहे हैं? आश्चर्य से वह अपनी ओर आते एक व्यक्ति के उठते-गिरते कदमों को देख रहा था। अब वह लोगों के चेहरों को नहीं, बल्कि उनके पैरों को देख रहा था। वह अपने आस-पास चल रहे विभिन्न लोगों के पैरों को, उनकी चाल को, ध्यान से

देखने लगा। हम ध्यान नहीं देते, लेकिन लोग अपने दो पैरों पर चलते हुए कितने अजीब लगते हैं! या शायद वे आज ही ऐसे दिख रहे हैं। मनुष्य की पहचान उसकी चाल से होती है। हर मनुष्य, हर प्राणी। लेकिन वे ऐसे चल रहे हैं मानो उन्होंने अपनी पहचान खो दी हो। और मैं? क्या मैं भी उसी तरह चलूँ? नहीं, उसने दृढ़ता से स्वयं से कहा, और तुरंत अपनी चाल का निरीक्षण करने लगा। मैं पहले कभी ऐसे नहीं चलता था, उसने बुदबुदाया, और अपनी चाल सुधारने की कोशिश की। उसने सावधानी से अपने पैर उठाए, और सावधानी से नीचे रखे, लेकिन उसकी चाल और भी बिगड़ती जा रही थी। आज मेरी चाल को क्या हो गया है? वह झिझका, फिर सोचने लगा कि आज से पहले उसने कभी अपनी चाल पर ध्यान ही नहीं दिया था। हम चलते रहते हैं, और कभी ध्यान नहीं देते कि हम कैसे चल रहे हैं। मैं यहाँ चल रहा हूँ। अचानक वह रुक गया। जब उसने अपनी अमानवीय चाल देखी, तो उसके मन में एक अजीब सा ख्याल आया कि वह नहीं चल रहा, बल्कि उसकी जगह कोई और चल रहा है। पर कौन? वह असमंजस में पड़ गया। धीरे-धीरे उसने अपने संदेह पर काबू पाया। वह संयमित कदमों से चलने लगा और अपने कदमों की आहट सुनने लगा। नहीं, मैं ठीक हूँ। मैं अपने शहर के पक्के फुटपाथ पर चल रहा हूँ, और यह मेरे कदमों की आहट है। लेकिन जब वह इस तरह खुद को दिलासा दे रहा था, तभी अचानक उसे लगा कि उसके कदमों की आहट धीरे-धीरे उससे दूर होती जा रही है। यह अजीब बात है। मैं यहाँ चल रहा हूँ, और मेरे कदमों की आहट वहाँ से आ रही है—कहाँ से—? या शायद मैं यहाँ हूँ, और कहीं और चल रहा हूँ—? कहाँ—? मैं कहाँ चल रहा हूँ? मेरे कदमों की आहट किस धरती पर पड़ रही है? उसने आश्चर्य से अपने चारों ओर देखा। सब कुछ शांत और वीरान था। मानो शहर खाली हो गया हो, जैसे माचिस की डिब्बी खाली हो जाती है। “घर, सराय और सारी जगहें, सब खाली।”* कोई शोर नहीं, कोई आवाज़ नहीं, कदमों की आहट नहीं, कुछ भी नहीं, बस चारों ओर से कुतरने की आवाज़ आ रही थी, मानो बहुत सारे चूहे कुछ कुतर रहे हों। डरा हुआ, स्तब्ध, एक गली से दूसरी गली, दूसरी से तीसरी गली। एक गली में चलते-चलते उसने देखा कि आगे का रास्ता बंद है। अब क्या किया जाए? हवेली का द्वार बंद था। उसने बंद द्वार पर दस्तक दी। “क्या कोई है?” उसकी पुकार पूरे कस्बे में गूंज उठी— क्या कोई है, क्या कोई है? मानो वह अनंत काल से इस बंद द्वार पर खड़ा होकर पुकार रहा हो, “क्या कोई है?” एक बिल्ली अपने पिछले पैरों पर खड़ी होकर दरवाज़ा खोला, उसे ध्यान से देखा और फिर बंद कर दिया। बत्ती हरी से लाल हो गई। वह पैदल पार करने के लिए बने क्रॉसिंग से पार जाने लगा, फिर झिझक गया।

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

छह
प्रिय ज़ाकिर!
सबसे पहले मैं आपको अपना सामान्य अभिवादन भेजता हूँ। मैं ठीक हूँ, और आशा करता हूँ कि आप भी ठीक होंगे।
आप मेरी मूर्खता पर ज़रूर हैरान होंगे: “उस मूर्ख ने चिट्ठी लिखने के लिए कैसा समय चुना, यह बताने के लिए कि वह ठीक है और मेरा हालचाल पूछने के लिए कैसा समय चुना!” मुझे भी एहसास है कि कितने सालों से मैंने चिट्ठी नहीं लिखी, और न ही आपने। और अब, इस अनुपयुक्त समय में, मुझे अचानक आपकी याद आई, और मैं आपको लिख रहा हूँ। डाक व्यवस्था इतनी अव्यवस्थित है कि मुझे यकीन नहीं है कि यह चिट्ठी आप तक पहुँचेगी भी या नहीं। लेकिन फिर भी मैं लिख रहा हूँ। और आख़िर क्यों? मैं आपको बताने वाला हूँ। सबसे पहले आपको यह जानना चाहिए कि मेरा तबादला एक बार फिर एक नए विभाग में हो गया है। अब मैं रेडियो विभाग में हूँ। यहाँ आने का एक फ़ायदा यह है कि मैं फ़ाइलों के उबाऊ काम से काफ़ी हद तक बच गया हूँ। यहाँ हम लोगों से निपटते हैं, फ़ाइलों से नहीं। फ़ाइलों की तुलना में यह ज़्यादा कठिन काम है, लेकिन कभी उबाऊ नहीं।
यार, यहाँ आने के बाद से मेरी मुलाकात एक अजनबी लड़की से हुई है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि उससे मेरी मुलाकात हो सकती है। गेहूँ के रंग का रंग, कोमल चेहरे की बनावट, दुबली-पतली काया, मध्यम कद, ईमानदार और सच्चा स्वभाव; मैं उसे हमेशा सफेद सूती साड़ी में देखती हूँ। वह बीच से मांग निकाल कर एक साधारण चोटी बनाती है, लेकिन कभी-कभी एक लट खुल कर उसके चेहरे पर आ गिरती है। उसका व्यवहार हमेशा संयमित रहता है। वह शांत और उदास रहती है। यार, उसकी सादगी और उदासी ने मेरे दिल को मोह लिया है। इन शब्दों को पढ़ते समय आपको रुकने की ज़रूरत नहीं है। पहले पूरी कहानी सुनिए।
मुझे समय-समय पर न्यूज़ रूम जाना पड़ता है। वहीं मेरी उससे मुलाकात हुई। इससे पहले मैंने उसे ऑफिस के आसपास आते-जाते देखा था। मैं जानती थी कि वह एक उद्घोषक है। मैंने उसका नाम भी सुना था। लेकिन फिर भी मुझे उसके बारे

में कोई खास जिज्ञासा नहीं थी। सादगी पहले तो किसी को आकर्षित नहीं करती, फिर धीरे-धीरे उदासी एक जादू की तरह हो जाती है। वह चुपचाप आती, ढाका से खबरें पूछती और चली जाती। खबरें अक्सर परेशान करने वाली होती थीं, लेकिन उसके चेहरे पर चिंता का कोई निशान नहीं दिखता था। मेरा अनुमान था कि वह अंदर ही अंदर खबरों से बहुत चिंतित थी। एक दिन मैंने उससे पूछा, "बीबी, क्या ढाका में आपके कुछ रिश्तेदार हैं?"
“हां, मेरी मां और बहन वहां हैं।”
क्या आपको पत्र मिल रहे हैं?
“आखिरी पत्र दो हफ्ते पहले आया था। तब से मैंने दो पत्र लिखे हैं। मैंने एक तार भी भेजा है, लेकिन कोई जवाब नहीं आया है।”
लेकिन रेडियो पर समाचारों से आपको क्या सीखने को मिलेगा?
"कम से कम मुझे शहर में हालात कैसे हैं, इसका अंदाजा तो लग जाएगा।"
“तो कृपया मेरे कार्यालय में आइए। ढाका के सभी समाचार पत्र मेरे डेस्क पर आते हैं।”
इसके बाद वह मेरे दफ्तर आने लगीं। वह नियमित रूप से हर रोज आतीं, ढाका के सभी अखबार पढ़तीं और चली जातीं।
मैंने एक दिन पूछा, "तुम्हारे परिवार के बाकी सदस्य कहाँ हैं?"
"कुछ कराची में, कुछ लाहौर में, कुछ इस्लामाबाद में।"
"और यहां?"
अब यहां कोई नहीं है।
"क्या यहाँ सिर्फ तुम ही हो?"
"हां, मैं भारत में अकेला हूं।"
पूरे भारत में अकेली रहने वाली एक मुस्लिम लड़की, यह बात मुझे अजीब लगी। मैं जानती हूँ कि पूरे परिवार चले जाते थे और कोई एक व्यक्ति पीछे रह जाता था। लेकिन यह व्यक्ति आमतौर पर कोई बूढ़ा आदमी होता था। अकेले रह जाने वाले ये बूढ़े लोग अपनी संपत्ति की चिंता से नहीं, बल्कि अपनी कब्र की चिंता से बंधे रहते थे। संपत्ति को लेकर कोई समस्या नहीं थी: लोग पाकिस्तान जाकर दावा कर सकते थे, और झूठे दावे करके वे छोटी संपत्ति के बदले बड़ी संपत्ति भी हासिल कर सकते थे। लेकिन कब्र के लिए कोई दावा नहीं कर सकता। व्यासपुर में बड़े घर वाले हकीम जी, आपको याद है ना?—उनका पूरा

परिवार पाकिस्तान चला गया। वे वहीं रहे और बीमार लोगों की नब्ज़ देखते रहे। मैंने उनसे पूछा, “हकीम जी, आप पाकिस्तान नहीं गए?”
नहीं, नौजवान।
और इसका कारण?
“युवक! तुम कारण पूछ रहे हो? क्या तुमने हमारा कब्रिस्तान देखा है?” "नहीं।"
“कभी जाकर देख लेना। हर पेड़ पिछले पेड़ से ज़्यादा पत्तों वाला है। पाकिस्तान में मेरी कब्र को इतनी छाया कैसे मिल सकती है?”
मैं मन ही मन हँस पड़ी। अरे, तुम मुसलमान तो कमाल हो! हमेशा अरब के रेगिस्तानों की तरफ देखते हो, लेकिन अपनी कब्रों के लिए भारत की छाँव को पसंद करते हो। यहाँ रह गए बुजुर्गों को देखकर मुझे एहसास हुआ कि मुसलमानों की संस्कृति में कब्र का कितना महत्व है। लेकिन क्या कब्रों का ख्याल इस लड़की को भी सता रहा था? यह सोचकर मैं उलझन में पड़ गई। एक दिन मैंने उससे पूछा, “तुम्हारा पूरा परिवार पाकिस्तान चला गया। तुम नहीं गईं?”
नहीं, मैं नहीं गया था।
और इसका कारण?
"हर चीज के पीछे कोई कारण होना जरूरी नहीं है।"
“यह जरूरी नहीं है, लेकिन फिर भी?”
वैसे भी, अगर मैं पाकिस्तान चला जाता, तो कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं पाकिस्तान में भी अकेला ही होता।
मैंने उसके चेहरे को ध्यान से देखा।
आप किस शहर से हैं?
“Rupnagar.”
“रूपनगर!” मैं चौंक गई। “अरे, तुम वही सबीरा हो?” मेरी इस प्रतिक्रिया ने उसे उलझन में डाल दिया। लेकिन मैंने उसे ज्यादा देर तक उलझन में नहीं रहने दिया। मैंने झट से पूछा, “तुम ज़ाकिर को जानती हो?”
जवाब में, उन्होंने मुझे सिर से पैर तक ध्यान से देखा। फिर धीरे से बोलीं, "मैं समझ गई, तो आप ही हैं सुरेंद्र साहब।"
उसके बाद वह एकदम चुप हो गई। मैं भी असमंजस में चुप रहा। फिर वह चली गई। अगले दिन भी नहीं आई। उसके अगले दिन भी नहीं आई, लेकिन अब इस लड़की का मेरे लिए एक नया अर्थ था। अब वह मेरे लिए रेडियो उद्घोषक नहीं, बल्कि एक बिछड़ी

हुई दोस्त की याद थी। मैं गया और उसे पकड़ लिया और औपचारिकता छोड़ दी। "सबीराह! क्या तुम मुझसे नाराज़ हो?"
"किस लिए?"
"परिस्थिति चाहे जो भी हो, किसी दूसरे व्यक्ति के भावनात्मक जीवन के प्रति सावधानीपूर्वक व्यवहार करना आवश्यक है।"
उसने इस पर कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन अगले दिन वह आई और ढाका के सभी पुराने और नए अखबारों को बड़े ध्यान से पढ़ा। और तब से उसकी आदत बन गई कि वह नियमित समय पर आती, ढाका के अखबार पढ़ती, थोड़ी बातचीत करती, चाय पीती और चली जाती। एक-दो बार मैंने तुम्हारा नाम लिया, लेकिन हर बार या तो उसने कुछ नहीं कहा या बात बदल दी। इसलिए अब मैं सावधान रहता हूँ और तुम्हारा नाम नहीं लेता। लेकिन मुझे पता है कि जब हम मिलते हैं, तो हम सिर्फ दो नहीं होते, क्योंकि एक तीसरा व्यक्ति अदृश्य रूप से हमारे साथ मौजूद होता है। शायद वह उस तीसरे व्यक्ति के लिए ही मुझसे मिलती है। ढाका के अखबार अब गौण हो गए हैं। एक दिन मैंने पूछा, "सबीराह, क्या तुम्हारी शादी करने की कोई योजना नहीं है?"
"कोई नहीं।"
और इसका कारण?
वह हिचकिचाई, फिर फीकी मुस्कान के साथ बोली, "देखो, अब तुम हद पार कर चुके हो।"
मैंने माफी मांगते हुए कहा, "माफ़ कीजिए।"
"कोई बात नहीं," उसने उसी मुरझाई हुई मुस्कान के साथ कहा और चुप हो गई। ज़ाकिर, तुम्हारी ये सबीरा किसी लड़की से ज़्यादा किसी ऐतिहासिक धरोहर जैसी लगती है! यार, बुरा मत मानना, भारत में तुम्हारा इतिहास बड़े अटपटे ढंग से आगे बढ़ा है। पहले तुम्हारे विजेता आए—इतने ज़ोर-शोर से और इतने उत्पात के साथ कि उनके घोड़ों के खुरों से धरती कांप उठी और तलवारों की खड़खड़ाहट हवा में गूंज उठी। फिर राजनीतिक नेता आए और उन्होंने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। महान मुगल सम्राट—बाबर, अकबर, शाहजहाँ, औरंगज़ेब। फिर सर सैयद अहमद खान, मौलाना मुहम्मद अली, मुहम्मद अली जिन्ना और बाकी सभी—और उनके बाद, तुम्हारी सबीरा। एक खामोश, उदास लड़की, पूरे भारत में अकेली रह गई। मुझे नहीं पता कि तुम्हारा इतिहास अनोखा है या सभी संस्कृतियों का इतिहास इसी तरह आगे बढ़ता है। “पहले तलवार और भाला—और अंत

में?”* क्या तुम्हारे “वरिष्ठ राजनेता” इकबाल की निगाहें इसी अंतिम चरण पर टिकी नहीं थीं? यह चरण भी समूह के भाग्य का एक हिस्सा है। हाँ, ईद का दिन था। मैंने सबीरा को स्टूडियो से बाहर आते देखा। उस दिन उसे देखकर मुझे थोड़ी हैरानी हुई। "क्या, तुम? तुमने आज छुट्टी नहीं ली?"
“नहीं,” संक्षिप्त उत्तर आया।
"तो कृपया यहाँ ईद मनाएँ और मुझे कुछ खाने को दें।"
"बेशक, मेरे कार्यालय में आइए।"
अपने दफ्तर में दाखिल होते ही उन्होंने चाय मंगाई और केक मंगवाया। चाय डालते हुए मैं सोच रही थी कि क्या ईद के दिन कोई मुसलमान दफ्तर में ड्यूटी पर होता है? ज़्यादातर दफ्तर कर्मचारी तो उस दिन शहर में भी नहीं रुकते। यहाँ तक कि एक दिन पहले ही वे दफ्तर से जल्दी निकलकर ट्रेन का टिकट लेकर सीधे अपने शहर चले जाते हैं। और लड़कियाँ? लड़कियाँ तो मर्दों से भी ज़्यादा जोश से ईद मनाती हैं। चाय पीते हुए मैंने हिम्मत जुटाई और पूछा, “सबीराह, आप रूपनगर नहीं गईं?”
“रूपनगर?” उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा। “मैं क्यों जाऊं?”
"आप लोगों की यह प्रथा है कि ईद घर से बाहर नहीं बिताते, बल्कि घर जाकर ईद मनाते हैं।"
“शायद मैंने आपको अपने परिवार की स्थिति के बारे में पहले ही बता दिया है। अब रूपनगर में हममें से कोई भी नहीं बचा है।”
मैं चुप हो गया। फिर चाय पीते हुए मैंने casually पूछा, "क्या आपके वहां कोई दूर के रिश्तेदार भी नहीं हैं?"
“मेरे दूर के रिश्तेदार भी सब चले गए हैं। रूपनगर वीरान पड़ा है।”
“यह कितनी अजीब बात है,” मैंने बुदबुदाया।
“क्या आप थोड़ी और चाय नहीं लेंगी?” उन्होंने मुझे बीच में ही रोक दिया और मेरे जवाब का इंतज़ार किए बिना ही मेरे कप में चाय डालने लगीं। चाय पीते हुए मैंने एक और सवाल पूछ लिया: “जब से आप दिल्ली आई हैं, क्या आप कभी रूपनगर वापस नहीं गईं?”
"नहीं।"
“यह अजीब है। कितना समय बीत गया है?”
“काफी समय बीत गया। पचास के दशक के शुरुआती दौर में ढाका से मेरे बहनोई का पत्र आया, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्हें नौकरी मिल गई है और हमें भी आ

जाना चाहिए। उन दिनों मुझे ऑल-इंडिया रेडियो में नौकरी का प्रस्ताव मिला था। मैं दिल्ली के लिए रवाना हो गया। मेरी माँ और बहन ढाका के लिए निकल पड़ीं। वे रूपनगर से पाकिस्तान भेजे गए आखिरी लोगों में से थीं।”
और आपने भारत में बसने का फैसला किया?
क्या आपको सच में पूछना पड़ेगा?
इस जवाब पर मुझे चुप रहना चाहिए था, लेकिन मैंने उसके विनम्र व्यंग्यात्मक लहजे को नजरअंदाज करते हुए कहा, "मेरा मतलब यह है कि अगर तुम पाकिस्तान गई होतीं तो—"
मैं थोड़ी देर के लिए रुका, और उसने तीखे स्वर में मुझे बीच में ही रोक दिया, “फिर? फिर क्या होता?” और उसने मुझे ऐसी नज़र से देखा कि मैं अपना वाक्य पूरा करने की हिम्मत ही नहीं कर पाया। आप समझ जाएंगे कि मैं क्या कहना चाहता था।
यार, ये कितनी अजीब बात है कि एक ही शहर अपने एक निवासी के लिए, जो देश छोड़कर चला गया है, पहले से कहीं ज़्यादा मायने रखने लगता है, यहाँ तक कि वो उसके सपने भी देखता है; वहीं दूसरे निवासी के लिए उसका सारा अर्थ ही गायब हो जाता है, यहाँ तक कि भले ही वो उसी देश में हो, उसे उस शहर को फिर से देखने की कोई इच्छा नहीं होती। पाकिस्तान की यात्रा ने रूपनगर को कितना अर्थपूर्ण बना दिया! और सबीरा को भारत में रहने की कितनी कड़ी सज़ा मिली कि उसके लिए रूपनगर अर्थहीन हो गया। मुझे लगता है मेरा भाग्य भी सबीरा जैसा ही है। और कभी-कभी मुझे लगता है कि बचपन में मैंने किसी धर्मगुरु को नाराज़ कर दिया होगा, और उन्होंने मुझे श्राप दिया होगा: “बेटा, तेरा वतन तुझे फिर कभी देखने नहीं देगा।” इसलिए व्यासपुर शहर मुझे उसे देखने नहीं देता। जब मैं वहाँ जाता हूँ, तो शहर मानो पूछता है, “दूसरा कहाँ है?” और जब मुझे कोई जवाब नहीं मिलता, तो वो मेरे लिए अपने दरवाज़े बंद कर लेता है। छुट्टियों का वो बेसब्री से इंतज़ार, ताकि मैं व्यासपुर भाग जाऊँ—वो बेसब्री अब पूरी तरह से गायब हो गई है। पिछले जून में, मैं बहुत दिनों बाद वहाँ गया। महीने का आखिरी समय था। बारिश शुरू नहीं हुई थी और दोपहर का समय अपने चरम पर था। दोपहर के बीचोंबीच मुझे फिर से घूमने की पुरानी इच्छा जाग उठी और मैं निकल पड़ा। एक गली से दूसरी गली, दूसरी से तीसरी गली। यार, हर गली मुझसे पूछ रही थी, "दूसरी गली कहाँ है?" मुझे लगा जैसे इन गलियों से मेरा कोई रिश्ता ही नहीं रह गया हो, मानो सारी गलियाँ मुझसे नाराज़ हों।

Surendar

•

“और इससे पहले—” उसने धीरे से कहा, फिर पत्र के कुछ हिस्सों को दोबारा पढ़ा और विचारों में डूब गया।
काफी देर तक गहरी सोच में डूबे रहने के बाद उसने धीरे से कहा, "मुझे एक पत्र लिखना चाहिए।" एक पत्र—इतने समय बाद—इतने समय बाद, उसे पत्र लिखना अब ठीक नहीं लग रहा था। यह आश्चर्यजनक है—यहाँ आने के बाद से मैंने उसे एक पत्र तक नहीं लिखा। फिर वह धीरे-धीरे मेरे मन से पूरी तरह निकल गई। और उसे देखो, उसने भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह चुप रही, मानो उसका कोई अस्तित्व ही न हो, या मानो मेरा कोई अस्तित्व ही न हो। और अब अचानक यह प्रकट हुआ कि उसका अस्तित्व है, और मेरा भी। पहले वह मेरी स्मृति में जीवित हुई। और अब एक खोई हुई मित्र प्रकट होती है, और घोषणा करती है कि उसका अपना अस्तित्व है, मेरी स्मृति से अलग, अपनी स्मृतियों के साथ, जिनमें मैं अब भी रहता हूँ। वह रुका। क्या मैं उसकी स्मृति में रहता हूँ?—सचमुच—? यदि नहीं, तो वह उदास क्यों है और क्यों दुखी है? मैं उसकी उदासी और पीड़ा में रहता हूँ। उसने इन सब बातों को ऐसे सोचा मानो यह कोई अद्भुत घटना हो। और अचानक उसके भीतर एक लहर उठी: मुझे जाकर उससे मिलना चाहिए; और उसकी स्मृति की किसी गहरी परत से एक छवि उभर आई। सड़क के बीचोंबीच एक बेजान आदमी पड़ा था, जिसके पैरों में जंजीरें थीं और माथे पर ईंट लगने से खून बह रहा था। “ज़ाकिर! क्या मजनून मर गया?”—“नहीं, वह ज़िंदा है।”—“नहीं, मजनून मर गया है।” और वह रोने लगी — “सब्बो, वह सिर्फ़ नाटक कर रहा है।”—“नहीं, मजनून मर गया है।” वह रोती रही।—हाँ! मुझे जाना चाहिए, और यह घोषणा करनी चाहिए कि मैं—
“बेटा, ये चिट्ठी किसकी है?” अम्मी ने कमरे में आते हुए पूछा।
भारत से।
“भारत से भी चिट्ठियाँ आ रही हैं। बस ढाका में कुछ ऐसा हो गया है कि चिट्ठियाँ नहीं आ रही हैं,” अम्मी ने उदास होकर कहा और चुप हो गईं। फिर थोड़ी देर सोचने के बाद उन्होंने पूछा, “यह चिट्ठी किसकी है?”
“सुरेंद्र की ओर से।”
“सुरेंद्र।” अम्मी असमंजस में पड़ गईं।
“अम्मी, क्या आपको सुरेंद्र याद नहीं है, जो मेरा दोस्त था?”
“ओह, सुरेंद्र। अरे, बेचारे ने लिखने के लिए कैसा समय चुना है!”
“अम्मी,” उसने कुछ सोचते हुए पूछा, “क्या अब रूपनगर में हमारे कोई रिश्तेदार नहीं बचे हैं?”

उसने उसे घूरकर देखा। “बेटे, पच्चीस साल बाद तुम्हें ये पूछने की याद आई? वहाँ कौन बचा होगा? हम तो पहले ही आ चुके थे। बतूल वहीं रह गई थी, फिर वो भी अपनी बेटी के साथ ढाका चली गई।”
लेकिन सबीरा—?
“मेरी उपस्थिति में सबीरा का नाम मत लो!” अम्मी ने गुस्से से कहा। “क्यों?” उसने अम्मी के चेहरे की ओर देखा।
“वह बहुत ही ज़िद्दी लड़की निकली।” अम्मी ने विस्तार से बताया: “सबसे पहले तो मैं यह जानना चाहती हूँ कि जब पूरा परिवार वहाँ से चला गया, तो वह वहीं क्यों रह गई। अगर वह यहाँ आई होती, तो उसके लिए कोई न कोई इंतज़ाम ज़रूर हो जाता! परिवार में ही उसकी शादी तय हो जाती। वहाँ वह अविवाहित है और बदहाल ज़िंदगी जी रही है। और चूंकि वह वहीं रह गई—तो कम से कम उस पुराने महल पर थोड़ा ध्यान तो दे सकती थी! बतूल ने उसे कितनी बार कहा, और मैंने भी उसे लिखा, ‘बेटी, मुहर्रम के लिए दस दिन की छुट्टी ले लो और आस-पास देख लो: इमामबाड़ा में दीपक जलाओ और झंडा फहराओ,’ लेकिन वह अभागी लड़की ज़रा भी नहीं गई, उसने एक बार भी अंदर नहीं देखा! आख़िरकार शरणार्थी आए और उस जगह पर कब्ज़ा कर लिया। अब वह कुछ नहीं कर सकती; वरना वह घर की इकलौती मालकिन होती—यहाँ से कौन हिस्सा माँगने जाता?”
“अम्मी, अगर हम वहां जाएं तो कहां ठहरेंगे?”
“बच्चे, तुम होश खो चुके हो, अब हम वहाँ क्यों जाएँगे? हमारे परिवार में से कौन बचा है?”
“रूपनगर भी है,” उन्होंने धीरे-धीरे और सोच-विचार करते हुए कहा। अम्मी, मानो कोई जवाब न दे पाने की स्थिति में, एक शब्द भी नहीं बोलीं।
अम्मी एकदम चुप थीं, लेकिन फिर उन्हें कुछ सूझा। उन्होंने कहा, “अरे, कल रात मैंने एक अजीब सपना देखा! ऐसा लगा जैसे हम सब वहीं गए हों। सब लोग वहीं थे, मैं बतूल से कह रही थी, ‘बहन, तुम घर को बिलकुल खुला छोड़कर चली गई। सोचो ज़रा—पूरा घर फर्नीचर से भरा हुआ था, और एक भी कमरा बंद नहीं था।’” अम्मी चुप रहीं, फिर धीरे से बोलीं, “मुझे नहीं पता इसका क्या मतलब है। मैं तुम्हारे पिताजी से पूछूंगी कि कैसा सपना था।”
अम्मी गहरी सोच में डूबी चुप हो गईं। वह भी उनके साथ-साथ पुरानी यादों में खो गए। इतने लंबे समय बाद, माँ और पुत्र एक साथ बैठे, स्मृति की एक ही लहर

में बह रहे थे। वह लहर उन्हें कहाँ ले गई? उस क्षण वे कहाँ थे? वे रूपनगर स्थित अपने आलीशान घर में घूम रहे थे।
तभी अब्बा जान कहीं से आते हुए दिखाई दिए। माँ और बेटे को बेसुध देखकर वे कुछ आश्चर्यचकित हुए।
“ज़ाकिर! क्या हुआ है?”
“कुछ नहीं, अब्बा जान,” उसने धीरे से कहा और चुप हो गया।
फिर उसने अपनी पत्नी की ओर देखा। "क्या बात है?"
“कुछ नहीं, हम बस पुरानी बातें याद कर रहे थे।” एक लंबी आह भरते हुए वह रूपनगर की अपनी यात्रा से लौटी। लौटकर इस छोटे से किराए के मकान की दीवारें कितनी अजीब और अपरिचित लग रही थीं। कुछ पल के लिए वह फिर खो गई। फिर अचानक बोली, “अच्छा, अब सुनो, भंडारगृह की चाबी कहाँ है?”
“भंडारघर? कौन सा भंडारघर?”
“अरे हाँ, तुम तो भूल ही गए! क्या हमारे महल में कोई भंडारघर नहीं था?”
“ओह, हवेली में भंडारगृह।” अब्बा जान चुप रहे, फिर बोले, “ज़ाकिर की माँ, पच्चीस साल बीत गए हैं।”
"मैं भंडारगृह की चाबी के बारे में पूछ रहा हूँ, वर्षों की संख्या के बारे में नहीं।"
"जब आपने भंडारगृह की चाबी के बारे में पूछा, तो मैंने सोचा कि मुझे आपको यह बताना चाहिए कि कितना समय बीत चुका है।"
“अरे, समय का इससे क्या लेना-देना—समय तो हमेशा बीतता रहता है, लेकिन अगर भंडारगृह की चाबी खो जाए, तो समझो मुसीबत ही आ गई! हमारे सारे पुराने पारिवारिक धरोहर वहीं बंद हैं। मेरे दहेज का सारा सामान वहीं है। और जब ज़ाकिर (अल्लाह उन्हें सलामत रखे) का जन्म हुआ, तो आपके पिता ने पोते के जन्म का जश्न मनाने के लिए सभी रिश्तेदारों को चांदी की थालियों में मिठाई भेजी थी। उनमें से बारह थालियाँ भी वहीं रखी हैं। और हाँ, वह कफ़न जो आपने पवित्र कर्बला से मंगवाया था, वह उसी संदूक में है जिसमें आपके पिता की मदीना (तेरह) से लाई गई नमाज़ की चटाई, कर्बला से लाई गई पवित्र मिट्टी की पट्टिका, आपकी माँ का संदूक और कुरान रखने का स्टैंड है।”
“कफ़न?” ज़ाकिर ने हैरानी से उसकी ओर देखा।
“जी बेटा, कफ़न। जब तुम्हारे दादाजी कर्बला की तीर्थयात्रा से लौटे, तो वे अपने साथ दो कफ़न लाए थे जो वहाँ विशेष रूप से तैयार किए गए थे और इमाम की

कब्र को छू चुके थे। उन्हें स्वयं भी उन्हीं में से एक में दफनाया गया था। इसीलिए चालीस दिनों तक उनकी कब्र से कस्तूरी जैसी मीठी खुशबू आती रही।” “चालीस दिन? आप चालीस दिनों की बात कर रहे हैं, लेकिन मुझे याद है कि जब भी मैं वहाँ फातिहा पढ़ने जाता था, मुझे उनकी कब्र से एक मीठी खुशबू आती थी। वह एक अनोखी तरह की मीठी खुशबू थी।” अब्बा जान चुप रहे, फिर आह भरी और बोले, “उन सभी कब्रों की क्या हालत होगी, यह तो अल्लाह ही जानता है।”
“मैंने अपनी तरफ से हर संभव कोशिश की। जब हम व्यासपुर के लिए निकले, तो मैंने अपने परिवार की सारी कीमती चीज़ें बड़े ध्यान से भंडारगृह में रखीं और उसे बंद कर दिया। और पाकिस्तान जाने से पहले मैंने तुम्हें बार-बार कहा था कि मैं रूपनगर का एक आखिरी चक्कर लगाना चाहती हूँ और जो भी सामान हमें साथ ले जाना चाहिए, उसे चुन लेना चाहती हूँ, लेकिन तुमने मेरी एक भी बात नहीं सुनी। काश, मैं एक बार ही भंडारगृह का ताला खोल पाती और कम से कम चीज़ों को धूप में सुखा पाती! इतना समय बीत गया है, मुझे डर है कि उन पर दीमक लग गए होंगे; उस घर में इतने सारे दीमक थे।”
मुझे दीमक के सब कुछ कुतरने से पहले चले जाना चाहिए, उसने मन ही मन सोचा। फिर उसके मन में यह सवाल उठा कि समय बीतने के साथ दीमक चीजों को क्यों कुतरते हैं? समय और दीमक के बीच क्या संबंध है? क्या समय एक दीमक है, या दीमक समय है?
“ज़ाकिर की माँ! आपको याद नहीं कि उस समय ट्रेनों की क्या हालत थी। मैं खुद जाने से पहले रूपनगर को आखिरी बार देखना चाहता था। मैं अपने पूर्वजों की कब्रों पर आखिरी बार फातिहा पढ़ता।” अब्बा जान थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “और कम से कम मैं अपना कफ़न तो ज़रूर लाता।” थोड़ी देर रुककर उन्होंने ज़ाकिर से कहा, “बेटा, वहाँ मैंने अपने दफ़नाने की सारी व्यवस्था कर ली थी। कफ़न तैयार था, और मैंने अपनी कब्र के लिए जगह भी चुन ली थी। मेरे परिवार को बस कुछ चबूतरे काटने और मुझे धोने की मेहनत करनी पड़ती, फिर मुझे अपने कंधों पर उठाकर कब्र में उतारना पड़ता। लेकिन यहाँ कोई व्यवस्था नहीं है। तुम्हें सब कुछ खुद ही करना होगा।”
मुस्लिम संस्कृति में कब्र का कितना महत्व है। सुरेंद्र के पत्र का एक वाक्य उनके मन में आया।

“ओह, यही चिंता मेरे दिल को खा रही है, हमारी मृत्यु कैसी होगी!” अम्मी ने चिंता से कहा। “हमारी जिंदगी तो जैसे-तैसे गुजर गई, लेकिन मृत्यु के लिए सौ तरह के इंतजाम करने पड़ते हैं।”
तो मृत्यु के लिए जीवन से अधिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है, उसने मन ही मन सोचा। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।
“वहाँ कौन है?”
“मैं इरफान हूँ।”
“आ रहा हूँ।” वह उठा और दरवाजे की ओर चला गया।
अम्मी तुरंत कमरे से बाहर चली गईं, लेकिन अब्बा जान इरफान के आने का इंतजार करते रहे। इरफान के आते ही अब्बा जान ने पूछा, "तो नौजवान, कोई खबर है क्या?"
"जी नहीं महोदय, कोई खास खबर नहीं है।"
“युवक, तुम किस तरह के पत्रकार हो?” कुछ देर रुककर उसने कहा, “पर इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, आजकल अखबारों की यही हालत है। पहले वे खबरें सार्वजनिक करते थे, अब उन्हें छुपाते हैं; खैर, भगवान दया करें, हालात अच्छे नहीं लग रहे।” इतना कहकर वह उठा और अंदर चला गया।
“यार, मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था, बहुत बोरिंग था, आज शिराज बिल्कुल खाली था।”
“सच में? वहां कोई नहीं था?”
“सिर्फ़ वो सफ़ेद बालों वाला आदमी। आज उसने मुझे अकेला पाया और मुझ पर झपट पड़ा। वो बहुत उबाऊ था।” वो रुका, फिर बोला, “यार, मुझे तो वो आदमी बहुत ही संदिग्ध लगता है।”
"तुम पहले भी कुछ ऐसा कह चुके हो।"
लेकिन आज मुझे इस बात का पूरा यकीन है।
"क्यों?"
"यार, जो भी राष्ट्रीय भावना का दिखावा करता है, मुझे उस पर शक होने लगा है।"
अरे यार, चलो इस विषय को यहीं छोड़ते हैं। मैं तुम्हें कुछ खबर सुनाता हूँ। “सच में? ठीक है।”
“यार, आज एक पत्र आया,” उसने गोपनीय रूप से कहा।
"कहां से?"

भारत से।
“भारत से?” इरफ़ान ने उसे सिर से पैर तक संदेह भरी निगाहों से देखा। “भारत से चिट्ठी? इन दिनों में?—यह किसी रिश्तेदार की थी।”
“नहीं, यह मेरे पुराने दोस्त सुरेंद्र की तरफ से था।”
“इन दिनों सुरेंद्र का पत्र?” इरफान ने व्यंग्यपूर्वक कहा, “जाकिर, कभी- कभी तो मुझे तुम पर भी शक होने लगता है।”
“मुझे भी अक्सर खुद पर शक होता है। खैर, अभी के लिए, यह पत्र पढ़ो।” उसने पत्र इरफान के हाथों में थमा दिया।
इरफ़ान ने चिट्ठी को शुरू से अंत तक ध्यान से पढ़ा। वह चिट्ठी पढ़ रहा था और ज़ाकिर उसके चेहरे के भावों से उसकी प्रतिक्रिया समझने की कोशिश कर रहा था। चिट्ठी खत्म करने के बाद इरफ़ान हँस पड़ा। “यार, मुझे लगा था कि सबीरा तुम्हारी पुरानी यादों की उपज है। लेकिन वह सचमुच मौजूद है।” वह रुका, फिर बोला, “जो भी हो, तुम्हारा प्यार सही समय पर पनपा है! प्यार के फल को पकने के लिए कितना बढ़िया मौसम मिला है!”
उसने इरफान की बातों को अनसुना कर दिया और कहा, "यार, मैं वहां जाना चाहता हूं।"
“तुमने क्या कहा? तुम जाना चाहते हो?”
“हाँ यार! मैं उससे एक बार मिलना चाहता हूँ, इससे पहले कि—” बोलते-बोलते वह रुक गया।
“पहले—” इरफान ने व्यंग्यपूर्वक उस शब्द को दोहराया। फिर उसने कहा, “मेरे प्रिय मित्र, काफी समय बीत चुका है।”
“हां, काफी समय बीत गया है, लेकिन फिर भी—” बोलते-बोलते वह सोच में पड़ गया।
अम्मी ने कमरे में झाँका। “अरे बेटा, बाहर ये कैसी आवाज़ आ रही है?”
शोर? कैसा शोर?
“वे कह रहे हैं कि युद्ध छिड़ गया है।”*
“क्या? युद्ध छिड़ गया?” वे दोनों एक साथ उछल पड़े और जल्दी से बाहर चले गए।
अब शाम हो चुकी थी और गली में चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। दूर-दूर तक फैले कई घरों की खिड़कियों और वेंटिलेशन पाइपों से हल्की रोशनी छनकर आ रही थी। लेकिन उनके पास ही गली में शोर मच रहा था, “लाइट बंद करो!” “लाइट

बुझाओ!”—और घरों की बत्तियाँ धीरे-धीरे बुझती जा रही थीं। अब दूर-दूर तक घना अंधेरा छा गया था। सीटी बजाते हुए कुछ युवा स्वयंसेवक तेज़ी से गली में दाखिल हुए। ज़ाकिर आगे बढ़ा। “क्या बात है भाई?”
युद्ध छिड़ गया है।
“ऐसा किसने कहा?”
“रेडियो पर घोषणा हुई थी।” और समूह ने सीटी बजाते हुए तेज़ी से दूसरी लेन में मुड़ गए।
वे दोनों कुछ देर चुपचाप खड़े रहे। फिर अपने दरवाजे पर बैठते हुए उन्होंने कहा, "यार, युद्ध सचमुच छिड़ गया है।"
“हां,” इरफान ने किसी और बात के बारे में सोचते हुए कहा और उसके बगल में बैठ गया।
वे दोनों काफी देर तक धूल भरे दरवाजे पर बैठे रहे। अंधेरी गली में, दो खामोश परछाइयाँ।
अचानक सायरन बजने लगा, और उसके साथ ही पास और दूर से सीटी की तीखी आवाजें सुनाई देने लगीं। सीटी की आवाजें, और दौड़ते कदमों की धप-धप की आवाज।
“क्या हमें अंदर नहीं जाना चाहिए?” उसने धीरे से कहा।
“क्या अंदर ज्यादा सुरक्षित है?” इरफान ने चिड़चिड़े स्वर में पूछा। "नहीं।"
"तब?"
सायरन की आवाज़ धीरे-धीरे शांत हो गई। भागते कदमों की धप-धप, सीटियों की आवाज़, लोगों की चीखें और पुकार, गुस्से भरी हिदायत "लाइट बंद करो!"—ये सभी आवाज़ें धीरे-धीरे बंद हो गईं और रात भर सन्नाटा छा गया। उस सन्नाटे में कान किसी ज़ोरदार आवाज़ का इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने बहुत देर तक इंतज़ार किया, लेकिन न कोई ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी, न कोई धमाका।
"एक छोटा सा!"
"हाँ।"
यार, मुझे लगता है कि सबीराह—”
तो आप सबीरा के बारे में सोच रहे हैं?
"हाँ।"
"अब?"
"हाँ अब।"

[illegible]
“[illegible]?”
"[illegible]"
[illegible]
"[illegible]?"
"[illegible]"
“[illegible],” [illegible] [illegible]

सात
कारें, टैक्सियाँ, स्कूटर-कैब, घोड़ागाड़ियाँ, सभी वाहन जल्दबाजी में थे और एक-दूसरे को कुचलने की कोशिश कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो उसे सड़क पार करने में परेशानी होगी। वह वाहनों को देखता रहा। तभी अचानक एक कार, जिसके बम्पर पर "क्रश इंडिया" लिखा था, यात्रियों से भरी हुई और सामान से लदी हुई, तेज़ी से उसके पास से गुज़री। कार के बम्पर पर लिखा नारा कुछ देर के लिए उसकी आँखों के सामने रहा, फिर धूल के बादल में छिप गया। कार इतनी जल्दबाजी में थी कि वह पक्की सड़क छोड़कर धूल भरे किनारे पर चली गई और धूल के बादल उड़ाती हुई आगे बढ़ती रही।
अब उसने आते-जाते वाहनों का ध्यान से निरीक्षण किया। कारों और टैक्सियों की चमक फीकी पड़ गई थी। उन पर धूल जमी हुई थी। हर कार, हर टैक्सी यात्रियों से भरी हुई थी, सामान से लदी हुई थी। तांगा गाड़ियों में सामान और यात्री सब एक साथ ठसाठस भरे हुए थे। हे भगवान! ये लोग कहाँ जा रहे हैं? शिराज पहुँचकर उसने इरफ़ान को अपनी हैरानी बताई। “यार, आज हमारी गली में बहुत जाम था—पार करना भी मुश्किल था। आखिर लोग जा कहाँ रहे हैं?”
“आपने तो सिर्फ सड़क पर ट्रैफिक देखा है। मैं अभी-अभी रेलवे स्टेशन पर हुई घटना से आया हूँ।”
"क्या वहाँ की तरह है?"
“पूछो मत! प्लेटफार्म पर इतने यात्री हैं कि सांस लेना मुश्किल हो रहा है, और एक भी ट्रेन नहीं आ रही है। ऐसा लग रहा है जैसे प्रलय आ गई हो।”
“और ये शिराज तो बिल्कुल खाली है,” उसने चारों ओर नज़र घुमाते हुए कहा। आज शिराज बिल्कुल खाली था। वह और इरफ़ान, दो लोग, एक ही मेज पर बैठे थे। “यार, आज तो हमारा वो सफ़ेद बालों वाला दोस्त भी नहीं आया।”
अचानक दरवाजा खुला और अफजल अंदर आया। उसने चारों ओर एक नजर डाली: "खाली?" "खाली," ज़ाकिर ने निराशा भरे स्वर में उत्तर दिया।
चूहे कहाँ चले गए?

“वे तुम्हारी बांसुरी का इंतजार करते-करते थक गए थे। वे इतने निराश हो गए कि वे अकेले ही निकल पड़े और समुद्र की ओर चल दिए,” इरफान ने व्यंग्यपूर्वक उत्तर दिया।
अफजल ने इरफान को टकटकी लगाकर देखा। कुर्सी खींचकर बैठते हुए उसने कहा, "घिनौना आदमी! चाय मंगवाओ।"
“अब्दुल!” इरफान ने पुकारा।
अब्दुल तुरंत आ गया, मानो वह किसी आदेश का इंतज़ार कर रहा हो। "जी साहब!" "चाय।"
अफजल ने सोच-विचार करते हुए कहा, “यार, पक्षी बहुत परेशान हैं। मैं अभी रावी नदी से आया हूँ। जब हवाई जहाज आते हैं, तो आस-पास के सभी बगीचों के पक्षी घबराकर उड़ जाते हैं, हवा में बेतहाशा चक्कर लगाते हैं, और फिर बेचारे पेड़ों में छिप जाते हैं।” वह रुका और बुदबुदाया, “इस कस्बे के पक्षी परेशान हैं।”
“और आप?” इरफान ने स्थिर निगाहों से उसकी ओर देखा।
मुझे भी चिंता हो रही है।
क्या आपको नहीं पता कि जो लोग चिंतित हैं वे शहर छोड़कर जा रहे हैं?
अफजल सोच में पड़ गए। फिर उन्होंने कहा, “एक यात्री जंगल से गुजरते हुए देखा कि चंदन का पेड़ आग की चपेट में है। उसकी शाखाओं पर बैठे पक्षी उड़ चुके थे, लेकिन एक जंगली हंस अभी भी एक शाखा से चिपका हुआ था। यात्री ने पूछा, ‘हे जंगली हंस! क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा कि चंदन का पेड़ जल रहा है? तुम उड़ क्यों नहीं जाते? क्या तुम्हें अपनी जान की परवाह नहीं?’ जंगली हंस ने उत्तर दिया, ‘हे यात्री! मैं इस चंदन के पेड़ की छांव में बहुत खुश रहा हूँ। क्या मेरे लिए यह उचित है कि मैं भाग जाऊं और इसे संकट के समय में छोड़ दूं?’” अफजल चुप हो गए, फिर बोले, “क्या आप जानते हैं कि वह कौन था? बुद्ध ने यह कहानी सुनाई, फिर भिक्षुओं की ओर देखा और कहा, ‘हे भिक्षुओं! क्या आप जानते हैं कि वह जंगली हंस कौन था? मैं स्वयं वह जंगली हंस था।’” “बहुत खूब!” इरफान ने व्यंग्यपूर्वक कहा। “मैं तो यही घोषणा सुनने की उम्मीद कर रहा था!”
अफजल ने इरफान के चेहरे को घूरते हुए कहा, “तुम सही कह रहे हो। बिलकुल सही। मैं खुद ही वह बेकाबू हंस था।” वह उठा और दरवाजे की ओर बढ़ा, लेकिन तभी उसे कुछ सूझा और वह वापस मुड़ गया। वह इरफान के पास आया और बोला, “बुद्ध

सत्यवादी थे, मैं भी सत्यवादी हूँ। दरअसल, पिछले जन्म में हम दोनों एक ही थे।”
अफजल मुड़कर जाने ही वाला था कि अब्दुल चाय लेकर आया। इरफान ने कहा, "चाय आ गई है।"
अफजल ने इरफान की ओर स्नेह भरी नजरों से देखा। "इरफान, तुम एक अच्छे इंसान हो।"
अफजल बैठ गया। इरफान ने चाय डाली। चाय पीते हुए अफजल ने कहा, "यार, जो कुछ भी हुआ है, अच्छे के लिए ही हुआ है।"
“क्या चीज़ सबसे अच्छी रही है?”
“ये घिनौने लोग शहर छोड़कर जा रहे हैं। आज शिराज कितना पवित्र लग रहा है!” वह रुका, फिर बोला, “यार, मैंने इस बारे में बहुत सोचा है। आखिरकार मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि नेक लोग ही इस देश को बचा सकते हैं।”
“और वे कहाँ हैं?” इरफान ने अपने खास व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा।
“वे कहाँ हैं? यार, क्या तुम्हें वे दिखाई नहीं दे रहे? हम दोनों तो दो हैं। यार, तीन तो बहुत ज़्यादा हैं।” फिर उसने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली, कलम का ढक्कन खोला, नोटबुक खोली और कुछ लिखते हुए कहा, “इरफ़ान, मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया है। मैंने तुम्हारा नाम नेक लोगों की सूची में लिख दिया है।” फिर वह बुदबुदाया, “मेरी नोटबुक में नेक लोगों की सूची दिन-ब-दिन छोटी होती जा रही है।”
अचानक सायरन बजने लगा। साथ ही, तीखी और कर्कश सीटियाँ भी बजने लगीं। अफजल खड़ा हो गया: "मुझे जाना चाहिए।"
“यह हवाई हमले का सायरन है। बाहर मत जाओ, यहीं रहो।”
“ज़ाकिर, तुम बहुत डरे हुए हो।” वह रुका और बोला, “भाई, डरो मत। आज मैंने दाता गंज बख्श से बात कर ली है। मैंने उनसे पूछा, ‘दाता, क्या मैं तुम्हारा शहर अपनी सुरक्षा में ले लूँ?’ उन्होंने कहा, ‘ले लो।’ तो अब यह शहर मेरी सुरक्षा में है। इसे कुछ नहीं होगा।” इतना कहकर वह उठा और बाहर चला गया। और इस तरह, दिन-रात, थोड़ी-थोड़ी देर पर सायरन बजता रहा, और सायरन के साथ सीटियाँ भी बजती रहीं। यातायात पुलिस और नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवक सड़कों पर आ गए, सीटी बजाते, इशारे करते और निर्देश देते हुए। सड़कों पर यातायात अचानक तेज़ हो गया, फिर धीमा हो गया, क्योंकि वाहन सड़क से उतरकर पेड़ों के नीचे शरण लेने लगे। धीरे-धीरे सड़कें खाली हो गईं, केवल यातायात

पुलिस और सीटी दबाए स्वयंसेवक ही रह गए। सड़क एक छोर से दूसरे छोर तक खाली थी। उसके दोनों ओर कारों, स्कूटर-कैबों, टैक्सियों और मोटरसाइकिलों की लंबी कतारें खड़ी थीं। यातायात का सारा शोर, शहर की सारी आवाज़ें थम गई थीं। हर जगह सन्नाटा पसरा हुआ था। कभी-कभी कोई तेज़ी से गुज़रती जीप सन्नाटे और स्थिरता को तोड़ने की कोशिश करती, लेकिन फिर पलक झपकते ही गायब हो जाती। उसके जाने के बाद सन्नाटा फिर से छा जाता, स्थिरता और भी गहरी हो जाती। कभी वह सड़क के किनारे किसी पेड़ से पीठ टिकाकर बैठ जाता, कभी अनजान यात्रियों के बीच पेड़ों के पीछे किसी खाई में लेट जाता, कभी शिराज के किसी कोने में कान लगाकर दुबक जाता। हर पल उसे किसी असाधारण शोर की आशंका रहती जो वातावरण की शांति भंग कर दे। पर कोई शोर नहीं हुआ। न कोई बड़ा धमाका, न कोई तेज़ आवाज़। बस दूर से आती एक धीमी सी गूंज। उसके बाद, एकदम सन्नाटा छा जाता। फिर सायरन बज उठा, और इस बार उसकी आवाज़ ने छिपे हुए लोगों को उनके बिलों और कोनों से बाहर निकाल दिया, और स्कूटर-कैब, मोटरसाइकिल, कारें, टैक्सियाँ तुरंत अपने पूरे शोर के साथ फिर से चल पड़ीं। अब हवा शोर से भर गई थी, और यातायात पूरी गति से चल रहा था, और फिर सायरन बजने लगा। फिर सीटियाँ बजीं, फिर लोग छिप गए और यातायात रुक गया और चारों ओर सन्नाटा छा गया। यह सिलसिला हर दिन कितनी बार दोहराया जाता था! लेकिन जब शाम हुई, तो सायरन एक अलग स्वर में बजा, जिससे यातायात की आवाजाही और पैदल चलने वालों की चाल अचानक बाधित हो गई। रुकने के बजाय, हर वाहन बेतहाशा आगे बढ़ गया, और हर पैदल यात्री पूरी गति से भाग निकला। लेकिन धीरे-धीरे शोर दूर होता चला गया। शाम की धुंध के साथ सन्नाटा छा गया, और रात की बढ़ती छाया के साथ मिलकर पूरे शहर को भर दिया। इस सन्नाटे का फायदा उठाते हुए, रात होते ही कुत्ते भौंकने लगे। तब ऐसा लगा जैसे रात का काफी हिस्सा बीत चुका हो। रात का इतना हिस्सा बीत गया, और इतनी जल्दी! लेकिन उसके बाद रात हो गई, और बीतने का नामोनिशान नहीं था। तभी अचानक सायरन बज उठा। फिर से सीटियां बजीं। उसी समय कुत्ते नए जोश के साथ भौंकने लगे। ऐसा लगा जैसे शहर के सारे कुत्ते अचानक उछल पड़े हों। सीटियों और कुत्तों के भौंकने की आवाज़ ने उनकी इंद्रियों को व्याकुल कर दिया। बिस्तर पर लेटे हुए उन्हें ऐसा लगा जैसे पूरा वातावरण उस घिनौने शोर से भरा हुआ है। पास ही एक पलंग पर लेटे हुए अब्बा जान धीरे से उठ बैठे, और कुछ बुदबुदाने लगे। तभी अम्मी करवट बदलकर उठ बैठीं।

“ज़ाकिर, बेटा! क्या तुम जाग रहे हो?”
“जी अम्मी।” और वह उठकर बैठ गया।
और उसके बाद अम्मी ने प्रार्थना में दोनों हाथ उठाए: “अल्लाह हमारी रक्षा करे!” अब्बा जान धीमी आवाज़ में अरबी में कुछ पढ़ते थे। कभी अली के नाम की दुआ, कभी क़रीब की आयत। अम्मी ऊँची, काँपती हुई आवाज़ में दुआ करती थीं। जब से युद्ध शुरू हुआ है, अम्मी की इच्छा से हम एक ही कमरे में सोते हैं। रात के अँधेरे में, तीन परछाइयाँ अपनी चारपाइयों पर बैठी रहती हैं। अब्बा जान कुरान की आयतें पढ़ते हैं। अम्मी दुआ करती हैं। और ऐसे समय में, इतने सारे खतरे भरे रातों के बाद भी, मैं अपने मन को व्यस्त रखने का कोई तरीका नहीं ढूँढ पाता।
सन्नाटे में हमारे कान कुछ सुनने की कोशिश कर रहे हैं। खामोशी की परतों से एक गूंजती हुई आवाज़ उभरती है। दिन में यह आवाज़ कितनी धीमी होती है, लेकिन रात में कितनी तीखी और विस्मयकारी। अचानक, कहीं दूर से एक धमाका होता है। “ज़ाकिर!”
"हाँ।"
“बेटा! वो तो बम की आवाज जैसी थी।”
"हाँ।"
“यह कहाँ गिरा?”
बम कहाँ गिरा? शहर की अलग-अलग गलियाँ मेरी कल्पना में उभर आती हैं। मैं अंदाज़ा लगाने की कोशिश करता हूँ कि धमाके की आवाज़ किस दिशा से आई और उस दिशा में कौन-कौन से मोहल्ले हैं। अब्बा जान कुरान पढ़ने में पूरी तरह मग्न हैं और मेरा मन शहर की गलियों में भटक रहा है। शमनगर में मैं अचानक रुक जाता हूँ। शमनगर का वह घर जहाँ हमने पाकिस्तान आने के बाद पहली बार डेरा डाला था, मेरी कल्पना में उभर आता है। क्या बम वहीं गिरा है? नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। उस घर से मेरा कोई भावनात्मक रिश्ता नहीं है। जिस पल हमने उसे छोड़ा, वह घर मेरी यादों से मिट गया, मेरे दिल या दिमाग पर कोई छाप नहीं छोड़ पाया। लेकिन अचानक अब वह घर मेरी कल्पना में उभर आता है। मेरी आँखों के सामने वह कमरा दिखाई देता है जिसमें मैंने पाकिस्तान आने के बाद अपनी पहली रात बिताई थी। नहीं, बम उस मोहल्ले पर नहीं गिरना चाहिए। घर सुरक्षित रहना चाहिए, पूरा घर और वह कमरा जिसमें पाकिस्तान में मेरी पहली रात के आँसू संजोए हुए हैं।

5 दिसंबर
मैंने युद्धकालीन रातों में अपना मन बहलाने का एक तरीका सोच लिया है और उसे अमल में भी लाया है। यानी, जब बाहर कहीं दूर कुत्ते भौंक रहे होते हैं, मैं रजाई ओढ़कर, सामने लालटेन जलाकर बैठी डायरी लिखती हूँ।
सर्दी की रातें लंबी होती हैं, और युद्ध के समय की रातें तो और भी लंबी होती हैं। अब युद्ध और सर्दी के मौसम एक साथ आ गए हैं। युद्ध का दिन जीत की खुशखबरी और हार की अफवाहें सुनने में, और अटकलों के घोड़ों की दौड़ में बीत जाता है। रात कैसे बीत सकती है? मैं कर्फ्यू के समय से काफी पहले घर आ जाता हूँ। अम्मी जान कोशिश करती हैं कि हम अंधेरा होने से पहले खाना खा लें। ऐसा होता है। हम अंधेरा होने से पहले रात का खाना खा लेते हैं। फिर अम्मी रसोई बंद करके कमरे में आकर आराम से बैठ जाती हैं। उसी समय, बाहर गली में कदमों की आवाजें बंद हो जाती हैं। कदमों की कोई आवाज नहीं, बच्चों का कोई शोर-शराबा नहीं, बच्चों को पुकारती माताओं की कोई आवाज नहीं। पूरी तरह सन्नाटा छा जाता है। स्वयंसेवकों की सीटियों की आवाज भी बंद हो जाती है। अचानक पड़ोस के कुत्ते एक साथ भौंकने लगते हैं। उन्हें दूर के मोहल्लों के कुत्तों से प्रोत्साहन और समर्थन मिलता है। रात होते ही, वे आधी रात जैसा माहौल बना देते हैं। सन्नाटा, फिर सायरन और सीटियां, फिर कहीं दूर उड़ते विमानों की धीमी, हल्की गड़गड़ाहट, फिर सायरन, फिर सन्नाटा। रात लंबी होती चली गई। इसका अंत होना नामुमकिन था।
अब्बा जान ने युद्धकालीन लंबी रातों को गुजारने का एक अच्छा उपाय खोज निकाला है। वे अपनी प्रार्थना की चटाई बिछाकर बैठ जाते हैं और देर रात तक वहीं बैठे रहते हैं। उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, अम्मी जान ने भी अपनी देर शाम की प्रार्थना को लंबा करना शुरू कर दिया है।
मुझे वो रातें गुजारने का कोई तरीका नहीं सूझता था। लालटेन की रोशनी में मैं ज्यादा देर तक किताब नहीं पढ़ पाती थी। अम्मी जान बत्ती जलाने नहीं देती थीं। और वो सही थीं। तेज बिजली की रोशनी किसी न किसी तरह दरारों से बाहर तक पहुँच ही जाती थी। फिर स्वयंसेवक शोर मचाते, “बत्ती बंद करो,” “बत्ती बंद करो।” और किसी तरह मुझे लालटेन अच्छी लगती थी। मुझे लालटेन का वो दौर कितना प्यारा याद है, जब हमारे रूपनगर में बिजली नहीं आई थी, और घर के अंदर और गली के बाहर सिर्फ लालटेन की रोशनी होती थी। जब मैं बड़ी हुई, तो मैंने अपनी सारी पढ़ाई लालटेन की रोशनी में ही पूरी की। लेकिन अब हालात

ऐसे हैं कि मुझे सिर्फ लालटेन का वो दौर ही याद आता है। मैं लालटेन की रोशनी में किताब नहीं पढ़ सकती। लेकिन आज मुझे पता चला: मैं लिख सकती हूँ। इस डायरी को लिखने का मुख्य उद्देश्य यह है कि युद्ध की लंबी रातों में यह मेरे विचलित मन को अनुशासित करने में सहायक होगी, जो अनिद्रा से ग्रस्त है और बेचैनी से इधर-उधर भटकता रहता है; यह मेरे मन को एक ही दिशा में केंद्रित करने और विचारों के भ्रम से बचाने में मदद करेगी। लेकिन अब मुझे इसका एक और लाभ भी नज़र आ रहा है। मैं अपनी युद्धकालीन आत्मकथा लिखूंगा। युद्ध समाप्त होने के बाद, यदि मैं जीवित रहा, तो मुझे पता चलेगा कि मैंने कितने झूठ सुने और कितने झूठ बोले और युद्ध की रातों में मैं कितना डरा हुआ था, कितनी बार कांपता था। मुझे अपने झूठ और अपनी कायरता का हिसाब रखना चाहिए।
6 दिसंबर
मेरे देशभक्त साथी नागरिक खुश हैं, और सबसे बढ़कर हमारे देशभक्तिपूर्ण समाचार पत्र खुश हैं। अचानक उनका प्रसार दोगुना और तिगुना हो गया है। हर दिन किसी न किसी जीत की खबर आती है। हर दिन लोग अखबारों पर टूट पड़ते हैं, उन्हें उठा लेते हैं, जीत की खबरें पढ़ते हैं और खुश होते हैं। लेकिन, लंदन विजयी हुआ और जर्मन सेना आगे बढ़ रही है।*
फिर भी, आज उनके क्षेत्र में एक शक्तिशाली, विजयी आक्रमण की खबर है। अमृतसर पर भी कब्ज़ा कर लिया गया है। ख्वाजा साहब ने हमें यह खबर इतने विश्वास से और इतने विश्वसनीय सूत्रों से बताई कि अब्बा जान को इस पर विश्वास करना ही पड़ा। लेकिन अब्बा जान हार और जीत, दोनों तरह की खबरें धैर्य से सुनते हैं। ख्वाजा साहब के खबर सुनाने के बाद, मैंने उन्हें ध्यान से देखा। उनके शांत चेहरे पर मुझे संतोष की झलक दिखाई दी। जब मैं घर से निकला, नाज़िरा की दुकान से शिराज तक, मुझे हर जगह यही खबर सुनने को मिली कि अमृतसर पर कब्ज़ा कर लिया गया है।
7 दिसंबर
आज की ताज़ा खबर: आगरा का हवाई अड्डा पूरी तरह से नष्ट हो गया है। कैसे? ब्लैकआउट के अंधेरे में संगमरमर का ताजमहल जगमगा उठा। इससे आगरा और उसके हवाई अड्डे का पता चला, जिसे बाद में बमबारी से नष्ट कर दिया गया।
जब लोगों ने यह खबर पढ़ी और जानकार सूत्रों से संपर्क रखने वाले अपने मित्रों से पूरी जानकारी प्राप्त की, तो वे कितने प्रसन्न हुए! इस खबर से

एक धूमिल प्रतिष्ठा अचानक बहाल हो गई; अन्यथा, हम पहले ही यह मान चुके थे कि ताजमहल और ताजमहल को जन्म देने वाले इतिहास का पाकिस्तान से कोई संबंध नहीं है।
इस शहर में भी संगमरमर जैसी सफेद इमारत है। आज जब हम शिराज होटल में बैठे थे, इरफान ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा, "यार, हमने इंपीरियल होटल को गिराकर वो नकली ताजमहल बना दिया, और अब मुझे डर है कि कहीं वो हम सबको भी अपने साथ न ले जाए।"
"कैसे?"
यार, ऑफिस से लौटते समय मैं उस गली से गुज़रा और मुझे सच में डर लग गया। ब्लैकआउट के अंधेरे में वह इमारत इतनी साफ़ दिखाई दे रही थी कि मानो हल्की रोशनी से जगमगा रही हो! दुश्मन के विमान उसे आसानी से देख सकते हैं। शांति काल में भी, मुझे इमारत का सफ़ेद रंग हमेशा से नापसंद था। अगर सफ़ेद रंग के साथ-साथ कोई इमारत ताजमहल जैसी हो, तो बात अलग है; वरना सफ़ेदी अक्सर इमारत की गरिमा को कम कर देती है। सूरज, आंधी, बारिश, पक्षियों की बीट: ये चारों चीज़ें मिलकर इमारत को गरिमा और भव्यता प्रदान करती हैं। लेकिन हमारे शहर की यह सफ़ेद इमारत इतनी नई और इतनी साफ़ है कि इसे मौसमों की गर्मी और सर्दी झेल चुकी इमारतों की गरिमा प्राप्त करने में बहुत समय लगेगा।
बहरहाल, अब जब इंपीरियल इमारत शहर के इतिहास से एक बेकार अक्षर की तरह मिट चुकी है, डॉली और उसके चाहने वाले महज़ एक किंवदंती बनकर रह गए हैं, और भूरी बिल्ली गायब हो चुकी है, तो इस इमारत को संरक्षित किया जाना चाहिए। वो समय आएगा जब इसकी छतें पक्षियों की बीट से काली हो जाएंगी, और पक्षी सदियों पुराने काले-सफेद धब्बों के बीच शांति से बैठे रहेंगे।
आज के दौर में युद्ध का एक हानिकारक प्रभाव यह है कि यह इमारतों को गरिमा प्राप्त करने का अवसर नहीं देता। भव्य और ऊँची इमारतें पुरानी होने से पहले ही कोई युद्ध छिड़ जाता है और बमवर्षक विमान उन्हें नष्ट कर देते हैं। युद्ध के बाद शहरों की योजना नए सिरे से बनाई जाती है, और पहले से भी ऊँची इमारतें निर्मित की जाती हैं। लेकिन जब वे अभी नई ही होती हैं, तभी एक और युद्ध शुरू हो जाता है, और इससे पहले कि उनके चारों ओर भव्यता और रहस्य का माहौल छा जाए, वे मलबे के ढेर में तब्दील हो जाती हैं।
8 दिसंबर

पिछली रात हद हो गई थी। डायरी लिखने के बाद मैं लेट गया और तुरंत मेरी आँखें बंद हो गईं, लेकिन थोड़ी देर बाद अम्मी ने मुझे जगा दिया। "बेटा, सायरन बज रहा है।"
पूरी रात यही सिलसिला चलता रहा। पता नहीं सायरन कितनी बार बजा। मैं बहुत डरी हुई थी। मुझे इस शहर का डर सता रहा था, जहाँ मैंने इतने दुख सहे थे, जहाँ बैठकर मैंने रूपनगर को इतनी जीवंतता से याद किया था, जहाँ मैंने इसे आज भी अपनी कल्पना में ज़िंदा रखा है। अगर इस शहर को कुछ हो गया, तो मैं इसे कैसे सहन कर पाऊँगी? मैं अपने दुखों को याद रखना चाहती हूँ। अगर कोई शहर तबाह हो जाता है, तो वहाँ रहने वालों के दुख भी उसी समय भुला दिए जाते हैं। इस युद्धग्रस्त समय की त्रासदी यही है कि हमारे दुख यादों में नहीं बदल पाते। इमारतें, वो जगहें जहाँ हमारे दुख सहेज कर रखे गए थे, एक ही बम से पल भर में राख हो जाती हैं।
मैं इस शहर के लिए और कुछ नहीं कर सकता, सिवाय प्रार्थना करने के, और मैं प्रार्थना करता हूँ। मेरे मन में रूपनगर और यहाँ के लोगों के लिए भी प्रार्थना है, क्योंकि मैं अब रूपनगर की कल्पना इस शहर से अलग नहीं कर सकता। रूपनगर और यह शहर मेरे भीतर समाहित हो गए हैं, और एक ही शहर बन गए हैं।
9 दिसंबर
इस शहर में सड़क पार करना अब बिलकुल भी मुश्किल नहीं रहा। युद्ध के पहले दिन सुबह, सड़क पार करने में मुझे कितनी परेशानी होती थी! लेकिन फिर यातायात की भीड़ कितनी जल्दी कम हो गई। दिन बीतने के साथ-साथ यातायात कम होता चला गया। स्कूटर-टैक्सी का शोर और लोगों की पुकार-पुकार कितनी कम हो गई। कभी-कभी ऐसा लगता है कि शहर में परिवहन का एकमात्र साधन बस ही बची है, जो पहले की तरह नियमित रूप से एक गली से दूसरी गली तक चलती है—फर्क सिर्फ इतना है कि अब यात्री फुटबोर्ड पर नहीं बैठते या गलियारों में खड़े नहीं होते। कम यात्री, ज़्यादा सीटें। बस स्टैंड पर भी भीड़ नहीं होती। जब हवाई हमले का सायरन बजता है और यातायात पुलिस सीटी बजाते हुए सड़क के बीच में आ जाती है, तब सड़क के दोनों ओर वाहनों की कतारें लग जाती हैं। ऐसे समय में ऐसा लगता है कि शहर में सिर्फ स्कूटर-टैक्सी और टैक्सियाँ ही चल रही हैं। शाम ढलते ही, जब कर्फ्यू की सीटी बजने पर मैं घर लौटता हूँ, तो अम्मी मुझसे शहर की खबरें पूछती हैं और मोहल्ले के हालचाल बताती हैं: आज फलाँ घर के लोग

फलाँ शहर चले गए। हर सुबह ख्वाजा साहब दरवाजा खटखटाते हैं और आराम से ड्राइंग रूम में बैठकर हुक्का पीते हुए किसी नई जीत की अफवाहें सुनाते हैं; और हर दिन मोहल्ले का कोई न कोई घर बंद हो जाता है। हर दिन अम्मी उन लोगों के बारे में बातें करती हैं जो चले गए हैं।
आज अम्मी कुछ ज्यादा ही चिंतित लग रही थीं। “अरे हाय, क्या मोहल्ले में सिर्फ हम ही बचेंगे?”
“ज़ाकिर की माँ,” अब्बा जान ने गंभीरता से कहा, “मृत्यु हर जगह है। मनुष्य इससे बचने के लिए कहाँ जा सकता है? पैगंबर का यह कथन है कि जो मृत्यु से भागते हैं, वे वास्तव में मृत्यु की ओर ही भागते हैं।”
मैंने अब्बा जान को आश्चर्य से देखा। यही वह बात थी जो अब्बा जान ने बी अम्मा से तब कही थी जब रूपनगर में महामारी फैली थी और लोग अपने घर बंद करके शहर छोड़कर जा रहे थे।
हमारे घर से भी दो लोग चले गए हैं। हमारे आंगन में अमरूद का पेड़ है। अच्छे मौसम में, बुलबुलों के एक जोड़े ने उसकी खुशबू सूंघी और उसे ढूंढ लिया, और वहीं बस गए और अपना घर बना लिया। अम्मी बुलबुलों से बहुत नाराज़ थीं। “अरे बदमाश! ये अमरूद खराब कर देते हैं! जैसे ही वे पकने लगते हैं, ये बदमाश अपनी चोंच घुसा देते हैं। कम से कम एक अमरूद को तो ठीक से पकने दें!”
“अम्मी, पक्षियों को भी पेड़ों से मिलने वाले भोजन में हिस्सा पाने का अधिकार है।”
अम्मी ने मेरी तरफ घूरकर देखा। "यह तो बहुत अच्छा विचार है कि हम काम करें और पक्षी खाएं!"
लेकिन अब वो बुलबुलें कहाँ हैं? युद्ध की पहली सुबह, दोनों बुलबुलें उड़ती हुई आईं और अमरूद के पेड़ पर बैठ गईं। बड़े उत्साह से वे पकते हुए अमरूदों को चोंच से कुरेद रही थीं, तभी एक विमान ज़ोरदार गर्जना करते हुए ऊपर से गुज़रा। दोनों पक्षी बुरी तरह डर गए और अमरूद छोड़कर उड़ गए।
अब हमारे पेड़ पर बहुत सारे अमरूद पक गए हैं। अम्मी रोज़ उन्हें तोड़कर अमरूद का सलाद बनाती हैं। अब किसी अमरूद पर चोंच के निशान नहीं दिखते। हमारे घर के वो मेहमान, हमारे साथ खाना खाने वाले वो लोग चले गए।
आज जब मैं शिराज होटल से निकला, शाम ढल रही थी। चाय का आखिरी घूंट पीकर जब मैं बाहर आया, तो कर्फ्यू लगने में बस कुछ ही समय बचा था। बाहर हर कोई जल्दी में था। गाड़ियाँ पूरी रफ्तार से दौड़ रही थीं। कारें,

घोड़ागाड़ियाँ, मोटरसाइकिलें, टैक्सियाँ, स्कूटर-कैब। मानो कोई फिल्म खत्म हुई हो, वैसे ही अफरा-तफरी मच गई थी। मैं बहुत हैरान था। दिन भर सड़कें खाली थीं। अचानक इतनी सारी गाड़ियाँ कहाँ से आ गईं? ये गाड़ियाँ किन अदृश्य सड़कों पर चल रही थीं कि अचानक मॉल रोड की ओर खिंची चली आईं? मैंने कई स्कूटर-टैक्सी चालकों को आवाज़ दी, लेकिन किसी ने मेरी आवाज़ नहीं सुनी, कोई रुका नहीं, जबकि स्कूटर-टैक्सी खाली थीं। ट्रैफिक में फंसकर एक स्कूटर-टैक्सी मेरे पास आकर रुकी। जब मैंने चालक से विनती की, तो उसने कहा, "भाई, अगर तुम्हें बागबानपुरा जाना है, तो मैं तुम्हें ले चलूँगा।"
“बागबानपुरा ही क्यों?”
"क्योंकि मुझे घर जाना है, और सायरन बजने ही वाला है।"
फिर मैंने सोचा कि परिवहन की तलाश में और समय बर्बाद करना व्यर्थ होगा। उस समय हर कोई अपनी-अपनी चिंता में डूबा रहता है। पैदल चलना ही बेहतर होगा, और शायद रास्ते में मुझे उस दिशा में जाने वाला कोई स्कूटर-टैक्सी मिल जाए, या कोई दयालु व्यक्ति मुझे लिफ्ट दे दे।
शाम ढलते ही दुकानों के शटर तेज़ी से बंद होने लगे। दुकानदार जल्दी से ताले लगा रहे थे और पलक झपकते ही गायब हो गए, कुछ कारों में, कुछ मोटरसाइकिलों पर, कुछ पैदल। दिन और रात, बिजली की रोशनी के सहारे भी नहीं, एक-दूसरे में घुलते जा रहे थे। अंधेरा धीरे-धीरे गलियों और सड़कों पर छा रहा था। अचानक मेरे मन में ख्याल आया कि पहले हर शाम ऐसी ही होती थी। जंगल का वो अंधकारमय समय, जब शिकारी दिन भर शिकार करने के बाद शाम होने से पहले अपने शिकार के साथ गुफाओं तक पहुँचने की कोशिश करते थे। फिर वो समय जब कुछ कस्बे बस गए और बत्तियाँ जलने लगीं, जब कस्बे के लोग दिन भर काम करने के बाद शाम ढलते ही लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए घर की ओर चल पड़े, इस उम्मीद में कि बत्तियाँ जलने से पहले पहुँच जाएँ। फिर वो समय जब बड़े शहर बस गए और उनके चारों ओर दीवारें बन गईं, जब कारवां चिलचिलाती धूप में दिन-रात सुनसान रास्तों पर सफर की कठिनाइयों को सहते हुए रात होने से पहले शहर में प्रवेश करने की कोशिश करते थे। बहुत धीमी गति से चलने वाले काफिले ने शहर के द्वार बंद पाए और पूरी अंधेरी रात दीवारों की शरण में असुरक्षित अवस्था में बिताई।

युद्ध ने शहर के जीवन में उथल-पुथल मचा दी। मेरे भीतर समय और स्थान उलट-पुलट हो गए हैं। कभी-कभी मुझे बिल्कुल भी पता नहीं होता कि मैं कहाँ हूँ, किस जगह पर हूँ। दिन ढल रहा है, शाम हो रही है, जंगल के रास्ते शांत होते जा रहे हैं। मैं लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए अपनी गुफा की ओर बढ़ रहा हूँ।
10 दिसंबर
कॉलेज में कक्षाएं वगैरह नहीं चल रही हैं; इसलिए मैं थोड़ी देर के लिए आता हूँ और फिर शिराज में आकर बैठ जाता हूँ। फिर इरफान आता है। कभी-कभी अफजल भी हमारे साथ शामिल हो जाता है। सलामत और अजमल कहीं नजर नहीं आते, लेकिन मैंने सुना है कि क्रांतिकारी होने के बाद अब वे पक्के देशभक्त बन गए हैं और सैनिकों के लिए उपहार इकट्ठा करते फिरते हैं। यह तो हम जो कर रहे हैं उससे कहीं ज्यादा है।
प्यार के मामले में मैं किस काम का था?*
हम शिराज होटल में बैठकर बातें करते हैं। हमारी बातें भी बेमतलब की होती हैं और उनका कोई मतलब नहीं निकलता। आज मैंने इरफान से कहा, “यार! मुझे तुम्हारे अखबार के काम से कोई फायदा नहीं होता।”
आपको क्या लाभ चाहिए?
"यार, तुम्हारे पास कर्फ्यू पास है, अखबार वाली गाड़ी वहीं है, क्या तुम मुझे ब्लैकआउट में शहर नहीं दिखा सकते?"
मैं आपको दिखा सकता हूँ। लेकिन एक समृद्ध शहर को उजाड़ अवस्था में देखना साहस का काम है।
मैंने इस शहर में इतने कर्फ्यू देखे हैं! अब तक तो मुझे निश्चित रूप से हिम्मत मिल जानी चाहिए थी।
"शहर में कर्फ्यू देखना एक बात है। यह बिल्कुल अलग अनुभव है।"
अफजल ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “इरफान सही कह रहा है। मत देखो। तुम डर जाओगे।”
"क्या आपने इसे देखा है, या आप इसे देखे बिना ही बोल रहे हैं?"
“भाई! जब मैं इसके बारे में बात कर रहा हूँ, तो मैंने इसे अपनी आँखों से देखा है।” वह रुका, फिर एक डरे हुए आदमी की तरह बोला। “दो रात पहले जब इरफान मुझे अपनी ऑफिस की कार में घर छोड़ने गया, तो हम अंधेरी, सुनसान सड़कों से गुज़रे, और मैंने दाएं-बाएं के घरों को डर से देखा। हर घर खामोश और स्थिर

था, मानो अंदर कोई न हो। मुझे ऐसा लगा जैसे ये लोगों के घर नहीं, बल्कि चूहों के बिल हों। चूहे डर से सिकुड़े बैठे थे। मैं बहुत डर गया था।”
अफजल ने तो मुझसे भी बेहतर बात कह दी। मुझे तो जब मैं रात में अकेले गली में घूमने निकलता हूँ, तो मेरे पड़ोस के घर मुझे खामोश, खामोश गुफाओं जैसे लगते हैं, जो अंधेरे में डूबे हुए हों।
11 दिसंबर
मैं एक गुफा में बैठा हूँ। बाहर काली रात छाई है, मानो उसके जबड़े चौड़े खुले हों। सायरन, सीटियाँ, कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें—पर इंसानों की आवाज़ें नदारद। मानो कोई पलायन हुआ हो, और लोग कहीं और चले गए हों। शहर युद्ध के जाल में फँसा हुआ है। बीच-बीच में मोहल्ले के सारे कुत्ते इतनी ज़ोर से भौंकते हैं कि मानो मेरी गुफा में घुस रहे हों। फिर वे चुप हो जाते हैं, लेकिन दूर से भौंकने की आवाज़ आती रहती है। रात में, जब आप जंगल से गुज़र रहे होते हैं, तो ऐसा ही होता है। अनदेखे, अनजान कस्बों से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आती है, और आती ही रहती है। यह एक तरह का घेरा बन जाता है, मानो यात्री भौंकते कुत्तों के घेरे में चल रहा हो। मानो कुत्तों ने पूरी धरती को घेर लिया हो। मैं डर से घिरा हुआ हूँ। जंगल के गहरे अंदर, अपनी गुफा से बहुत दूर। समय और स्थान मेरे अंदर उलझे हुए हैं। मैं कहाँ जा रहा हूँ? किस समय? किस जगह? हर दिशा भ्रमित, हर जगह अव्यवस्थित।
...जंगल से निकलकर मैं एक कस्बे में दाखिल हुआ। लेकिन कैसा कस्बा? आदम के किसी बेटे का नामोनिशान नहीं। खाली सड़कें, सुनसान गलियाँ, दुकानें बंद, महल ताले लगे। मेरे प्यारे दोस्तों! मैं बहुत देर तक अचंभे में भटकता रहा। आखिरकार जब मैंने बड़े दरवाजों वाला एक महल देखा, तो मुझे उम्मीद जगी कि शायद उसमें लोग हों। मैंने दरवाजा खटखटाया और पुकारा, "क्या कोई है?" कोई जवाब नहीं। मैंने फिर ज़ोर से खटखटाया और ज़ोर से पुकारा, "क्या कोई है?" मुझे अपनी ही आवाज़ की गूँज के सिवा कुछ सुनाई नहीं दिया। डर मुझ पर हावी हो गया। मैंने मन ही मन सोचा कि मुझे यह कस्बा छोड़ देना चाहिए, कहीं कोई विपत्ति न आ पड़े। जब मैं यह सोच ही रहा था, तभी मुझे एक झील दिखाई दी। उसका पानी कहीं साफ़ था, कहीं मैला। झील के बीचोंबीच एक हाथी और एक कछुआ आपस में लड़ रहे थे, लेकिन न तो कोई जीता, न ही कोई हारा।
मैं वहाँ विस्मय से खड़ा होकर लड़ाई देख रहा था, तभी एक फ़कीर प्रकट हुआ। वह झील के पास पहुँचा। रुककर उसने हाथी और कछुए पर उदास दृष्टि डाली और आह

भरी। फिर उसने कहा, "काश, वे अज्ञानी होते और उनके शब्दों में कोई शक्ति न होती!"
फ़कीर के ये शब्द सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। मैं उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और उनसे विनती की, “हे आदरणीय महोदय, आपने क्या जाना और क्या देखा है कि आपने ऐसे शब्द कहे?” उन्होंने उत्तर दिया, “हे प्रिय पुत्र, तीन बातें मनुष्य को नीचा बनाती हैं: एक स्त्री जब वह बेवफ़ा हो, एक भाई जब वह अपने अधिकार से अधिक माँगे, और ज्ञान जब वह बिना परिश्रम के प्राप्त हो। और तीन बातें धरती की शांति भंग करती हैं: एक नीच व्यक्ति जब ऊँचे पद पर पहुँच जाए, एक विद्वान जब वह सोने की पूजा करने लगे, और एक स्वामी जब वह क्रूर हो जाए।”
ये शब्द सुनकर मैंने उस आदरणीय व्यक्ति के चेहरे को निहारते हुए, अपनी समझ के नाखूनों से उनके शब्दों की गुत्थी सुलझाने की कोशिश शुरू की। जब मैं उसे सुलझाने में असफल रहा, तो मैंने निवेदन किया, “हे आदरणीय व्यक्ति, इन अमूर्त विचारों का सार समझाइए।”
फिर उन्होंने मुझसे पूछा, “प्रिय पुत्र, तुमने इस शहर को किस हालत में देखा है?” मैंने कहा, “आदरणीय महोदय, मैंने इस शहर को निर्जन देखा है।”
फिर फ़कीर ने इस प्रकार कहा: “प्रिय पुत्र, इस नगर की कहानी यह है कि इसका मुखिया एक शुद्ध हृदय और सदाचारी व्यक्ति था। सांसारिक धन के अतिरिक्त, वह आध्यात्मिक धन में भी समृद्ध था। जब उसका जीवन अंत की ओर अग्रसर हुआ, तो उसने अपने दो पुत्रों को बुलवाया और दोनों को गले लगाया। इससे उसके मन को शांति मिली। उसने कहा, ‘पुत्रों! मैंने अपना ज्ञान तुम दोनों में समान रूप से बाँट दिया है, और हे मेरे पुत्रों! मेरे जाने के बाद मेरी शेष संपत्ति भी तुम दोनों में समान रूप से बाँट लेना, क्योंकि मुझे भय है कि कहीं वह दिन न आ जाए जब तुम अपने अधिकार से अधिक की लालसा करोगे और प्रभु के प्राणियों पर विपत्ति लाओगे।’
इन्हीं शब्दों के साथ उस पुण्य पुरुष ने अंतिम सांस ली और मृत्यु के इस संसार को छोड़कर अनन्त जीवन के संसार की ओर चल दिए। दोनों पुत्रों ने उनका बहुत शोक मनाया, परन्तु जब वे संपत्ति का बंटवारा करने बैठे तो अपने पिता के आदेश को भूलकर अपने अधिकार से अधिक की मांग करने लगे। इसी से झगड़ा शुरू हो गया। झगड़े के दौरान उन्होंने अपने पिता द्वारा प्रदत्त ज्ञान का प्रयोग एक-दूसरे को शाप देने में किया। बड़े पुत्र ने छोटे पुत्र को

क्रोधित दृष्टि से देखा और शाप भरे स्वर में कहा, ‘तू कछुआ है।’ छोटे पुत्र ने घृणा से बड़े पुत्र को देखा और शाप भरे स्वर में कहा, ‘तू मदमस्त हाथी है।’ इसके बाद छोटा पुत्र कछुआ बन गया और बड़ा पुत्र मदमस्त हाथी के रूप में विलीन हो गया। तब से वे दोनों क्रोध से पागल होकर लड़ते रहते हैं।
यह नैतिक कथा सुनकर मैंने पूछा, “हे पूज्यवर! इस युद्ध का क्या परिणाम होगा?” उन्होंने उत्तर दिया, “झील का पानी मटमैला हो जाएगा।” मैंने कहा, “ऐसा तो हो ही चुका है।” उन्होंने उत्तर दिया, “और भी मटमैला।” मैंने पूछा, “कितना मटमैला?” उन्होंने कहा, “इतना कि झील दलदल बन जाएगी और धूल पूरे शहर में उड़ने लगेगी।”
...डर से भरा हुआ, मैंने उस वीरान शहर को छोड़ दिया। मैं एक आबाद शहर की तलाश में निकल पड़ा। मैं जंगलों और घने वनों में भटकता रहा। ईश्वर ने ऐसा ही प्रबंध किया था कि मुझे दूर-दूर तक बसावट के संकेत दिखाई दिए। मैं उस रास्ते पर चल पड़ा। जब मैं पास पहुँचा, तो मैंने क्या देखा? एक नई भूमि: एक सुंदर शहर, मनमोहक वातावरण के साथ। बागों में हर तरह के फलदार पेड़ थे, हर रंग के गुलाब और फूल, हर डाल पर मधुर गीत गाते पक्षी, हर रास्ते पर हवा की तरह फुर्तीले हिरण। मीठी सुगंध से भरी सड़कें, सुगंधित गलियाँ। बाज़ार इतने भीड़भाड़ वाले थे कि कंधे से कंधा टकरा रहा था, पानी के बर्तन लयबद्ध ढंग से आपस में बज रहे थे। लाल वस्त्रों में लिपटे पानी ढोने वाले अपने कंधों पर पानी की मशकें लिए सड़कों पर पानी छिड़कते हुए जा रहे थे। पीने का पानी लाने वाले स्वर्ग के झरने से भरे हुए प्याले परोस रहे थे। दुकानें साफ-सुथरी और सुरुचिपूर्ण थीं, एक के बाद एक सुनार की दुकानें थीं। बालकनियाँ, दर्पण की दीवारों वाले कमरे; एक अत्यंत सुंदर स्त्री झूले पर झूल रही है, और एक छोटे से दर्पण में अपने सुंदर चेहरे को निहार रही है। स्वयं को निहारते हुए वह कहती है, हे भगवान! सौंदर्य का एक निवास बहते जल के वस्त्र से ढका है, जिससे दृष्टि एक छोर से दूसरे छोर तक स्पष्ट रूप से विचरण करती है। एक गुलाब जैसे चेहरे वाली स्त्री की आँखों में गहरा काजल है, होठों पर गहरा लाल रंग का लेप है, उसका वक्षस्थल फूलों से भरा है, उसके कंधों से घूंघट नीचे सरक रहा है, उसका पेट चंदन की शिला के समान है, उसकी नाभि सोने के प्याले के समान है, और उसके नीचे का स्थान किसी रसीले मीठे के समान है। इसके आगे पर्दा है, लज्जा का बोलबाला है। “मेरे बगीचे से अनुमान

लगाओ कि मेरा वसंत कैसा है।”* जिसके पास भाग्य का साथ और साहस का साथ है, वह सिद्धि की गंगा में गोता लगाए स्नान करे: तैरना साहसी के लिए शुभ है।
...एक बार मैं 'हजार और एक रात' के अबुल हसन बन गया। मैं गलियों और रास्तों में भटकता रहा और चकित रह गया। लेकिन धीरे-धीरे मेरी आँखें खुलीं और मेरे सामने एक अजीब दृश्य था। मैं स्तब्ध रह गया। जब भी मैं किसी सिर को देखता, वह गायब होता। आदमी स्वस्थ और तंदुरुस्त था, सिर गायब। मैं मन ही मन हैरान था: क्या यह सपना है, या जागती दुनिया? मैंने अपनी आँखें मलकर देखा; फिर भी वही दृश्य था। हे भगवान, इन लोगों के सिर कहाँ चले गए? मैं काफी देर तक चुप रहा। आखिरकार आत्मसंयम का बंधन टूट गया। मैंने एक राहगीर से पूछा, एक बूढ़े आदमी से जिसका चेहरा भरोसेमंद था, "अरे महोदय, क्या आपके शहर में आदमियों के सिर नहीं होते?" उस बूढ़े आदमी ने मुझे सिर से पैर तक आश्चर्य से देखा और कहा, “अरे नौजवान! लगता है तुम इस शहर में अजनबी हो, तभी तो ऐसा सवाल पूछ रहे हो। इसलिए अगर तुम्हें नहीं पता तो चुप रहो, और अगर पता भी है तो भी चुप रहो, क्योंकि दीवारों के भी कान होते हैं।” फिर वह बूढ़ा मुझे अपने घर ले गया और मेरा खूब स्वागत किया और कहा, “अरे प्यारे दोस्त! मेरी बात सुनो: हमारे सिर हमारे राजा के साँपों का भोजन बन चुके हैं।” यह सुनकर मैं बहुत हैरान हुआ। तब बूढ़े ने समझाया, “हे मेरे प्रिय मित्र! मेरी बात सुनो: हमारे राजा के कंधों पर, दाएं और बाएं, दो-दो सांप हमेशा फुफकारते रहते हैं। मनुष्यों के सिर उनका भोजन हैं। इस शहर में प्रतिदिन पर्ची निकाली जाती है, प्रतिदिन दो पुरुषों को पकड़ा जाता है और उनके सिर काटकर महिमावान राजा के सांपों को खिला दिए जाते हैं।* और अब इस शहर में जिनके सिर बचे हैं, उनकी संख्या इतनी कम है कि उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता है। लेकिन कब तक? अगर किसी का सिर कल नहीं काटा गया, तो आज काट दिया जाएगा; और अगर आज नहीं काटा गया, तो कल काट दिया जाएगा। और मेरी बात सुनो: कल सुबह तड़के ढोल बजेगा, और उसके बाद पर्ची निकाली जाएगी।”
यह अद्भुत कहानी सुनकर मैं विस्मय के भंवर में डूब गया। धीरे-धीरे जब मुझे होश आया, तो मेरी जिज्ञासा जागृत हुई और भोर होते ही मैं निर्धारित स्थान पर जाने के लिए तैयार हो गया। बूढ़े व्यक्ति ने मुझे रोकने की कोशिश की: “अरे उतावले और नासमझ, अपनी जवानी पर दया करो और यह इरादा छोड़ दो! हम राजा के लोग हैं, इसलिए हमें यह दृश्य देखना ही होगा। तुम व्यर्थ ही खुद को खतरे में डाल रहे हो। राजा के लोग तुम्हें देखेंगे, तुम्हारा नाम लिखेंगे और

तुम्हें भी लॉटरी में शामिल करेंगे!” इस विरोध पर मेरी जिज्ञासा और भी भड़क उठी। मैंने बूढ़े व्यक्ति की सलाह पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। मेरा मन इस बात को जानने की तीव्र इच्छा से ग्रस्त था कि उस दिन प्रकृति क्या करतूतें रचेगी और मृत्यु किसके सिर पर खेल खेलेगी।
जब मैं महल के पास पहुँचा, तो मैंने देखा कि वहाँ बड़ी भीड़ जमा थी, जिसमें बड़े-बड़े सभी लोग शामिल थे। अमीर-गरीब, कुलीन-कुलीन, जरूरतमंद-धनी, भिखारी-दानदाता, अनाज विक्रेता-किराना व्यापारी, अभिजात वर्ग-वजीफ और वज़ीर, सभी एक साथ खड़े होकर लॉटरी के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे।
जब नाम सामने आए, तो लोग स्तब्ध रह गए। वे सब एक-दूसरे को घूरने लगे, शोक में हाथ मलने लगे, आहें भरने लगे और विलाप करने लगे। मैंने उस बूढ़े से पूछा, “मृत्यु ने किन दुर्भाग्यशाली लोगों को चुना है कि लोग इतना शोक मना रहे हैं?” इस पर उन्होंने आह भरी और इस प्रकार कहा: “हे प्रिय मित्र! आज जिन दो लोगों पर यह विपत्ति आई है, वे ज्ञान से भरपूर दरबार के अनमोल रत्न हैं। वे उच्च विचारों और तेज बुद्धि वाले पुरुष हैं, जिनकी दूरदृष्टि है। ज्ञान और विद्या में वे अद्वितीय हैं। वे ज्ञान के सागर में गोताखोर हैं। उनके ज्ञान की प्रसिद्धि रोम से सीरिया तक फैली हुई है। वे संप्रभुता के रहस्यों को समझते हैं। वे रणनीति की सूक्ष्मता से बड़ी से बड़ी उलझनों को सुलझा लेते हैं। अब जब उनके सिर काट दिए गए हैं, तो ज्ञान का दीपक बुझ जाएगा, शहर ज्ञानहीन हो जाएगा।”
आहें भरना और शोक करना व्यर्थ था, पर्ची निकालना ही भाग्य का फैसला था। भला इससे कौन बच सकता था? दोनों बुद्धिमानों के सिर काटकर एक थाली में साँपों के सामने रख दिए गए। लेकिन साँपों ने एक बार अपने जबड़ों से प्रहार किया, फिर मुँह फेर लिया और क्रोध से फुफकारने लगे। राजा ने क्रोधित होकर अपने दल की ओर देखा और पूछा, “देशद्रोहियों! तुमने इस स्वादिष्ट भोजन में क्या मिला दिया है कि साँप इसे खा नहीं रहे हैं और क्रोध से फुफकार रहे हैं?” उनके आसपास के लोगों ने हाथ जोड़कर विनती की, “हे जगत के शरण, हम भला कैसे इतनी हिम्मत कर सकते हैं कि इतने महान साँपों के भोजन में कुछ मिला दें? वास्तव में, साँपों के खाने के लिए बचा ही क्या है? उस युग के उन श्रेष्ठ बुद्धिमानों की खोपड़ियाँ तो मस्तिष्क से खाली थीं।”
...मुझे इस घनी आबादी वाले शहर से उस वीरान, सुनसान शहर से ज़्यादा डर लग रहा था। किसी तरह, छुपकर, मैं वहाँ से निकल आया। मैंने ईश्वर का शुक्रिया

अदा किया कि उन्होंने मुझे सुरक्षित बचा लिया। गाँवों, शहरों, कस्बों के सारे ख्यालों को भुलाकर, मैं जंगल में भटकता रहा। मैं अब भी भटक रहा हूँ। कभी रेगिस्तान में, जहाँ घास या पानी नहीं है, कभी घने जंगलों में। शहर अपने भौंकते कुत्तों के साथ मेरा पीछा करते हैं। जंगल में मैंने एक भी कुत्ता नहीं देखा। कुत्ते तो शहरों में हैं। जब शहर और उसके बाहरी इलाकों में कुत्ते भौंकते हैं, तो रात में जंगल में ऐसा लगता है मानो सभी शहरों के सारे कुत्ते जंगल की ओर मुँह करके भौंक रहे हों। मैं चारों ओर से घिरा हुआ हूँ। ऐसा लगता है मानो शहरों ने जंगल को चारों ओर से घेर लिया हो। कुत्तों की आवाज़ें चारों ओर से आती हैं, मानो उन्होंने एक विशाल घेरा बना लिया हो और मेरी ओर मुँह करके भौंक रहे हों। जंगल में रातें कितनी लंबी होती हैं। मैं अपनी गुफा से कितना दूर हूँ—सायरन की आवाज़, सीटियाँ, सन्नाटा— “बेटा! लालटेन बुझा दो, इसकी रोशनी बाहर दिखाई दे सकती है,” अम्मी जान डरी हुई फुसफुसाहट में कहती हैं, ताकि उनकी आवाज हवाई जहाजों तक न पहुंचे। "सभी अधिकार है।"
मैंने लालटेन बुझा दी। गुफा में बिल्कुल अंधेरा होना चाहिए।
12 दिसंबर
दिन के सारे काम दिन के साथ ही बीत गए, अब मैं यहाँ हूँ और ये रही रात। युद्ध की रातें कितनी लंबी होती हैं! और इनका कोई अंत नहीं दिखता। मानो मैं जंगल में चल रहा हूँ, मानो सदियों से सफ़र कर रहा हूँ। जंगल की खामोशी और सदियों का सन्नाटा। सोते हुए कस्बों में कुत्ते, जंगल में सियार। उनकी आवाज़ें दुनिया की नींद को नहीं खलल डालतीं, बल्कि उसे और गहरी बना देती हैं। सोते हुए कस्बे, सोई हुई सदियाँ, सोता हुआ जंगल, सब किसी भी पल जाग सकते हैं। जैसे वे मेरे अंदर जागने लगे हैं—
...मैं लंबी यात्रा से थक गया था। चलते-चलते मैं लड़खड़ा गया। एक पेड़ के नीचे, तेंदुए की खाल पर, अपने शानदार लंबे बालों को आपस में गुंथे हुए, आँखें बंद किए, साँसें नियंत्रित करते हुए, वह वहाँ बैठा था, मानो जंगल के बीचोंबीच अपनी शाखाओं से लिपटा हुआ कोई पुराना बरगद का पेड़ हो। उसके सामने नंदी बैल खड़ा था, और उसके गुंथे हुए बालों में एक कबूतरी ने घोंसला बनाया था और अपने अंडों पर बैठी थी; राजा को आते देख वह पंखों की फड़फड़ाहट के साथ उड़ गई। उसने अपनी चमकीली पलकें उठाईं और राजा को देखकर पूछा, "हे राजा, क्या आप लेंगे या देंगे?"

मैं लड़ूंगा। अगर मैं सह सकता हूं तो सहूंगा, अगर मुझे देने के लिए मजबूर किया गया तो मैं दूंगा।
आप कैसे लड़ेंगे?
“वीरों की तरह मैं भी लड़ूंगा। मैं अपने धनुष में तीर चढ़ाऊंगा और दुश्मन पर टूट पड़ूंगा।”
“कौन सा धनुष और कौन से बाण?”
"बुद्धि का धनुष और प्रश्नों के बाण।"
“फिर अपना धनुष उठाओ और तीर चलाओ।”
“बोलो: किस चीज की कभी कमी नहीं होती?”
“हे राजा! आठ चीजों से कभी आठ चीजों का पेट नहीं भरता।”
"वे कौन सी आठ चीजें हैं जिनकी कभी भी तृप्ति नहीं होती?"
सागर नदियों के जल का; अग्नि ईंधन का; स्त्री यौन सुख का; राजा प्रभुत्व का; धनी व्यक्ति धन का; विद्वान ज्ञान का; मूर्ख व्यक्ति मूर्खता का; अत्याचारी उत्पीड़न का।
यह सुनकर राजा ने उनके चरण स्पर्श किए। “हे महान ऋषि, आप पर कृपा हो; मैं आपको सौ गायें भेंट करता हूँ।”
मैं उपहार स्वीकार करता हूँ। कुछ और मांगिए।
“हे महान ऋषि, मैं कैसे चलूँ?”
सूर्य के प्रकाश में चलो।
और जब सूरज डूब जाता है?
फिर चांद की रोशनी में चलो।
और जब चाँद डूब जाता है?
फिर एक दीपक जलाओ और उसकी रोशनी में चलो।
और जब लैंप बुझ जाए?
“फिर अपने भीतर के प्रकाश का दीपक जलाओ और उसके प्रकाश में चलो।”
राजा ने फिर उनके चरणों को छुआ। “हे महान ऋषि, आप पर कृपा हो; मैं आपको सौ और गायें भेंट करता हूँ।”
राजा ने फिर से अपना धनुष उठाया। उसने बाण चलाना शुरू ही किया था कि ऋषि ने कहा, "राजा, अब रुक जाइए।"
मुझे क्यों रुकना चाहिए?
क्योंकि इस दुनिया में गायें कम हैं और सवाल बहुत सारे हैं।

...मैंने उसकी तरफ देखा, उसने मेरी तरफ देखा: "तुम क्या चाहते हो?"
"शांति।"
“शांति?” उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा। “अस्तित्व के इस सागर में, शांति?” मैं उसे घूरता रहा। कबूतर का घोंसला खाली था। उसने अपना सिर झटका, जिससे अंडे गिरकर टूट गए। सायरन—फिर कुत्ते जाग जाएँगे—
13 दिसंबर
"यह खबर है या अफवाह?"
“महाराज! यह पुष्ट खबर है। सातवां बेड़ा रवाना हो चुका है।”
"वास्तव में?"
“सचमुच। यह बंगाल की खाड़ी में प्रवेश करने ही वाला है। अब युद्ध का रुख बदलने वाला है।”
शिराज में, नाज़िरा की दुकान पर, हमारे घर में जहाँ ख्वाजा साहब अब्बा जान को पल-पल की खबरें सुनाते हैं, हर जगह लोग अमेरिका के सातवें बेड़े के बारे में चर्चा कर रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे सूखे धान के अंकुर भी बारिश महसूस कर रहे हों। मुझे याद है कि मैंने इस विषय पर कहीं एक पोस्टर देखा था। कहाँ? किस दीवार पर? मुझे शहर की अलग-अलग दीवारें याद आ रही हैं। कौन सी दीवार थी वो? मैं इधर-उधर घूमता हूँ, एक के बाद एक दीवार देखता हूँ—तो ये वही दीवार थी!
जामा मस्जिद की दीवार पर एक बड़ा सा पोस्टर लगा है जिस पर तलवार और ढाल का चित्र बना है। इसमें खबर दी गई है कि फारसी सेना निकल पड़ी है और लगभग जहानाबाद पहुँच चुकी है। लोग इस तरह जमा हैं मानो जहानाबाद के सभी लोग वहीं इकट्ठे हो गए हों।
“दोस्त, यह किस तरह का अखबार है? इसमें क्या खबरें छपती हैं?”
"जी महोदय, खबर बिल्कुल स्पष्ट है—फ़ारसी सेना पूरी गति से आ रही है। आप उन्हें यहाँ पहुँच चुका मान सकते हैं; अंग्रेजों के दिन अब गिने-चुने हैं।"
"सच में नहीं?"
"जी महोदय, आप इसे स्वयं पढ़ सकते हैं।"
“सच में? फिर तो खूब लड़ाई-झगड़ा होगा।”
"जी हां, महोदय, ऐसा अवश्य होगा।"

लेकिन मेरे प्यारे दोस्त! अंग्रेज कोई आसान शिकार नहीं हैं। गंगा उनके पैरों तले बहती है!
“जी हाँ, महोदय! लेकिन फिर, फारस भी कोई पतली धारा नहीं बहाता! अंग्रेज अपनी माँ का दूध पीने के लिए तड़पने लगेंगे!”
जहानाबाद में खुशियों की लहर दौड़ गई, सूखे खेतों पर बारिश होने लगी। लोग अपनी खुशी को मुश्किल से रोक पा रहे थे, वे इतराते हुए चल रहे थे।
अरे बेवकूफ, आज तो तू सैनिक की तरह कपड़े पहने है! कमीने, तू खुद को कितना बड़ा समझता है, क्या तेरी कोई गर्लफ्रेंड है?
"अरे बकवास करने वाले, तुम्हें इतनी अक्ल भी नहीं है कि बारिश से बचने के लिए अंदर आ जाओ!"
"अगर मुझे नहीं पता, तो मुझे बताओ। क्या तुमने फिर से कोई मनगढ़ंत कहानी बना ली है?"
"अरे मूर्ख, फारसी आ रहे हैं!"
"नहीं!"
"अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है तो जामा मस्जिद जाइए, वहां एक सूचना लगी हुई है।"
“फारसी लोग यहाँ किसलिए आएंगे, यार?”
अरे यार, तुम्हारे सिर पर कुछ गिर गया होगा! अरे, वे तो अंग्रेजों से भिड़ने आ रहे हैं!
मैं अपने सिर की कसम खाता हूँ।
मैं तुम्हारी गर्दन की कसम खाता हूँ। अब उन कमीने अंग्रेजों को उनके कर्मों का फल मिलेगा!
"तो फिर हम भाग्यशाली हैं।"
"हम भाग्यशाली हैं, और हमारी किस्मत बहुत अच्छी है।"
"अरे, ऊदबिलाव! क्या तुम्हें अपनी दूरबीन इस्तेमाल करने का मौका मिलेगा?" "अगर मौका मिला तो मेरे लिए तांबे का एक टुकड़ा तैयार रखना! मैं उन कमीने अंग्रेजों की कलाई तोड़ दूंगा!"

•

लेकिन मैं यहाँ ज्यादा देर नहीं रुक सकता था। कर्फ्यू का समय होने वाला था। मैंने एक स्कूटर-टैक्सी चालक को रोका।
उन्होंने कहा, "सर, मुझे अंधेरे में ही वापस आना होगा।"

यार, मैं तुम्हें मीटर में दिखाए गए से ज़्यादा दूंगा।
"ठीक है, अंदर आ जाओ।"
स्कूटर-कैब चालू करते ही उसने बोलना शुरू किया, "सर, युद्ध की क्या खबर है?" कोई ताजा खबर नहीं है।
“तो मैं ही तुम्हें बताता हूँ! चीनी सेना आ गई है।”
"कौन कहता है?"
“एक सज्जन मेरी स्कूटर-कैब में सवार थे, उन्होंने मुझे बताया। यह पक्की खबर है, महोदय। चीनी सेना सभी रात्रि युद्ध लड़ती है।”
"रात वालों में ऐसी क्या खास बात है?"
दिन में तो उन्हें पहचान लिया जाता है। रात में वे भेस बदलकर लड़ते हैं।

•

... "दोस्त, ये हरे रंग की पोशाक वाली महिला कौन है?"
“हरे रंग की पोशाक वाली एक महिला। मैंने उसके बारे में सुना है। ‘यह एक नया फूल खिल रहा है!’”*
“मित्र, तुम कहते हो कि तुमने उसके बारे में सुना है। ऐसे लोग हैं जिन्होंने उसे देखा है। वह दुश्मन पर अदृश्य शक्ति से बम की तरह टूट पड़ती है। वह खाकी वर्दी वालों को गाजर-मूली की तरह टुकड़े-टुकड़े कर देती है! जब युद्ध जीत लिया जाता है, तो वह गायब हो जाती है। उसके बाद, उसके वस्त्र का किनारा भी दिखाई नहीं देता।”
"जी हां, महोदय! यह एक अजीब मामला है।"
“ओह महोदय! आप हरी महिला की बात कर रहे हैं। मैं आपको इसके बारे में बताता हूँ। आपके विनम्र सेवक ने उसे अपनी आँखों से देखा है।”
"सचमुच, मेरे दोस्त?"
“महोदय, झूठ बोलने वाला हर कोई काफ़िर है। जब काबुली द्वार चौकी पर लड़ाई चल रही थी, तब, महोदय, मैंने भी मृत्यु को गले लगा लिया और युद्ध में कूद पड़ा। मैं अल्लाह के चुने हुए सिंह, अली की कसम खाता हूँ, मैंने उन खाकी सैनिकों का चूर-चूर कर दिया! जब हम लड़ रहे थे, तभी मैंने देखा कि एक महिला सिर से पैर तक हरे वस्त्रों में लिपटी हुई, चेहरे पर नकाब डाले, हाथ में तलवार लिए, घोड़े पर सवार होकर खाकी सैनिकों की कतारों पर टूट पड़ी! मैं दंग रह गया: ये महिला कौन हो सकती है! महोदय, उसने तो चमत्कार कर दिया। उसने अपनी तलवार से ऐसा प्रहार किया कि सिर पके हुए अनाज की तरह उड़ गए! उसने उन

कमीनों को रोटी की तरह टुकड़ों में काट डाला। खाकी सैनिक दुम दबाकर भाग गए। जब लड़ाई खत्म हुई और मैंने मुड़कर देखा—तो महोदय, वह गायब हो चुकी थी। मैंने अपनी आँखों से इधर-उधर खोजा, लेकिन उसका कोई निशान नहीं मिला।” 14 दिसंबर
आज मैं शहर में घूम रहा हूँ। हालात अच्छे नहीं लग रहे। शहर की हालत खराब है। चौकियाँ वीरान पड़ी हैं। चौकियों से ज़्यादा सैनिक बाज़ारों में नज़र आ रहे हैं। मेरठ से आग की लपटों की तरह निकले पूर्वी लोग अब ठंडे पड़ गए लगते हैं। वे तरह-तरह की मिठाइयाँ खाते हैं, गांजा पीते हैं, उन्हें जलेबी बहुत पसंद है। हर मिठाइयाँ बेचने वाले से वे अपने नाश्ते के साथ जलेबी मांगते हैं। शहर के मिठाइयाँ बेचने वाले पूर्वी लोगों से तंग आ चुके हैं। बख्त खान के वीर योद्धाओं की बात करें तो युद्ध के मैदान में अपनी वीरता दिखाने का मौका उनके हाथ से निकल गया है।
राज दरबार, जो कभी मोतियों की वर्षा करता था, अब दुर्भाग्य की छाया में डूबा हुआ है। वहाँ षड्यंत्रों का जाल बिछाया गया है, भरोसेमंद लोग अविश्वासी बन गए हैं। दरबार की सुंदरियाँ अभी भी मौजूद हैं, लेकिन वे अजनबियों को देखकर पलकें झपकाती हैं। युद्ध के मैदान का योद्धा बख्त खान दरबार में आया और उसे मात दे दी गई। सेनापति पद का बँटवारा हो चुका है। अब तो मिर्ज़ा मुगल का भी इसमें हिस्सा है। बहुत सारे रसोइये मिलकर काम बिगाड़ देते हैं। और सचमुच मिर्ज़ा गौस इसमें कूद पड़ा है। तैमूरिद वंश का जोश अब केवल शेखी बघारने और डींग मारने तक ही सीमित रह गया है। कभी-कभी यह जोश उन महिलाओं को संतुष्ट करने के लिए काफी होता है जो उनके हाथों में आ गई हैं। मिर्ज़ा गौस अपने युद्ध कौशल का बहुत बखान करता है, और बहुत कम लड़ता है; लेकिन उसकी शेखी से भी कहीं अधिक, महाराज की यह कविता हवा में गूँज रही है:
तोपें ऐसा नहीं कर सकतीं; इसलिए अपनी जान का ख्याल रखें।
ऐ ज़फ़र! भारत की तलवार का अंत हो गया!*
भगवान इस शहर पर दया करें। मैंने लाल किले की दीवारों को पीला पड़ते देखा है।
दिल्ली के सीधे-सादे लोग अब भी फारसी सेना का इंतजार कर रहे हैं।
15 दिसंबर

जैसे ही मैंने दरवाजे से बाहर कदम रखा, इतना ज़ोरदार धमाका हुआ कि सारे दरवाजे और दीवारें कांप उठीं। ऐसा लगा जैसे किसी ने सड़क पर ही बारूद फोड़ दिया हो। आगे बढ़ने पर, चौरी बाज़ार में मैंने एक नाश्ते की दुकान के आसपास पूर्वी लोगों की भीड़ देखी। कुछ लोग नाश्ते के लिए चिल्ला रहे थे, तो कुछ जलेबी के लिए शोर मचा रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि धमाके का कारण क्या था। “तुमने क्या कहा?” एक ने मुट्ठी भर मिठाइयाँ मुँह में ठूँसते हुए पूछा। "अभी-अभी एक धमाका हुआ, मानो पास ही में तोप दागी गई हो।"
"किसी कमीने ने बारूद में विस्फोट कर दिया होगा," दूसरे ने लापरवाही से कहा।
“देखो, तुम!” तीसरे ने गुस्से से कहा। “यह सब युद्ध का सामान भाड़ में जाए। हमें अपना पेट भरने दो। जाओ, यहाँ से दफ़ा हो जाओ!”
मैं शर्मिंदा महसूस करते हुए आगे बढ़ा। क्या ये वही लोग हैं जो दिल्ली के सिंहासन की रक्षा करेंगे?
मैं हरे-भरे शाह के मकबरे और जामा मस्जिद के बीच खड़ा होकर आकाश की ओर देखता हूँ। हे मेरे प्रभु! जब महामहिम सम्राट, ईश्वर की छाया, यहाँ उपस्थित हैं, तो मस्जिद के मीनारों और किले के बुर्जों पर कांपती हुई यह छाया मुझे कैसी दिखाई दे रही है?
एक नग्न फकीर, जिसकी दाढ़ी सफ़ेद थी, लंबे, गंदे, उलझे हुए बाल थे और आँखें धधकते अंगारों जैसी थीं, बेतहाशा चिल्लाया, "दूर हटो, क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा कि यहाँ लाशें पड़ी हैं?"
“लाशें? कौन सी लाशें? वे कहाँ हैं?” मैंने चारों ओर एक नजर डाली।
फ़कीर चुप हो गया। वह बुदबुदाया, मानो खुद से बात कर रहा हो, “अपना मुँह बंद रखो। तुम्हें किसने कहा है कि तुम भगवान के रहस्यों को उजागर करो?” फिर वह हरे-भरे शाह के मकबरे की ओर चल पड़ा। जैसे ही वह मकबरे के पास पहुँचा, वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया।
16 दिसंबर*
...आज 14 सितंबर* है, कयामत का दिन। 1957 का सबसे क्रूर दिन। जब मैं घर से निकला, तो मैंने शहर को पूरी तरह अस्त-व्यस्त देखा। मैं वहाँ अचंभित खड़ा था—तभी अचानक एक ज़ोरदार धमाका हुआ, मानो सौ तोपों ने एक साथ दागी हों। मैं स्तब्ध रह गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं कहाँ जाऊँ। मेरे पैर अपने आप मुझे लाल किले की ओर ले गए।

जब मैं किले के द्वार पर पहुँचा, तो मैंने देखा कि द्वार बंद है, ताला लगा हुआ है, न कोई द्वारपाल है, न कोई चौकीदार। द्वार के पास एक तोप लगी हुई है, लेकिन उसे चलाने वाला कोई नहीं है। मेरा दिमाग चकरा गया; यह बहुत अजीब था।
शाहजहाँ का किला बंद है—? आखिरकार कोई दिखाई दिया। मैंने उसे पहचान लिया।
यह मोती-बहुल दरबार का द्वारपाल है। वह कहाँ भाग रहा है? मैंने उसे रोका। वह भागता रहा और बोला, “अगर तुम अपनी भलाई चाहते हो, तो यहाँ से भाग जाओ। खाकी वर्दी वालों की एक टुकड़ी आ रही है।”
“और महामहिम ईश्वर की परछाई हैं?”
“ईश्वर की छाया महामहिम हुमायूँ के मकबरे पर विराजमान हैं। राजकुमार और राजकुमारियाँ इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। जहाँ भी उन्हें शरण मिली, उन्होंने वहीं शरण ली है। किला खाली है, उसमें खोखली सी आवाज़ गूंज रही है।”
मैं पीछे मुड़ा। गलियाँ एकदम शांत थीं, लेकिन दूर से तोपों के चलने की आवाज़ आ रही थी। कभी एक तरफ, कभी दूसरी तरफ। कभी ढके रास्तों से, कभी खुली सड़क से। कभी सड़क एक छोर से दूसरे छोर तक खाली होती थी। कभी डरे हुए लोग, अपनी बाहों के नीचे छोटे-छोटे गठ्ठे दबाए, अपने परिवार के साथ भाग रहे थे। चौरी बाज़ार में मैंने एक अलग ही नज़ारा देखा। लोग लाठियाँ और बाँस के डंडे लिए खड़े थे। एक आदमी पलंग के फ्रेम से एक तख्ता लेकर घर से निकला और आकर भीड़ में शामिल हो गया। दूसरा अपने घर से पाइप लेकर आया और सड़क के बीचोंबीच मजबूती से खड़ा होकर अपनी मांसपेशियों को दिखा रहा था।
मैंने उनके पास जाकर चुपके से पूछा, “प्रिय मित्रों, आपका इरादा क्या है?” फूंक मारने वाले ने गरजते हुए कहा, “लड़ने का!”
मैंने पहले पाइप पकड़े हुए व्यक्ति को हैरानी से देखा, फिर पलंग की पट्टी पकड़े हुए व्यक्ति को, और फिर आगे बढ़ गया। फिर मेरी हैरानी कुछ देर के लिए शांत हो गई। ठीक है, लड़ाके पाइप, चिमटे और पलंग की पट्टियों से भी लड़ सकते हैं। जो लड़ना नहीं चाहते, वे भरी हुई तोपें और राइफलें छोड़कर भाग जाते हैं।
जामा मस्जिद के पास से गुज़रते हुए मैं रुक गया। मैं हिल भी नहीं पा रहा था। चारों ओर लाशों का ढेर लगा हुआ था। हरे-भरे शाह के मकबरे की तरफ से एक भयानक आवाज़ आई: “तुम्हें यहाँ रुकने के लिए किसने कहा? चले जाओ!” मैंने उस तरफ देखा। वही नंगा, पागल फ़कीर था। मुझे कंपकंपी छूट गई। तेज़ी से चलते

हुए मैं आगे बढ़ गया। उसके बाद मैंने इधर-उधर नहीं देखा। मैं दौड़कर घर चला गया।

•

घर पर अम्मी जान फूट-फूटकर रो रही थीं। मुझे देखकर उनका दुख और बढ़ गया। “बेटा, बतूल का क्या होगा?”
अब्बा जान वहाँ धैर्य और गंभीरता से बैठे रहे। उन्होंने मेरी ओर देखा, कुछ देर हिचकिचाए, फिर बोले, "क्या यह खबर सच है?"
मैं क्या जवाब दे सकता था? मुझे उतना ही पता था जितना बाकी सबको पता था। मैंने सोचा, फिर कहा, "मैं इरफान के दफ्तर जा रहा हूँ। वहाँ जाकर मुझे असली खबर पता चल जाएगी।"
“तो जाओ, वापस आओ और हमें खबर दो।”
रास्ते में मुझे जिनसे भी मुलाकात हुई, जिनसे भी मैंने पूछा, हर कोई मेरी ही तरह जानकार और अनजान था। किसी के पास भी कोई पुख्ता खबर नहीं थी। और हर कोई जानता था कि ऐसा हुआ है, लेकिन किसी को भी इस पर यकीन नहीं था। यकीन और अविश्वास के बीच फंसा हुआ, घर से शिराज जाते समय मैंने हज़ार बार सोचा कि यह खबर महज़ एक अफवाह है, और हज़ार बार सोचा कि यह अफवाह ही असली खबर है। मुझे लगा था कि इरफान उस समय शिराज में होगा। वह वहीं था।
“इरफान! क्या तुम अपने दफ्तर से आ गए हो?”
“हां। क्या आप समाचार सुनना चाहते हैं?”
"हाँ!"
“पूछो मत। किसी को भी असल हालात का पता नहीं है। हमने ढाका से संपर्क करने की बहुत कोशिश की, लेकिन हम सफल नहीं हो पाए।”
"बेचारे ज़ाव्वर की हालत कैसी होगी, यह कहना मुश्किल है।"
"उन लोगों को गवर्नर हाउस से इंटरकॉन्टिनेंटल होटल में स्थानांतरित कर दिया गया।"
और मेरी मां अपनी बहन को लेकर चिंतित हैं।
"उसे चिंता करने का अच्छा कारण है, लेकिन हम क्या कर सकते हैं?"
“आप सही कह रहे हैं।” मैं चुप हो गया।
शिराज वाइनरी उस समय पूरी भरी हुई थी, लेकिन कोई चाय नहीं पी रहा था। सब आपस में सवाल पूछ रहे थे। वे उन चीजों के बारे में पूछ रहे थे जो उन्हें

[illegible] [illegible] [illegible] [

आठ
अब उसका सारा ध्यान उसके पैरों पर केंद्रित था। आम तौर पर चलते समय वह बहुत सी बातों के बारे में सोचता था, और सोचते-सोचते वह कहीं न कहीं पहुँच जाता था। अब वह केवल और केवल चल रहा था। वह तेज़ कदमों से चल रहा था; उसके कदमों की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि उसे कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, या शायद कोई और आवाज़ थी ही नहीं। वह खाली शहर में अकेला चल रहा था, और पूरी हवा उसके पैरों की आवाज़ से गूंज रही थी। उसके कदमों की आवाज़ ने स्कूटर-टैक्सी की आवाज़ को भी दबा दिया: जब स्कूटर-टैक्सी सड़क पर उसके पास आकर धीरे-धीरे उसके साथ चलने लगी, तो उसे एहसास हुआ कि स्कूटर-टैक्सी खाली है और ड्राइवर उसे देख रहा है। "नहीं," उसने कहा, और ड्राइवर ने गति बढ़ा दी और चला गया। जब भी मुझे कहीं जाना होता है, तब स्कूटर-टैक्सी पंखों वाले घोड़ों की तरह तेज़ी से निकल जाती हैं, कोई रुकती नहीं। और आज, जब मुझे कहीं जाना नहीं है, तो हर कदम पर एक खाली स्कूटर-टैक्सी मेरे साथ खड़ी है, मानो मुझे बुला रही हो, जैसे कि मैं शहर का इकलौता यात्री हूँ। उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और चारों ओर देखा, फिर दूर तक नज़र डाली। आस-पास या दूर कहीं भी कोई नज़र नहीं आ रहा था। सब लोग कहाँ चले गए? उसने एक बार फिर चारों ओर का जायज़ा लिया। उसने कुछ छोटे-छोटे समूहों को स्थिर खड़े या धीरे-धीरे चलते हुए, आपस में बातें करते देखा, जिनके चेहरे मुरझाए और धंसे हुए थे। उनके चेहरे इतने मुरझाए और धंसे हुए क्यों हैं? डर से?
चलते-चलते उसकी नज़र एक दीवार पर लगे बड़े पोस्टर पर पड़ी। घोड़े पर सवार, हाथ में तलवार लिए, खून से लथपथ चेहरा, “ये धर्म के योद्धा, ये आपके रहस्यमय सेवक।”* इस पोस्टर ने उस पर कोई असर नहीं डाला: अब यह तस्वीर और शब्द दोनों ही बेजान हो चुके थे। अगले मोड़ पर वही पोस्टर, वही तस्वीर, वही शब्द। एक बेजान तस्वीर, बेजान शब्द। उसके मन में एक रैली मैदान का दृश्य उभर आया। हर जगह बैनर लटके हुए थे, और बड़े-बड़े पोस्टर बैनरों की तरह हवा में लहरा रहे थे। उस समय उनके शब्द और चित्र कितने सजीव लग रहे थे! रैली में अफरा-तफरी

मच गई। रैली मैदान खाली पड़ा था, लेकिन पोस्टर अब भी हवा में लहरा रहे थे। उन पर लिखे शब्द, उन पर छपी तस्वीरें—कितनी बेजान लग रही थीं। कई दिनों बाद भी किसी ने पोस्टर नहीं उतारे। एक कार उसके पास से गुजरी। उसके बम्पर पर लिखा था “भारत को कुचल दो।” शायद कार मालिक नारे को भूल गया था? अगर नहीं, तो—अगर नहीं, तो क्या? उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। सच तो यह था कि उसका मन बिल्कुल खाली था, खाली। उसका मन और उसका हृदय दोनों। सुबह से ही उसे सोचने और महसूस करने की तीव्र इच्छा हो रही थी। उसे अभी तक समझ नहीं आया था कि किसी बड़ी आपदा को कैसे महसूस किया जाता है। सुबह वह काफी देर तक अपने कमरे में बंद रहा और कुछ महसूस करने की कोशिश करता रहा। जितना अधिक वह महसूस करने की कोशिश करता, उतना ही वह सुन्न पड़ जाता। तभी ख्वाजा साहब आए और जब उन्हें बुलाया गया तो उन्हें ड्राइंग रूम में जाकर बैठना पड़ा। ख्वाजा साहब हमेशा सोचते थे कि जाकिर बाकी लोगों से ज्यादा जानता है। आज भी उन्होंने इसी शक के चलते उसे बुलवाया था। लेकिन वह क्या जानता था? वह तो वही जानता था जो बाकी सब जानते थे। आज तो ख्वाजा साहब ने भी उससे ज्यादा सवाल नहीं पूछे। आज तो उसका सिर्फ एक ही सवाल था।
“मौलाना साहब, ये सब क्या हो गया है?”
अब्बा जान ने ख्वाजा साहब के शोक भरे प्रश्न का उत्तर शुष्क स्वर में दिया: “ख्वाजा साहब, यह संसार हिसाब-किताब का स्थान है। मनुष्य जो बोता है वही काटता है।” फिर, चुपचाप, उन्होंने अपना हुक्का पीना शुरू कर दिया।
ख्वाजा साहब चुपचाप बैठे रहे। फिर उन्होंने कहा, “मौलाना साहब, जब मैं रेडियो सुन रहा था, तो मेरा रोने का बहुत मन कर रहा था। लेकिन मैं बूढ़ा हो चुका हूँ; छोटे बच्चों के सामने रोना मेरे लिए ठीक नहीं है। मैं वहीं बैठा रहा, खुद को संभाले रखा। आखिर में मैं उठा और कमरे से बाहर निकलकर आँगन में एक पेड़ के नीचे कुर्सी लगाकर बैठ गया। मेरे पास कोई नहीं था। सब लोग अंदर बैठे रेडियो सुन रहे थे। मेरा सारा संयम टूट गया और मैं रो पड़ा।” ख्वाजा साहब की आँखें फिर भर आईं, लेकिन उन्होंने खुद को संभाला। वे चुपचाप बैठे रहे। फिर एक गहरी साँस लेकर उठे, थोड़ी देर रुके और फिर बोले, “मौलाना साहब! मेरे बड़े बेटे के लिए दुआ कीजिएगा। उसकी माँ कल रात से लगातार रो रही है।”
“ख्वाजा साहब! उनसे कहिए कि वे धैर्य रखें। सर्वशक्तिमान अल्लाह धैर्यवानों को धैर्य का फल देता है। ‘निःसंदेह अल्लाह धैर्यवानों के साथ

है’।”* फिर उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और मंद-मंद कुछ बुदबुदाने लगे। उन्होंने अपना हुक्का एक तरफ रख दिया था। उनकी आँखें बंद थीं और होंठ हिल रहे थे। ज़ाकिर उन्हें घूरता रहा; वह उठकर चुपचाप खिसक जाना चाहता था, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसके पैरों में ताकत नहीं बची हो।
अब ऐसा लग रहा था मानो उसकी सारी ताकत उसके पैरों में समा गई हो। तेज़ी से चलते पैर—इस समय वही उसका अस्तित्व थे। एक सड़क से दूसरी सड़क, दूसरी से तीसरी सड़क। दीवारों पर लगे पोस्टर पढ़ते हुए। ऐसा लग रहा था मानो वह पूरे शहर को छान मारेगा और शहर की दीवारों पर लिखी हर बात पढ़ डालेगा, चाहे वो बड़े-बड़े पोस्टर हों, चाक और कोयले से लिखे नारे हों, या गालियां और अपमान। लेकिन बिना किसी भावना के। बिना किसी ऊब के उसने एक ही संदेश वाले इतने सारे पोस्टर पढ़े, और कार के बंपरों पर, कार की खिड़कियों पर अंग्रेजी में लिखे इतने सारे दो-शब्दों के नारे पढ़े। उसे ऐसा लग रहा था मानो वो नारे नहीं पढ़ रहा हो, बल्कि मरी हुई मक्खियों पर चल रहा हो। उसे जी मिचलाने लगा। दीवारों से नज़रें हटाकर उसने आस-पास से गुज़र रहे लोगों को देखना शुरू किया। सबके चेहरे, मुरझाए और ढीले, एक जैसे दिख रहे थे। भावहीन। उनमें बस डर की हल्की सी झलक थी। वे मानो परछाईं जैसे थे, जैसे भारहीन हों। क्या मेरा भी कोई भार है? उसने अचानक सोचा, और संदेह में पड़ गया। तेजी से चलते हुए, वह अचानक धीमा हो गया और हर कदम नापने लगा। वह अपने शरीर में भार महसूस करने की कोशिश कर रहा था। क्या मुझमें भार है या नहीं? कब ऐसा होता है कि मनुष्य भारहीन हो जाता है, और कब ऐसा होता है कि उसका शरीर उसके लिए बोझ बन जाता है, और उसका सिर उसके कंधों पर भारी बोझ बन जाता है? तभी एक और स्कूटर-कैब उसके बगल में आकर कछुए की गति से चलने लगी। स्कूटर-कैब खाली देखकर वह अनमने ढंग से उसमें चढ़ने लगा, तभी उसके मन में एक विचार आया: मैं कहाँ जाना चाहता हूँ? कहीं नहीं। जब मुझे कहीं जाना होता है, तो हर स्कूटर-कैब भरी होती है और हर खाली स्कूटर-कैब सड़क के दूसरी ओर से तेजी से निकल जाती है। और अब, जब मुझे कहीं नहीं जाना है, तो वे मेरे सिर पर बोझ बनकर बैठी हैं। "मैं नहीं जा रहा।" स्कूटर-कैब ने रफ्तार पकड़ी और सड़क पर आगे बढ़ गई।
उसने अपने पैरों को कोई निर्देश नहीं दिया था। वह बस चलता जा रहा था, लंबे- लंबे कदम उठा रहा था। लेकिन "मुल्ला तो मस्जिद तक ही जाता है।" इधर-उधर

भटकने के बाद उसे वहीं आना पड़ा। इरफान पहले से ही वहाँ मौजूद था, उसके सामने चाय का प्याला था और होठों के बीच एक सिगरेट लटक रही थी।
"चाय?"
मैंने आज बहुत पैदल यात्रा की है।
"क्यों?"
"मैंने अभी किया।"
"क्या आप थके हैं?"
"नहीं।"
"तब?"
खैर, मुझे चाय तो पीनी ही पड़ेगी।
इरफ़ान ने और चाय मंगाई। अब्दुल बहुत जल्दी चाय लेकर आया, उसे नीचे रखा और बिना कुछ कहे चला गया।
वह और इरफान आमने-सामने बैठकर चाय पी रहे थे, मानो उनके बीच कोई संबंध ही न हो। चाय पीते-पीते उनकी नज़र एक मुड़े-तुड़े, सिकुड़े अखबार पर पड़ी और वहीं ठहर गई। वही खबरें और वही सुर्खियाँ थीं जो उन्होंने घर पर पढ़ी थीं। उस समय सुर्खियाँ उन पर दुश्मनों की तरह टूट पड़ती थीं। लेकिन अब ये सारी भारी-भरकम, मोटी और सनसनीखेज सुर्खियाँ बेजान शब्दों के ढेर जैसी लग रही थीं। लेकिन आखिर खुद को व्यस्त रखने के लिए उन्हें कुछ तो करना ही था। उन्होंने बेमन से कुछ सुर्खियों पर नज़र डाली। किसी तरह उन्होंने एक खबर पढ़ना शुरू किया। वे पढ़ते रहे, बिना कुछ समझे। उनकी आँखें व्यस्त थीं, उनका मन कहीं और था। आखिरकार उनकी रुचि पूरी तरह खत्म हो गई। अखबार को एक तरफ रखकर उन्होंने इरफान की ओर देखा, जिसने चाय खत्म कर ली थी और सिगरेट जला ली थी। उन्होंने भी मेज पर रखे पैकेट से एक सिगरेट निकाली, होठों के बीच रखी और जला ली।
यार, कुछ बोलो।
क्या बात करना इतना जरूरी है?
“ज़रूरी तो नहीं है, लेकिन फिर भी…” बोलते हुए उन्होंने चारों ओर नज़र डाली। कुछ मेज़ों पर लोग बैठे थे। एक मेज़ पर एक आदमी अकेला बैठा चाय पी रहा था और बड़े ध्यान से अख़बार पढ़ रहा था। पास ही एक और मेज़ पर एक आदमी चाय खत्म करके कहीं खोया बैठा था। रसोई के पास एक मेज़ के चारों ओर कुछ लोग

बैठे थे। वे बातें कर रहे थे, लेकिन बहुत धीमी आवाज़ में और रुक-रुक कर। चाय पीने वालों के बावजूद, आज शिराज कितना शांत था!
सफेद बालों वाला आदमी हमेशा की तरह अंदर आया। वह उनकी मेज की ओर बढ़ा, फिर अपना इरादा बदल लिया और काउंटर के पास अपनी मेज पर जाकर बैठ गया। अब्दुल पास आया और पूछा, "चाय?"
“हां, चाय।”
"और कुछ?"
"और कुछ नहीं।"
अब्दुल बहुत जल्दी चाय लेकर आया और उसे रख दिया। आज अब्दुल बहुत तेजी से चाय परोस रहा था। वह चाय पीने वालों से बातचीत करने के लिए रुक भी नहीं रहा था।
सफेद बालों वाले उस आदमी की चाय ठंडी हो रही थी, लेकिन वह अब भी अपने सामने की दीवार को घूर रहा था। अचानक उसने अपना सिर झुकाया, अपना चेहरा रुमाल में छिपा लिया और सिसकते हुए जोर-जोर से रोने लगा।
विभिन्न मेजों पर बैठे सभी लोग चुपचाप वहीं खड़े रहे और सफेद बालों वाले उस व्यक्ति को देखते रहे।
इरफान ने कहा, "हमें अब निकलना चाहिए।"
"क्यों?"
मैं हार सहन कर सकता हूँ। मैं भावुकता सहन नहीं कर सकता।
लेकिन इसी बीच सफेद बालों वाला आदमी अचानक रोना बंद कर दिया। उसने रूमाल से अपनी आँखें पोंछीं और चुपचाप चाय पीने लगा।
भावनाओं के इस संक्षिप्त प्रदर्शन के बाद, शिराज वाइनरी फिर से शांत हो गई। जो व्यक्ति चाय पीते हुए अखबार पढ़ रहा था, वह फिर से चाय पीने और अखबार पढ़ने में मग्न हो गया। जो व्यक्ति कुछ देर से कहीं और देख रहा था, उसने और चाय मंगाई, पास की मेज पर पड़ा अखबार उठाया, फिर बैठ गया और उसे पलटने लगा। रसोई के पास वाली मेज के चारों ओर बैठे लोग, जो बातें कर रहे थे, कुछ देर के लिए एकदम चुप हो गए; फिर वे धीमी आवाज़ में बातें करने लगे। सलामत और अजमल अंदर आए और उनके प्रवेश करते ही शिराज का शांत वातावरण कुछ खलल से भर गया। जाकिर और इरफान को घूरते हुए, वे कुर्सियाँ ज़मीन पर घिसते हुए ज़ोर से बैठे और सलामत ने तीखे स्वर में कहा, "चाय मंगवाओ।"

सलामत ने पहले उसकी ओर, फिर इरफान की ओर ध्यान से देखा और कहा, "इस हार के लिए आप लोग जिम्मेदार हैं।"
दोनों में से किसी ने भी कोई जवाब नहीं दिया।
“इरफान! मैं तुमसे कह रहा हूँ, इस हार के लिए तुम जिम्मेदार हो। और तुम भी, जाकिर।”
“कैसे?” ज़ाकिर ने मासूमियत से पूछा।
सलामत ने क्रोध से कहा, “तुम साम्राज्यवादी कठपुतली, क्या तुम मासूमियत का नाटक करते हो और पूछते हो कि कैसे? क्या तुमने कभी नहीं सोचा कि तुम लड़कों को क्या सिखा रहे हो? राजाओं का इतिहास। अफीम की गोलियां! हाँ, और इसके लिए तुम्हारा पिता ज़िम्मेदार है, जो रोज़ मेरे पिता को धर्म की अफीम की गोली खिलाता है! आज भी उसने उन्हें गोली खिलाई। आज मेरे पिता तुम्हारे पवित्र पिता से धैर्य का पाठ सीखने गए! वे कहते हैं, ‘धैर्यवानों के साथ ईश्वर है।’ मैंने कहा, ‘बूढ़े, ये जादू-टोने अब तुम्हें नहीं बचा सकते। हिसाब का दिन आ गया है।’”
इरफान ने क्रोधित सलामत की ओर शांतिपूर्वक देखा और कहा, "तो ऐसा लगता है कि आज तुमने अपने पिता को अपना पिता मान लिया है?"
सलामत ने इरफान को घूरकर देखा। "क्या तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो?"
नहीं, मैं संतुष्टि व्यक्त कर रहा हूँ।
रसोई के पास वाली मेज पर बैठे एक युवक ने उठकर सलामत के पास आकर खड़े होते हुए गुस्से से पूछा, “सलामत साहब! मैंने आपकी पार्टी की रैली में आपका भाषण सुना था, जब आपने बांग्लादेश का समर्थन किया था। आज आपको पछतावा क्यों हो रहा है?”
“माफ़ी मांगनी है?” सलामत ने गुस्से से कहा। “मुझे माफ़ी क्यों मांगनी चाहिए? मैं तो साम्राज्यवादी दलालों को चेतावनी दे रहा हूँ कि वे खेल हार चुके हैं।”
“दूसरे शब्दों में कहें तो, पाकिस्तान मैच हार गया? क्या आप यही कहना चाहते हैं?” युवक की आंखें गुस्से से लाल हो गई थीं।
मैनेजर ने दूर से ही बिगड़ती स्थिति का अंदाजा लगा लिया और जल्दी से वहां पहुंचा। उसने युवक को शांत करने की कोशिश शुरू की: "कृपया अपनी मेज पर बैठ जाइए और अपनी चाय पीजिए।"
नहीं, मुझे पहले पूछने दीजिए कि मेरा दोस्त वास्तव में क्या चाहता है!

मैनेजर ने उस युवक का हाथ पकड़ा और उसे वापस उसकी मेज पर ले आया। फिर आकर बोला, “सलाम साहब, कृपया आज ऐसी बातें न कहें। आज लोगों के दिल बहुत दुखी हैं।”
"किन लोगों के दिल?" सलामत ने दांत पीसते हुए पूछा।
“देखो, मैं तुमसे बहस नहीं करने वाला।” मैनेजर जाते हुए अब्दुल को पुकारा, “अब्दुल! सलामत साहब के लिए चाय ले आओ।”
अब्दुल की ओर से कोई जवाब नहीं आया। वह चाय की ट्रे लेकर पहले ही मेज पर पहुँच चुका था।
“अब्दुल!” इरफान उठते हुए बोला। “चाय का बिल मैं दूंगा।” और सलामत कुछ कह पाता, उससे पहले ही जाकिर और इरफान दोनों शिराज से निकल चुके थे।
शिराज होटल के बाहर फुटपाथ पर भीड़ जमा थी। वे आपस में तीखी बहस कर रहे थे और लोग इकट्ठा होते जा रहे थे। वे किस बात पर बहस कर रहे थे? वह सुन नहीं पा रहा था। उसे बस एक ही शब्द बार-बार सुनाई दे रहा था—“गद्दार।” और फिर अचानक दो युवक एक-दूसरे पर टूट पड़े।
वह और इरफान बिना रुके, बिना किसी बात पर ध्यान दिए आगे बढ़ते रहे और कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे। फिर उन्होंने कहा, "सलामत सही थे।"
“वह सही क्यों था?” इरफान ने गुस्से से उसकी ओर देखा।
"वह सही कह रहा था कि इस हार के लिए मैं ही जिम्मेदार हूं।"
इरफ़ान ने उसे घूरकर देखा और फिर कहा, "ज़ाकिर! कहीं तुम गमाल अब्देल नासिर तो नहीं बनना चाहते?"
“नहीं, मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? एक कायर और डरपोक शिक्षक गमाल अब्देल नासिर कैसे बन सकता है?”
"तब?"
“इरफान, बात कुछ ऐसी है कि हार भी एक तरह का दायित्व होती है। लेकिन आज इस देश में सब एक-दूसरे पर दोष मढ़ रहे हैं, और समय बीतने के साथ-साथ वे ऐसा और भी ज्यादा करेंगे। हर कोई यह साबित करने की कोशिश कर रहा है, और करता रहेगा, कि वह इसके लिए जिम्मेदार नहीं है। मुझे लगा कि किसी को तो इस दायित्व को निभाना ही चाहिए।”
"अब तक आपकी सोच सही है, लेकिन एक और बात है जिस पर विचार करने की जरूरत है।"
"क्या?"

"इस जिम्मेदारी को उठाने के लिए, कम से कम गमाल अब्देल नासिर जैसा व्यक्ति होना चाहिए।"
वह सोचने लगा, फिर बोला, "तुम सही कह रहे हो। भरोसा तो बहुत बड़ा है, लेकिन उसे निभाने वाला छोटा है।"
इसके बाद काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। वे काफी देर तक साथ-साथ चलते रहे, लेकिन बिल्कुल अलग-अलग। फिर इरफान अचानक रुक गया। "ठीक है यार, मैं जा रहा हूँ।"
“कहाँ? तुम्हारी तो रात की ड्यूटी है।”
“कल मिलते हैं।” और तुरंत ही वह दूसरी गली में मुड़ गया।

•

अकेले रह जाने पर उसने राहत की सांस ली। शायद न सिर्फ इरफान को, बल्कि उसे खुद को भी अब अकेले रहने की ज़रूरत थी। शायद दोनों ही मन ही मन एक-दूसरे को बोझ समझते थे और अकेले रहना चाहते थे। इतनी लंबी दोस्ती में पहली बार वे एक-दूसरे के लिए बोझ बन गए थे।
वह बिना सोचे-समझे चलता रहा। एक सिगरेट विक्रेता की दुकान पर रुका। दुकानदार की ओर देखे बिना उसने सिगरेट का एक पैकेट खरीदा और आगे बढ़ गया। आम तौर पर उसे घर से निकलते समय नाज़िरा की दुकान पर रुककर सिगरेट खरीदनी चाहिए थी, क्योंकि यही उसकी आदत थी; लेकिन आज वह नाज़िरा की ओर देखे बिना ही सड़क पर आगे बढ़ गया, मानो उस पर नाज़िरा का कोई कर्ज़ हो।
होठों में सिगरेट लिए वह चलता रहा, जब तक कि जिन्ना गार्डन के पास से गुजरकर रुक नहीं गया। मैं बेवजह अपने पैर क्यों घिस रहा हूँ? इसी विचार के साथ वह सड़क से मुड़कर गार्डन में चला गया। एक के बाद एक पगडंडियों पर चलते हुए वह फूलों की क्यारियों और पत्थर की बेंचों वाले चौड़े लॉन तक पहुँचा। लेकिन बेंच पर बैठने के बजाय उसने लॉन पर पैर फैलाकर बैठना चुना। फिर उसने चारों ओर एक नजर डाली। दूर-दूर तक कोई नहीं था। आज गार्डन बिल्कुल खाली है। और जैसे ही यह विचार उसके मन में आया, उसे एहसास हुआ कि वह बिना किसी उद्देश्य के नहीं भटक रहा था। वह किसी एकांत कोने की तलाश में था। लेकिन क्यों? क्या उसी कारण से जिसके लिए ख्वाजा साहब भी एक एकांत चाहते थे? इस विचार ने उसे चौंका दिया। मानो मैं सारा दिन इधर-उधर भटकता रहा, ताकि मुझे कोई एकांत कोना मिल जाए और—नहीं, इरफान सही कह रहा है। हार सहन की जा सकती है, भावुकता नहीं। लेकिन तभी एक और लहर आई और उसे अपने साथ बहा ले गई।

सार्वजनिक रूप से आँसू बहाना भद्दा होता है। अकेले में अपनी भावनाओं को व्यक्त करना एक उचित मानवीय कार्य है। इसमें क्या बुराई है? इसके बाद व्यक्ति हल्का महसूस करता है। और उसने एक बार फिर उस त्रासदी को पूरी तरह और गहराई से महसूस करने का प्रयास किया। वह काफी देर तक वहीं बैठा रहा और भावनाओं को खुद पर हावी होने देने की कोशिश करता रहा। फिर वह लेट गया और अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन अपने तमाम प्रयासों के बावजूद, वह केवल एक प्रकार की उदासीनता की भावना ही उत्पन्न कर सका।
“अरे! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुम सो रहे हो?”
“नहीं।” वह उछल पड़ा। अफजल उसके सामने खड़ा था।
“तो फिर तुम क्या कर रहे हो?” अफजल ने घास पर बैठते हुए पूछा।
यार, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं; जब मुझे कुछ समझ नहीं आया तो मैं यहाँ आ गया। यहाँ कम से कम एकांत तो है। तुम यहाँ क्यों हो?
मैं समय-समय पर यहाँ फूलों को देखने आता हूँ। फूल और पेड़। वे अच्छे लोग हैं, वे सब मेरे दोस्त हैं।
“फूल देखने चलें? आज ही?”
“हाँ, आज ही।” अफ़ज़ल चुप रहा, फिर बोला, “यार, आज सुबह सूरज निकलने से पहले ही मेरी आँखें खुल गईं। मैंने सोचा कि मुझे देखना चाहिए कि हार की सुबह कैसी होती है। मैंने अपने कमरे की खिड़की खोली और बाहर देखा। मैं काफी देर तक देखता रहा। बाहर कुछ भी नहीं था। मैंने खिड़की बंद कर दी और चादर ओढ़कर सो गया। मैं दोपहर तक सोता रहा, और आखिर में मेरी दादी ने मुझे हिलाकर जगाया। यार! क्या मैंने तुम्हें कभी अपनी दादी के बारे में बताया है?” "नहीं।"
“जब हम निकले थे तब बरसात का मौसम था, बाढ़ आई हुई थी। एक तरफ दंगे हो रहे थे, दूसरी तरफ बाढ़। लेकिन मेरी दादी ने ज़मीन नहीं छोड़ी। मेरी माँ ने उन्हें समझाया कि हम बाढ़ की वजह से जा रहे हैं, और बाढ़ उतरते ही हम वापस आ जाएँगे। मेरी भोली-भाली दादी उनकी बात मान गईं। लेकिन वो शब्द उनके मन में बस गए। हर कुछ दिनों में वो कहती हैं, ‘बेटी! बाढ़ तो उतर गई होगी, मुझे वापस ले चलो।’”
“सचमुच?” वह जोर से हंस पड़ा।
“बिल्कुल। अभी भी उन्हें लगता है कि जब बाढ़ का पानी उतर जाएगा तो हम वापस चले जाएंगे। इसलिए आज उन्होंने मुझे हिलाकर जगाया। मैं आंखें मलते हुए

उठा। उन्होंने मुझे बड़े प्यार से दूध पिलाया। फिर उन्होंने कहा, ‘मेरे बच्चे! बाढ़ का पानी ज़रूर उतर गया होगा। तो मुझे वापस ले चलो!’ मैंने उनके चेहरे को देखा। मेरे मन में आया कि कहूँ, ‘मेरी प्यारी दादी! अगर वहाँ बाढ़ का पानी उतर गया है, तो यहाँ तो बढ़ गया है। हम वापस कैसे जा सकते हैं?’ मेरे दिल ने मुझे ऐसा न कहने को कहा—वे और भी सवाल पूछती रहेंगी। मैंने बाहर जाने का फैसला किया। फिर मैं निकल गया, और बाहर जाते हुए मैंने सोचा कि आज, घिनौने लोगों से मिलने के बजाय, पेड़ों और फूलों को देखने जाना बेहतर होगा।” वह चुप हो गए, चारों ओर एक नज़र डाली, फिर बोले, “अभी धूप अच्छी है, लेकिन डूब रही है।” उनकी आवाज़ में उदासी छा गई। “दिसंबर की धूप अच्छी होती है, लेकिन बहुत जल्दी डूब जाती है।”
अफ़ज़ल सही कह रहा है, उसने सोचा। जब मनुष्य का हृदय और मस्तिष्क खाली हो, और उसकी सोचने-समझने की शक्ति छिन जाए, तब उसे जाकर पेड़ों की छाया में शालीनता से बैठना चाहिए और फूलों से बातें करनी चाहिए। निःसंदेह, पेड़ बुद्धिमान होते हैं और फूल अच्छी बातें करते हैं। उसने अफ़ज़ल की ओर देखा, जो उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था और दूर पेड़ों को घूर रहा था। उसकी दृष्टि भी अफ़ज़ल की दृष्टि के साथ-साथ चलने लगी और दूर पेड़ों पर टिक गई। दोनों के शरीर यहीं थे, उनकी आँखें दूर के पेड़ों पर टिकी थीं। उनके हृदय और मस्तिष्क भी उसी ओर खिंचे चले गए थे।
“साथी! सुनो।” अफजल ने गोपनीय स्वर में उससे कहा।
वह बड़ी मुश्किल से वृक्षों की दुनिया से लौटा था, और वापस आकर खुश नहीं लग रहा था। "हाँ, क्या बात है?"
“यार! क्या मुझे पाकिस्तान का प्रबंधन अपने हाथों में नहीं ले लेना चाहिए?”
“क्या?” उसने अफजल को हैरानी भरी नजरों से देखा।
यार, मैंने ये सोचा है। अगर मुझे दो नेक लोग मिल जाएं और वो मेरे साथ खड़े हो जाएं, तो मैं ये ज़िम्मेदारी उठा सकता हूँ। एक तो तुम हो, और दूसरा इरफ़ान। कभी-कभी वो घिनौनी बातें बोलता है, पर फिर भी अच्छा इंसान है। अगर तुम दोनों मेरी मदद करो, तो मैं पाकिस्तान को फिर से खूबसूरत बना सकता हूँ।
यार, इन बदसूरत लोगों ने पाकिस्तान की सूरत बिगाड़ दी है, ये बहुत ही घिनौने लोग हैं।
वह कुछ कड़वाहट भरी हंसी हंसा और कुछ नहीं बोला।

“दोस्त, तुम्हें मुझ पर बिल्कुल भरोसा नहीं है।” अफजल का मिजाज बदल गया। मुझे तुम पर भरोसा है, मुझे खुद पर भरोसा नहीं है।
“तुम्हें खुद पर भरोसा नहीं है? यार, उन घिनौने लोगों के बीच हम ही तो खूबसूरत हैं।” वह रुका, फिर बोला, “तुम्हें पता है कि कुछ एकड़ ज़मीन मुझे आवंटित की जाएगी।”
मैं यह बात काफी समय से सुनता आ रहा हूं।
“मैंने भी इसे गंभीरता से नहीं लिया था। लेकिन अब यह हो रहा है। ज़मीन का आवंटन लगभग तय हो चुका है, मैंने अपना नक्शा तैयार कर लिया है। एक एकड़ ज़मीन गुलाब के फूलों की क्यारियों के लिए इस्तेमाल की जाएगी।”
“पूरा एक एकड़?—इसका क्या मतलब है?”
यार, पाकिस्तान में फूल कम होते जा रहे हैं, इसीलिए लोग बदसूरत होते जा रहे हैं और नफरत फैलती जा रही है। मैंने सोचा कि मुझे उन कमीनों के चेहरे बिगड़ने से बचाना चाहिए। तो योजना यह है कि एक एकड़ में गुलाब के फूल होंगे, दो एकड़ में आम का बाग होगा। यार, सच तो यह है कि उन घिनौने लोगों की आवाजें सुनकर मेरी सुनने की शक्ति खराब हो गई है। अगर आम का बाग होगा, तो कम से कम हम कोयल की आवाज तो सुन सकेंगे। कैसा रहेगा?
यह एक अच्छा विचार है।
"ठीक है, तो तैयार हो जाओ, हमें पाकिस्तान को खूबसूरत बनाना है।"
ठीक उसी क्षण आकाश में इतनी तेज़ गड़गड़ाहट हुई कि कान के पर्दे फट गए। उसने और अफ़ज़ल दोनों ने आकाश की ओर देखा। उसके मुँह से फूट पड़ा, "हवाई हमला!"
“हवाई हमला,” अफजल ने हैरानी से कहा। “सायरन नहीं बजा।”
"हमारी सायरनें पूरे दिन शांत रही हैं।"
अफजल आसमान की ओर देखता रहा। धीरे-धीरे वातावरण शांत हो गया। अफजल ने राहत की सांस ली। "यार, मुझे डर था कि कहीं बम न गिर जाए और ये सारे फूल..." वह चुप हो गया।
और आप कहते हैं कि हमें पाकिस्तान को खूबसूरत बनाना होगा।
यार, क्या हम युद्धों को रोक नहीं सकते?
अफजल ने इतनी मासूमियत से सवाल पूछा कि वह खुद हंस पड़ा।
“ज़ाकिर, तुम हंस रहे हो। मैं गंभीरता से सवाल पूछ रहा हूँ। क्या हम युद्धों को रोक नहीं सकते?”

"नहीं।"
“भाई, तुम मुझे जानते ही नहीं। लेकिन मुझे दो गुणी लोगों की ज़रूरत है— ज़ाकिर!”
"हाँ।"
"क्या तुम मेरी भुजा बनोगी?"

•

आकाश में फिर से एक धीमी गड़गड़ाहट शुरू हो गई। आवाज़ तेज़ होती गई, यहाँ तक कि कान फाड़ देने वाली गर्जना में बदल गई। आज, दोपहर बाद से ही, हमलावर विमान बहुत नीचे उड़ रहे थे। वे तेज़ी से आते और बिना बम गिराए आगे बढ़ जाते। उसने अपने सामने टिक-टिक करती घड़ी पर नज़र डाली। लगभग 7:30 बज रहे थे। तो ज़ाहिर है, यह आखिरी हवाई हमला था। और उसे याद आया कि 1965 में, युद्धविराम की रात बिल्कुल ऐसी ही थी—मैं अचानक नींद से जाग गया। कमरे की दीवारें काँप रही थीं, खिड़कियाँ और दरवाज़े खड़खड़ा रहे थे। मैंने घड़ी देखी। बारह बज रहे थे। मैं स्तब्ध और भयभीत था। उस समय तो तोपों को शांत हो जाना चाहिए था। क्या युद्धविराम समझौता विफल हो गया था, और युद्ध फिर से छिड़ गया था? तोपों की गर्जना इतनी ज़ोर से हो रही थी कि पिछली सोलह रातों की गर्जना और गर्जना इसके सामने फीकी पड़ गई। लेकिन अचानक गर्जना और गर्जना बंद हो गई। पूर्ण सन्नाटा, असीम शांति। अभी कुछ ही पल पहले इतनी गर्जना और गरज थी कि धरती कांप उठी और दीवारें हिल गईं, और अब पल भर में ऐसा सन्नाटा, ऐसी शांति। मैं कांप रहा था। शायद युद्धविराम युद्ध से भी ज्यादा भयानक होता है। मैं एक आतंक से निकलकर दूसरे आतंक में, एक गहरे आतंक में शरण ले चुका था। फिर पूरी रात मुझे नींद नहीं आई।
घड़ी की मिनट वाली सुई, उनतीस मिनट की लंबी और भयानक यात्रा के बाद, तीसवें मिनट पर पहुँच गई है और वहीं अटक गई है। आसमान में सन्नाटा पसरा है। भारतीय विमानों ने आखिरी बार अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया और वापस चले गए। युद्धविराम लागू हो गया है। मैं उठता हूँ और खिड़की खोलता हूँ, बाहर झाँकता हूँ और आसमान को देखता हूँ, हर दिशा में दूर तक नज़र घुमाता हूँ। मुझे कुछ नहीं दिखता। वातावरण अंधकारमय है, पूरा शहर अंधेरे में डूबा हुआ है। अफ़ज़ल सही था। बाहर कुछ भी नहीं है।

मैंने खिड़की बंद की और अंधेरे कमरे में टटोलते हुए अपने बिस्तर तक पहुँचा और लेट गया। बाहर बिल्कुल सन्नाटा था। अफजल सही था। बाहर सब कुछ एक जैसा है। तो फिर यह सब कहाँ हुआ?
... “तो फिर ये धुआँ कहाँ से आ रहा है?”* कहाँ से? मेरे भीतर से? लेकिन मैं स्वयं कहाँ हूँ? यहाँ, या वहाँ? उस खंडहर शहर में? और खंडहर शहर? लेकिन मैं स्वयं ही खंडहर शहर हूँ। “ऐसा लगता है जैसे मेरा हृदय दिल्ली शहर है।”* जब वह गिरता है और जब एक आदमी नष्ट हो जाता है, जब मजबूत जवान कुबड़ वाले हो जाते हैं और घर के रखवाले काँपने लगते हैं। “और जब हमने आपसे यह वादा लिया था कि हमारे बीच कोई रक्तपात नहीं होगा, और हमारे अपनों को उनकी अपनी भूमि से निर्वासित नहीं किया जाएगा। तब आपने ये सब शपथ ली थी, और आप इसके साक्षी हैं। तब आप ही हैं जो अपनों का कत्ल करते हैं, और अपने ही एक समूह को भूमि से निर्वासित करते हैं।”* “आपने कत्ल किया, फिर आपका कत्ल किया गया। आपने निर्वासित किया, फिर आपको निर्वासित किया गया।”* और फिर जब सड़कों पर आतंक छा गया, और गलियों के द्वार बंद हो गए, और घरों से चक्की की आवाज आना बंद हो गई, और चूल्हे ठंडे पड़ गए। “और जब मैं सूसा के किले में था, तो संयोग से मेरे भाइयों में से एक हनानी आया, और मैंने उससे बचे हुए लोगों के बारे में और यरूशलेम के बारे में पूछा। उसने कहा, ‘जो लोग बच गए हैं, वे कष्ट और अपमान सह रहे हैं। यरूशलेम की दीवार टूट गई है, और उसके द्वार आग से नष्ट हो गए हैं।’”* “जहानाबाद एक वीरान जगह है। इसे अतिशयोक्ति मत समझिए—सभी, अमीर और गरीब, चले गए हैं। जो रुके थे, उन्हें भी जाने के लिए मजबूर किया गया। सामंती जमींदार, कंपनी की विशेष पेंशन पाने वाले, अमीर, कारीगर—कोई नहीं बचा। मुझे कहानी विस्तार से लिखने में डर लगता है। लाल किले के नौकर हिंसा का शिकार हो रहे हैं, और जांच और गिरफ्तारियों में फंसे हुए हैं। मैं अपने घर में बैठा हूँ, और दरवाजे से बाहर नहीं निकल सकता। कोई मुझसे मिलने आ सकता है, लेकिन शहर में कौन बचा है? घर-घर में अंधेरा छाया हुआ है—‘खून की नदी बह रही है; काश बस इतना ही होता!’”* बेचैनी से वह उठा, फिर बैठ गया। अंधेरे में उसने चारों ओर देखने के लिए अपनी आँखें गड़ा दीं। मैं कहाँ हूँ? शब्द कहाँ कहे गए? किसने कहे? कहानियाँ कब सुनाई गईं? मेरा दिमाग आग पर रखे खाना पकाने के बर्तन की तरह उबल रहा है। फिर उसने सोचा कि डायरी में लिखना बेहतर होगा। आखिर मैंने कभी यह कसम तो नहीं खाई थी कि मैं सिर्फ

युद्ध के समय ही डायरी लिखूंगा! और मुझे आज की घटनाओं को अपनी डायरी में जरूर लिखना चाहिए। उसने लालटेन की लौ तेज की और लिखना शुरू किया।
18 दिसंबर
लाल किला सन्नाटे में डूबा हुआ था। मैं हरे-भरे शाह के मकबरे पर गया। वह पागल फकीर वहाँ नहीं था। मैंने उसे ढूंढा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। दिल्ली अब एक खंडहर शहर बन चुका है। “पेंटर की एल्बम के पन्नों की तरह दिखने वाली गलियाँ”* वीरान हो चुकी हैं। अनगिनत पत्ते हवा में उड़ गए हैं, अनगिनत पूरी तरह से मिट गए हैं। अनगिनत घर अंधेरे में डूबे हैं, मलबे में तब्दील हो चुके हैं।
...मैंने इस वीरान जगह को छोड़कर लखनऊ की राह पर चलना शुरू किया। जब मैं उस शहर के पास पहुँचा, तो मुझे पता चला कि शहर में उथल-पुथल मची हुई है, और नवाब हजरत महल अपने वफादार साथियों के साथ शहर छोड़कर नेपाल के जंगलों की ओर निकल पड़ी हैं। अंग्रेज़ सेना उनका पीछा कर रही थी। शिकारी कुत्तों की तरह उनका पीछा कर रहे थे, शहर-शहर, जंगल-जंगल उनकी गंध सूंघ रहे थे। मैं चकित रह गया। रानी ने आत्मसमर्पण न करके क्या सोच रखा था? मैंने रानी की इस नासमझी पर दुख जताया और आगे बढ़ गया।
झांसी से गुजरते हुए मैंने एक यात्री से पूछा, “भाई! झांसी की कोई खबर है क्या?” उसने दुख भरे स्वर में उत्तर दिया, “महारानी ने युद्ध के मैदान में अपने प्राणों की आहुति दे दी। झांसी का खेल समाप्त हो गया।”
मैं आगे बढ़ता गया। मैंने कई शहर पार किए। हर शहर में अव्यवस्था फैली हुई थी। मैंने देखा कि हर चौकी पर कोई पहरा नहीं था। नर्मदा नदी में पानी बहुत कम था, फिर भी मैंने आसानी से नदी पार कर ली। नदी पार करके आगे बढ़ने पर मुझे घना जंगल मिला।
तांतिया टोपी के साथ एक मुलाकात
जंगल से गुजरते हुए मेरी मुलाकात तांतिया टोपी से हुई। इस घने और डरावने जंगल में वह किसी झाड़ी में छिपे शेर की तरह लग रहा था। मैंने आदरपूर्वक उसे शहरों की स्थिति के बारे में बताया।
"दिल्ली पहले ही गिर चुकी है।"
“तो क्या हुआ?” उसने लापरवाही से जवाब दिया।
"लखनऊ में भी सत्ता का तख्तापलट हो चुका है।"
"तो क्या हुआ?"

“झांसी की रानी की हत्या कर दी गई है। झांसी का अंत हो गया है।”
"तो क्या हुआ?"
भारत युद्ध हार चुका है।
"तो क्या हुआ?"
“अब लड़ने का कोई मतलब नहीं है। समझदारी इसी में है कि आत्मसमर्पण कर दिया जाए। इसके अलावा, बरसात का मौसम खत्म हो चुका है। नर्मदा में पानी बहुत कम है। अंग्रेजी सेना के रास्ते में अब कोई बाधा नहीं है।”
तांतिया टोपी ने मुझे गौर से देखा। उन्होंने कहा, “मेरे मित्र! पहले मैं भारत की गद्दी बचाने के लिए लड़ रहा था, अब मैं भारत की आत्मा को बचाने के लिए लड़ रहा हूँ। मैं वह लड़ाई हार गया, लेकिन यह नहीं हारूँगा।” फिर वे चुप हो गए। उन्होंने मेरी ओर घूरते हुए कहा, “क्या तुम मुसलमान हो?” ईश्वर की कृपा से, मैं इस्लाम का सेवक हूँ।
“तो मुझे समझ आ गया।”
"आपका क्या मतलब है?"
“मित्र, मेरा मतलब स्पष्ट है। तुम मुसलमान केवल सिंहासन के लिए लड़ रहे हो। और तुम कहाँ लड़ रहे हो? मुझे पता है दिल्ली के लाल किले में क्या होता था।”
दिल्ली के किले में क्या होता था? अब भी, और पहले भी। भाइयों के हाथों— मुगलों की जंग लगी तलवारों से। लेकिन राजकुमार फ़िरोज़ शाह—और बख्त खान। वो किस जंगल में है? क्या वो भी नेपाल के जंगलों में भटक रहा है? कितने ही लोग ढाका छोड़कर लड़खड़ाते-लड़खड़ाते अधमरे नेपाल पहुँच गए हैं। नेपाल के जंगल खुले दिल से आलिंगन करते हैं। वो लोग जो हठपूर्वक सिर झुकाने से इनकार करते हैं, यहाँ आते हैं। वो लोग जो भागकर अपनी जान बचाते हैं, यहाँ आते हैं। कुत्ते भौंकने लगे। मेरा दिमाग उलझन में पड़ गया। मेरे वाक्य और भी बेतरतीब होते जा रहे हैं। कुत्ते ठीक वैसे ही भौंक रहे हैं जैसे कल रात भौंक रहे थे। उनके लिए कोई फर्क नहीं है।

•

उसने लिखना बंद किया और खड़ा हो गया। खिड़की खोलकर उसने बाहर देखा। उनके सामने वाले दो मंजिला मकान में रोशनी थी। हर कमरे में बिजली की बत्तियाँ जल रही थीं। यह रोशनी उसे अजीब लगी। वह देखना चाहता था कि रात कितनी गहरी और काली है।

वह वापस आया और बिस्तर पर लेटते ही उसने घड़ी पर नज़र डाली। वह चौंक गया।
अभी तो सिर्फ़ दस बजे हैं? ओह! और ऐसा लगता है कि आधी रात बीत चुकी है। हे भगवान! यह रात तो युद्धकाल की रातों से भी लंबी है।

नौ
उसी क्षण ख्वाजा साहब वहाँ पहुँचे और बैठ गए। “क्या आपने कुछ सुना है?” “जी हां, मुझे कुछ पता चला है।” आज ख्वाजा साहब की आवाज में आशा की एक झलक थी।
“सच में? आपको क्या पता चला?”
“वहां से कोई आया है। वह कहता है कि उसने करामत को बैंकॉक में देखा था।” "बैंकॉक में?"
“मौलाना साहब, इसमें आश्चर्य की क्या बात है? उस प्रलय से हर कोई जैसे-तैसे बच निकला। उनमें से कई भारत में छिपे हुए हैं, कई भारत से होते हुए नेपाल चले गए। कई पूर्वी सीमा पार करके बर्मा में आ गए। कुछ रंगून गए, कुछ बैंकॉक पहुंचे। इस आदमी ने मुझे बताया कि वह बैंकॉक के रास्ते आया था। वहां उसकी मुलाकात करामत से हुई।”
"यह आदमी कौन हे?"
“ओह, आप मेरे अमृतसर वाले मोहम्मद दीन को जानते हैं ना? वह उसे जानता है। मुझे उसका पता उसी से मिला है। वह सियालकोट में है। तो आज मैं सियालकोट जा रहा हूँ।”
"जाओ, भगवान तुम्हारी मदद करेंगे।"
“मौलाना साहब! आपकी क्या राय है? मुझे पूरा विश्वास है कि करामत जीवित है और वापस आएगा।”
अब्बा जान ने विचार करने के बाद कहा, “यह उनकी दया की शक्ति से परे नहीं है। ऐसा भी हुआ है कि एक व्यक्ति को फांसी की सजा सुनाई गई थी, और फिर उसे बचा लिया गया। दृढ़ विश्वास आवश्यक है।”
“मौलाना साहब, अल्लाह की कृपा से मेरा ईमान बहुत मज़बूत है। यह सच है कि मैं साधुओं और फ़क़ीरों पर ज़्यादा भरोसा नहीं करता। लेकिन एक फ़क़ीर ने मुझे प्रभावित किया। मुहम्मद दीन मुझे अपने पास ले गए। उन्होंने मेरा चेहरा देखा और कहा, ‘तुम परेशान हो।’ मैंने कहा, ‘हाँ, मैं परेशान हूँ।’

उन्होंने कहा, ‘परेशान मत हो—दुआ करो। वह ज़िंदा हैं, लेकिन मुसीबत में हैं।’ फिर, साहब, उन्होंने मुझे एक दुआ बताई जिसे मुझे रोज़ाना सूर्यास्त की नमाज़ के बाद चालीस बार पढ़ना था। मौलाना साहब! यकीन मानिए, सिर्फ़ एक हफ़्ते तक उसे पढ़ने के बाद ही मुझे इस सियालकोट वाले के बारे में पता चला।”
“ईश्वर का वचन बहुत शक्तिशाली है।”
"जी सर, मैं आज सियालकोट जा रहा हूँ।"
ज़ाकिर ने ख्वाजा साहब को घूरकर देखा। उसे पिछले महीने की घटना याद आ गई। पिछले महीने भी, ख्वाजा साहब एक सुबह इसी तरह उम्मीद से भरे हुए आए थे। उस समय उन्होंने कराची लौटे एक व्यक्ति के बारे में सुना था, जिसने भीषण आग से बचने के लिए बर्मी सीमा पर करामत को देखा था। और ख्वाजा साहब उसे ढूंढते हुए पूरे कराची में भटकते रहे थे।
“मौलाना साहब!” ख्वाजा साहब ने सोच-विचार करते हुए कहा। “मुझ पर ज़रूर कोई श्राप है। देखिए साहब, मेरे दो बेटे थे। एक बिगड़ गया। दूसरा खो गया—जो आज्ञाकारी था। उसे तो केवल भगवान ही वापस ला सकते हैं। जबकि निकम्मा बेटा मेरा दिल चूर-चूर कर रहा है। वह नीच सलामत, जानते हैं वो क्या कहता है? वो कहता है, ‘बंगालियों को आजादी मिल गई है।’ मैंने कहा, ‘हरामज़ादे बेटे! मेरे घर से निकल जा।’ उसने कहा, ‘मैं अमेरिका जा रहा हूँ।’ मैंने कहा, ‘भाड़ में जा।’”
सलामत का ज़िक्र होते ही ख्वाजा साहब अक्सर बोलते ही रहते थे, लेकिन जल्द ही उन्हें याद आया कि उन्हें सियालकोट जाना है, और वे विदा लेने के लिए उठ खड़े हुए। उनके बाहर जाते ही अम्मी अंदर आईं। “ख्वाजा साहब क्या कह रहे थे? क्या उन्हें करामत की कोई खबर मिली है?”
अब्बा जान ने कुछ हिचकिचाहट के साथ उत्तर दिया, "वह कहता है कि एक आदमी उधर से आया है, और उसने बैंकॉक में करामत को देखा है।"
वह आदमी और क्या कहता है?
“जब तक वह उनसे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिल लेते, तब तक उन्हें और कुछ पता नहीं चलेगा। वह व्यक्ति सियालकोट में है। आज ख्वाजा साहब सियालकोट जा रहे हैं। देखते हैं क्या होता है।”
लेकिन यकीनन, वह आदमी अजनबी है। वह झूठ क्यों बोलेगा? उसने करामत को जरूर देखा होगा, तभी तो वह ऐसा कह रहा है।

“हाँ। लेकिन हमें कैसे पता चलेगा?” अब्बा जान चुप हो गए। फिर उन्होंने कहा, “चाहे कुछ भी हो जाए, हमें उनकी कृपा की आशा रखनी चाहिए।”
“हाँ! मैं प्रार्थना करती हूँ कि बेचारा लड़का किसी भी हालत में वापस आ जाए। वरना बेचारे ख्वाजा साहब की जान खतरे में पड़ जाएगी।” बोलते-बोलते अम्मी ने आह भरी। “और फिर, मेरा दिल भी उसी हालत में है। मेरा दिल कितना दुखी है! ख्वाजा साहब अपने किसी प्रियजन के लिए चिंतित हैं। मेरा पूरा परिवार है, और उनकी कोई खबर नहीं।” वह रुकीं, फिर बोलीं, “ओह, कल रात मैंने कैसा सपना देखा, बतूल के बारे में! वह बहुत दयनीय हालत में थी, उसके बाल गंदे और उलझे हुए थे। मैं उसके बाल संवार रही थी और कह रही थी, ‘अरे, तुम्हारे बालों में तो जूँ भरी हुई हैं!’” उनकी आवाज़ धीमी हो गई, फिर उन्होंने अपने दुपट्टे के किनारे से अपना चेहरा ढक लिया। उनकी आँखें भर आईं।
अब्बा जान ने अपना सिर झुकाया। फिर उन्होंने आह भरी और कहा, "अब मेरे मरने का समय आ गया है।"
“अब्बा जान?” उसने चौंककर उसकी ओर देखा।
“हां, बेटे! अब मेरे मरने का समय आ गया है। मैंने बहुत कुछ देख लिया है। और जो मुझे कभी नहीं देखना चाहिए था, वो भी देख लिया है। अब मुझमें और कुछ देखने की ताकत नहीं बची है।”
हालात सुधर रहे हैं। भविष्य में और भी बेहतर होंगे।
“लेकिन कब तक?” अब्बा जान थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “बेटा, अगर हालात सुधर भी जाएं तो इसका कोई मतलब नहीं। लोगों के कर्मों में सुधार होना चाहिए।” अम्मी ने मानो सुना ही नहीं। उनका ध्यान कहीं और था। “बेटा, उस दिन आप क्या कह रहे थे कि सबीरा को रेडियो में नौकरी मिल गई है?”
“सबीराह? मुझे नहीं पता, सुरेंद्र ने मुझे इसके बारे में लिखा था।” सबीराह का अचानक जिक्र सुनकर वह थोड़ा घबरा गया।
“तो बेटा, उसे एक पत्र लिखो।”
“एक पत्र! सबीरा के लिए?” वह अम्मी की बात समझ नहीं पा रहा था।
मैंने सुना है कि जिनके परिवार भारत में थे, वे चुपके से उनसे मिलने चले गए हैं।
“तुम किस बारे में बात कर रही हो, ज़ाकिर की माँ!” अब्बा जान ने थोड़े गुस्से से कहा।

“अरे हाँ, मुझे क्या पता? मैंने तो सुना ही है।”
“जिन्होंने आपको यह बात बताई है, वे बताने में उतने ही माहिर हैं जितने कि आप सुनने में!”
“अरे हाँ, आखिर जब उनके घर तबाह हो जाते हैं तो उन्हें कहीं न कहीं तो जाना ही पड़ता है! जब लोग किसी देश में दमन महसूस करते हैं, तो वे उठ खड़े होते हैं और उसे छोड़ देते हैं। वे यह सोचने के लिए नहीं रुकते कि वे कहाँ जा रहे हैं।”
लेकिन वह भूमि पहले से ही दमनकारी हो चुकी थी।
“हाँ, एक समय वह भूमि दमनकारी थी, अब यह भूमि भी दमनकारी हो गई है!”
यह सुनकर अब्बा जान सोचने लगे। फिर उन्होंने कहा, “परमेश्वर ने धरती को विशाल और खुला बनाया, परन्तु मनुष्य के हाथों में यह तंग और दमनकारी हो जाती है।”
“अच्छा, मैं जो कह रही थी,” अम्मी फिर से अपने विषय पर लौट आईं, “वह यह था कि सबीरा के पास ज़रूर कोई खबर होगी। जबकि हम यहाँ बिना किसी खबर के बैठे हैं! भारत में लोगों के पास हमसे ज़्यादा खबरें हैं। तो कृपया सबीरा को एक पत्र लिख दीजिए।”
क्या मुझे सबीरा को पत्र लिखना चाहिए? अब, इतने लंबे समय बाद? वह असमंजस में पड़ गया। लेकिन जल्द ही उसे एहसास हुआ कि वह पत्र नहीं लिख सकता। “अम्मी, भारत के लिए डाक सेवा बंद है। मैं पत्र कैसे लिखूँ?”
“अरे हाँ, मैंने तो इस बारे में सोचा ही नहीं था।” वह थोड़ी देर रुकी। फिर बोली, “लेकिन बेटा, जो लोग चिट्ठियाँ लिखना चाहते हैं, वे अब भी लिख रहे हैं। कहते हैं कि चिट्ठियाँ लंदन के रास्ते भारत पहुँच रही हैं। अरे बेटा! क्या तुम्हारा लंदन में कोई दोस्त नहीं है? उसे एक चिट्ठी भेजो। वह उसे वहाँ से भारत भेज देगा।”
वह फिर से असमंजस में पड़ गया।

•

“यार! मैं एक पत्र लिखना चाहता हूँ।”
"किसके लिए?"
“To Sabirah.”
“सबीराह को?” इरफान ने ध्यान से उसकी ओर देखा। “हां, सबीरा को।”

"अब, इतना समय बीत जाने के बाद?"
“यार, अम्मी के दिमाग में यह बात बैठ गई है कि भारत में सबीरा को मेरी खाला जान के बारे में खबर मिलनी चाहिए। इसलिए अब वह मुझसे सबीरा को पत्र लिखने की मांग कर रही हैं।”
“और यह मांग बिलकुल आपकी इच्छा के अनुरूप है।” इरफान मुस्कुराया।
मेरी इच्छा के अनुसार? वह सोचने लगा। अब मेरी इच्छा क्या है? अब जब इतना समय बीत चुका है और हम एक-दूसरे से इतने दूर हो गए हैं। उसके और मेरे बीच समय और स्थान दोनों आड़े आ गए हैं। वे हमारे विरुद्ध एकजुट हो गए हैं। कितना समय बीत गया जब हम एक ही धरती पर चले थे, जब एक ही आकाश हमारे सिर के ऊपर फैला था।
दिन बीतते गए। दिन, महीने, साल। ऐसा लगा मानो वापसी का दरवाज़ा हमेशा के लिए बंद हो गया हो। जो खो गए थे, वे हमेशा के लिए खो ही जाएंगे। कभी-कभार कोई अचानक प्रकट हो जाता, और लोग उसे हैरानी से देखते: सच में, कोई वहाँ से बचकर निकल भी सकता है? फिर वे पूछते कि वह कैसे निकला, और शहर कैसे पहुँचा। और वह बताता कि कैसे वह तीन दिन तक एक जले हुए घर में छिपा रहा, खंडहरों में दुबका रहा, भूखा-प्यासा, अपनी साँस रोके हुए। फिर कैसे उसने चुपके से सीमा पार की और कलकत्ता पहुँच गया। “फिर, महोदय, वहाँ से मैंने हावड़ा एक्सप्रेस पकड़ी। मैंने सोचा था कि अलीगढ़ पहुँचते ही मुझे प्लेटफार्म पर कोई न कोई परिचित मिल जाएगा। मैं किसी को पहचान लूँगा, या कोई मुझे पहचान लेगा। यार! जब ट्रेन अलीगढ़ में रुकी, तो मेरा डिब्बा चाय की दुकान के ठीक सामने था, और हमारा वही पुराना खान वहाँ बैठा था।”
"तुम वहाँ नीचे पहुँच गए?"
“नहीं यार! मैं कैसे उतर सकता था? मुझे डर था कि कोई मुझे पहचान लेगा! मैं वहाँ साँस रोककर, चेहरा छुपाकर बैठा रहा। जब ट्रेन चलने लगी और स्टेशन से निकल गई, और अलीगढ़ मेरी आँखों के सामने से ओझल हो गया, तो मुझे लगा जैसे मुझे फिर से जीवन मिल गया हो! फिर, जनाब, मैं दिल्ली पहुँचने तक कहीं नहीं रुका। मैं ट्रेन से उतरा और सीधे जामा मस्जिद चला गया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं थे। मैंने खुद से कहा, चलो मेरे दोस्त, अब तुम्हें किसी न किसी को अपनी हालत बतानी ही पड़ेगी। मस्जिद में मैंने कई लोगों से बात की, लेकिन फिर पीछे हट गया। आखिर में मुझे एक भले-बुरे दिखने वाले बूढ़े सज्जन दिखे। उनका चेहरा बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण और दयालु लग

रहा था। मैं उनके पास जाकर बैठ गया। चुपचाप मैंने उन्हें बताया कि मैं कहाँ से आया हूँ, और फिर फूट-फूटकर रोने लगा। उन्होंने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और मुझे घर ले गए। मैंने सोचा था कि मैं उनके घर एक रात रुकूँगा, फिर किराए के पैसे उधार लेकर अगली सुबह फिर निकल जाऊँगा। लेकिन यार, मेरा संकल्प डगमगा गया।
“क्यों? क्या तुम किसी के प्यार में पड़ गए?”
“नहीं यार! सच तो ये है कि उस समय वहाँ ‘पाकीज़ा’ फिल्म चल रही थी। मैंने मन ही मन सोचा, मेरे दोस्त, अब जब तुम दिल्ली आ ही गए हो, तो जाने से पहले मीना कुमारी को देख लो! इसलिए मैं एक दिन के लिए ‘पाकीज़ा’ देखने के लिए रुक गया।”
क्या यह एक अच्छी फिल्म है?
"बिल्कुल बेहतरीन।"
क्या आपने सिर्फ एक ही फिल्म देखी?
“दिल्ली में जितने दिन मैं रुका, उतने दिन मैंने सिर्फ फिल्में देखीं। आखिरकार उस बुजुर्ग ने कहा, ‘युवक! अगर पुलिस को इसकी भनक लग गई, तो वे भागते हुए यहाँ आ जाएँगे। आपको गिरफ्तार कर लिया जाएगा और हम भी इसमें फंस जाएँगे। अब आपके लिए यहाँ से निकल जाना ही बेहतर है।’ तो अगले ही दिन मैं फ्रंटियर मेल में सवार होकर सीधे अमृतसर आ गया। जैसे-तैसे मैंने सीमा पार कर ली और अब मैं पाकिस्तान में हूँ।”
इस प्रकार, इक्का-दुक्का लोग छुप-छुप कर एक के बाद एक शहर पार करते हुए भारत के रास्ते यहाँ पहुँचे। कुछ लोग तबाही के इस देश से निकलकर नेपाल गए और वहाँ से यहाँ आने का रास्ता बना लिया। कुछ लोग बर्मा के रास्ते निकले और वापसी में कठिनाइयों और पीड़ाओं का सामना किया। कई लोग भारत में कारावास भोगने के बाद लौटे। इस तरह वे एक-एक करके वापस आते रहे। कैदी और लापता लोग लौटते रहे। ऐसा लगता था मानो हर कोई वापस आ गया हो, या शायद ऐसा लगता था मानो कोई गया ही न हो, न खोया हो, न लापता हो। घाव कितनी जल्दी भर जाते हैं और खाली जगहें भर जाती हैं! शहर में घूमते हुए कौन सोच सकता था कि कुछ लोग चले गए और वापस नहीं आए, और कुछ परिवार अब भी उनके लौटने का इंतज़ार कर रहे हैं? ख्वाजा साहब अब भी आशा और निराशा के कोहरे में भटक रहे थे। अब भी वे हर दिन अब्बा जान से मिलने आते थे। वे अब भी एक-दूसरे से वही सवाल पूछते थे,

"कोई खबर है?" मानो यह सवाल सदियों से पूछा जा रहा हो और आने वाले अनंत काल तक पूछा जाता रहेगा।
“मौलाना साहब! क्या आपके रिश्तेदारों के बारे में कोई खबर है?”
नहीं, मेरे दोस्त।
"नए आने वालों में से किसी ने भी कोई खबर नहीं दी है?"
"नहीं।"
“कहीं से कोई पत्र नहीं आया?”
"नहीं।"
“यह तो आश्चर्यजनक है! इतने सारे लोग आए हैं, लेकिन उनमें से किसी ने भी कोई खबर नहीं दी!”
"क्या आपके बेटे के बारे में कोई खबर है?"
जी हां, मौलाना साहब। आपकी शुभकामनाओं के कारण कुछ अच्छी खबर मिली है। "क्या ख़बर है?"
“मौलाना साहब, मैंने मौलाना सनाउल्लाह से शकुन पढ़वाए थे।* वे शकुन बहुत अच्छी तरह पढ़ते हैं। शकुन यह थे कि करामत ठीक है और लौट आएगा। और महोदय, ज्योतिषी भी यही कहते हैं। आप जानते हैं ना, वह ज्योतिषी नूर दीन? मैं उनके पास गया था। उन्होंने मेरी कुंडली बनाकर मुझे दिखाई और कहा, ‘ख्वाजा साहब, आप स्वयं देखिए। इस समय आपके पुत्र का नक्षत्र शनि के घर में है। यह प्रकट होने ही वाला है। बस प्रतीक्षा कीजिए और देखिए। अचानक एक दिन वह आ जाएगा।’” “ईश्वर ही कारणों का जनक है। ऐसा हो सकता है।”
मुझे पूरा भरोसा है कि ऐसा ही होगा। और तो और, आज मैं लायलपुर जा रहा हूँ। "क्यों?"
“खैर, मेरे साले के एक भाई वहाँ रहते हैं। उनका दामाद वहाँ से आया है। मेरे साले ने मुझे बताया कि उस लड़के ने करामत को देखा है। दरअसल, उनका यह भी कहना है कि करामत ने उसे कोई पत्र दिया है। इसलिए आज मैं लायलपुर जा रहा हूँ। देखते हैं पत्र में क्या लिखा है।” वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। ख्वाजा साहब बाहर चले गए, और अम्मी अंदर आईं: "ख्वाजा साहब जिन शकुनों का अध्ययन करवा रहे हैं, उन्हें देखकर मेरे मन में यह विचार आया कि हम भी शकुनों का अध्ययन क्यों न करवा लें?"
“ज़ाकिर की माँ! सर्वशक्तिमान ईश्वर आज्ञा देते हैं, और फिर घटनाएँ घटित होती हैं। उन पर भरोसा रखें।”

“पता नहीं वो कब हुक्म देंगे!” अम्मी ने गुस्से से कहा।
“वह अपने विवेक को गुप्त रखता है। हम उसके आदेश की प्रतीक्षा करते हैं। आदेश आते ही हम चल पड़ते हैं।” वह रुका, आह भरी, “अब मेरे मरने का समय आ गया है।”
“अरे हाय, क्या तुम्हें हमेशा मौत के बारे में ही बात करनी पड़ती है? क्या यह कोई नया पागलपन है जो तुम पर हावी हो गया है?”
“ज़ाकिर की माँ! हज़रत अली की इस बात को याद रखो कि तुम और तुम्हारी इच्छाएँ इस दुनिया में मेहमान हो। ज़ाकिर की माँ, तुम्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। मेहमान हमेशा के लिए नहीं रुकते।”
अम्मी ने अब्बा जान की बातें अनसुनी कर दीं और ज़ाकिर की ओर ध्यान दिया। “ज़ाकिर! दिल्ली से तुम्हारे पत्र का कोई जवाब नहीं आया?”
“अम्मी, आ जाएगा। वहां डाक बहुत धीरे-धीरे पहुंचती है, और वहां से तो और भी धीरे-धीरे आती है।”
“अरे बेटे! आखिर एक चिट्ठी को आने-जाने में कितने दिन लगते हैं? तुमने काफी समय से चिट्ठी नहीं लिखी है।”
“अम्मी, भारत और पाकिस्तान के बीच डाक व्यवस्था पूरी तरह से बाधित है। कुछ चिट्ठियाँ पहुँचती हैं, कुछ नहीं पहुँचतीं।”
"तो फिर बेटे, अपने दोस्त को एक और पत्र लिखो।"
“मैंने पत्र लिखा है, अम्मी। मुझे उम्मीद है कि मेरे पत्र का जवाब जल्द ही आ जाएगा।”

•

“यार, मैंने पहले ही दो पत्र लिख दिए हैं। सुरेंद्र ने जवाब नहीं दिया। मुझे नहीं पता कि क्या बात है।”
"तो फिर उसे सीधे पत्र लिखें।"
“उसे?” वह सोचने लगा।
शिराज होटल का दरवाजा खुला और अफजल अंदर आया। “यार! मैंने सुना है कि वो चूहा वापस आ गया है।”
"कौन?"
“Zavvar.”
“तुम्हें अभी पता चला? वो तो यहाँ बहुत दिनों से है। उसकी पोस्टिंग यहीं हुई थी और उसे प्रमोशन भी मिला था।” इरफान के लहजे में थोड़ा व्यंग्य था।

यार, उसे माफ कर दो। हम सब में, वही सबसे ज्यादा दया का पात्र है।
“सबसे ज्यादा दया के पात्र कौन हैं?” इरफान ने अफजल को झुंझलाहट भरी नजरों से देखा।
“हाँ यार! मुझे उस पर बहुत तरस आता है। वह दया का पात्र है।”
"क्यों?"
"क्योंकि उन्होंने सिविल सेवा में काम करना शुरू कर दिया है और वे पदोन्नति पाते जा रहे हैं।"
“सच तो यह है कि वह बेहद दयनीय है,” इरफान ने कड़वाहट से कहा।
यार, क्या तुम मुझे थोड़ी शराब दे सकते हो? मुझे बहुत प्यास लगी है।
हम आपको सिर्फ चाय ही दे सकते हैं।
“चाय? चाय बेकार है। अंदर की गंदगी तो सिर्फ़ शराब से ही साफ़ होती है।” ये कहते हुए उसने अपनी जेब से कुछ नोट निकाले और गिने। “यार, मेरे पास बस दस रुपये कम हैं। इरफ़ान! पाँच रुपये निकालो।” ज़ाकिर की तरफ़ देखते हुए उसने कहा, “मेरा साथी पाँच रुपये दे देगा।”
उसने और इरफान ने अपनी जेबों से पांच-पांच रुपये के नोट निकाले और अफजल को दे दिए। अफजल तुरंत खड़ा हो गया। लेकिन तभी उसे कुछ याद आया। वापस बैठते हुए उसने कहा, “यार! वो दो चूहे जो हमेशा अपनी पूंछ पर खड़े रहते थे—मैं उनके लिए दुआ करना चाहता हूँ।”
“वे अमेरिका में ही रह जाएंगे और कभी वापस नहीं आएंगे!”
नहीं यार। मुझे श्राप देने के लिए मत कहो। सलामत और अजमल इतने बुरे नहीं थे। शराब पीने के बाद तो उन्होंने अच्छी बातें कीं। यार, वे अमेरिका क्यों चले गए? मैं उनके लिए यहाँ इंतज़ाम कर रहा था। मुझे कुछ एकड़ ज़मीन आवंटित होने वाली है। एक एकड़ में गुलाब के पौधे लगाऊंगा। एक एकड़ सिर्फ़ बारिश के कीड़ों के लिए होगी।
“बारिश के कीड़े?” इरफान ने व्यंग्यपूर्वक उसकी ओर देखा।
“भाई! चुप रहो! तुम इसे समझ नहीं पाओगे। बरसात के मौसम में मैं बहुत बेचैनी से इधर-उधर भटकता रहता हूँ। यहाँ बरसाती कीड़े तो दिखते ही नहीं। बरसाती कीड़े होने चाहिए। हमें पाकिस्तान को खूबसूरत बनाना है।” फिर, अपना लहजा बदलते हुए, उन्होंने उन दोनों से कहा: “सुनो! तुम दोनों मेरे साथ रहोगे। यह मेरा आदेश है। मैं, और तुम दोनों।”
“और बारिश में उगने वाले कीड़े,” इरफान ने बात काटते हुए कहा।

“[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

दस
नारों की गड़गड़ाहट और ईंटों की बारिश के बीच, वह सड़क पार करके शिराज होटल के बंद, पर्दे वाले दरवाजे पर दस्तक देने पहुँचा। उसने एक बार, दूसरी बार, तीसरी बार दस्तक दी। अब्दुल ने पर्दा थोड़ा सा हटाया और बाहर देखा, फिर दरवाजे का एक पैनल थोड़ा सा खोला। “ज़ाकिर जी, जल्दी अंदर आइए।”
अंदर अर्धअंधेरे में, खाली मेजों और कुर्सियों को देखते हुए, उसने वह कोना पहचान लिया जहाँ इरफान अकेले बैठकर चाय पी रहा था।
“यार, वो समय फिर आ गया है।”
“और भी बदतर, क्योंकि जब समय लौटता है तो हमेशा और भी बुरा हो जाता है। लेकिन तुम यहाँ कैसे पहुँचे? मुझे नहीं लगा था कि तुम आज यहाँ आ पाओगे।” “जी हाँ, मैंने किया। दिल्ली में, सभी आदरणीय और दृढ़ आदतों वाले बुजुर्गों में से एक ऐसे थे जो हर शाम एक ही समय पर अपने मित्र के घर आते, दरवाजा खटखटाते और कुछ देर रुकते थे। जब 1957 का विद्रोह हुआ, तो सभी सड़कें बंद हो गईं। इस दृढ़ आदतों वाले व्यक्ति ने अपना घर छोड़ा, बड़ी मुश्किल से खाइयों और नालों से रेंगते हुए गए और किसी तरह तय समय पर अपने मित्र के घर पहुँच गए।”
"हां, हम भी उन लोगों में से हैं जो 1957 की दृढ़ आदतों को कायम रखते हैं।" हालांकि वह समय अभी तक नहीं आया है।
"हां, यह अभी तक नहीं आया है।"
दरवाजे पर फिर दस्तक हुई, और अब्दुल फिर दौड़कर गया और पर्दा थोड़ा सा हटाकर शीशे से बाहर देखा। फिर, पहले की तरह, उसने दरवाजे का एक पैनल थोड़ा सा खोला। "अफजल जी, जल्दी आइए।" अफजल को अंदर आने देने के बाद, उसने फिर से दरवाजा बंद कर दिया।
मंद अंधेरे में, खाली मेजों और कुर्सियों पर एक नज़र डालने के बाद, अफजल ने अपना ध्यान उस मेज पर केंद्रित किया जहाँ वे दोनों बैठे थे। “अरे लोगों! क्या आप देख रहे हैं कि शरारत के संकेत फिर से दिखाई देने लगे हैं?”

"हां, हमने सुना है, हमने देखा है और हमने इसकी पुष्टि कर ली है," इरफान ने अपने लहजे में हल्के व्यंग्य के साथ कहा।
अफजल ने प्रसन्न होकर उसकी पीठ थपथपाई। “तुम एक अच्छे आदमी हो। तुम तभी घिनौने लगते हो जब तुम मुझे मना करते हो।”
“यार, क्या फिर कुछ होने वाला है?” ज़ाकिर ने मन में एक खास विचार लिए हुए पूछा।
“हां, सलामत वापस आ गया है,” इरफान ने उसके सवाल को नजरअंदाज करते हुए घोषणा की।
“तुमने क्या कहा? वो चूहा फिर से आ गया?” अफजल चौंक गया। “और दूसरा चूहा?” "दोनों वापस आ गए हैं, और वे मुसलमान बन गए हैं।"
"ज़रूरी नहीं?"
“बिल्कुल। दोनों क्रांतिकारी अपने सिर पर धार्मिक टोपी पहनते हैं और नमाज अदा करने मस्जिद जाते हैं।”
“सचमुच?” वह अब भी अचंभित था। “यह तो वाकई चिंता का विषय है!”
अब्दुल चाय लेकर आया और उसे नीचे रख दिया, फिर वहीं खड़ा हो गया। "यह सब क्या हो रहा है, साहब?"
“जो तुम देख रहे हो,” इरफान ने जवाब दिया।
"जी महोदय, यह अचानक शुरू हुआ। किसी को भी जरा सा भी अंदाजा नहीं था कि यह दोबारा शुरू हो सकता है।"
“अब्दुल!” अफजल ने उसे घूरते हुए कहा। “तुम भी चूहे बन गए हो।”
अब्दुल ने अफजल से अचानक सवाल पूछा, “अफजल साहब जी! आप ही बताइए, इसका क्या नतीजा निकलेगा? आगे क्या होगा?”
अफजल ने अपनी उंगली होठों पर रखी। “अब्दुल, चुप रहो। मुझे बोलने से मना किया गया है।”
दूर से दमकल कर्मियों के सायरन की आवाज सुनाई दी।
"कहीं आग लगी है।"
सन्नाटा छा गया—सभी लोग अग्निशमन विभाग के सायरन को ध्यान से सुन रहे थे। “दोस्तों! मैं आप लोगों से एक बात की अनुमति लेना चाहता हूँ,” अफजल ने इतनी गंभीरता से कहा कि वह, इरफान और अब्दुल तीनों ने ध्यान से सुना।
क्या आप जानते हैं कि बाबा फरीद ने कल्यार के ख्वाजा से क्या कहा? अगर नहीं जानते, तो सुनिए। ख्वाजा ने बाबा को शहर के घिनौने लोगों का ब्योरा भेजा।

बाबा ने उन्हें जवाब दिया, ‘हे दृढ़ निश्चयी, कल्यार तुम्हारी बकरी है। मैं तुम्हें पूरा अधिकार देता हूँ। चाहो तो इसका दूध पियो; चाहो तो इसका मांस खाओ।’ तब ख्वाजा मस्जिद के सामने खड़े होकर बोले, ‘ऐ मस्जिद, झुक जा!’ मस्जिद ने उनके आदेश का पालन किया और इतनी झुक गई कि उसके मलबे में सैकड़ों लोग कुचलकर मर गए। फिर महामारी फैल गई। सभी घरों से एक ही समय में अनेक जनाज़े निकले।
यह कहानी सुनाने के बाद अफजल चुप हो गया। उसने तीनों चेहरों को ध्यान से देखा। फिर उसने गंभीरता से पूछा, “दोस्तों, आप क्या कहते हैं? मैं इस बकरी का क्या करूँ? क्या मैं इसका दूध पीऊँ या इसका मांस खाऊँ?”
इरफान ने अफजल के पूरे भाषण को नजरअंदाज करते हुए जाकिर से पूछा, "जाकिर, तुम्हारे पिता अब कैसे हैं?"
"उसकी हालत कुछ बेहतर है, लेकिन वह अजीब तरह से बात करता है, मानो उसने जीवन से पूरी तरह से हार मान ली हो।"
"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, बुढ़ापे में लोग इसी तरह बात करते हैं।"

•

वंशावलियाँ, जर्जर पांडुलिपियाँ, दीमक से खाए पीले पन्नों वाली किताबें, पुराने नोट्स और कागज़, हर तरह के प्राचीन नुस्खे, प्रार्थनाएँ, ताबीज़— अब्बा जान, अपने चश्मे के साथ, हर एक पन्ने को ध्यान से पढ़ते थे, और उन्हें उसे सौंप देते थे।
अरे वाह, तुमने तो कागजों का पूरा बंडल ही खोल दिया! कम से कम थोड़ा ठीक होने तक तो इंतजार कर सकते थे! याद रखना, बुढ़ापे में एक बार गिर जाने पर दोबारा उठना मुश्किल हो जाता है।
“ज़ाकिर की माँ, मैं अपने मामलों को सुलझा रहा हूँ। जब कोई व्यक्ति जाने के लिए उठता है, तो उसे पहले अपने वस्त्र ठीक करने चाहिए।” वह रुका, फिर बोला, “ईश्वर का शुक्र है, मेरे वस्त्र ज़्यादा धूल भरे नहीं हैं। न कोई संपत्ति है, न कोई धन। अगर कुछ था भी, तो वह वहीं पीछे छूट गया। बस ये कुछ पुराने पन्ने ही बचे हैं।”
"अरे, तुम्हारा दिमाग तो मूर्खतापूर्ण विचारों से भरा हुआ है। लगातार मौत के बारे में बात करना ठीक नहीं है।"
“ज़ाकिर की माँ! अब बात करने लायक अच्छी बात क्या बची है? क्या तुम्हें पाकिस्तान में हो रही तबाही नहीं दिख रही?” बोलते-बोलते उन्होंने फफूंद

से सनी एक किताब उठाई। उसे खोलकर अंदर देखा, फिर उसे ज़ाकिर को देते हुए कहा, “यह हज़रत सज्जाद की दुआओं का संग्रह है। इसे संभाल कर रखना।” वे थोड़ी देर रुके और सोचने लगे, फिर बोले, “एक सवाल पूछने वाले ने पूछा, ‘ऐ नमाज़ पढ़ने वालों में सबसे श्रेष्ठ! सुबह आपको किस हालत में मिली?’ आपने जवाब दिया, ‘मैं रसूल की कसम खाकर कहता हूँ, सुबह मुझे उमय्यदों ने सताया था।’” उनकी बात सुनकर अब्बा जान उदास हो गए और बोले, “बेटा, तब से अब तक वह सुबह जारी है।” वे चुप हो गए, फिर बोले, “और क़यामत तक जारी रहेगी।” फिर वह दोबारा चुप हो गया, और कुछ देर बाद बोला, “दरअसल, बसरा की हज़रत राबिया ने भी ऐसा ही जवाब दिया था। किसी ने पूछा, ‘तुम इस दुनिया में आने के बाद से क्या कर रही हो?’ उन्होंने जवाब दिया, ‘शोक मना रही हूँ!’ जी हाँ, उस पवित्र महिला ने शोक मनाने के अपने कर्तव्य को बखूबी निभाया, क्योंकि वह लगातार रोती रहती थीं। मैंने किस कर्तव्य को निभाया है? मैंने तो बस कुछ बार आह भरी, और फिर चुप हो गई। शायद मेरे नसीब में इससे ज़्यादा शोक मनाने का कुछ नहीं था। जो भी अब ज़िंदा है, वह इस कर्तव्य को निभाएगा।” उसने आह भरी, और फिर कागज़ों को टटोलने लगा। “यह लो, यह पेट दर्द की दवा है, हकीम नबीना ने लिखी है। इसकी एक छोटी सी खुराक सौ इंजेक्शनों से ज़्यादा असरदार है। इसे संभाल कर रखना।” और उसने उसे कागज़ का वह नाज़ुक टुकड़ा दिया और फिर से अपनी चीज़ों को देखने लगा।
कपड़े के थैले के भीतरी हिस्से से मिट्टी की एक छोटी सी पट्टिका और एक माला निकली। “ज़ाकिर की माँ, आप इन्हें संभाल कर रखिए। यह पट्टिका नजफ़ की औषधीय मिट्टी से बनी है और प्रार्थना की माला कर्बला की मिट्टी से बनी है।” उन्होंने दोनों चीजों को अपनी आँखों से लगाया, चूमा और अम्मी जान को सौंप दिया।
बैग के अंदर कहीं गहरे में, कुछ कागजों के नीचे से, उसने चाबियों का एक गुच्छा निकाला। उसने उन्हें ध्यान से देखा और कहा, "उस दिन तुम हवेली की चाबियों के बारे में सोच रहे थे, और ये रही वो चाबियां।"
झुर्रियों से भरा उसका चेहरा खिल उठा। "सचमुच?" उसने चाबियों के गुच्छे को लालसा भरी निगाहों से देखा। "अरे, आप विश्वास नहीं करेंगे, उस दिन जब आपने कहा था कि आपको नहीं पता कि वे कहाँ हैं, तो मेरी धड़कन लगभग रुक गई थी। मुझे लगा जैसे मेरी आत्मा शरीर से निकल गई हो।" वह थोड़ी देर रुकी, फिर बोली, "और उन पर जंग नहीं लगी?"

अब्बा जान ने चाबियों को एक बार फिर देखा। “नहीं, मैंने इन्हें जंग नहीं लगने दिया। अब से ये ज़ाकिर की ज़िम्मेदारी है।” फिर उन्होंने ज़ाकिर से कहा, “बेटा, ये उस घर की चाबियाँ हैं जिस पर अब हमारा कोई हक़ नहीं है। और हमारा हक़ कब था भी? जैसा कि हज़रत अली ने कहा है, ये दुनिया एक मेहमानघर है। हम और हमारी इच्छाएँ इसमें मेहमान हैं। मेहमानों का कोई हक़ नहीं होता। धरती हम मेहमानों को जो कुछ भी देती है, वो एहसान है, और धरती ने हम पर बड़ी मेहरबानी की है। ये चाबियाँ एक अमानत हैं। इस अमानत की हिफ़ाज़त करो, और उस धरती की मेहरबानी को याद रखो जिसे हम छोड़कर आए हैं, और यही तुम्हारा सबसे बड़ा कर्तव्य होगा।” बोलते-बोलते अचानक उनकी साँस रुक गई। दर्द से उन्होंने आँखें बंद कर लीं और हाथ सीने पर रख लिया। अम्मी तुरंत घबराकर उठीं, “अरे, क्या हुआ?” उन्होंने उन्हें लेटने में मदद की। “बेटा, डॉक्टर को बुलाओ!” अब्बा जान ने आँखें खोलीं। उन्होंने मना करने का इशारा किया। धीरे-धीरे, बड़ी मुश्किल से, उन्होंने कहा, "हजरत अली आ गए हैं।" ज़ाकिर जैसे किसी सम्मोहन में था; वह मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा देखता रहा। अब्बा जान ने एक बार फिर अपनी आँखें खोलीं, उसकी ओर देखा और फुसफुसाते हुए कहा, “बेटा, सुबह होने वाली है, पैगंबर के लिए दुआ पढ़ो।” तभी वह अचानक हिल गया और उसका सिर तकिये पर गिर पड़ा। अम्मी, जो बहुत व्याकुल थी, अचानक स्थिर खड़ी हो गई। फिर उसने धीरे से बेजान शरीर पर चादर ओढ़ दी। फिर वह ज़मीन पर गिर पड़ी, अपना सिर पलंग के फ्रेम पर टिकाया और रोने लगी।

•

“भाई! तुम्हारे पिता एक गुणी व्यक्ति थे,” अफजल ने भावुक होकर उसे गले लगाते हुए कहा। “जब मैं उन्हें देखता था तो मुझे हमेशा लगता था कि वे गोद में बैठे एक नन्हे बच्चे हैं जिनकी दाढ़ी बढ़ गई है। वे सचमुच एक बच्चे थे, बिल्कुल मासूम।”
“वह सचमुच एक अच्छे और नेक इंसान थे।” लंबे समय से चुपचाप बैठे इरफान ने गंभीर स्वर में कहा।
अफजल ने इरफान को घूरकर देखा। "शुक्र है तुम मुझसे सहमत हो। दुनिया में कम से कम एक आदमी तो ऐसा है जिसके बारे में तुम्हारी राय अच्छी है!"
फिर सन्नाटा छा गया। तभी अफजल कुछ सोचते हुए बोला, “ज़ाकिर, तुम्हें मेरी दादी याद हैं ना? वो जो यहाँ आने के बाद से हमेशा यही कहती रही हैं, ‘मेरे बच्चे, बाढ़ का पानी उतर गया होगा, चलो घर चलते हैं’।”

"जी हां, उसका क्या हुआ?"
"वह मर गई।"
“सच में? मुझे बहुत खेद है—लेकिन कैसे?”
“बिल्कुल वैसे ही जैसे तुम्हारे पिता की मृत्यु हुई। इसमें कोई ‘कैसे’ या ‘क्यों’ का सवाल नहीं है। बस एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, बात खत्म।” "आप ठीक कह रहे हैं।"
“एक दिन उसने मुझसे बड़ी विनती से कहा, ‘मेरे बच्चे, कितना समय बीत गया है। अब तक बाढ़ का पानी उतर गया होगा। मुझे घर ले चलो।’ मैंने कहा, ‘मेरी प्यारी दादी, बाढ़ का पानी वहाँ तो उतर गया है, लेकिन इस तरफ बढ़ गया है।’ उसने अपनी खुली आँखों से मेरी ओर देखा और कहा, ‘ठीक है,’ और उसकी मृत्यु हो गई।”

•

“बेटे, कल रात मैंने सपने में मौलाना साहब को देखा। वे कुछ परेशान थे। मुझे चिंता हुई कि ऐसा क्यों है। सुबह-सुबह मैं कब्रिस्तान गया। मैंने उनकी कब्र पर फातिहा पढ़ी। उनकी कब्र के आसपास की मिट्टी धंस गई है, तुम्हें उसे भरवाने का इंतजाम करना होगा।”
"जी सर, बिल्कुल।"
मैंने चौकीदार से कहा कि चालीस दिनों तक हर रात कब्र पर एक मोमबत्ती जलाई जानी चाहिए। मैंने उसके पास मोमबत्तियों का एक पैकेट छोड़ दिया है। कृपया आप भी इसकी जाँच कर लें।
"जी सर, बिल्कुल।"
“मौलाना साहब जन्नत के लायक थे, उन्होंने कभी किसी को तकलीफ नहीं पहुंचाई। उन्होंने मुझे बहुत हिम्मत दी। जब करामत से बिछड़ने पर मेरा दिल बेचैन होता था, तो मैं हमेशा उनके पास आता था। वे मुझे ऐसी कहानियां और पैगंबर के ऐसे वचन सुनाते थे कि मेरे दिल को सुकून मिल जाता था।”
“Khvajah Sahib, Salamat has come back.”
“उस बदतमीज़ को वापस किसने बुलाया? जिसका मैं इंतज़ार कर रही थी, वो तो आया ही नहीं। जिसने मुझे उसके जाने पर ईश्वर का शुक्रिया अदा करने पर मजबूर किया था, वो फिर लौट आया है, मेरे दिल को चूर-चूर कर रहा है। बेटा, वो अब भी वैसा ही है जैसा पहले था!”
लेकिन मैंने सुना है कि अब उन्होंने प्रार्थना करना शुरू कर दिया है।

“जी बेटा,” ख्वाजा साहब ने आह भरी। “पहले वह हमें समाजवाद की शिक्षा देते थे, अब इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं। आज वह अपनी माँ को इस्लाम पर प्रवचन दे रहे थे। माँ कुछ कहने लगीं। मैंने उन्हें रोका: ‘शुक्र मनाओ—तुम्हारे बेटे हैं। अभी तुम्हारा बेटा नशे में है। जब वह होश में आएगा, तब तुम उससे बात कर सकती हो।’ उन्होंने कहा, ‘वह कभी होश में आता ही कब है?’ मैंने कहा, ‘मेरी प्यारी माँ, क्या आजकल लोग कभी होश में आते हैं? उन्होंने आधा देश खो दिया है, और उन्हें अक्ल नहीं आई। उसने तो सिर्फ एक भाई खोया है।’ बेटा, क्या मैं सही नहीं था?”
“सर, आपने जो कहा वह सच था।”
“बेटे! लोगों को क्या हो गया है?” ख्वाजा साहब का लहजा अचानक बदल गया। "आपका क्या मतलब है?"
“आप देख ही रहे हैं कि क्या हो रहा है। भविष्य में क्या होगा, यह कोई नहीं बता सकता! लोगों का खून खौल रहा है, पता नहीं वे क्या करेंगे। मैंने सुना है कि लोगों के घरों पर निशान दिखने लगे हैं।”
“नंबर? किस तरह के नंबर?”
“बेटा, तुम किस दुनिया में जी रहे हो? युद्ध की तैयारियाँ चल रही हैं। दोनों पक्षों ने इतना गोला-बारूद जमा कर लिया है कि बस उसमें एक बत्ती लगाने की ज़रूरत है। यह शहर माचिस की तीली जलाते ही सूखे ईंधन की तरह धधक उठेगा। भगवान दया करें।” फिर वह मेरी ओर झुके और फुसफुसाते हुए बोले, “बेटा, एक बात है।”
"महोदय?"
“मुझे पता है कि पाकिस्तान पवित्र आत्माओं की सुरक्षा में है, लेकिन कभी- कभी मुझे डर लगता है। क्या पाकिस्तान को कोई नुकसान नहीं होगा?”
इस सवाल को सुनकर वह स्तब्ध रह गया। ख्वाजा साहब ने उसकी उलझन देखी और कहा, “पुत्र, मैंने यही सवाल मौलाना साहब से पूछा था। उन्होंने हर सवाल का जवाब कुरान और पैगंबर की बातों से दिया। इस सवाल पर वे चुप हो गए। इस तरह चुप हुए कि उसके बाद वे हमेशा के लिए चुप हो गए।”

•

शोक संदेशों के बीच भारत से एक पत्र आया। अरे, यह सुरेंद्र का पत्र है। उसने जल्दी से लिफाफा फाड़कर खोला।
नई दिल्ली

प्रिय ज़ाकिर,
अगर मैंने आपके पत्रों का जवाब नहीं दिया है, तो इसका कारण यह है कि मैं देश में नहीं था। मैं लंबे समय से यूरोप की यात्रा पर था। वापस आने पर मुझे आपके पत्र मिले।
आपकी मां सबीरा के परिवार के बारे में खबर जानने के लिए बेताब होंगी। लेकिन सबीरा को भी उनके बारे में कोई खबर नहीं मिली है। मैंने उन्हें आपके पत्रों के बारे में बताया। उन्होंने कुछ नहीं कहा, बल्कि फूट-फूटकर रोने लगीं। मैं हैरान रह गया। उन दिनों जब ढाका से बुरी खबरें आती रहती थीं, तब भी मैंने उन्हें हमेशा शांत पाया था। लेकिन आज वो फूट-फूटकर रोने लगीं। मुझे समझ नहीं आया। लेकिन उन्हें इस हालत में देखकर मुझे दुख हुआ। मेरे दोस्त! क्या मैं एक बात कह सकता हूँ? इसे बुरा मत मानना। तुम एक निर्दयी इंसान हो, या शायद पाकिस्तान में रहने के बाद तुम ऐसी हो गई हो।
आपका,
Surendar
क्या वो फूट-फूटकर रोने लगी? उसने इस बारे में सोचा। अपनी माँ और बहन के बारे में सोचकर उसका रोना कोई अजीब बात नहीं है; और खासकर तब जब उसे उनके बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं है। चाहे वे जीवित हों या मृत। यह स्पष्टीकरण उसे काफी तर्कसंगत लगा, लेकिन तुरंत ही उसे एक तरह की बेचैनी महसूस हुई, मानो यह स्पष्टीकरण काफी न हो। मेरे पत्रों के बारे में सुनकर वो फूट-फूटकर रोने लगी! क्यों? क्या मैं क्रूर हूँ? किस आधार पर?
बाहर दरवाजे पर दस्तक हुई। वह देखने गया। अफजल वहाँ खड़ा था। "मित्र, मुझे इतने असुविधाजनक समय पर आने के लिए क्षमा करें।"
“यह तो कमाल है—अब तो आप सही और गलत समय में विश्वास करने लगे हैं!”
"मैं वैसा नहीं हूं—मेरे लिए सभी समय एक ही समय होते हैं; लेकिन आपके नियमित कार्य घंटे तो होते ही हैं।"
“मेरे पास कोई विकल्प नहीं है; क्योंकि मैं अपने काम का गुलाम हूँ, मुझे समय पर थोड़ा ध्यान देना ही होगा। खैर, चलो इस विषय को यहीं समाप्त करते हैं।”
“तुम पूछना चाहते हो कि मैं इस समय क्यों आई हूँ। यार, मैं अकेली थी और मुझे बेचैनी होने लगी, इसलिए मैं बाहर चली गई। आज मुझे बहुत डर लग रहा है।”
“डर लग रहा है? क्यों?”

“यार! मुझे आवाजें सुनाई दे रही हैं।”
“आवाजें? किस तरह की आवाजें?”
“यही बात मुझे समझ नहीं आती। अचानक मुझे डर लगने लगा कि कहीं तूफान न आ जाए, और कोई तेज चीख मुझे उड़ा ले जाए।”*
“क्या? तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम पागल हो?” उसने अफजल की ओर गौर से देखा, जो बेहद डरा हुआ लग रहा था।
अफजल ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, "सुबह जब मैं उठा तो डर गया और डर के मारे शीशे के पास जाकर अपना चेहरा देखने लगा—"
“अफजल!” उसने बीच में ही टोकते हुए कहा। “तुम्हें तो दूसरे लोग घिनौने लगते हैं।”
“यार, कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई आदमी, दूसरों को घृणित पाकर—अरे, एक सुबह उसे पता चलता है कि उसका अपना चेहरा बदल गया है। पिछले कुछ दिनों से मुझे किसी न किसी तरह का डर सता रहा है कि कहीं मेरा चेहरा भी न बदल जाए—?” “ठीक है, ये बकवास बंद करो। ये लो चारपाई, इस पर लेट जाओ और सो जाओ।”
“जी हाँ यार।” वह तुरंत गया और पलंग पर लेट गया। “मुझे सोना है।” बोलते- बोलते उसने चारों ओर देखा और आश्चर्य से बोला, “यार! तुम्हारा कमरा तो मुझे गुफा जैसा लग रहा है।” वह रुका, सोचा, फिर धीरे से बोला, “कोई बात नहीं, मैं बहुत देर से जागा हुआ हूँ। अब सात सौ साल सोऊंगा।” और उसकी आँखें धीरे-धीरे बंद हो गईं।
आवाजें, कैसी आवाजें? वह बुदबुदाया। अफजल के कान बज रहे थे। आखिरकार वह चुप हो गया, लेकिन भीतर ही भीतर वह कुछ बोल रहा था। वह भ्रमों में जीने वाला आदमी है। हर दिन एक नया भ्रम। वह अभी तक परिपक्व नहीं हुआ है। वह सोचता है कि वह एक बच्चा है, अपनी दादी के साथ अपने पुराने शहर के माहौल में रह रहा है, जहाँ मेरे रूपनगर जैसे पेड़ थे। रूपनगर, जहाँ के पेड़ ऐसे थे कि उन्हें देखते ही भ्रम उठने लगते थे, चाहे जैसे भी हो। और अपनी कल्पना में वह रूपनगर लौट गया।

•

दोपहर की चिलचिलाती धूप में वे काले मंदिर के पास से गुज़रे, कर्बला से आगे बढ़े और किले के पास पहुँचे। फिर वे चलते रहे, चलते ही रहे। वे रावण वन में प्रवेश कर गए। चलते-चलते वे झिझके। दूर उन्हें बरगद का पेड़ दिखाई दिया।
रावण वन के बीचोंबीच अकेला खड़ा वह पेड़, मानो स्वयं रावण वहाँ खड़ा हो।

उन्हें लगा कि पेड़ में कुछ है। तभी हबीब ने डरते हुए कहा, “यार! वह कैसी आवाज़ थी?”
“आवाज?” बुंडू ने हैरानी से हबीब की ओर देखा।
“यह अभी-अभी हुआ। ज़ाकिर! क्या तुमने इसे नहीं सुना?”
"नहीं।"
“सुनो!” हबीब ने कहा, मानो वह उस आवाज को फिर से सुन रहा हो।
तीनों ने कान खड़े कर लिए। वे चिलचिलाती धूप में बेसुध खड़े थे, मानो दूर से आती किसी अनजान, रहस्यमयी आवाज़ को सुनने की कोशिश कर रहे हों। उसे खुद तो कुछ सुनाई नहीं दिया। लेकिन हबीब और बुंदू के चेहरों पर छाए आश्चर्य और भय ने उसे बता दिया कि उन्होंने कुछ सुना है। उन्हें देखते हुए वह भी आश्चर्य और भय से भर गया।
“भागो!” हबीब ने कहा, मानो आवाज़ पास आ रही हो, उन पर झपटने के लिए तैयार। वे भाग गए; वह भी उनके साथ भागा। वह भागता ही रहा। रावण वन से वापस आने की दूरी एक लंबी, खतरनाक यात्रा बन गई। आवाज़ मानो उसके ठीक पीछे आ रही थी, और उसका घर, यानी कस्बा, मीलों दूर लग रहा था। उसने अभी तक काला मंदिर भी नहीं देखा था! जब उसने उसे देखा, तो वह क्षितिज के पार प्रतीत हुआ। हबीब और बुंदू उससे आगे निकल गए थे। वह अकेला पीछे रह गया, और भागता ही रहा। ऐसा लग रहा था मानो युग बीत गया हो, और वह अभी भी भाग रहा हो। मैं कब तक भागता रहूँगा? मेरी साँस फूल रही है, और मेरे पैर पहले ही थक चुके हैं। और अपनी हाँफती साँसों और थके हुए पैरों के साथ मैं इस निर्जन जंगल में बिल्कुल अकेला भाग रहा हूँ। लेकिन कब तक? मेरा घर कितनी दूर है? आस-पास कहीं कोई दिखाई नहीं दे रहा। भागते हुए उसकी नज़र एक छोटी पहाड़ी पर पड़ी। एक आदमी, क्या यह एक आदमी है? उसके मन में दहशत की लहर दौड़ गई और उसके पैर सैकड़ों पाउंड भारी लगने लगे। क्या यह कोई आदमी है?

•

अफ़ज़ल के ज़ोरदार खर्राटों में से एक ने उसे जगा दिया, या कहें कि चौंका दिया। क्या वह सो रहा था? उसने अफ़ज़ल की ओर देखा, जो गहरी नींद में था और ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा था। यह आदमी सचमुच सात सौ साल तक सोने वाला है, वह वहीं बैठे-बैठे जम्हाई लेते हुए बुदबुदाया। फिर वह सोचने लगा। अफ़ज़ल सही था। वाकई लंबी नींद लेने का यही सही समय था। एक आदमी को सबसे अलग, किसी गुफा में जाकर सोना चाहिए। और सात सौ साल तक सोते रहना चाहिए। जब

वह जागेगा और गुफा से बाहर आएगा, तो देखेगा कि समय बदल गया है। और वह नहीं बदला है। यह अच्छा विचार है, हर सुबह उठकर आईने में देखने और यह शक करने से बेहतर है कि उसका चेहरा बदल गया है, और दिन भर इस सोच से परेशान रहने से बेहतर है कि उसका चेहरा बदल रहा है! जब कोई आदमी अपने आस-पास लोगों को बदलते हुए देखता है, तो ऐसे संदेह पैदा होते हैं। या ऐसा भी होता है कि कोई संदेह नहीं होता, और फिर आदमी बदल जाता है। कैसे? वे कैसे बदलते रहे? वे सभी लोग, जिनमें से हर एक को लगता था कि दूसरे बदल रहे हैं, जबकि वह खुद पहले जैसा ही दिख रहा था। हर कोई एक-दूसरे को देखकर अचंभित रह गया। “मेरे प्यारे दोस्त! तुम्हें क्या हो गया है?”
“मुझे? मुझे तो कुछ नहीं हुआ। लेकिन मुझे दिख रहा है कि तुम्हारे साथ कुछ हुआ है।”
“मेरे प्रिय मित्र, मुझे कुछ नहीं हुआ है। लेकिन मैं तुम्हारा चेहरा देख रहा हूँ—”
एक दूसरे से उलझ गया, दूसरा तीसरे से। एक ने दूसरे पर पंजे मारे, दूसरे ने तीसरे पर। वे सब एक-दूसरे पर पंजे मारते रहे और घायल व विकृत होते चले गए। मुझे डर था कि कहीं मैं भी—मैं वहाँ से चला गया। मुझे अपनी गुफा में जाकर सो जाना चाहिए। और तब तक सोते रहना चाहिए जब तक समय बदल न जाए।
...मैं एक जंगल में हूँ। जंगल घना होता जा रहा है। कितना घना, कितना गहरा! और यह शहर? न तो भक्ति और शांति के शब्द, न ही पुण्य कर्मों की वर्षा। बांसुरी का मधुर गीत सन्नाटा छा गया है। कहीं भी भक्ति का भाव नहीं। ज़मीन और पानी मैले और आपस में मिल गए हैं। पुरुष और स्त्रियाँ व्याकुल हैं। लोग अपने घर छोड़कर चले गए हैं। “जैसे भूकंप के समय लोग अपने घरों से भागते हैं।”* पुण्य कर्मों का दमन हो रहा है। सावित्री जैसी पवित्र स्त्रियों की साड़ियाँ चीर-फाड़ कर दी गईं। सुखी पत्नियाँ विधवा हो गईं। जिन गोद में बच्चे थे, वे खाली हो गईं। बच्चे मृत्यु के कगार पर थे, उनके सिर झुके हुए थे और आँखें ऊपर की ओर चढ़ी हुई थीं। मैं स्तब्ध रह गया: इस शहर का रक्षक कहाँ गया? जटाधारी योगी ने मुझ पर गरजते हुए कहा, “मूर्ख! इस शहर का रक्षक समस्त संसार का उद्धारकर्ता था। परन्तु वह इस स्थान को छोड़कर जंगल चला गया है।”
"किस कारण के लिए?"

कारण मत पूछो। चारों ओर देखो और समझो। हुआ यूं कि एक घोड़ा लगाम ढीली छोड़ते हुए हिनहिनाता हुआ जंगल में चला गया। जब उसने यह देखा, तो उसकी सारी आशा टूट गई। अपने रथ से उतरकर उसने अपनी बांसुरी एक घड़े पर रखी और उसे तोड़ दिया, घड़े के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और अपने भाई को ढूंढने के लिए जंगल में चला गया।
जब मैंने इस विपत्ति की कहानी सुनी, तो मैं शहर छोड़कर चला गया। दूर यात्रा करते हुए मैं एक जंगल में पहुँचा। एक निर्जन जंगल। अथाह सन्नाटा। एक पेड़ के नीचे मैंने उसके भाई को राख से सने अंगों के साथ हिरण की खाल पर बैठे देखा। उसके बाल उलझे हुए थे, आँखें बंद थीं, मुँह खुला था—और उसके मुँह से एक सफेद साँप ने अपना सिर बाहर निकाला। वह फुफकारता हुआ निकला और लंबा होने लगा, और लगातार लंबा होता गया। वह इतना लंबा हो गया कि उसका फन दूर, उफनते समुद्र की लहरों को छू रहा था। मैंने भय के साथ देखा कि लंबे सफेद साँप का शरीर बार-बार उस ज्ञानी व्यक्ति के मुँह से निकलकर समुद्र में विलीन हो रहा था। फिर मैंने देखा कि साँप की पूंछ उसके मुँह से निकल आई थी, और उस ज्ञानी व्यक्ति का प्राण त्याग गया था।
यह देखकर मैं अचंभित हुआ: हे राम, यह क्या रहस्य है? इसी चिंता में मैं वापस मुड़ा, ताकि कह सकूँ, हे द्वारका वासियों! यहाँ तुम मृत्यु-युद्ध कर रहे हो; वहाँ सर्प सागर में विलीन हो गया है। परन्तु नगर तक पहुँचने से पहले ही सागर की लहरें वहाँ पहुँच चुकी थीं। वह नगर, जो कभी अस्तित्व के सागर में शांति का प्रकाश था, अब मंथन करती सागर की लहरों में एक बुलबुले जैसा लग रहा था।* इस प्रकार कुरुक्षेत्र के मैदान के बीच मरणासन्न अवस्था में भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा, “हे युधिष्ठिर, आरंभ में जल था, क्योंकि सब कुछ जल से ही बना है। और अब मुझे यह अहसास हुआ है कि अंत में भी केवल जल ही है। स्रोत जल है, अंत जल है। ॐ शांति, शांति, शांति—”
... उसने खुद को झटका दिया और अपने सोए हुए साथी को देखा—जो मानो कई जन्मों से सो रहा था, दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज से बेखबर, लंबी और तेज़ खर्राटे ले रहा था। उसने गुफा से बाहर देखा और तुरंत अपना सिर अंदर खींच लिया, क्योंकि बाहर बहुत अंधेरा था और तूफान शुरू हो गया था। उसने बुदबुदाया, अभी रात का बहुत हिस्सा बाकी है। शरारतों की रातें कितनी लंबी होती हैं—उसने अपने सोए हुए साथी को देखा। बाहर तूफान चल रहा है, फिर भी वह कितनी चैन से सो रहा है। और कितनी देर से सो रहा है, जबकि उसका इरादा तो

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

ग्यारह
“बेटा, चाबियों का वो गुच्छा अभी भी यहीं पड़ा हुआ है।”
उसने मेज पर पड़ी चाबियों का गुच्छा देखा और शर्मिंदगी महसूस की। अब्बा जान ने अपने अंतिम क्षणों में उन्हें इतनी सावधानी से उसे सौंपा था! "अम्मी, आज मैं इन्हें ज़रूर संभाल कर रख दूंगा।"
“जी बेटा, ये तुम्हारे पूर्वजों की धरोहर हैं। इन्हें संभाल कर रखना।” इतना कहकर अम्मी जान कमरे से बाहर चली गईं। आखिर उन्हें घर के और भी काम निपटाने थे।
मेरे पूर्वजों की विरासत, उन्होंने मंद स्वर में कहा। “पुत्र, ये उस घर की चाबियाँ हैं जिस पर अब तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है।” उस घर की, उस ज़मीन की, रूपनगर की चाबियाँ। चाबियाँ मेरे पास हैं, और उनमें एक पूरा युग कैद है, एक बीता हुआ युग। लेकिन समय बीतता नहीं! यह बीतता रहता है, लेकिन बीतता नहीं। यह मंडराता रहता है। और घर कभी खाली नहीं रहते। जब उनमें रहने वाले चले जाते हैं, तब भी समय घरों में जीवित रहता है। रूपनगर के कई खाली पुराने घर उनकी कल्पना में बस गए। बेर के पेड़ वाला वह घर, मस्जिद के पास वाली गली वाला घर, जिसके मुख्य द्वार पर बड़ा ताला लगा था। पता नहीं उस घर में कौन रहता था, और कब उन्होंने उसे बंद किया और चले गए। तब तक वह घर सदियों से बंद था, ताला जंग खा चुका था, और अंदर कई कमरों की छतें गिर चुकी थीं, केवल दीवारें ही खड़ी थीं। और एक दोपहर, पतंग का पीछा करते हुए, वह उसके द्वार पर पहुँचा और देखा कि अंदर का नज़ारा किसी जंगल जैसा था। घास इतनी लंबी थी कि एक पपीते का पौधा उगकर इतना बढ़ गया था कि वह एक छोटे पेड़ जैसा लग रहा था। कैसे खाली पड़े घर जंगल में बदल जाते हैं। और कैसे समय—वह समय भी—जो अंदर कैद है, जंगल में बदल जाता है। मेरी स्मृति—मेरी शत्रु, मेरी मित्र— मुझे जंगल में ले जाती है और वहीं छोड़ देती है।
रात आनंददायक है, क्या तुम जाओगे या यहीं रुकोगे?
बिस्तर तो लचीला है, प्रियतमा, क्या तुम जाओगे या रुकोगे?

बारिश लगातार बरसती रही। कहीं से, किसी न किसी घर से, उस बारिश से भरी रात में, ढोल की आवाज आती रही—
"ज़ाकिर, मेरे लिए भी एक कब्र बना दो।"
“मैं ऐसा क्यों करूं? इसे खुद बना लो।”
सबीरा नम मिट्टी को खुरचकर इकट्ठा करती है और उसे अपने सफेद पैर के चारों ओर ढेर लगा देती है, और जब वह अपना पैर बाहर निकालती है, तो खोखला टीला अपनी जगह पर बना रहता है।
“ज़ाकिर! मेरी कब्र तुम्हारी कब्र से बेहतर है।”
"सच में?"
"अपना पैर अंदर रखकर देखो।"
मेरा पैर—सबीराह के कोमल सफेद पैरों से बनी कब्र में। कितना कोमल, कितना ठंडा—

•

“ज़ाकिर, बेटा! क्या तुमने सुना? बेकरी चलाने वाली महिला के बेटे को गोली मार दी गई है।”
“गोली लगी—कैसे?” चौंककर उसने अम्मी की ओर देखा, जो बुरी तरह परेशान होकर उसके कमरे में आई थी।
“अरे बाप रे, हमारे मोहल्ले में तो प्रलय आ गई है! बेचारी औरत का तो बस एक ही बेटा था।”
“उसे गोली किसने मारी?”
“कौन? जैसे कि कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसका नाम हम ले सकें! पड़ोसी कहते हैं कि मॉल रोड पर गोलियों की बौछार हो रही है। अरे, लोग खून के प्यासे हो गए हैं—पागल हो रहे हैं! बस मुझे बताइए, उस बेकरी वाली महिला के बेटे ने उनका क्या बिगाड़ा था?”
गोलियों की बौछार! वह बुदबुदाया। बाहर गोलियों की बौछार हो रही थी, और अंदर वह जंगलों में भटक रहा था। एक जंगल, फिर दूसरा जंगल, और फिर तीसरा जंगल। वह आगे बढ़ता रहा, और जंगल घने होते चले गए। मैं किस जंगल में हूँ? कितना घना, कितना गहरा। और यह शहर—
“ओह ज़ाकिर, क्या तुमने सुना है, वे आग लगा रहे हैं!” अम्मी ने कमरे में प्रवेश करते ही भयभीत स्वर में कहा।

“आग?” जंगलों से लौटते हुए उसने उसकी ओर देखा। “उन्होंने कहाँ आग लगाई है?”
“आपको पता है ना वो घर जिसमें घोड़े हैं, जहाँ उन बदमाशों का दफ्तर है? कौन सी पार्टी है? मुझे बिल्कुल याद नहीं आ रहा। मुझे उन पार्टियों वगैरह के नाम बिल्कुल याद नहीं आ रहे!”
कोई बात नहीं। उनके नाम याद रखने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है।
“मोहल्ले की औरतें मुझे पागल कर रही हैं। वे कहती हैं, चलो बाहर चलते हैं और देखते हैं कि क्या हो रहा है।”
“अम्मी, बाहर कुछ नहीं हो रहा है, कृपया बैठ जाइए और शांत रहिए।”
“बेटा, मैं तुमसे यही कहने आई थी। बाहर चाहे जो हो जाए, हमें क्या लेना- देना? मैं तुम्हें आज बाहर नहीं जाने दूंगी,” अम्मी ने कहा और तुरंत कमरे से बाहर चली गईं।
कोई बात नहीं, बाहर जो भी हो रहा है होने दो, उसने बुदबुदाते हुए कहा। बाहर कुछ नहीं हो रहा है। सब कुछ मेरे अंदर हो रहा है। जो कुछ भी पहले ही हो चुका है।

•

हो ये रहा है कि बड़े द्वार का ताला खुल गया है। छोटा बाज़ार एकदम शांत और सुनसान है। कदमों की आहट तभी सुनाई देती है जब किसी घर से जनाज़े का जुलूस निकलता है। उसके बाद, सन्नाटा छा जाता है, जो और भी गहरा होता जाता है। क्या रूपनगर पूरी तरह से निर्जन हो जाएगा?
“नासिर अली, मेरे बेटे! तुमने दानपुर से आई बैलगाड़ी को वापस भेज दिया, और तुमने अच्छा काम किया। लेकिन क्या तुम जानते हो कि आज सुबह से कितने घर खाली हो चुके हैं, और कितने जनाज़े निकल चुके हैं?”
और जब इमली के पेड़ वाला घर जल गया, तो रूपनगर के सभी पानी ढोने वाले अपने चमड़े के थैले लेकर आए। लेकिन पानी ने मिट्टी के तेल की तरह काम किया, क्योंकि आग पर पानी गिरने के बाद लपटें और भी तेज हो गईं।
हाकिम बंदे अली ने फुसफुसाने वालों की ओर गुस्से से देखा। "लेकिन मैं आपसे पूछता हूँ, किसी बाहरी व्यक्ति के यहाँ आकर आग लगाने का क्या कारण होगा?" तो फिर इसकी शुरुआत किसने की?
“लोगों! मुझे बोलने के लिए मजबूर मत करो। संपत्ति को लेकर हुए झगड़ों ने इस परिवार को तहस-नहस कर दिया है।”

“ज़ाकिर, मुझे डर लग रहा है, चलो यहाँ से चलते हैं।”
“सब्बो, डरपोक मत बनो, हम एक मिनट में निकलेंगे।”
मुझे डर लग रहा है, चलो यहाँ से चलते हैं।
एक धमाका! छत की कड़ियाँ ऐसे जल रही थीं जैसे जंगल जलता है।

•

दमकल गाड़ी आ गई है।
जंगलों से लौटते हुए उसने कुछ चौंकते हुए पूछा, "दमकल रोधी गाड़ी?"
“अगर आग थोड़ी देर से आती, तो आस-पड़ोस के घरों में भी फैल जाती। और हमारा घर भी कोई अलग-थलग नहीं है!” यह कहते हुए वह मुड़ी और वापस चली गई, मानो वह सिर्फ उसे यह खबर देने आई हो। लेकिन तभी उसे कुछ याद आया और वह रुक गई। “ज़ाकिर, क्या मैं तुम्हारे लिए चाय बना दूं?”
“चाय!” वह चौंककर उसकी ओर देखने लगा। “नहीं, अम्मी।” और उसी समय वह खड़ा हो गया।
अम्मी ने उसे शक की निगाह से देखा। "अरे, मेरे आते ही तुम उठ जाते हो!"
"मै अब जा रहा हूँ।"
“तुमने क्या कहा?” अम्मी लगभग चिल्लाईं। “तुम पागल हो गई हो! क्या आज बाहर जाने का कोई दिन है?”
“अम्मी! ख्वाजा साहब ने बहुत जोर देकर कहा था। अब्बा जान की कब्र धंस गई है। मैं कब्रिस्तान जाकर देखूंगा।”
यह सुनकर अम्मी हिचकिचाईं, लेकिन फिर उन्होंने कहा, "बेटा, तुम इसे कल भी कर सकते हो।"
“कल! अम्मी, आपको कल पर बहुत भरोसा है।” उसने अपनी माँ की ओर गौर से देखा। “कल आज से भी बदतर हो सकता है।”
अम्मी पूरी तरह से टूट गई थीं। उन्हें कोई जवाब सूझ ही नहीं रहा था। और वह जल्दी से अपने जूते पहने, बाल संवारे और बाहर चले गए।
दरवाजे पर उनकी मुलाकात ख्वाजा साहब से हुई। “मैं बस आपसे मिलने ही आ रहा था। आप कहाँ जा रहे हैं?”
“मैं वही कर रहा हूँ जो आपने मुझे कल बताया था। मैं कब्रिस्तान जा रहा हूँ।”
“लेकिन,” ख्वाजा साहब ने अनिश्चितता से कहा, “आप कैसे जाएँगे? उस तरफ बहुत अशांति है।”

नहीं, मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा।
ख्वाजा साहब थोड़ी देर रुके, फिर बोले, “अगर आप मेरी सलाह मानेंगे तो आज मत जाइए। कल जाइए।”
“बहुत खूब! मुझे लगा था कि अम्मी ही एकमात्र सच्ची आशावादी हैं। ख्वाजा साहब, आप भी मानते हैं कि कल बेहतर होगा!”
ख्वाजा साहब कुछ बोल नहीं पा रहे थे। फिर कुछ देर रुककर उन्होंने क्षमा मांगते हुए कहा, “पुत्र, मुझे नहीं पता कि तुम इस बारे में क्या सोचते हो। मौलाना साहब के निधन के बाद शायद मैंने तुम पर कुछ अधिकार जताना शुरू कर दिया है। या शायद अब करामत की जगह मैं—” ख्वाजा साहब की आवाज भर्रा गई। वाक्य पूरा करने से पहले ही वे चुप हो गए।
उन्होंने ख्वाजा साहब को दिलासा देने की कोशिश की। “आपने तो कभी उम्मीद नहीं छोड़ी! ये कैसी बातें हैं? अब जब आपने इतना लंबा इंतजार कर लिया है, तो थोड़ा और इंतजार कीजिए। कौन जाने कब—और क्यों नहीं? लोग तो सालों बाद भी लौट आते हैं। मैं खुद एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जो सालों तक इधर-उधर भटकता रहा, और अब जाकर लौटा है।”
“बेटे,” ख्वाजा साहब ने निराशा से कहा, “घर लौटने का समय बीत चुका है। अब यहाँ आने का क्या मतलब? क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है? मौलाना साहब सौभाग्यशाली थे कि शांति से इस दुनिया से चले गए।” वे थोड़ी देर रुके, सोचने लगे, फिर बोले, “जाओ बेटे, मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा। मौलाना साहब परेशान थे। लेकिन जब तुम वापस आओ, तो मुझे बता देना, ताकि मुझे तसल्ली हो जाए।”
उस संकरी गली से गुज़रते हुए वह झिझका। अम्मी सही कह रही थीं। उन्होंने तब कल्पना भी नहीं की थी कि आग इतनी फैल सकती है। और जिस इलाके में आग लगी थी, वह उनके घर से ज़्यादा दूर नहीं था। आस-पड़ोस के कई घर आग की चपेट में आ गए थे और जलकर राख हो गए थे। दमकलकर्मी आ चुके थे और तैयार खड़े थे। उनकी लंबी नली सड़क से एक जले हुए घर में जा रही थी, जिसकी छत उड़ चुकी थी और जो काले, धुएँ से भरे मलबे से भरा हुआ था। लोगों के समूह आसपास खड़े थे, जले हुए घर और पीतल के हेलमेट पहने दमकलकर्मियों को घूर रहे थे।
नाज़िरा की बंद दुकान के पास से गुज़रते हुए वह सड़क पर पहुँचा, जो दूर-दूर तक सुनसान थी। एकदम खाली और शांत। सड़क के बीचोंबीच पक्षियों का एक झुंड आकर बैठा था; कदमों की आहट सुनकर वे चौंक गए और हैरानी से उसकी ओर देखने

लगे, फिर पंख फड़फड़ाते हुए उड़ गए। उससे थोड़ी दूर आगे एक चील पंख फैलाए सड़क पर टहल रही थी। कदमों की आहट सुनकर वह झिझकी, गोल-गोल अचंभित आँखों से उसकी ओर देखा, चोंच में सड़े हुए मांस का एक टुकड़ा उठाया और उड़ गई। फिर दूर-दूर तक सड़क एकदम सुनसान थी। सन्नाटे में उसके कदमों की आहट कितनी तेज़ सुनाई दे रही थी, और उसके कानों पर कितना बोझ बन रही थी। आगे, बंद बाज़ार में, ईंटें हर जगह बिखरी पड़ी थीं। टूटी हुई कार की खिड़कियाँ, आधा जला हुआ टायर। उसके तेज़, तीखे कदमों की आवाज़। वह रुक गया। कुछ हिचकिचाहट। यहाँ कुछ हुआ था, और जब वह सोच रहा था कि क्या हुआ होगा, तभी अचानक उसे लगा कि कोई उसे देख रहा है। उसने दाएं और बाएं देखा। सारी दुकानें बंद थीं। लेकिन उनके पास ही लाठियां लिए पुलिसकर्मी कतारों में खड़े थे, बिलकुल खामोश। केवल उनकी आंखें राहगीरों पर टिकी थीं। लेकिन वहां से कौन गुजर रहा था? उस समय तो वह अकेला ही चल रहा था।
आगे सड़क और भी भयावह होती जा रही थी। सन्नाटे से निकलकर वह शोरगुल में आ गया। कहीं पास ही नारे लग रहे थे और धुआँ उठ रहा था। क्या कुछ जल रहा है? नहीं, मुझे लगता है किसी ने टायर में आग लगा दी है। खैर, मुझे क्या फर्क पड़ता है? मुझे कुछ और सोचना चाहिए। अब कब्रिस्तान यहाँ से कितनी दूर है? सुरेंद्र का पत्र। क्या मैं क्रूर हूँ? वह बकवास कर रहा है। लेकिन इसके अलावा वह कुछ और सोच ही नहीं पा रहा था। एक चौराहे से भीड़ उमड़ रही थी। अगले ही पल उसने खुद को भीड़ के बीच पाया। तनावग्रस्त चेहरे, लाल आँखें, सूजी हुई नसें, होठों पर नारे और गालियाँ। ये लोग कौन हैं? सभी चेहरे उसके लिए अनजान थे। थोड़ी देर बाद, अनजान चेहरों की भीड़ में से एक जानी-पहचानी आकृति दिखाई दी, उसने उसे देखा और रुक गई।
क्या आप भी जुलूस का हिस्सा हैं?
"नहीं।"
तो फिर आप उनके साथ क्यों जा रहे हैं?
मैं उनके साथ नहीं जा रहा हूँ। मैं कब्रिस्तान जा रहा हूँ। अपने पिता की कब्र पर।
वे लोग भी कब्रिस्तान की ओर जा रहे हैं।
“कब्रिस्तान की ओर! —क्यों?”
“कब्रिस्तान के पास, उस लाल इमारत में, एक पुलिस चौकी है। वे वहां छापा मारने वाले हैं।”

“यह तो वाकई एक बड़ी समस्या है, मुझे क्या करना चाहिए?”
“क्या आपको इसी सड़क से जाना है? किसी और सड़क से जाइए। अगर आप यहां चर्च जाने वाली सड़क पर मुड़ते हैं, तो वहां से आप पीछे की गलियों से होते हुए कब्रिस्तान तक पहुंच सकते हैं।”
"हां, मैं यही कर सकता हूं।"
लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। उसके चारों ओर लोगों का इतना विशाल जनसमूह था कि वह पूरी तरह से फँस गया था। वह बाढ़ में बहते हुए तिनके की तरह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। उसने असहाय होकर अपने चारों ओर के चेहरों को देखा। वे मानो खिंचकर लंबे हो गए थे। फिर वे चपटे होने लगे। खिंची हुई गर्दनें, चपटे चेहरे, लाल होंठ और बालों से भरे शरीर जो उत्तेजना से काँपते हुए प्रतीत हो रहे थे। वह भयभीत हो गया। क्या होगा अगर उनकी गर्दनें खिंचती चली जाएँ और उनके चेहरे चपटे होते चले जाएँ, जब तक कि उनका आकार पूरी तरह से बदल न जाए, या फिर अपना आकार ही खो दें? क्या मैं भी उनमें से एक हूँ? क्या मैं भी उनके साथ ऊपर उठ जाऊँगा? - नहीं! तो क्या मुझे इस भीड़ में कोई घोषणा करनी चाहिए? कौन सुनेगा? अगर कोई तुम्हारे कान में चिल्लाए तो भी तुम नहीं सुन सकते! कम से कम, मुझे उनके साथ नहीं जाना चाहिए। उन्हें अपने रास्ते से कब्रिस्तान जाने दो, और मैं अपने रास्ते से। मुझे इस भीड़ से जल्दी निकलना होगा, कहीं ऐसा न हो कि मेरी गर्दन भी खिंच जाए, मेरा चेहरा चपटा हो जाए, मेरी गर्दन की नसें फूल जाएं और मेरा चेहरा... अचानक शोर मच गया। गोलीबारी शुरू हो गई: दहशत, नारे, गालियां, ईंटों की बारिश, गोलियों की बौछार। एक ट्रक तेज़ी से उसके पास से गुज़रा, जिस पर लंबी गर्दन और चपटे चेहरे वाले सैनिक हाथों में पिस्तौल लिए खड़े थे, जो सामने दिख रही लाल इमारत की ओर बढ़ रहे थे। उसे यह अजीब लगा कि इमारत की ऊंची छत पर खड़े और निचली मंजिलों की खिड़कियों से झांक रहे सैनिकों की गर्दनें भी अचानक खिंच गईं और चेहरे और भी चपटे होते चले गए। वे भी पिस्तौलों से लैस थे। गोलियों की बौछार शुरू हो गई। दहशत, चीखें और रोना, अमानवीय चीखों का तूफान। वह, तूफान की लहरों में तैरते तिनके जैसा।
उसे नहीं पता था कि कितना समय बीत चुका था और यह सब कैसे हुआ, लेकिन जब उसका दिमाग थोड़ा सा साफ़ होने लगा तो उसने खुद को कब्रिस्तान के द्वार के पास लेटा हुआ पाया। मुझे अंदर जाना चाहिए, ताकि मैं कब्रों के बीच छिप सकूँ और इस कयामत के भयानक मंजर से बच सकूँ। लड़खड़ाते और ठोकर खाते हुए वह अंदर

गया और कब्रों के बीच भटकने लगा। वह रुका: यह अब्बा जान की कब्र है। वह कब्र के पास बैठ गया, यह सोचते हुए कि जब उसे होश आएगा तो वह फातिहा पढ़ेगा। उसकी साँस अभी भी फूल रही थी और उसका शरीर काँप रहा था। गोलियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। नारों की आवाज़ भी, लेकिन अब वे मुश्किल से नारे ही रह गए थे। अब वे भयंकर, अमानवीय चीखों का सैलाब थे। और यह धुआँ क्यों था? चौंककर उसने अपनी नज़रें अपने सामने की इमारतों के ऊपर उठाईं, जहाँ काले और भूरे धुएँ के बादल उठ रहे थे, फिर एक घने काले स्तंभ में इकट्ठा होकर ऊँचाई तक उठ रहे थे। "आग," उसने काँपती, डरी हुई आवाज़ में बुदबुदाया। अब धुआँ कब्रिस्तान की ओर बढ़ रहा था, और फिर ऐसा लगा मानो पूरा कब्रिस्तान धुएँ से भर गया हो। कब्रों के बीच बैठे हुए, वह धुएँ के बादलों के बीच था। उसकी साँसों से भी ज़्यादा, उसकी इंद्रियाँ धुएँ से जकड़ी हुई थीं। उसकी कल्पना में पूरा शहर जल रहा था। उनकी पूंछें मशालों की तरह थीं, और शहर में झाड़ू की तरह फैल रही थीं, चटखता हुआ, धधकता हुआ शहर। बहुत कुछ जल चुका था, बहुत कुछ जल रहा था। बहुत सी इमारतें नष्ट हो चुकी थीं, बहुत सी गिरने वाली थीं। वह रेंगता रहा, मलबे के नीचे से निकलने की कोशिश करता रहा। उसे लगा कि वह पूरा नहीं बचा है। क्या मैं खुद हूँ, या खुद का मलबा? “दुख ने कैसी इमारत को नष्ट कर दिया!”* क्या मैं टुकड़ों में बँटा हुआ हूँ? मेरे चारों ओर सब कुछ टुकड़ों में बँटा हुआ है। समय भी। उस एक समय के गर्भ में अनगिनत समय थे। मैं भटक रहा हूँ, टूटा हुआ—किन समयों में?

•

... “शहर तो जल चुका है, पर हमारी पूंछें अभी भी जल रही हैं। हम अपनी जलती हुई पूंछें कहाँ रखें?”* “बेटे, इन्हें अपने मुँह में रख लो।” हमने वैसा ही किया। “हमारी पूंछें जीभ और तालू के बीच, दाँतों के नीचे ठंडी हो गई हैं, पर हमारे चेहरे काले क्यों पड़ गए हैं?” “हर आग का अंत कालिख में होता है।” ...तब मैंने उस काले चेहरे वाले दुष्ट से पूछा, “अरे काले चेहरे वाले, बदनसीब! तेरी माँ तेरे लिए मातम मनाए! क्या तू पत्र लिखने वालों में से एक था?”* उसने सिर झुकाकर उत्तर दिया, “पहला पत्र मैंने ही लिखा था: ‘फसल तैयार है। बागों में फूल खिल रहे हैं, अंगूर की बेलें अंगूरों से लदी हैं।’ फिर मैंने ही सबसे पहले उसके दूत के प्रति निष्ठा की शपथ ली।” “उसके बाद तेरा क्या हुआ?” “मेरा नहीं, शहर का,” और उसने फुसफुसाते हुए कहा, “अरे भाई, धीरे बोल, या यूँ कहें कि बिल्कुल मत बोल, क्योंकि फसल पक चुकी है, और कूफ़ा में

कर्फ्यू लगा है।” कूफ़ा में कर्फ्यू! मैं चकित रह गया और गलियों में भटकता रहा। गलियाँ सुनसान थीं, सड़कें खाली थीं, खिड़कियाँ बंद थीं, दरवाजे बंद थे, मस्जिद में सन्नाटा पसरा हुआ था। जब वह नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़ा हुआ, तो उसके साथ नमाज़ पढ़ने वाले लोग कतारों में खड़े हो गए, जिससे मस्जिद का पूरा प्रांगण पीछे तक भर गया। नमाज़ खत्म होने पर जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो पुरुषों की कतारें गायब हो चुकी थीं, मस्जिद खाली थी। जब वह मस्जिद में दाखिल हुआ तो नमाज़ पढ़ने जा रहे पुरुषों से घिरा हुआ था, और जब वह मस्जिद से निकला तो अकेला था।* वह खाली सड़कों और सुनसान गलियों में भटकता रहा। बगीचों में फूल खिले हुए थे, अंगूर की बेलें अंगूरों के गुच्छों से लदी हुई थीं, और फसल पक चुकी थी। कुछ मत बोलो, कहीं पहचान न लिया जाए—
...तब बुद्ध ने अपने मुख से कहा: “घने जंगल में एक बाघ रहता था। बसंत ऋतु थी, पूर्णिमा की रात थी। बाघ और उसका बच्चा जंगल में आनंद ले रहे थे। एक बार उसने इतनी ज़ोर से दहाड़ा कि पूरा जंगल गूंज उठा। उसकी दहाड़ सुनकर सियार भी कांप गए। वे ज़ोर-ज़ोर से रोने-चिल्लाने लगे। बहुत देर तक वे रोते- चिल्लाते रहे। उन्होंने पूरे जंगल को झकझोर दिया, लेकिन बाघ चुप रहा। उसके बच्चे ने कहा, ‘हे मेरे पिता! आप इतने वीर, जंगल के राजा—यह आश्चर्य की बात है कि सियार इतना शोर मचा रहे हैं और आप चुप हैं।’ बाघ ने उत्तर दिया, ‘हे मेरे पुत्र! अपने पिता के एक वचन को अपने हृदय में संजो कर रखना: जब सियार बोलते हैं, तब बाघ चुप हो जाते हैं।’”
यह दृष्टांत सुनकर एक भिक्षु ने कहा, “हे भगवान बुद्ध, यह कब हुआ था?” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “उस समय जब मैंने शेर का रूप धारण किया था और बनारस से दूर हिमालय की तलहटी में रह रहा था। राहुल मेरे साथ था।”
...इन शब्दों के बाद बुद्ध चुप हो गए। जब वे काफी देर तक चुप रहे, तो भिक्षु असमंजस में पड़ गए: क्या चुप रहने का समय फिर से आ गया था? जब ज्ञानी चुप हो जाते हैं, और जूतों के फीते बोलने लगते हैं। यही वह समय है जब जूतों के फीते बोलते हैं। इसलिए मत बोलो, कहीं पहचाने न जाओ। वे बोले, और पहचाने गए, और सिरों की कटाई शुरू हो गई। जब मैं जलमार्ग के किनारे पहुँचा, तो पत्तों वाले पेड़ की शाखाएँ सिरों से लदी हुई थीं।* मुझे देखकर कटे हुए सिर खिलखिलाकर हँसने लगे, और पके फलों की तरह धड़ाम से जलमार्ग में गिरने लगे। मुझे डर था कि कहीं मेरा सिर भी पक न गया हो। फल के शाखा से गिरने से पहले

ही, मैं जलमार्ग में कूद गया। तैरते रहने के लिए संघर्ष करते हुए, मैं किसी तरह दूसरे किनारे पर पहुँच गया। मैं जलमार्ग से बाहर आया और शहर की ओर जाने का फैसला किया। लेकिन वहाँ कोई वाहन नहीं था। बस स्टैंड सुनसान था। न स्कूटर, न टैक्सी। आस-पास एक भी निजी कार नहीं दिख रही थी। मैंने एक राहगीर से पूछा, “यह क्या हो रहा है? यहाँ एक भी वाहन नज़र नहीं आ रहा।” उसने जवाब दिया, “आज शहर में हड़ताल है। सभी वाहन सड़कों से गायब हैं और सभी बाज़ार बंद हैं।” मैं पैदल ही निकल पड़ा। मैं अभी थोड़ा ही आगे बढ़ा था कि एक जुलूस मेरे पीछे आ गया। यह बहुत बड़ा जुलूस था। असंख्य लोग। सिरों का एक उग्र सागर। लेकिन सिर कहाँ हैं? मैंने गौर से देखा—किसी का भी सिर नहीं था। उनके सिर कहाँ चले गए? और क्या मेरा सिर अभी भी मेरे पास था? जलमार्ग से बाहर आने के बाद से मुझे यह देखने का ख्याल ही नहीं आया था कि मेरा सिर सही सलामत बाहर आया है या खो गया है। मैंने अपने सिर को दोनों हाथों से छुआ और पाया कि वह मेरी गर्दन पर सुरक्षित है। मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया। इतनी गर्मी थी मानो प्रलय आ गई हो। “हे प्रभु, हमें नरक की आग से बचाओ।”* सूर्य पृथ्वी से केवल सवा भाले की लंबाई तक ही नीचे आ गया था,* और खोपड़ियाँ खाना पकाने के बर्तनों की तरह उबल रही थीं। आज सिर कंधों पर बोझ हैं। जो इस बोझ से मुक्त हो गए हैं, वे भाग्यशाली हैं। अगर मैंने अपना सिर वहीं छोड़ दिया होता, तो मैं सुरक्षित होता। जिनके सिर हैं, और जिनके दिमाग में बुद्धि है, वे आज मुसीबत में हैं। जिनके दिमाग में बुद्धि है, और जिनके मुंह में जीभ है। “मैं समय की कसम खाता हूँ, मनुष्य निश्चित रूप से हानि में है।”* “शाम हो गई है। नदी का प्रवाह रुक गया है,”* तंबू जल चुके हैं। “यहाँ बुझी हुई आग, वहाँ टूटी हुई तंबू की रस्सियाँ।”* कुछ तंबू की दीवारें अभी भी जल रही हैं। उनकी रोशनी में मैंने देखा कि लाशों के सिर नहीं थे। उनके सिर कहाँ हैं? अरे भाई, उन्हें भाले की नोकों पर उठा लिया गया है।* अब तुम उन्हें दमिश्क के दरबार में देखोगे। जूतों के फीते बोल रहे हैं। वक्ता का सिर एक थाली में है। “अरे मेरे प्यारे दोस्त! अब शहर की क्या खबर है?” “अरे भाई, अब सिर काटने वालों के सिर काट कर दरबार में लाए गए हैं।” और एक कनखजूरा नाक से अंदर घुसा, मुंह से बाहर निकला और फिर नाक से अंदर चला गया। थाली में रखा सिर उस दुष्ट का है जिसने धन्य सिर काट डाला और उसे भाले की नोक पर उठाकर थाली में रखकर दरबार में पेश किया। उस दरबार में कितने ही सिर थालियों में पेश किए गए! और कितने ही और पेश किए जाएंगे। तब दाऊद के पुत्र

...लंबे मौन के बाद बुद्ध ने अपने मुख खोले: “भिक्षुओं, कल्पना कीजिए एक घर चारों ओर से जल रहा है। उसके अंदर कुछ बच्चे डर से कांपते हुए इधर-उधर भटक रहे हैं। हे भिक्षुओं, पुरुष और स्त्रियाँ जलते हुए घर में भटकते हुए बच्चों के समान हैं।” “मैं काल की शपथ लेता हूँ, मनुष्य का अवश्य ही नुकसान होगा।”
... “अरे मेरे बेटे! तुमने ये कस्बे कैसे ढूंढे?”
“हे मेरे पिता, मैंने सभी नगरों में अशांति पाई। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, मैं हर दिशा में खुशी और शांति की तलाश में गया। हर दिशा में मैंने आदम की संतान को दुखी और परेशान पाया।”
"मेरे बेटे, तुम ऐसी चीज की तलाश कर रहे थे जो नीले आसमान के नीचे नहीं मिल सकती।"
"तो फिर, हे मेरे पिता, आप मुझसे क्या कहेंगे?"
“मैं तुमसे वही कहूंगा जो दाऊद के पुत्र ने अपने पुत्र से कहा था: हे पुत्र, बिखरे हुए बादल फिर कभी एक साथ नहीं आते। जो बादल वर्षा करके समाप्त हो जाते हैं, वे फिर कभी वर्षा नहीं करते। इसलिए इससे पहले कि पक्षी चुप हो जाएं और चक्की की आवाज बंद हो जाए, और इससे पहले कि खिड़कियों से बाहर झांकने वालों के लिए अंधेरा छा जाए और गली के द्वार बंद हो जाएं, और इससे पहले कि चांदी की रस्सी टूट जाए और सोने का कटोरा टूट जाए और कुएं पर घड़ा चकनाचूर हो जाए और—”*

•

“भाई, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”
वह चौंककर अफजल की ओर देखने लगा, जो किसी तरह वहां उसके सिर के पास खड़ा था।
“यार, मैं अपने पिता की कब्र पर आया था। फिर मैं यहीं फंस गया। आज सारा बवाल कब्रिस्तान के आसपास ही हुआ। लेकिन तुम यहाँ कैसे हो?”
“मुझे भी कब्रों से जुड़ी वही समस्या है जो तुम्हें है। मेरी दादी भी यहीं दफन हैं।” इशारा करते हुए उन्होंने कहा: “वो वाली, वो उनकी कब्र है।” वे थोड़ी देर रुके; फिर टूटी हुई आवाज़ में बोले— “ज़ाकिर, मेरी दादी की मृत्यु ने मेरी सारी ताकत छीन ली है।” वे चुप हो गए। काफी देर तक वे चुपचाप बैठे रहे, अपने विचारों में खोए हुए। फिर धीरे से बोले, “ज़ाकिर, क्या तुम्हें ये अजीब नहीं लगता?”

"क्या?"
"हम दिनभर की उथल-पुथल के बीच, कब्रों के बीच मिले हैं।"
वह यह बात भूल गया था। वह अचानक उठ बैठा और चारों ओर देखा। कब्रें ही कब्रें। और अब शाम ढल रही थी। "यार, शाम ढल रही है, चलो चलते हैं।"
“अब हम यहाँ से कहाँ जाएँगे?” अफजल ने मासूमियत से पूछा।
“कहीं भी। चलो चलते हैं।” वह उठ खड़ा हुआ।
सड़क दूर-दूर तक खाली भी थी और भरी हुई भी। एक छोर से दूसरे छोर तक कितनी ही ईंटें बिखरी पड़ी थीं। टूटी ईंटें, गाड़ियों की खिड़कियों के टुकड़े, अधजले टायर। कितने ही ट्रैफिक सिग्नल बिना बत्ती के खड़े थे, और कितने तो बुरी तरह मुड़ चुके थे। सन्नाटा पहले के शोरगुल की कहानी बयां कर रहा था। यह अजीब बात है कि ऐसे मामलों में बाद में छाने वाला गहरा सन्नाटा पहले के शोरगुल के ठीक अनुपात में होता है। चलना मुश्किल होता जा रहा था। इतनी सारी बिखरी ईंटें, गाड़ियों की खिड़कियों के टुकड़े और खंडहर हो चुके मकानों का मलबा।

•

... सादत खान की जागीर, जनरल की पत्नी का महल, साहिब राम का बाग और महल, सब नष्ट हो चुके थे, धूल से भरे हुए थे। जामा मस्जिद से राजघाट तक वीरान इलाका था। अगर ईंटों के ढेर हटा दिए जाएं, तो वहां पूरी तरह सन्नाटा छा जाएगा। हरे-भरे शाह के मकबरे पर वही पागल फकीर फिर से बैठा था। मैं डर गया था, मुझे डर था कि कहीं वह फिर से मुझ पर दहाड़ न मारे। लेकिन आज कोई दहाड़ नहीं थी। तब मैं खुद उसके पास गया। मैंने आदरपूर्वक पूछा, “शाह साहब, आप क्या भविष्यवाणी करते हैं?”
जो हो चुका है, वही दोबारा होगा।
"ऐसा पहले से ही हो रहा है।"
उसने गुस्से भरी निगाहों से मेरी तरफ देखा। वह दहाड़ा, “चले जाओ! मुझे आगे कुछ भी बताने का आदेश नहीं है।”
मैं वहां से चला गया।

•

“ज़ाकिर, मेरे दोस्त!” अफ़ज़ल रुका, फिर बोला, “लगता है बहुत हंगामा हुआ है।” दरअसल उसने सड़क पर खून के धब्बे देखे थे और वह डर गया था।
"हां, ऐसा ही लगता है।"

“लोग क्रूर हो गए हैं,” अफजल ने बुदबुदाते हुए कहा।
क्रूर—अफजल के मुंह से यह शब्द सुनकर वह थोड़ा चौंक गया, लेकिन चुप रहा।
दोनों चुप हो गए थे। वे बस चल रहे थे, साथ-साथ, लेकिन एक-दूसरे से जुड़े हुए नहीं थे।
“शिराज वाइन भी!” दोनों ने एक साथ कहा। वे अनजाने में उसी दिशा में चले गए थे, और जब वहाँ पहुँचे तो आश्चर्यचकित रह गए।
शिराज होटल बंद था, लेकिन सामान्य तरीके से नहीं: उसके दरवाजों के सारे शीशे चकनाचूर हो चुके थे। दरवाज़ा और दीवारें कालिख से ढकी हुई थीं। उसके सामने लगा बोर्ड जलकर दरवाज़े के ठीक सामने ज़मीन पर पड़ा था। इतनी ईंटें बिखरी हुई थीं कि वे अंदर और बाहर दोनों तरफ से दिखाई दे रही थीं। तो यहाँ भी ज़बरदस्त हमला हुआ था और यहाँ भी आग लगाई गई थी। दोनों शिराज होटल को टकटकी लगाकर देखते रहे। फिर बिखरी हुई ईंटों और टूटे शीशों से बचते हुए वे वहीं फुटपाथ पर बैठ गए।
वे चुपचाप बैठे रहे और शाम की परछाइयाँ फैलने लगीं। उनके सामने का रास्ता एकदम शांत था। न पैरों की आहट, न वाहनों का शोर। तभी धुंधलके में एक परछाई दिखाई दी, जो उनकी ओर आ रही थी। उन्होंने गौर से देखा कि वह कौन है। “इरफ़ान,” उसने मन ही मन कहा, और उसकी कल्पना में शाही जहाज की भूरी बिल्ली की छवि उभर आई—ठीक वैसे ही जैसे उसने उसे उस खामोश शाम को देखा था, जब वह शाही जहाज के मलबे में भटक रहा था।
इरफ़ान ने बिना किसी हैरानी के उसे और अफ़ज़ल को वहाँ बैठे देखा। फिर बिना कुछ कहे वह भी उनके बगल में बैठ गया। तीनों मूर्ति की तरह बैठे रहे। शाम के गहरे होते अंधेरे में, तीन गतिहीन परछाइयाँ।
अचानक अफजल उठ खड़ा हुआ, मानो वह चुपचाप और बिना हिले-डुले बैठे-बैठे ऊब गया हो। वह उन दोनों के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। “यार, तुम दोनों अच्छे आदमी हो। मुझे माफ कर दो। मैं शहर की रक्षा नहीं कर पाया।”
वे दोनों चुपचाप उसकी ओर देखते रहे। आज अफजल के इस व्यवहार से इरफान को जरा भी चिढ़ नहीं हुई।
अफजल कुछ देर खड़ा रहा। फिर बैठ गया और धीरे से बोला, “यार, हम भी तो गुणी नहीं थे।” वह चुप हो गया और उन दोनों की ओर देखने लगा। “हम भी क्रूर हैं। हम भी।”

ज़ाकिर चुपचाप अफ़ज़ल की ओर देख रहा था। "मैं क्रूर हूँ?" वह अफ़ज़ल के शब्दों को सुधारना चाहता था, या शायद वह बस अपने आप से बुदबुदा रहा था। अफजल ने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली, नामों की सूची पर एक नजर डाली और कलम से सभी नामों को मिटा दिया। "कोई भी व्यक्ति गुणी नहीं होता।"
न तो उसने और न ही इरफान ने कोई प्रतिक्रिया दिखाई। काफी देर तक तीनों चुपचाप बैठे रहे। फिर वह थोड़ा बेचैन हो गया।
“यार,” उसने इरफान से कहा, “मैं उसे एक पत्र लिखना चाहता हूँ।”
“अब?” इरफान ने उसके चेहरे की ओर घूरकर देखा।
"हाँ अब।"
“अब जब—” यह कहना मुश्किल था कि इरफान क्या कहना चाहता था; वाक्य के बीच में ही वह चुप हो गया।
“हाँ, अब कब—” वह वाक्य के बीच में ही रुक गया, फिर उसने बात को दूसरे ढंग से मोड़ा। “इससे पहले—” उलझन में पड़कर वह चुप हो गया।
इससे पहले—उसने अपने मन में इसे स्पष्ट करने की कोशिश की—इससे पहले— इससे पहले कि उसके बालों की मांग चांदी से भर जाए, और पक्षी चुप हो जाएं, और इससे पहले कि चाबियां जंग खा जाएं, और गलियों के दरवाजे बंद हो जाएं—और इससे पहले कि चांदी की डोरी टूट जाए, और सोने का कटोरा चकनाचूर हो जाए, और कुएं पर घड़ा टूट जाए, और चंदन का पेड़, और समुद्र में सांप, और—
“तुम चुप क्यों हो?” इरफान उसे टकटकी लगाए देख रहा था।
“चुप रहो।” अफजल ने अपनी उंगली होठों पर रखकर इरफान को चुप रहने का इशारा किया। “मुझे लगता है हमें कोई संकेत मिलेगा।”
“कोई संकेत? अब क्या संकेत हो सकता है?” इरफान ने कड़वाहट और निराशा के साथ कहा।
“साथी, संकेत हमेशा ठीक ऐसे ही समय पर आते हैं, जब चारों ओर—” वह अपने भाषण के बीच में रुक गया। फिर उसने फुसफुसाते हुए कहा, “यही संकेत का समय है—”

***** समाप्त *****

अनुवादक की टिप्पणी
इंतज़ार हुसैन ने अपने अब प्रसिद्ध उपन्यास का नाम बस्ती रखा, एक ऐसा शब्द जो किसी भी ऐसे स्थान को संदर्भित कर सकता है जहाँ लोगों के समूह रहते हैं, चाहे वह मोहल्ला हो या शहर। उपन्यास स्वयं कस्बों से भरा हुआ है, जिनमें न केवल पाकिस्तान और भारत के वर्तमान कस्बे शामिल हैं, बल्कि अतीत का कम से कम एक कस्बा (1857 का दिल्ली), मुस्लिम और हिंदू कथा परंपरा के कुछ पौराणिक कस्बे और दो काल्पनिक कस्बे, रूपनगर और व्यासपुर भी शामिल हैं। यद्यपि सभी बाहरी घटनाएँ स्पष्ट रूप से लाहौर में ज़ाकिर के वयस्क जीवन के दौरान घटित होती हैं, लाहौर का नाम कहीं नहीं लिया गया है—यह शुरू से अंत तक "यह शहर" ही बना रहता है। और आंतरिक घटनाएँ केवल ज़ाकिर की स्मृति और कल्पना में घटित होती हैं, क्योंकि वह अपने व्यक्तिगत और सांस्कृतिक इतिहास के समय और स्थानों के बीच घूमता रहता है। लेखक ने कुछ मामलों में संक्रमणों को धुंधला कर दिया है। मैंने पाठ में विरामों का उपयोग करके समय और स्थान की गति को दर्शाने और जहाँ काल्पनिक अंश शुरू होते हैं वहाँ "..." का उपयोग करके उन्हें थोड़ा स्पष्ट करने का प्रयास किया है। अध्याय सात, आठ, दस और ग्यारह के कुछ हिस्सों में कल्पना और उलझे हुए विचार शामिल हैं। हालांकि मैंने उद्धरणों और संदर्भों को दर्शाने वाले फुटनोट दिए हैं, लेकिन यह उलझन ही लेखक की कलात्मकता का हिस्सा है।
मैंने अनुवाद को दक्षिण एशिया के बारे में अच्छी जानकारी रखने वाले पाठकों और कम जानकारी रखने वाले पाठकों दोनों के लिए सुगम बनाने का प्रयास किया है। इसलिए, जहाँ भी संभव हो, मैंने फुटनोट्स के बजाय शब्दावली प्रविष्टियों को प्राथमिकता दी है, क्योंकि ये उन पाठकों के लिए कम असुविधाजनक होती हैं जिन्हें इनकी आवश्यकता नहीं होती। दृश्य विकर्षण से बचने के लिए, शब्दावली प्रविष्टियों को पाठ में इंगित नहीं किया गया है, लेकिन सभी महत्वपूर्ण नाम और शब्द, और अधिकांश गौण शब्द, आसानी से मिल सकते हैं। चूंकि उपन्यास में प्रयुक्त सांस्कृतिक सामग्री पारंपरिक और आधुनिक मुस्लिम और हिंदू (और बौद्ध) सामग्री का एक समृद्ध मिश्रण है, इसलिए शब्दावली विस्तृत है; लेकिन यह उपन्यास में प्रत्येक नाम और शब्द के उपयोग

पर ही केंद्रित है, और केवल न्यूनतम पृष्ठभूमि जानकारी प्रदान करने का प्रयास करती है जिसकी लेखक स्पष्ट रूप से पाठक से अपेक्षा करता है।
कुछ जगहों पर, यह उपन्यास अनुवादक के सामने असाध्य समस्याएँ प्रस्तुत करता है—ऐसे अंश जिनमें भाषा एक शैली से दूसरी शैली में पूरी तरह बदल जाती है, जो उर्दू में तो अत्यंत प्रभावशाली है लेकिन अंग्रेज़ी में उसे पकड़ पाना लगभग असंभव है। पारंपरिक मुस्लिम धार्मिक शब्दावली का प्रयोग (उदाहरण के लिए, अध्याय एक में कैन और हाबिल की कहानी में) किंग जेम्स संस्करण की भाषा से बहुत कमज़ोर ढंग से व्यक्त किया जा सकता है। फारसी- अरबी कथा-कथा परंपरा के तुकबंदी वाले गद्य और अन्य विशिष्ट अलंकरण (उदाहरण के लिए, अध्याय सात में समृद्ध शहर के वर्णन में) अंग्रेज़ी में अपनी भव्यता खो देते हैं। नौकरों के संवाद में प्रयुक्त शैली परिवर्तन (उदाहरण के लिए, अध्याय एक में हिंदू सेविका फुल्लो का जोशीला भाषण) मानक अंग्रेज़ी में पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं किए जा सकते; न ही हिंदू परंपरा की कुछ कहानियों की संस्कृतनिष्ठ शैली का प्रभाव (उदाहरण के लिए, अध्याय सात में राजा द्वारा ऋषि से पूछे गए प्रश्न) स्पष्ट किया जा सकता है। ये हानियाँ अनुवादक और पाठक दोनों को चुकानी पड़ती हैं।
हालाँकि, कुछ विशिष्ट प्रकार के भाषण-संकेतक हैं जिन्हें मैं बनाए रख सका और रखा भी। पारंपरिक उर्दू प्रत्यक्ष संबोधन और सीधे संवाद के लिए जानी जाती है। भाषण अक्सर संबोधन के किसी रूप से शुरू होते हैं—कभी-कभी नाम या रिश्तेदारी का शब्द, या बहुत आम तौर पर किसी प्रकार का संबोधनवाचक शब्द; हालाँकि मैंने इनमें से अधिकांश को छोड़ दिया है या उनका अनुवाद किया है, मैंने कुछ अधिक स्पष्ट चिह्नों को बनाए रखा है, जिनमें खेदजनक 'ऐ' और सर्वव्यापी, अपरिहार्य, अनुवाद न करने योग्य 'यार' शामिल हैं। सामान्य तौर पर, मेरा प्रत्येक वाक्य उपन्यास के एक वाक्य का अनुवाद है, जिसमें न्यूनतम परिवर्तन किए गए हैं। मैंने पाठ का "रूपांतरण" नहीं किया है या इसकी शैलीगत विशिष्टताओं को सुव्यवस्थित नहीं किया है।
मेरा उद्देश्य पात्रों को अमेरिकियों जैसा उच्चारण देना नहीं रहा है। मैं एक सावधानीपूर्वक संतुलन चाहता हूँ: ऐसे वाक्य जो मानक अंग्रेज़ी के दायरे में हों, लेकिन उर्दू की लय बरकरार रहे। मैं चाहता हूँ कि पाठक को एक सुखद दोहरा अनुभव हो: अंग्रेज़ी के अर्ध-पारदर्शी माध्यम से यह एहसास हो कि एक अलग संस्कृति के लोग अपना जीवन जी रहे हैं, हमारा नहीं। जहाँ उर्दू

में वाक्य समुद्र में मछली की तरह तैरते हैं, वहीं अंग्रेज़ी में मैं चाहता हूँ कि वे कम से कम एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए एक्वेरियम में मछली की तरह तैरें। उर्दू एक इंडो-यूरोपीय भाषा है जिसका व्याकरण अंग्रेज़ी से बहुत अलग नहीं है, और आधुनिक उर्दू गद्य अधिकतर मामलों में अंग्रेज़ी में बिना किसी अस्वीकार्य नुकसान के अनुवादित हो जाता है। (दुर्भाग्य से, पुराने गद्य और कविता के मामले में ऐसा नहीं है।)
कुछ पाकिस्तानी लोगों ने इस उपन्यास के मेरे चयन की आलोचना की है, इस आधार पर कि यह उनकी संस्कृति की "नकारात्मक छवि" प्रस्तुत करता है, "उदासी" का भाव जगाता है। निःसंदेह बस्ती विवादास्पद रहा है; और निःसंदेह यह आधुनिक पाकिस्तान का कोई निश्चित, संपूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करता। लेकिन निश्चित रूप से कोई भी समझदार पाठक इससे ऐसी अपेक्षा नहीं करेगा। आत्म-आलोचनात्मक साहित्य एक खुले और आत्मविश्वासी समाज की पहचान है; परिष्कृत साहित्य एक समृद्ध और स्वस्थ भाषा की पहचान है। बस्ती एक परिपूर्ण उपन्यास नहीं है, लेकिन यह एक उत्कृष्ट उपन्यास है, विचारोत्तेजक है, और अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में अविस्मरणीय रूप से भावपूर्ण है। मुझे आशा है कि यह अंग्रेजी में अनुवादित अच्छे उर्दू उपन्यासों के बढ़ते संग्रह का हिस्सा बनेगा; कई आशाजनक आधुनिक रचनाएँ हैं जो अनुवादक के प्रयासों का अच्छा प्रतिफल देंगी।
मैं विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एम.यू. मेमन का आभारी हूं, जिन्होंने इस परियोजना का प्रस्ताव रखा। उर्दू पाठ के गहन विश्लेषण के लिए मैं कोलंबिया विश्वविद्यालय के पूर्व क़ैद-ए-आज़म विजिटिंग प्रोफेसर रज़ी वस्ती का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने मेरे कई प्रश्नों के उत्तर दिए; पाकिस्तान के बर्कले उर्दू भाषा कार्यक्रम के जनाब कमर जलील का भी धन्यवाद, जिन्होंने पहले एक उपयोगी धारावाहिक शब्दावली संकलित की थी; और कोलंबिया विश्वविद्यालय के मेरे छात्रों का भी धन्यवाद, जिन्होंने मेरे साथ उपन्यास के कुछ अंश पढ़े और उस पर अपने विचार और भावनाएं साझा कीं। 1988 में लाहौर यात्रा के दौरान मेरे अनेक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए लेखक इंतज़ार हुसैन का विशेष धन्यवाद। अंग्रेजी गद्य के रूप में अनुवाद पर बहुमूल्य टिप्पणियों के लिए मैं शिकागो विश्वविद्यालय के अपने शिक्षक और मित्र सी.एम. नईम, अपने मित्रों डेविड रुबिन और जेनिफर क्रू, और विशेष रूप से अपनी माता का आभारी हूं, जो एक उत्कृष्ट व्याकरणविद् और छोटी-छोटी

त्रुटियों को पहचानने में माहिर थीं। अध्याय-विभाजक डिज़ाइन मेरे मित्र आदिल मंसूरी ने उदारतापूर्वक प्रदान किए। उपन्यास का पहला अध्याय सर्वप्रथम एदेबियात में प्रकाशित हुआ था, और संपादकों की सहृदय सहमति से इसे (मामूली परिवर्तनों के साथ) पुनः प्रकाशित किया गया है।
सबसे बढ़कर, मैं अपने सबसे अच्छे मित्र और सहयोगी, प्रख्यात आलोचक और लेखक शम्सुर रहमान फारूकी की मदद के लिए अत्यंत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे पूरे मसौदे को ध्यान से सुना और मूल पाठ से उसकी तुलना की। उनके सुझावों ने न केवल मुझे कई गलतियों से बचाया, बल्कि अनुवाद की सूक्ष्मता और गहराई को भी अतुलनीय रूप से बढ़ाया। इस कार्य में मुझे सर्वोत्तम संभव सहायता मिली है, और जो भी त्रुटियाँ रह गई हैं, वे केवल मेरी हैं।
— फ्रांसिस डब्ल्यू. प्रिचेट

नोट्स

अध्याय एक

* अम्मी... ने पतीला उलट दिया और खड़ी हो गईं: रीति-रिवाज के अनुसार, हाल ही में किसी प्रियजन के निधन पर शोक संतप्त परिवार में खाना नहीं पकाया जाता है।
* इस्तिखारा: प्रार्थना की माला गिनकर और एक निर्धारित सूत्र के अनुसार प्रार्थनाएँ पढ़कर भविष्य की संभावनाओं का पता लगाने का एक तरीका।
* आम की गुठली से रगड़ने पर: इससे शेव की हुई त्वचा को ठंडक और कसैलापन मिलता है।
अध्याय दो

* अपने ऊपर उसकी विपत्तियों को ले लेना: एक पारंपरिक प्रतीकात्मक इशारा जिसमें आमतौर पर हथेलियों को प्रिय व्यक्ति के गालों पर फेरना, फिर हाथों को अपने गालों पर लाना, मुट्ठी बनाना और उंगलियों के जोड़ों को चटकाना शामिल होता है।
* “इस भारी दरवाजे को खोलो…”: मुनीर नियाज़ी की प्रसिद्ध कविता “जंगल में आवाज” की एक पंक्ति।
अध्याय तीन

* “मुल्ला बस…”: यह एक प्रसिद्ध कहावत है, जो ऐसे व्यक्ति पर लागू होती है जो आदतों का गुलाम होता है और जिसकी गतिविधियाँ सीमित और अनुमानित होती हैं। यह कुछ हद तक बेबसी का भी संकेत देती है।
चौथा अध्याय

* “सोते हुए गाय के बच्चे का बछड़ा नर हो जाता है”: लापरवाही के खिलाफ एक कहावती चेतावनी: लापरवाह गाय मालिक को पता चलता है कि उसके नवजात मादा बछड़े को चुपके से एक (कहीं कम मूल्यवान) नर बछड़े से बदल दिया गया है।
* “गंजे आदमी को नाखून मिल गए हैं”: यह प्रचलित कहावत बताती है कि किसी व्यक्ति को वह चीज मिल गई है जो उसके लिए उपयुक्त नहीं है।
* “मेरे मित्र की आवाज़ कहाँ है…”: रूमी (1207–1273) की मसनवी की एक फ़ारसी कविता की पंक्ति।
अध्याय पाँच

* “शाह दुलाह के चूहे”: ये मंदबुद्धि बच्चे थे जो अपने शरीर के अनुपात में छोटे सिर के साथ पैदा होते थे, और अक्सर उन्हें समय से पहले मृत्यु से बचाने के लिए लोकप्रिय संत शाह दुलाह को समर्पित कर दिया जाता था।

* “घर और सराय और स्थान…”: मुनीर नियाज़ी की एक कविता की एक पंक्ति का अंश।
अध्याय छह

* “पहले तलवार और भाला…”: इकबाल की एक कविता की प्रतिध्वनि।
* फिलबर्ट की शाखाएँ: मृत शरीर को धोने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले पानी को आमतौर पर फिलबर्ट की पत्तियों के साथ गर्म किया जाता है।
* युद्ध छिड़ गया: 3 दिसंबर, 1971 को भारत के साथ युद्ध छिड़ गया; भारत पूर्वी पाकिस्तान में असंतुष्ट दल का जोरदार समर्थन कर रहा था।
अध्याय सात

* “लंदन विजयी है…”: ज़फ़र अली खान (1873-1956) की द्वितीय विश्व युद्ध पर लिखी गई एक व्यंग्यात्मक कविता की एक पंक्ति।
* छद्म-ताजमहल: यह संदर्भ लाहौर की एक प्रमुख ऐतिहासिक इमारत, जल एवं विद्युत विकास प्राधिकरण के मुख्यालय, वाप्डा हाउस से है।
* “मैं किस काम का था…”: फ़िराक़ गोरखपुरी (1896–1982) की एक ग़ज़ल की एक पंक्ति।
* “मेरे बगीचे से अनुमान लगाओ…”: फारसी कविता की एक प्रसिद्ध पंक्ति, जिसका प्रयोग कहावत की तरह किया जाता है।
* हर दिन... गौरवशाली राजा के सर्प: शाहनामा से ज़ाहक की कहानी की एक प्रतिध्वनि।
* “एक नया फूल खिल रहा है”: यह फ़ारसी कहावत संदेह या तिरस्कार का भाव व्यक्त करती है।
* “तोपें नहीं कर सकतीं... भारत का तो काम तमाम हो गया!”: यह भी कहा जाता है कि यह व्यंग्यात्मक कविता किसी और ने रची थी, और जब बहादुर शाह “जफर” ने इसे सुना तो उन्होंने निडर युद्ध भावना को व्यक्त करते हुए एक और कविता से जवाब दिया।
* 16 दिसंबर: 16 दिसंबर, 1971, वह दिन था जब भारतीय सेना ढाका में दाखिल हुई और एक स्वतंत्र बांग्लादेश का जन्म सुनिश्चित हो गया।
* आज 14 सितंबर है...: 14 सितंबर, 1857, वह दिन था जब अंग्रेजों ने विद्रोहियों से दिल्ली को वापस लेने में सफलता प्राप्त की थी।
अध्याय आठ

* “धर्म के लिए लड़ने वाले ये योद्धा…”: इकबाल की एक प्रसिद्ध कविता, “तारिक की प्रार्थना” की पहली पंक्ति।

* “निःसंदेह ईश्वर धैर्यवान लोगों के साथ है”: कुरान 2:153.
* “तो फिर ये धुआँ कहाँ से आता है…”: मीर की ग़ज़ल की एक पंक्ति।
* “ऐसा लगता है जैसे मेरा दिल…”: मीर की एक ग़ज़ल की पंक्ति पर आधारित। यह पंक्ति “दिल” और “दिल्ली” के बीच एक व्यंग्यात्मक संबंध स्थापित करती है।
* “और जब हमने उस भूमि से प्राप्त कर लिया…”: कुरान 2:84–85
* “तुमने हत्या की…”: यह अंश हज़रत अली द्वारा रचित नहज उल-बलागाह के एक अंश पर आधारित है।
* “बचे हुए लोग... आग से नष्ट हो गए।”: नहेमायाह 1:1–3 पर आधारित।
* "खून की नदी बह रही है...": ग़ालिब के पत्रों में से एक अंश, जिसमें उन्होंने 1857 में झेली विपत्तियों का वर्णन किया है। यह अंश उनकी ग़ज़ल की एक पंक्ति के पहले वाक्य से समाप्त होता है। दूसरा वाक्य, जो इस विचार को पूरा करता है, है: "बस देखते रहो कि आगे मेरे साथ क्या होता है।"
* “पत्ते जैसी गलियाँ…”: मीर की एक ग़ज़ल की पंक्ति पर आधारित।
अध्याय नौ

शकुनों को पढ़ना: एक सामान्य तरीका यह है कि महान फारसी कवि हाफ़िज़ (1320-1390) की रचनाएँ खोलें, बेतरतीब ढंग से एक पंक्ति पढ़ें और उससे निष्कर्ष निकालें।
अध्याय दस

* “अचानक मुझे डर लग गया…”: कुरान 46:24-25 में, ईश्वर द्वारा भेजा गया एक तूफान पापी आद जनजाति को तबाह कर देता है। कुरान 79:13-14 में, एक ज़ोरदार पुकार क़यामत के दिन के आगमन की घोषणा करती है।
* “जिस तरह वे भूकंप के दौरान भागते थे…”: मीर अनीस (1802-1874) द्वारा कर्बला पर लिखे गए एक शोकगीत की एक पंक्ति।
* यह कस्बा... अब उफनती समुद्री लहरों में एक बुलबुले जैसा लग रहा था: यह कहानी कृष्ण की मृत्यु के लोक वृत्तांत पर आधारित है, जिन्होंने अपने वयस्क जीवन का अधिकांश समय गुजरात के पश्चिमी तट पर स्थित द्वारका शहर में बिताया था।
अध्याय ग्यारह

* जब तक कि उनका आकार पूरी तरह से बदल न जाए: दक्षिण एशियाई मुस्लिम लोक परंपरा में, पापियों के चेहरे विकृत हो जाते हैं, और उन्हें जानवरों के आकार में मृतकों में से जीवित किया जाता है।

* “कितना गहरा दुख है…”: मीर की एक ग़ज़ल की एक पंक्ति।
* “नगर पहले ही जल चुका है…”: यह रामायण के एक प्रसंग के लोक संस्करण पर आधारित है, जिसमें शक्तिशाली वानर हनुमान और उनके साथी अपनी जलती हुई पूंछों से लंका में आग फैला देते हैं। जब वे रामचंदर जी की बंदी पत्नी सीता के पास पहुंचते हैं, तो वह उन्हें आग बुझाने का उपाय बताती हैं।
* पत्र-लेखक: इराक के कूफा शहर के कुछ निवासियों ने हुसैन को कूफा आकर सत्ता संभालने के लिए पत्र लिखे; इसी के चलते हुसैन ने विश्वासघात किया और उनकी मृत्यु हो गई। हुसैन ने सबसे पहले अपने चचेरे भाई मुस्लिम बिन अकील को दूत बनाकर कूफा भेजा।
* वह अकेला था: यह फरमान जारी किया गया था कि जो कोई भी हुसैन के दूत मुस्लिम के पीछे नमाज पढ़ेगा और इस प्रकार उसके प्रति सम्मान दिखाएगा, उसकी मृत्यु हो जाएगी।
* पत्तों वाला पेड़: फारसी और उर्दू कथा परंपरा में, नायक हातिम ताई का सामना इसी तरह के एक पेड़ से होता है।
* “हे प्रभु, हमें नरक की आग से बचाओ” कुरान 2:201; 3:191.
* सूरज डूब चुका था: कयामत के दिन की यातनाओं के बारे में एक मुस्लिम लोक परंपरा।
* “मैं समय की कसम खाता हूँ, मनुष्य निश्चय ही हानि में है”: कुरान 103:1–2.
* “शाम हो गई है…”: लघु कवि आगा हज्जू शरफ (1850 के दशक में सक्रिय) की एक ग़ज़ल की एक पंक्ति।
* यहाँ बुझी हुई आग... : इकबाल की एक कविता की पंक्ति।
भाले की नोकों पर उठाए गए: हुसैन और उनके साथियों के सिर का यही हश्र हुआ।
* “जो जीवित हैं वे दुर्भाग्यशाली हैं”: सभोपदेशक 1:1, 1:15, 4:2 पर आधारित।
* “तुम्हारे उतरने का समय अभी नहीं आया है”: यह कहानी परंपरागत रूप से हुसैन के चचेरे भाई मुस्लिम के कूफा में प्रमुख समर्थकों में से एक के बारे में बताई जाती है।
* “एक उजाड़ बंजर भूमि”: ग़ालिब के उन पत्रों में से एक जिसमें उन्होंने 1857 की आपदाओं का वर्णन किया है।
* “अब जहानाबाद खंडहरों में तब्दील हो चुका है—”: मीर की एक ग़ज़ल की एक पंक्ति। दूसरी पंक्ति, जो इस विचार को पूरा करती है, वह है “वरना यहाँ हर कदम पर एक घर हुआ करता था।”

* □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ . . . : □□□□□□□□ 12:1-8 □□ □□□□□□□

शब्दावली
नोट: सभी नाम और शब्द केवल उपन्यास में प्रयुक्त होने के अनुसार ही वर्णित हैं। इन्हें आम तौर पर उपन्यास में वर्णित उर्दू लिपि के अनुसार ही लिखा गया है।
अब्बा जान: ज़ाकिर अपने पिता को इसी नाम से पुकारते थे। "अब्बा" का अर्थ "पिता" जैसा होता है। "जान" रिश्तेदारी के शब्दों के साथ जोड़ा जाने वाला एक उपाधि है जो घनिष्ठता और स्नेह को दर्शाता है।
अबुल हसन: एक धनी व्यापारी का पुत्र जिसे उसके दोस्तों ने धोखा दिया था, और इसलिए उसने केवल अजनबियों की तलाश करने और उनका सत्कार करने की प्रतिज्ञा की थी।
ai: एक ज़ोरदार विस्मयादिबोधक शब्द, जिसका प्रयोग ध्यान आकर्षित करने या आश्चर्य या घबराहट व्यक्त करने के लिए किया जाता है।
ऐ है: खेद और अफसोस व्यक्त करने वाला एक विस्मयादिबोधक शब्द, जिसका प्रयोग आमतौर पर वृद्ध महिलाएं करती हैं।
अली: पैगंबर के दामाद, फातिमा के पति, हसन और हुसैन के पिता। उनका बहुत सम्मान किया जाता है और उन्हें अक्सर "चुना हुआ" और "ईश्वर का शेर" जैसे विशेषणों से पुकारा जाता है।
अलीगढ़: दिल्ली के दक्षिण-पूर्व में स्थित एक छोटा शहर, जहाँ प्रसिद्ध अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय स्थित है।
अंबाला: दिल्ली के उत्तर में स्थित एक शहर, जो आधुनिक हरियाणा में पंजाब की सीमा के निकट है।
अम्मी: ज़ाकिर अपनी माँ को "अम्मी" कहकर बुलाता है। "अम्मी" का मतलब "माँ" जैसा ही होता है।
अमृतसर: लाहौर की सीमा के ठीक पार स्थित भारतीय शहर, जहां जलियांवाला बाग स्थित है।
अनारकली: लाहौर का सबसे प्रसिद्ध पुराना बाजार, जो छोटी-छोटी गलियों के एक भूलभुलैया से भरा हुआ है, जहां लगभग हर चीज खरीदी जा सकती है।
प्रकट होना: गुप्त इमाम का गुप्त रूप से प्रकट होना, एक ऐसी प्रलयकारी घटना जिसका कई शियाओं को बेसब्री से इंतजार था।
हैं: आश्चर्य की अभिव्यक्ति।

अयूब तानाशाही: जनरल अयूब खान के नेतृत्व वाली सैन्य सरकार, जिसने 1958 में नागरिक सरकार से सत्ता छीन ली और 1969 में जनरल याह्या खान द्वारा अयूब को पद से हटाए जाने तक शासन किया।
बाबा फरीद: उत्तर भारत के बारहवीं शताब्दी के महान संत और रहस्यवादी शेख फरीद उद-दीन गंज-ए शकर को स्नेहपूर्वक संबोधित करने का एक तरीका। बागबानपुरा: लाहौर के उत्तरपूर्वी हिस्से में स्थित एक इलाका।
बहादुर शाह: अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह (1775-1862) अपनी कविताओं में "ज़फ़र" उपनाम का प्रयोग करते थे और उन्हें ब्रिटिश पेंशनभोगी के रूप में जीवन यापन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। 1857 के विद्रोह के दौरान उन्हें विद्रोहियों का नाममात्र का प्रमुख बनाया गया; दरबारी राजनीति के कारण सबसे कुशल सेनापति बख्त खान को हटाकर सम्राट के दो निकम्मे पुत्रों, मिर्ज़ा मुगल और मिर्ज़ा गौस को पद पर बिठा दिया गया।
Bakht Khan: See Bahadur Shah.
बुनियादी लोकतंत्र: 1959 में अयूब शासन द्वारा स्थापित एक बहुस्तरीय प्रणाली, जिसमें केवल सबसे निचली परत, जिसमें बुनियादी लोकतंत्रवादी कहलाने वाले हजारों प्रतिनिधि शामिल थे, सीधे निर्वाचित होते थे; इस प्रणाली को ग्रामीण शिक्षा और उत्थान प्राप्त करने के लिए एक गैर-राजनीतिक प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया गया था।
बतुल: खलाह जान का असली नाम।
Bhisham: See Mahabharat.
बी अम्मा: ज़ाकिर अपनी दादी को इसी नाम से पुकारता है। "बी" "बीबी" का संक्षिप्त रूप है। "अम्मा" का अर्थ है "माँ"।
बीबी: किसी महिला को संबोधित करने का एक विनम्र तरीका।
बिनोट: मार्शल आर्ट का एक स्वदेशी भारतीय रूप है, जो जटिल हथियारों के बजाय निपुणता और तेज गति पर निर्भर करता है।
बिरबानी: भारतीय लोक परंपरा में, एक ऐसी महिला जिसे जादू टोने से मार डाला गया हो, और जिसकी आत्मा का उपयोग जादूगरनी द्वारा जादुई उद्देश्यों के लिए किया जाता है।
ब्रह्माजी: हिंदू पौराणिक कथाओं में, विश्व के निर्माता।
वे यह पेशकश कर रहे थे: कृष्ण से मिलें।

बुलंदशहर: दिल्ली के पूर्व में स्थित एक शहर, जो अलीगढ़ जाने वाली सड़क पर पड़ता है।
चाचा जान: जाकिर के चाचा, उनके पिता के छोटे भाई।
दानपुर: उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले का एक कस्बा; जाकिर के परदादा का पैतृक घर।
दाता गंज बख्श: ग्यारहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध संत और रहस्यवादी, जिन्हें लाहौर में दफनाया गया था और जिन्हें शहर का संरक्षक माना जाता है। दुल्हन बी: शरीफ़ान द्वारा अम्मी जान को दिया गया नाम, जिसमें उन्हें उस "दुल्हन" के रूप में संदर्भित किया गया है जो वह बहुत पहले घर में आने पर थीं।
दुपट्टा: महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक बहुत लंबा, चौड़ा और हल्का स्कार्फ। इसे कंधों और छाती पर लपेटा जाता था, और कभी-कभी सिर पर भी, जिसके दोनों सिरे अक्सर पीछे की ओर लटकते रहते थे।
प्रवास: 1947 में ब्रिटिश-नियंत्रित भारत का दो राज्यों, भारत और पाकिस्तान में विभाजन हुआ, जिसके कारण ज़ाकिर जैसे कई मुस्लिम परिवारों को सीमा रेखा के भारतीय हिस्से में स्थित अपने पुराने घर छोड़कर सीमा पार करके नए मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान में जाना पड़ा। इस अनुभव के लिए वे धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण शब्द "हिजरत" का प्रयोग करते हैं, जो पैगंबर मुहम्मद की मक्का से मदीना की यात्रा की याद दिलाता है।
फ़क़ीर: एक मुस्लिम तपस्वी, जो आमतौर पर एकांत में घूमने वाला व्यक्ति होता है और धर्मनिष्ठ लोगों द्वारा दिए गए स्वैच्छिक दान पर जीवन यापन करता है।
फातिहा: कुरान का पहला अध्याय; इसे परंपरागत रूप से मृतकों की कब्रों पर पढ़ा जाता है।
फातिमा: पैगंबर की बेटी, अली की पत्नी और हसन और हुसैन की माँ।
’57: 1857, वह वर्ष जब उत्तरी भारत में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्रसिद्ध और हताश विद्रोह हुआ था।
फ्रंटियर मेल: बॉम्बे और अमृतसर के बीच चलने वाली एक प्रसिद्ध ट्रेन।
गमाल अब्देल नासिर: मिस्र के राष्ट्रपति जिन्होंने 1967 में इज़राइल के हाथों अपने देश की हार की जिम्मेदारी ली और राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया।

ग़ालिब: मिर्ज़ा असदुल्ला खान ग़ालिब (1797-1869) उर्दू के दो महानतम शास्त्रीय कवियों में से एक थे; उन्होंने 1857 में दिल्ली की घेराबंदी देखी और उसके भयावह परिणामों को भी अनुभव किया।
ग्वालियर: उत्तरी मध्य प्रदेश में आगरा के दक्षिण में स्थित एक शहर।
हाय हाय: शोक और मातम व्यक्त करने वाली एक अभिव्यक्ति, जिसका प्रयोग अक्सर महिलाएं किसी की मृत्यु होने पर करती हैं।
हकीम: पारंपरिक इस्लामी (अर्थात्, ग्रीक) चिकित्सा के चिकित्सक के लिए एक सम्मानजनक उपाधि।
हकीम नबीना: बीसवीं सदी के आरंभिक काल के दिल्ली के एक प्रसिद्ध हकीम। वे अंधे थे; "नबीना" का अर्थ है अंधा।
हरे-भरे शाह: एक लोकप्रिय संत जिनकी समाधि दिल्ली में जामा मस्जिद के पास स्थित है।
हसन: हुसैन के बड़े भाई; कर्बला की लड़ाई होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो चुकी थी।
हजरत: आदर व्यक्त करने वाली एक उपाधि, जिसका प्रयोग सामान्यतः धार्मिक व्यक्तियों के लिए किया जाता है।
हज़रत सज्जाद: हुसैन के पुत्र (या अन्य विवरणों के अनुसार भतीजे) ज़ैन उल-आबिदीन के लिए एक सम्मानजनक उपाधि।
हावड़ा एक्सप्रेस: कोलकाता से दिल्ली तक उत्तर भारत को पार करने वाली एक प्रसिद्ध ट्रेन।
हुमायूं का मकबरा: दिल्ली में स्थित एक भव्य स्मारक जहां द्वितीय मुगल सम्राट हुमायूं (मृत्यु 1556) को दफनाया गया है।
हुक्का: एक प्रकार का पाइप जिसमें एक बड़ा स्थिर कटोरा होता है जिसमें तंबाकू जलाया जाता है, धुएं को ठंडा करने के लिए पानी से गुजारने के लिए एक घुमावदार नली होती है, और एक लंबी लचीली नली पर एक मुखपत्र होता है जिसे आसानी से एक हाथ से दूसरे हाथ में दिया जा सकता है।
हुर: उमय्यिद शत्रुओं द्वारा हुसैन के विरुद्ध भेजा गया एक सेनापति; लेकिन उसने हुसैन की ओर से लड़ाई लड़ी और कर्बला में शहीद होने वालों में से वह पहला था।
हुसैन: फातिमा और अली के पुत्र, इस प्रकार पैगंबर के पोते। उन्हें कर्बला के मैदान में उन राजनीतिक विरोधियों द्वारा शहीद कर दिया गया जिन्होंने

खिलाफत पर उनके उत्तराधिकार के अधिकार को मान्यता देने से इनकार कर दिया था।
ईद: मुसलमानों का सबसे बड़ा धार्मिक त्योहार; एक महीने के उपवास के बाद, इस त्योहार के दिन परिवार अपने पड़ोसियों से मिलते हैं। "ईद" का उच्चारण "हीड" से मिलता-जुलता है।
इमाम: हुसैन और उनके कुछ उत्तराधिकारियों को दी जाने वाली एक सम्मानजनक उपाधि, जिन्हें शिया समुदाय में बहुत सम्मान दिया जाता है। यह उपाधि कुछ प्रमुख धार्मिक हस्तियों और मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने वाले व्यक्ति के लिए भी प्रयोग की जाती है।
इमामबाड़ा: एक धार्मिक भवन जिसका उपयोग मुहर्रम के दौरान जुलूसों के गंतव्य के रूप में और मजलिस सभाओं के स्थल के रूप में किया जाता है। इम्पीरियल: लाहौर में स्थित एक विशाल पश्चिमी शैली का होटल, जो औपनिवेशिक काल में काफी प्रसिद्ध था लेकिन अब अस्तित्व में नहीं है।
“नवाचार”: शरिया में किए गए अवैध परिवर्तन के लिए एक धार्मिक शब्द। इकबाल: सर मुहम्मद इकबाल (1877-1938), बीसवीं शताब्दी के महानतम उर्दू और इंडो-फ़ारसी कवि, एक दार्शनिक और राजनेता भी थे। उन्होंने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादी के रूप में शुरुआत की, लेकिन बाद में पाकिस्तान के गठन का आह्वान किया।
इकलिमा: आदम और हव्वा की इस बेटी का उल्लेख कुरान में नहीं है, और वह केवल कुछ मुस्लिम लोक परंपराओं में ही मिलती है।
जाबिर बिन अब्दुल्ला अंसारी: मदीना में रहने के दौरान पैगंबर के साथियों में से एक।
जहानाबाद: दिल्ली के पुराने शहर के उस हिस्से का नाम जिसे शाहजहाँ (शासनकाल 1627-1658) ने बनवाया था।
जलेबी: एक प्रकार की घुंघराली मिठाई जो प्रेट्ज़ेल के आकार की होती है; इसे घोल से बनाया जाता है, पहले इसे तलकर फिर चीनी के पानी में भिगोया जाता है।
जलियांवाला बाग: अमृतसर का एक पार्क, जो 1919 की एक घटना का स्थल है, जिसमें एक चारदीवारी वाले बगीचे में फंसे अहिंसक राष्ट्रवादी प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर एक ब्रिटिश जनरल के नेतृत्व में सैनिकों द्वारा बार-बार गोलियां चलाई गईं, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए।

जामा मस्जिद: दिल्ली की भव्य मस्जिद, जिसका उपयोग कभी-कभी महत्वपूर्ण सार्वजनिक सभाओं के लिए भी किया जाता था; इसका निर्माण शाहजहाँ (शासनकाल 1627-1658) द्वारा कराया गया था।
जन्माष्टमी: एक लोकप्रिय हिंदू त्योहार जो कृष्ण के जन्म के आठवें दिन मनाया जाता है।
झांसी: उत्तर प्रदेश का एक शहर, जो ग्वालियर के उत्तर में स्थित है। 1853 में, जब इसके राजा की निःसंतान मृत्यु हो गई, तो अंग्रेजों ने इसे अपने राज्य में मिला लिया। उनकी विधवा, प्रसिद्ध झांसी की रानी ने 1857 के विद्रोह के दौरान एक योद्धा के रूप में स्वयं को सशक्त बनाया और अंग्रेजों से लड़ते हुए वीरतापूर्वक शहीद हो गईं।
जी: एक सम्मानजनक और स्नेहपूर्ण प्रत्यय जो कभी-कभी व्यक्तिगत नामों के साथ जोड़ा जाता है।
काबुली गेट: दिल्ली के पुराने शहर के चारों ओर बनी दीवार के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में स्थित एक द्वार, जो काबुल की ओर खुलता है।
कलिमा: मुसलमानों की आस्था की घोषणा, "अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं है, और मुहम्मद अल्लाह के पैगंबर हैं।" इसे कई अवसरों पर पढ़ा जाता है, जिनमें से कुछ मृत्यु से संबंधित होते हैं।
कनान बाला: 1940 के दशक की एक फिल्म स्टार, जो अपने गानों के लिए मशहूर थीं।
कर्बला: इराक का वह युद्धक्षेत्र जहाँ हुसैन और उनके कुछ साथियों को 680 ईस्वी में उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी उमय्यदों की सेनाओं ने मार डाला था। यह मुसलमानों, विशेषकर शियाओं के लिए अत्यंत धार्मिक महत्व का स्थल है। रूपनगर के पास स्थित मैदान (जो दीवार से घिरा हुआ प्रतीत होता है) जैसे शिया धार्मिक कार्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले मैदानों को कभी-कभी श्रद्धापूर्वक यह नाम दिया जाता है।
करनाल: आधुनिक हरियाणा में दिल्ली के उत्तर में स्थित एक छोटा शहर।
खाकी: औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश-नियंत्रित भारतीय सेना के सैनिक, जिन्हें उनकी खाकी रंग की वर्दी के कारण यह नाम दिया गया था।
ख़लाह जान: ज़ाकिर की मामी, ताहिरा और सबीरा की माँ।

खान बहादुर चाचा: जाकिर के दिवंगत चाचा, जो उनके पिता के बड़े भाई थे। "खान बहादुर" एक सम्मानजनक उपाधि है जो अंग्रेजों द्वारा उन्हें प्रदान की गई थी।
खिलाफत आंदोलन: मौलाना मुहम्मद अली को देखें।
कल्यार के ख्वाजा: यह तेरहवीं शताब्दी के एक संत की उपाधि है, जिन्हें उत्तर प्रदेश के कल्यार शहर में दफनाया गया था।
कृष्ण: हिंदू धर्म के बाल देवता, गहरे नीले रंग के, जिनका पालन-पोषण मथुरा के पास वृंदावन के ग्रामीण इलाकों में हुआ था। वे बचपन से ही बहुत प्यारे थे। बड़े होने पर वे बांसुरी बजाते थे और जंगल में गांव की लड़कियों के साथ मोहक नृत्य करते थे, खासकर बरसात के मौसम में, जो दक्षिण एशिया में हमेशा से ही रोमांटिक समय माना जाता है। कुछ समय बाद ही वे वृंदावन छोड़कर हमेशा के लिए चले गए; इस प्रकार वे एक आदर्श मायावी प्रेमी का प्रतीक हैं।
लैला: फारसी-अरबी लोककथा परंपरा की सबसे प्रसिद्ध प्रेमिका। हालाँकि उसके परिवार ने उसे दूसरे पुरुष से शादी करने के लिए मजबूर किया, लेकिन वह कभी भी वास्तविक अर्थों में उसकी पत्नी नहीं बनी; उसने जीवन भर अपने सच्चे प्रेमी, मजनून के प्रति वफादारी बनाए रखी।
लियाकत अली खान: पाकिस्तान के पहले प्रधानमंत्री, जिन्होंने 1947 से लेकर 1951 में अपनी हत्या तक सत्ता संभाली।
लॉरेन: लाहौर में एक रेस्तरां, जो अब अस्तित्व में नहीं है।
लायलपुर: पाकिस्तान में लाहौर के पश्चिम में स्थित एक शहर; इसे अब फैसलाबाद कहा जाता है।
मदीना: सऊदी अरब में मक्का के उत्तर में स्थित यह शहर पैगंबर मोहम्मद का हिजरत का स्थान था, और उन्होंने अपने जीवन के अंतिम भाग में इसे अपने सैन्य अभियान का केंद्र बनाया था। यहीं पर उनकी कब्र भी स्थित है। मुसलमानों के लिए यह शहर मक्का जितना ही पवित्र है।
महाभारत: एक महान संस्कृत महाकाव्य, जो हिंदू कथा परंपरा के स्रोतों में से एक है। इसका अंत दिल्ली के पास कुरुक्षेत्र के मैदान में हुए एक भयंकर युद्ध में होता है, जिसमें युधिष्ठिर के नेतृत्व में पांडव बंधुओं ने अपने चचेरे भाइयों से राज्य वापस जीत लिया। दोनों चचेरे भाइयों के मामा भीष्म युद्ध के मैदान में शहीद हो जाते हैं, उन पर इतने तीर लगे होते हैं कि उनसे

ही उनका पलंग बन जाता है। इस पलंग पर घायल अवस्था में लेटे हुए वे पांडवों को अंतिम सलाह देते हैं।
मजलिस: एक ऐसा आयोजन जिसमें शिया मुसलमान हुसैन की मृत्यु और कर्बला की घटनाओं को याद करते हुए शोक मनाते हैं। ऐसी मजलिस में शोक भाषण देने वाले व्यक्ति को "ज़ाकिर" कहा जाता है।
मजनून: फारसी-अरबी लोककथाओं में सबसे प्रसिद्ध प्रेमी। जब उसकी प्रेमिका लैला का विवाह किसी और से हुआ तो वह पागल हो गया; तब से वह जंगल में भटकता रहा, लैला के लिए गीत गाता रहा और प्रेम के नाम पर कष्ट सहता रहा। इसी कारण उसे "मजनून" या "पागल" की उपाधि मिली।
मॉल रोड: लाहौर के पश्चिमीकृत हिस्से की "मुख्य सड़क"।
मौलाना: धार्मिक ज्ञान के धनी व्यक्ति के लिए एक सम्मानजनक शब्द। अब्बा जान के मित्र इस शब्द का प्रयोग उनके लिए करते हैं।
मौलाना मुहम्मद अली: मौलाना मुहम्मद अली (1878-1931) खिलाफत आंदोलन (1919-1924) के सबसे महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे, जिसका उद्देश्य खिलाफत की शक्ति को बहाल करके अंतरराष्ट्रीय मुस्लिम एकता को मजबूत करना था। एक समय मुहम्मद अली ने सऊदी अरब के इब्न सऊद के कट्टरपंथी कार्यक्रम का समर्थन किया, जिसमें पैगंबर के कुछ साथियों के मकबरों और तीर्थस्थलों को ध्वस्त करना शामिल था, क्योंकि उनका मानना था कि ये लोकप्रिय इस्लाम में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गए थे।
मौलवी: मौलाना के समान।
मेरठ: दिल्ली के उत्तर-पूर्व में स्थित एक शहर, जो आधुनिक उत्तर प्रदेश में है।
मेमसाहिब: “मैम” और “साहिब” शब्दों से मिलकर बनी एक उपाधि, जिसका प्रयोग अंग्रेजी महिलाओं के लिए किया जाता है।
मीर: मीर ताकी मीर (लगभग 1722-1810) शास्त्रीय उर्दू ग़ज़ल परंपरा के दो महानतम कवियों में से एक थे; दूसरे ग़ालिब थे।
मुरादाबाद: आधुनिक उत्तर प्रदेश में दिल्ली के पूर्व-उत्तरपूर्व में स्थित एक शहर।
काफ पर्वत: इस्लामी पौराणिक कथाओं में, यह वह पर्वत है जो दुनिया के छोर को घेरे हुए है; इस पर जिन्न और अन्य गैर-मानव प्रजातियां निवास करती हैं।

मुहम्मद अली जिन्ना: मुहम्मद अली जिन्ना (1876-1948) नवगठित पाकिस्तान राज्य के मुख्य वास्तुकार और पहले गवर्नर जनरल थे।
मुहर्रम: इस्लामी कैलेंडर का पहला महीना, जिसके दौरान मुसलमान दस दिनों का शोक मनाते हैं, जिसका समापन दसवें दिन होता है, जिसमें शियाओं के लिए विशेष मजलिस सभाएं और धार्मिक प्रतीकों वाले ऊंचे झंडे लेकर जुलूस निकाले जाते हैं।
मुनीर नियाज़ी: लाहौर में रहने वाले एक प्रसिद्ध आधुनिक पाकिस्तानी कवि (1923-2006)।
मुंशी: एक शिक्षित, सम्मानित व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शिष्ट शब्द।
नजफ: इराक का वह शहर जहाँ अली अली को दफनाया गया है; इसी कारण से इसे बहुत सम्मान दिया जाता है।
नंदी बैल: हिंदू परंपरा में, नंदी वह वाहन है जिस पर महान तपस्वी भगवान शिव सवार होते हैं।
नरबदा: मध्य प्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी भाग से होकर गुजरात में बहने वाली एक नदी।
नवाब हजरत महल: अवध के नवाब की पत्नी, जिन्हें अंग्रेजों ने 1856 में पदच्युत कर दिया था। उन्होंने 1857 के विद्रोह में भाग लिया था।
नज़ीर: वली मुहम्मद नज़ीर अकबराबादी (1735-1830) एक लोकप्रिय उर्दू कवि थे, जो फारसी-अरबी और मुस्लिम विषयों के साथ-साथ भारतीय और हिंदू विषयों के उपयोग के लिए जाने जाते थे।
ओम, शांति, शांति, शांति: "ओम" ब्रह्मांड की कंपन को व्यक्त करने वाली ध्वनि है, और "शांति" का अर्थ है "शांति"। हिंदू परंपरा में, इस तरह के वाक्यों को बार-बार दोहराने से ध्यान की अवस्था प्राप्त होती है। पकीज़ा: एक रोमांटिक, मेलोड्रामैटिक, बेहद लोकप्रिय फिल्म (1971); इसकी नायिका, पकीज़ा ("शुद्ध"), जिसे प्रसिद्ध अभिनेत्री मीना कुमारी ने निभाया था, एक नर्तकी और एक उच्च वर्ग के जमींदार की नाजायज बेटी थी।
पान: सुपारी, मसालों और कभी-कभी तंबाकू का एक व्यापक रूप से लोकप्रिय मिश्रण, जिसे पत्ते में लपेटा जाता है; इसे मुंह में रखा जाता है और धीरे- धीरे चबाया जाता है, जिससे एक लाल, स्वादिष्ट रस निकलता है।

विभाजन: 1947 में ब्रिटिश-नियंत्रित भारत का दो नए राज्यों, भारत और पाकिस्तान में विभाजन।
पीपल: कई हिंदुओं द्वारा पवित्र माने जाने वाले इस वृक्ष का संबंध अक्सर मंदिरों और तीर्थस्थलों से होता है।
राजकुमार फिरोज शाह: बहादुर शाह के पोते, जिन्होंने 1857 के विद्रोह को कुचल दिए जाने के बाद भी अंग्रेजों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध जारी रखा; अंततः उन्होंने भारत छोड़ दिया और 1877 में मक्का में उनकी मृत्यु हो गई। बसरा की राबिया: आठवीं शताब्दी की एक प्रसिद्ध इराकी महिला संत और रहस्यवादी।
राहुल: बुद्ध के पुत्र, जो लोक परंपरा के अनुसार भिक्षु बन गए।
रायसीना: एक पहाड़ी पर बसा एक छोटा सा गांव, जो अंततः नई दिल्ली का हिस्सा बन गया।
राम: रामचंदर जी को देखिए।
राम नाम सत्य है: "राम का नाम सत्य है," यह वाक्यांश अक्सर हिंदू लोग शव को श्मशान घाट ले जाते समय जपते हैं।
रामायण: रामचंदर जी देखें।
रामचंदर जी: महान संस्कृत महाकाव्य रामायण और अनगिनत पारंपरिक हिंदू कथाओं के नायक। यद्यपि वे भगवान विष्णु के अवतार थे, फिर भी वे अपनी विनम्रता और आदरपूर्ण व्यवहार के लिए जाने जाते थे, जिसमें वनवास के दौरान अपने वफादार वानर साथियों और अन्य पशु सहायकों के प्रति दयालु व्यवहार भी शामिल था। उनकी पशु सेना ने उनकी अपहृत पत्नी सीता को खोजने और वापस लाने में उनकी मदद की। जब एक गिलहरी ने मदद करने की कोशिश की और उसके छोटे आकार के कारण वानरों ने उसका मज़ाक उड़ाया, तो रामचंदर जी ने उसे सांत्वना दी और उसकी पीठ पर अपनी उंगलियां फेर दीं।
राशिद उल-खैरी: राशिद उल-खैरी (1868-1936) महिला पात्रों पर आधारित भावुक घरेलू उपन्यासों के एक अत्यंत लोकप्रिय लेखक थे।
रावण: सौ सिरों वाला राक्षस राजा जिसे रामचंदर जी ने मारा था।
रावी: वह नदी जो लाहौर से होकर बहती है।
लाल किला: दिल्ली का प्रसिद्ध किला और महल, जिसका निर्माण शाहजहाँ (शासनकाल 1627-1658) ने करवाया था, जहाँ से बहादुर शाह ने 1857 में पदच्युत होने तक शासन किया।

रूपनगर: ज़ाकिर का जन्म और बचपन जिस (काल्पनिक) कस्बे में बीता, वह यहीं स्थित है। यह उत्तर प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी भाग में कहीं स्थित है; निकटतम बड़ा शहर बुलंदशहर प्रतीत होता है। "रूप" का अर्थ है "सुंदरता, रूप, आकार" और "नगर" का अर्थ है "शहर"।
प्रजनन काल में नर हाथियों के जंगली और हिंसक व्यवहार का वर्णन करने वाला एक विशेषण।
सब्बो: “सबीराह” का छोटा रूप। “सबीराह” नाम का अर्थ है “धैर्यवान, सहनशील”।
साधोरा: अंबाला के पास स्थित एक छोटा सा कस्बा, जिसके निवासियों को मूर्ख माना जाता है। लखनऊ के पास स्थित कुर्सी कस्बे की भी ऐसी ही प्रतिष्ठा है।
साहिब: सामाजिक रूप से समान या उच्चतर व्यक्ति को संबोधित करने का एक विनम्र तरीका।
सावित्री: हिंदू पौराणिक कथाओं में सत्यवान के प्रति अपनी पूर्ण भक्ति के लिए प्रसिद्ध एक पत्नी।
स्कूटर-टैक्सी: एक तीन पहियों वाला वाहन, जो आगे से मोटरसाइकिल जैसा दिखता है, और इसके पिछले पहियों के बीच में एक दूसरी, छतरी वाली सीट होती है जो दो यात्रियों को बैठाने के लिए पर्याप्त चौड़ी होती है।
शाहनामा: फिरदौसी द्वारा रचित फारसी राष्ट्रीय महाकाव्य (लगभग 940-लगभग 1020)।
शेख: यह उपाधि आम तौर पर पैगंबर के साथियों के वंशजों को दी जाती है; स्वयं पैगंबर के वंशजों को "सैय्यद" कहा जाता है।
शामनगर: लाहौर का एक इलाका; "शाम" शब्द कृष्ण के नाम से लिया गया है।
शरर: अब्दुल हलीम शरर (1860-1926) एक प्रसिद्ध उपन्यासकार और पत्रकार थे।
शरिया: मुस्लिम धर्म और परंपराओं का स्वीकृत संग्रह।
शेष: हिंदू पौराणिक कथाओं में, विशालकाय ब्रह्मांडीय सर्प।
सियालकोट: पाकिस्तान का एक शहर, जो अमृतसर के उत्तर में स्थित है।
सिकंदर मिर्जा: एक सेना जनरल जो 1956 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति चुने गए थे, लेकिन 1958 में अयूब खान द्वारा उन्हें पद से हटा दिया गया और निर्वासित कर दिया गया।
रेशमी रूमाल गिरोह: मुस्लिम कट्टरपंथी क्रांतिकारियों का एक समूह जिसने अफगानिस्तान में शरण ली और रेशम के टुकड़ों पर लिखे संदेशों को तस्करी

करके ब्रिटिश भारत में अपने सहयोगियों से संपर्क किया। जब ऐसा ही एक संदेश पकड़ा गया, तो उनकी साजिश (1915-1916) विफल हो गई।
सर सैयद अहमद खान: सर सैयद (1817-1898) एक विवादास्पद और अत्यंत प्रभावशाली आधुनिकीकरणकर्ता और समाज सुधारक थे, जिन्होंने प्रसिद्ध अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।
1965: 1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच सत्रह दिनों का अनिर्णायक युद्ध हुआ था।
सुलैमान: इस्लामी कथा परंपरा के अनुसार, ईश्वर ने सुलैमान को सभी जानवरों, विशेषकर पक्षियों पर अधिकार दिया है। कुरान 27:22-28 में वर्णित है कि एक पक्षी सुलैमान का पत्र शीबा की रानी के पास ले जाता है।
स्पेशल ट्रेनें: 1947 में विभाजन के समय भारत और पाकिस्तान के बीच शरणार्थियों को ले जाने वाली विशेष ट्रेनें।
मानक: मुहर्रम देखें।
सुल्तानाह द ब्रिगेड: 1920 के दशक का उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध डाकू, जिसके कारनामों और पकड़ में न आने की क्षमता ने उसे लोक नायक बना दिया। लोक परंपरा के अनुसार, यंग नामक एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी उसका मुख्य पीछा करने वाला था।
तांतिया टोपी: 1857 के सबसे दुर्जेय विद्रोही सेनापतियों में से एक। विद्रोह लगभग कुचल जाने के बाद भी, उन्होंने झांसी के आसपास के क्षेत्र में गुरिल्ला युद्ध जारी रखा, जब तक कि 1859 में अंग्रेजों ने उन्हें धोखा नहीं दे दिया। अंग्रेजों ने उन्हें फांसी दे दी; उन्होंने बड़ी दृढ़ता से मृत्यु का सामना किया।
दसवां दिन: मुहर्रम देखें।
उमय्यिद: कर्बला देखें।
उत्तर प्रदेश: तब इसे "संयुक्त प्रांत" कहा जाता था, जो अब उत्तर प्रदेश है, एक बड़ा भारतीय राज्य जिसमें गंगा के मैदान का अधिकांश भाग शामिल है।
वैद्य: आयुर्वेद चिकित्सा की पारंपरिक हिंदू प्रणाली के चिकित्सक को दी जाने वाली उपाधि।
सिंहासन का आयत: कुरान 2:255, ईश्वर की महिमा का वर्णन।
व्यासपुर: यह एक (काल्पनिक) बड़ा शहर है जहाँ ज़ाकिर और उसका परिवार रूपनगर छोड़ने के बाद बसता है। "व्यास" का अर्थ है "आयोजक", जो महाभारत के

प्रसिद्ध लेखक हैं; "पुर" का अर्थ है "शहर"। यह शहर दिल्ली और मुरादाबाद के बीच कहीं स्थित प्रतीत होता है।
वाघा: लाहौर और अमृतसर के बीच सीमा पार करने का स्थान।
वॉल्टन कैंप: भारत के साथ नवगठित सीमा पार से आने वाले शरणार्थियों को आश्रय देने के लिए 1947 में लाहौर में स्थापित शिविरों में से एक।
यार: पुरुष साथियों के बीच इस्तेमाल किया जाने वाला एक अनौपचारिक, सौहार्दपूर्ण और स्नेहपूर्ण संबोधन शब्द। इसका सामान्य अर्थ "दोस्त" जैसा होता है।
Zafar: See BAHADUR SHAH.
ज़ाकिर: उपन्यास का केंद्रीय पात्र, जो कभी-कभी कथावाचक भी होता है। उसके नाम का अर्थ है "स्मरणकर्ता" या "कथावाचक"। मजलिस देखें।